NAI TALIM 1941 G.K.V.

नई तालीम

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ का मुखपत्र

भाग २ सेवाग्राम [illegible] [संख्या] १

संपादिका

आशादेवी

वार्षिक : सवा रुपया एक अंक : दो आना

राष्ट्रीय विचारवाले कवि ने बुनियादी तालीम के मदरसों के बच्चों के लिए कुछ गाने बनाये हैं। फ़िलहाल बच्चों को ये गाने सिखाये जा रहे हैं।

मदरसा और समाज—उड़ीसा में बुनियादी तालीम की [illegible] यह है कि वह सरकार की न होकर वहाँ के लोगों की अपनी चीज़ है। गाँववाले मदरसों को अपना मदरसा समझते हैं और इसके लिए ज़मीन और इमारतें दी हैं। पुरुष तो इसमें रुचि लेते ही हैं; लेकिन औरतें भी पीछे नहीं हैं। मदरसों में लड़कियों की एक ख़ास तादाद है। लड़कियों की मायें मदरसों में काफ़ी दिलचस्पी लेती हैं। इसका [illegible], श्री रमादेवी और उनके साथी [illegible] हैं।

अभी यह दिलचस्पी बहुत समझदारी से नहीं ली जाती है। माँ-बाप का ख्याल तो इतना ही है कि बच्चों को पढ़ना-लिखना भी सिखाया जाय और बस। कुछ [illegible] भी नई तालीम की तरफ़ उदासीनता है; बल्कि विरोध [illegible] तो नहीं की जाती [illegible] यह विरोध शनैः-शनैः [illegible] हो जायगा।

उड़ीसा के लिए ख़ास ज़रूरी है कि बुनियादी तालीम में लोगों की दिलचस्पी गहरी हो। नई तालीम की तरक्की का दारोमदार लोगों के सहयोग पर है।

भविष्य का कार्यक्रम—उड़ीसा के एक कोने में इस सात स्कूलों के छोटे-से केन्द्र से बड़ी आशा की जाती है। बोर्ड ने नीचे लिखा कार्यक्रम तैयार किया है :—

१. इस रकबे के सब मदरसे सन् १९४२ तक तीसरे ग्रेड के हो जायँ। बड़े मदरसों में तीन मदरसे चौथी ग्रेड के हो जायँ और रामचन्द्रपुर का केन्द्रीय मदरसा पूरा पाँच ग्रेड का हो जाय और इसके साथ एक होस्टल भी हो।

२. रामचन्द्रपुर में एक छोटा सा ट्रेनिंग कैम्प स्थापित किया जाय, जहाँ नए शिक्षक ट्रेन किये जायँ और मौजूदा शिक्षकों को रिफ्रेशर कोर्स दिया जाय। यह [illegible] कैम्प बुनियादी स्कूलों के काम का निरीक्षण इत्यादि करेगा। अगर संभव हो तो [illegible] केन्द्र में दस्तकारी का विशेषज्ञ भी हो। एक वैज्ञानिक, एक कलाकार और एक गायक।

३. एक रेफ़रन्स की किताबों का और आम साहित्य का केन्द्रीय पुस्तकालय हो। और एक छोटीसी लेबोरेट्री भी।

४. बच्चों के लिए पढ़ने की किताबें लिखी जानी चाहिएँ। और शिक्षकों के लिए Guide Books। एक कार्यकर्ता मुकर्रर करना चाहिए जो बुनियादी स्कूल के [illegible]

लिए ज़रूरी सामग्री को एकत्र करे। इन किताबों को शाये करने का खर्चा अगर हो, तो हिन्दुस्तानी तालीमी संघ बर्दाश्त करे। स्कूल की इमारतों की मरम्मत का काम है। यह काम फौरन हाथ में लेना चाहिए और पाठशालाओं के पास ही शिक्षकों के मकान बनने चाहिए।

आशा की जाती है कि उड़ीसा के लोग परिषद की अपील का उचित जवाब देंगे और जितने रुपये-पैसे की ज़रूरत है, वह पूरी करेंगे। यह जो छोटा प्रयोग शुरू हो रहा है, वह उड़ीसा का नहीं, बल्कि सारे हिन्दुस्तान का है। अगर उड़ीसा में बुनियादी तालीम के काम करनेवालों को ठीक सहायता मिली, तो हमें इसमें शक नहीं कि यह छोटासा पौदा कुछ दिनों में एक विशाल वृक्ष हो जायगा, जो अपने फल-फूल और छाया से अनगिनत लोगों को फ़ायदा पहुँचायेगा।

जवाहरलालजी और खादी-कार्य

[बुनियादी तालीम में कताई-बुनाई की दस्तकारी को ज्यादा महत्त्व क्यों दिया जाता है, इस बारे में कई लोग हमेशा सवाल करते हैं। बुनियादी तालीम के सिलेबस में पाँच साल अनिवार्य रूप से कताई रखी गयी है; इसकी क्या जरूरत है, इसे वे समझ नहीं पाते। इस संबंध में पं० जवाहरलाल नेहरू का हाल ही में जेल से लिखा हुआ एक पत्र हम यहाँ दे रहे हैं। इस पत्र से हमें मालूम होगा कि हिन्दुस्तान के सर्वांगीण उत्थान में खादी का कितना महत्त्वपूर्ण स्थान है, और तालीमी पहलू से भी हिन्दुस्तान के करोड़ों देहातियों तक पहुँचने और उनके बच्चों को शिक्षित करने के लिये खादी ही कितना सच्चा साधन है।—सं०]

प्रिय ...

तुम्हारा पत्र मिला। खुशी हुई। मगर यह देखकर आश्चर्य हुआ कि तुम मुझसे जेल में से सन्देश भेजने की आशा रखते हो। ऐसा होता भी नहीं और न किया जाता है। मेरे साथ रियायत की जाय, तो भी मैं इस मेहरबानी से फ़ायदा उठाना न चाहूँगा। या तो मैं सावजनिक कार्य के लिये पूरी तरह आज़ाद हो सकता हूँ या बिलकुल नहीं। दोनों घोड़ों पर सवारी कैसे हो सकती है? ग़रज़ यह कि जब तक मैं यहाँ हूँ, तुम्हें मुझसे कोई पैग़ाम नहीं मिल सकता।

अलबत्ता, मेरे आशीर्वाद और शुभ कामनाएँ तुम्हारे साथ हैं। मगर जेल से मार्ग-दर्शन मैं नहीं कर सकता। खादी की प्रगति देखकर भी मुझे खुशी होती है; मगर यह देखकर दुःख होता है कि प्रगति और भी तेज़ नहीं है। इसके कारण, मुझे कभी-कभी ऐसा लगता है कि कहीं हम अपने ... करने के तरीके में लकीर के फ़कीर तो नहीं बन गये हैं। अ... साल हमारा वही ..., उन्हीं ... यों की वे ही अपीलें, वे ही ग्राहक और थोड़ी-... मात्रा में ऊपर से नीचे तक सब कुछ एक ही तरह की बात रहती है। फ़र्क इतना ही हुआ कि तुमने अपना मुख्य दफ्तर गोसाईंगञ्ज में बदल दिया है। ये बातें हमारे प्रान्त के लिये ही नहीं, ... पर लागू हैं। सभी तरफ़ थोड़ी अधिक ... बुद्धि, व्यापक दृष्टि और मौजूदा ... के ज़्यादा और गहरे अध्ययन की ज़रूरत मालूम होती है। लड़ाई का समय ... खास तौर पर खादी के लिये सरपट आगे बढ़ने का है। मुझे यह देखकर अफ़सोस होता है कि सारी समस्याओं पर ... गौर करने की कोशिश तक नहीं ... रहा है, जिससे पता चले कि हम कहाँ ... रहे हैं, ... मौजूदा ... के अनुकूल नहीं हो ... हैं।

तीन बरस पहले चीन में सभी तरह का माल— ... कर ग्राम-उद्योगों के ज़रिये— स्थानीय रूप में पैदा करने के लिये औद्योगिक सहयोग-समितियाँ खोलने की आधी खानगी और आधी सरकारी कोशिश की गयीं थी। हमसे ... अलग तरह की समस्या थी और लड़ाई के हालात से उसका गहरा सम्बन्ध था। फिर भी, यह देखकर आश्चर्य होता है कि यह आन्दोलन किस तरह फैला और सहयोग के सिद्धान्त पर ... कैसे हुआ। आज यह हाल है कि जापानी सेना के पीछे ... प्रदेशों में भी ये सहयोग-समितियाँ सफलतापूर्वक काम कर रही हैं और देशभर में उनकी संख्या २० हज़ार से भी अधिक है। इस आन्दोलन ने चीन को आर्थिक नाश से बचा लिया और अन्त में यह फ़ौजी मुकाबिले से भी ज़्यादा महत्त्वपूर्ण साबित होनेवाला है।

इस आन्दोलन में हमें वह चीज़ दीखती है, जो परिस्थिति के अनुकूल है और इसीलिये दावानल की तरह फैलती है। यह चीज़ ऐसी नहीं है, जिसकी शक्ति बनाये रखने के लिये बच्चों की तरह दूध पिलाते रहने की ज़रूरत हो।

चीन की औद्योगिक सहयोग-समितियों का हमारे खादी-आन्दोलन से मुकाबला ... हो सकता, क्योंकि उनका दृष्टिकोण और काम का तरीका दोनों ही जुदा हैं। फिर ... बहुत-सी बातें मिलती-जुलती हैं और उनसे हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।

यह तो मैंने एक मिसाल के तौर पर बताया है। हम संतोष मानकर बैठ जायँ और इस परिवर्तनशील जगत् में अपने दिमागों को जंग लगने दें, ... बात

होगी। खादी हमारे करोड़ों देशवासियों के लिये आशा का सन्देश है, इसका तो पक्का विश्वास है। मगर मुझे शंका होने लगती है कि हमने जोर और [illegible] के [illegible] न किया, तो हम करोड़ों तक पहुँचेंगे कैसे?

मेरी तरह रणजीत भी [illegible] देश [illegible] नहीं [illegible], मगर वे भी अपनी [illegible] भेजते हैं।

रणजीत चाहते हैं कि उन्हें तकली पर कातने के लिये तुम, थोड़ी [illegible] भेज दो।

तुम्हारा—
जवाहरलाल नेहरू

सेवाग्राम में चर्खा-द्वादशी

[कृष्णदास गांधी]

ता० १८-९-४१ के दिन, सेवाग्राम में चर्खा-जयन्ति मनाई गयी। उस दिन गाँव वालों को सुझाया गया था कि वे सुबह ७ बजे से ११ बजे तक और सायंकाल १ बजे से ५ बजे तक ८ घण्टे कताई का कार्यक्रम रखें। सभी एक स्थान में जमा हों और, हरएक [illegible] की ओर से एक एक चर्खा ८ घण्टे चलाया जाय। उस दिन मजदूरी के लिये नहीं, बल्कि केवल अपने कपड़े बनाने के लिये ही हर कोई काते। गाँववालों ने उत्साह के साथ इस प्रस्ताव को स्वीकार किया और उसपर अमल भी किया।

गाँव में कुल १४८ घर हैं। ८८ घरों में कुल १३३ चर्खे हैं। मजदूरी प्राप्ति के लिये कातनेवालों की रजिस्टरशुदा संख्या आज ४० है। बाकी के यथाशक्ति फुरसत [illegible] अपने वस्त्र बनवाने के लिये कातते हैं। इन १३३ चर्खों के सिवाय गाँव की बुनियादी पाठशाला में १४ चर्खे ऐसे हैं, जिनपर बालक-वर्ग अपने कपड़ों के लिये भी कातते हैं। [illegible] बालक ऐसे हैं जो कि ऊपर बतलाये गये ८८ घरों को छोड़कर अन्य घरों के हैं। सारांश यह कि आज गाँव के ९२ कुटुंब १४७ चर्खों का उपयोग कर रहे हैं।

उन [illegible] में से ८० घरों की ओर से ८४ चर्खे प्रस्ताव के अनुसार ८ घण्टे [illegible] गये। जिनमें से १८ तो केवल पाठशाला के बालकों ने ही चलाये। ८४ चर्खों पर १२३ व्यक्तियों ने बारी-बारी से काता। इनमें ४४ पुरुष, २९ स्त्रियाँ और ५२ [illegible] [illegible] पैसे कर्के

[illegible] को असली तालीम देनी होगी जिससे वे अपनी [illegible] समझें और अपने [illegible]र की बातों को मानें। सरदार भी अपनी जिम्मेदारी को समझें और साथियों के [illegible] का ढंग जाने। समवायी विषयों का पढ़ाना उसका काम नहीं है। वह सिर्फ [illegible] की तहज़ीब और [illegible] को कायम रखेगा। काम करते हुए वह क्लास के लड़कों को [illegible] में लगाये रखेगा। वह ऐसी जगह पर बैठाया जाय जहाँ से वह सब लड़कों को देख [illegible]। इतना होने पर भी शिक्षक उस क्लास से बेपरवाह नहीं रह सकता। वह अपने [illegible] का किसी तरह का सवाल हल करने के लिए देकर यहाँ आ सकता है और लड़कों के [illegible]कारों के कामों में कुछ सुधार करते हुए, [illegible] की बातें बता सकता है। यह निजी [illegible]व है कि शिक्षक को ऐसे बहुत से मौके मिलते हैं।

(२) दूसरी बात यह है कि एक ही कमरे में दो क्लास के लड़के विपरीत दिशा [illegible]ये जायँ और खाका नं० १ की तरह दोनों दलों के लड़के काम शुरू करें। एक [illegible] ३० मि० तक काम करता [illegible] दूसरा १५ मि० काम करने के बाद [illegible]० तक किये हुए कामों के जरिए किसी विषय को पढ़े। दूसरे को पढ़ाने के बाद काम [illegible] कर शिक्षक पहिले की तरफ जाय। इसी तरह से एक के बाद दूसरा [illegible] जैसा कि खाका [illegible]० १ में दिया गया है।

अब सवाल उठता है कि ऐसा करने पर आखिरी घण्टे में एक क्लास दस्तकारी में लगा हुआ पाया जाता है और दूसरा क्लास समवायी विषय पढ़ता है। उस [illegible] जैसा कि [illegible]खाकों में बताया गया है दूसरे क्लास को समवायी विषय पढ़ाने के बाद दिन भर के [illegible]कामों तथा उसके द्वारा सीखी हुई बातों का आत्मभाव प्रकाशन करा कर लड़कों को इस [illegible]र अपने मन से नोट लिखने के लिये कह दिया जाय। जब ये लड़के [illegible] [illegible] तब शिक्षक पहले क्लास की ओर जाएँ और सवालों द्वारा वहाँ भी दिन भर के [illegible] हुए कामों तथा उसके द्वारा सीखी हुई बातों को लेकर आत्मभाव प्रकाशन करावें [illegible]और लड़कों को इसपर अपने मनसे नोट लिखने के लिये कहें। इस बीच में [illegible]क पारी-पारी से सब लड़कों के पास जायंगे और पायी हुई त्रुटियों को दूर करने की [illegible] करेंगे। गलतियाँ ठीक हो जाने के बाद बच्चे सुन्दर अक्षर में अपने रोजनामचा बही पर उसे लिख लें।

यदि एक क्लास २५ मि० पहले और दूसरा २५ मि० बाद शुरू हो तो यह काम [illegible]हुत सुचारु रूप से चल सकता है। जैसा कि खाका नं० २ में दिखलाया गया है।

यदि किसी क्लास में धुनाई और बिहार चर्खा से कताई करनी है तो इसके लिये खाका नं० ३ बहुत उपयोगी होगा।

तकुवे का गिरना

[श्री रामदासजी गुलाटी और श्री केशव देवधर ने इस सम्बन्ध में कुछ टिप्पणियाँ तैयार की थीं। उसी आधार पर यह लेख तैयार किया गया है। ... ... श्री कृष्णदास गांधी]

किसान चर्खे या यरवदा-चर्खे में मोढ़िये से तकुवे के पिछले सिरे के निकल जाने का अनुभव करीब सभी कातनेवालों को आ चुका होगा। चर्खे में यह दोष उत्पन्न होने पर कातनेवाले कभी कभी बहुत परेशान होते हैं। उसे दुरुस्त करने का इल्म वे नहीं जानते। यह दोष क्यों पैदा होता है और क्योंकर वह दुरुस्त किया जा सकता है, इसकी ऐसी कल्पना इस लेख में देने की कोशिश की जा रही है।

प्रथम यह जानना चाहिए कि तकुवा किस बल पर टिका रहता है और वह कहाँ गिरता है। इसे जानने से तकुवा क्यों गिरता है, यह जानना सहज होगा। उक्त चर्खे में तकुवा किसी चमरख में फँसा नहीं रहता। वह माल के बल मोढ़िये की खांचों में लगाई गई रस्सी या तांत पर टिकाया जाता है। माल निकाल ली जाय अथवा टूट जाय तो उस समय तकुवा मोढ़िये में नहीं टिक सकता इसलिये यह कहा जा सकता है कि तकुवा माल के बल पर टिका रहता है। पर मान लीजिये कि तकुवे पर एक ओर से माल का खिंचाव तो है मगर टिकने के लिये मोढ़िया नहीं है। उस दशा में क्या होगा? केवल माल के ज़रिये तकुवा टिक नहीं सकेगा। इसलिये हमें कहना चाहिये कि तकुवा माल के खिंचाव, तथा मोढ़िये पर उस खिंचाव की होनेवाली प्रतिक्रिया (यह प्रतिक्रिया रस्सी के कारण होती है) ऐसे दो बलोंपर टिका रहता है। जब तकुवा घुमाया जाता है तब भी ये दोनों प्रतिक्रियायें कायम ही रहती हैं।

यदि मोढ़िये की आगेवाली गुड्डी में योग्य मोटाई की रस्सी बैठाई गई हो तो आगेवाली खांच से तकुवा गिरने का कोई कारण नहीं रह जाता। वह पीछे की गुड्डी की खांच से ही हमेशा गिरता है।

जब हम कातने लगते हैं तब ऊपर कहे गये दो बलों के अलावा एक तीसरा बल भी तकुवे पर काम करने लगता है। यह बल है काते जाने वाले धागे का तकुवे पर का खिंचाव। धागे को ठीक ठीक कातने के लिये एक तरफ़ तो हम तकुवे द्वारा उसे बटते जाते हैं, तथा दूसरी तरफ़ पूनी के तन्तु चुटकी द्वारा योग्य परिणाम में छोड़ते जाते हैं। यह तन्तु अधिक से आधिक समानान्तर और अपनी पूरी लम्बाई में बटे जांय इस हेतु से

हम अपनी चुटकी पर काबू रखते हैं एवं चुटकी दबाये रहते हैं। इस दबाव का धागे पर और धागे के द्वारा तकुवे की नोक पर पड़ता है। इस नोक से धागा [illegible] से लगा रहता है।

अब मान लीजिये कि चुटकी का दबाव याने धागे का तकुवे पर का खिंचाव [illegible] जाता है। उस हालत में जिस प्रकार तराजू के किसी एक पलडे पर बोझ बढ़ने से दूसरा पलड़ा ऊपर उठता है, उसी प्रकार तकुवे का उल्टा सिरा मोढ़िये की पिछली [illegible] से अपनी जगह छोड़कर ऊपर उठ आता है। उसके उठने की [illegible] दिशा [illegible] रहती है जो कि धागे की तकुवे के आगे की बाजू को खींचने की होती [illegible] एक बार खांच से पूरा बाहर निकला कि फिर उसके घूमने के वेग के [illegible] फेंका जाता है। इस वेग में कुकड़ी के घूमने का वेग, ज्यादा असरकारक होता है। जैसे कुकड़ी भरती जाती है वैसे वैसे तकुवे के आगे की ओर का बोझ बढ़ता [illegible] यह बोझ बढ़ने पर धागे का तकुवे पर थोडासा खिंचाव भी ज्यादा असरकारक [illegible] और तकुवा उठने लगता है। मोढ़िये की आगेवाली खांच में तकुवे का जो हिस्सा [illegible] रहता है उस हिस्से को हम "दौलत-बिन्दु" (फल्क्रम) माने तो तकुवे के आगे की बाजू को जिस पर कि कुकड़ी के कारण बोझ बढ़ता है "बल-भुजा" (पावर [illegible]) बन जाती है। दौलत-बिन्दु के स्थान से बोझ व खिंचाव का बिन्दु जितना दूर [illegible] उतना ही वह दूसरी बाजू को ऊपर उठाने के लिये ज्यादा असरकारक होता है। [illegible] असर घटाने के लिये निम्न बातें ख्याल में रखने की जरूरत है:—

१ मोढ़िये की आगे की गुड्डी की खांच में टिके तकुवे के हिस्से और तकुवे के [illegible] वाली नोक में बहुत ज्यादा अन्तर न हो। मोढ़िये की दोनों गुड्डियों में [illegible] टिके तकुवे के हिस्सों का अन्तर और तकुवे के आगे का हिस्सा प्रमाणबद्ध [illegible]

२ मोढ़िये की आगे की गुड्डी और तकुवे की दिमरका [फिरकी] इनके [illegible] का अन्तर जितना भी कम रह सके, उतना ही कम हो।

३ मोढिये की पीछे वाली गुड्डी की खांच आगे की गुड्डी के मुकाबले में [illegible] गहरी हो। यदि वह कम गहरी हो तो आगे की गुड्डी में मोटी तांत या [illegible] रस्सी डालकर पीछे की गुड्डी में वह बारीक डाली जाय।

४ मोढ़िये की कमानी और माल इतनी कसी हो जिससे तकुवे की पिछली [illegible] पर (घिरीं पर) पूरा दबाव रहे।

५ कुकड़ी हद से ज्यादा न भरी जाय।

६ कातते वक्त धागे पर हद से ज्यादा खिंचाव न आने पावे। अधिक मोटा सूत कातने से, पूनियों में खामी अथवा लम्बे तन्तु की रूई से बनी पूनियों द्वारा मोटा सूत कातने पर, या सूत को हद से ज्यादा बटने की आदत से यह खिंचाव बढ़ता है।

७ कताई-कोण, यानी तकुवे से आगे का कोण, जहाँतक हो सके बड़ा रखा जाय।

[खादी जगत से]

मध्यप्रान्त में बुनियादी तालीम

भौगोलिक दृष्टि से देखा जाय तो मध्यप्रान्त का ही बुनियादी तालीम का उत्पत्ति स्थान मानना चाहिए। इसीलिए आजतक इस योजना को आम जनता वर्धा योजना नाम से पहचानती है। बुनियादी तालीम का पहला प्रयोग भी मध्यप्रान्त में ही शुरू हुआ। इसलिए मध्यप्रान्त से यह उम्मीद रक्खी जा सकती थी कि बुनियादी तालीम के विकास में यह प्रान्त अपना एक खास स्थान लेगा।

लेकिन दुःख के साथ मानना पड़ता है कि अब तक ऐसा नहीं हुआ है। मध्यप्रान्त के प्राथमिक शिक्षा की और खास कर बुनियादी तालीम की नीति और कार्यक्रम में बारबार ऐसी तब्दीलियाँ होती गईं कि आजतक बुनियादी तालीम का कोई ठोस काम इस प्रान्त में नहीं हो पाया। पिछले तीन साल में मध्यप्रांत में बुनियादी तालीम का जो काम हुआ उसका छोटासा विवरण दिया जाय तो शायद अप्रासंगिक न होगा।

मार्च १९३८ में मध्यप्रान्त की सरकार की तरफ से शिक्षा सुधार-समिति मुकर्रर की गई। उसने मध्यप्रान्त के प्रायमरी स्कूलों के लिए बुनियादी तालीम की तजवीज़ सिफारिश की। सितंबर १९३९ में सरकार ने यह योजना मन्जूर कर ली। योजना को जल्दी से जल्दी अमल में लाने के लिए सरकार ने यह तय किया कि प्रान्तभर के सब नॉर्मल स्कूलों के शिक्षकों को नई तालीम में तालीम दी जाय और एक साल के अन्दर अन्दर ही सब नार्मल स्कूल बुनियादी ट्रेनिंग स्कूलों में बदल दिए जायँ। इसके

बाद जैसे जैसे शिक्षक तैयार होकर बेसिक ट्रेनिंग स्कूलों से निकलते, साथ साथ मौजूदा प्रायमरी स्कूलों में बुनियादी तालीम का प्रयोग शुरू किया जाता।

इस कार्यक्रम को पूरा करने के लिए जुलाई १९३८ में वर्धा में नार्मल शिक्षकों को ट्रेनिंग देने के लिए विद्या मंदिर ट्रेनिंग इन्स्टिट्यूट नाम से एक ट्रेनिंग खोला गया और नार्मल स्कूलों से कुछ चुने हुए शिक्षक ट्रेनिंग के लिए भेजे गए। अक्टूबर १९३९ में वर्धा विद्यामंदिर ट्रेनिंग इन्स्टिट्यूट में स्थानीय प्रतिनिधियों की एक सभा बुलाई गई। इस सभा में बुनियादी तालीम के आर्थिक पहलू पर पूरा पूरा गौर करने के बाद सर्व सम्मति से नीचे लिखे प्रस्ताव किए गये—

(१) चूँकि सरकार ने यह मान लिया है कि बुनियादी तालीम का तरीका अच्छा है; चूँकि सरकार ने खुद भी इस तरीके को अपनाने का निश्चय कर लिया है;

इसलिए इस कॉन्फ्रेन्स की राय है कि अगर मौजूदा तरीके में कुछ परिवर्तन हों तो वह बुनियादी तालीम की दिशा में होना चाहिए, किसी दूसरी तरफ नहीं।

(२) यह कॉन्फ्रेन्स सूबे की तमाम डिस्ट्रिक्ट कौन्सिलों से दरख्वास्त करती है कि ऊपर के प्रस्ताव में बयान की गई नीति को अमल में लावें।

इस बीच में देश की राजनैतिक स्थिति में परिवर्तन हुआ और कॉंग्रेस मंत्रीमंडल ने त्याग किया। इसका असर बुनियादी तालीम के कार्यक्रम पर भी पड़ा। सूबे में बड़े पैमाने पर बुनियादी तालीम को अमल में लाने की योजना स्थगित की गई। मध्यप्रान्त की सरकार ने अब यह निश्चय किया कि प्रयोग के तौर पर हिन्दी और मराठी इलाकों में वर्धा और सिवनी तहसीलों में छोटे छोटे दो प्रयोग क्षेत्र चुने जायँ। जो स्कूल प्रयोग के लिए चुने जायँ उन्हें प्रयोग के नियत समय के लिए डिस्ट्रिक्ट कौन्सिल से सरकार अपने हाथों में ले। इन स्कूलों के शिक्षकों को बुनियादी तालीम की ट्रेनिंग देने के लिए वर्धा और सिवनी के पुराने नार्मल स्कूल बदल कर बुनियादी ट्रेनिंग स्कूल बनाए जायँ।

इस नई तजवीज़ के मुताबिक जून १९४० में वर्धा और सिवनी के बेसिक ट्रेनिंग स्कूलों में डिस्ट्रिक्ट कौन्सिल के शिक्षकों की एक साल के लिए ट्रेनिंग शुरू की गई। साथ ही साथ दो सालों की ट्रेनिंग के लिए कुछ नए मैट्रिक पास विद्यार्थी भर्ती किए गए।

वर्धा डिस्ट्रिक्ट कौन्सिल के कुछ शिक्षक सन् १९३८-४० में ... बुनियादी तालीम की ट्रेनिंग ले चुके थे। इन शिक्षकों ... अक्टूबर ... के २३ स्कूलों में बुनियादी तालीम का प्रयोग शुरू ...

सिवनी जिला कौंसिल के कोई भी शिक्षक इससे पहले ... ट्रेनिंग नहीं ... सन् १९४० में सिवनी जिले ... में बुनियादी तालीम ... शिक्षकों की एक टोली की ट्रेनिंग पूरी होने के बाद ... मध्यप्रान्तीय सरकार ने सिवनी जिला कौंसिल को प्रयोग के लिए ३० ... सन् १९४१ से इन स्कूलों में काम शुरू हुआ है। ... साथ ... बेसिक नार्मल स्कूल में शिक्षकों की दूसरी टोली की ट्रेनिंग शुरू हुई है।

मध्यप्रान्त में बुनियादी तालीम का जो काम आज चल रहा है उसके साथ हिन्दुस्तानी तालीमी संघ का कोई सम्बन्ध नहीं है। यह एक पूरा पूरा सरकारी प्रयोग है। ... सरकार के साथ यह समझौता है कि मध्यप्रान्त में बुनियादी तालीम के विकास के ... जानकारी रखने के लिए हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की ओर से मन्त्री ... और इन सघन हलकों में कुछ नमूने के स्कूल और दो ट्रेनिंग स्कूल ... दिया जायगा।

इसी व्यवस्था के मुताबिक अक्टूबर के पहले दो हफ्ते हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की तरफ से मैंने सिवनी और वर्धा जिले के कुछ नमूने के बुनियादी स्कूल और दो ट्रेनिंग स्कूल देखे। निकलने से पहले मैंने गान्धीजी से एक सन्देश की प्रार्थना की। गान्धीजी ने इसके जवाब में नीचे लिखे हुए सन्देश दिये:—

मुझे खुशी है कि आप सिवनी जा रहे हैं। जैसे एक ... की ... नींव में रद्दोबदल करने से सारा मकान खतरे में आ सकता है वैसे ही बुनियादी तालीम की योजना में हेरफेर करने से उसकी भी इमारत जोखिम में आ पड़ेगी। अगर इन्स्पेक्टर गण इस बात को ध्यान में रखेंगे तो मुझे पूरा ... है कि सब ठीक होगा।

बापू के आशीर्वाद

इसी पैगाम को मद्देनज़र रख कर मैंने बुनियादी तालीम के काम का मुआयना किया।

प्रान्तीय सरकारों के मातहत बुनियादी तालीम की प्रगति

मध्यप्रान्त और बरार—बुनियादी तालीम का प्रयोग सब से पहले मध्यप्रान्त में ही शुरू हुआ। हरिपुरा काँग्रेस के राष्ट्रीय शिक्षा सम्बन्धी प्रस्ताव को मद्देनज़र रखते हुए एक पाठ्यक्रम तैयार करने के लिये मार्च १९३८ में मध्यप्रान्त की सरकार ने डॉ० ज़ाकिर हुसेन की सदारत में एक कमेटी बनाई। जो पाठ्यक्रम इस कमेटी ने तैयार कर दिया था वह नहीं था। जो कि बुनियादी तालीम का शिक्षा के प्रसार के लिये विद्यामंदिरों सिर्फ़ मुकामी हालतों को सामने रखते हुए कहीं-कहीं कुछ ... था। कमेटी का काम पूरा होने के पहले ही एक आरजी रिपोर्ट प्रकाशित की गई। देहात में शिक्षा का प्रसार करने के लिए विद्या मन्दिरों की एक योजना सरकार ने बनाई थी और उसके लिए १६० शिक्षकों को तैयार करने के लिए एक ट्रेनिंग स्कूल वर्धा में २२ अप्रैल १९३८ को खोला गया। यह पहली संस्था थी जहाँ बुनियादी तालीम के सिद्धान्तों के आधार पर दस्तकारी के ज़रिये शिक्षा देने का प्रयोग किया गया। शिक्षकों की पहली टोली की ट्रेनिंग दिसम्बर १९३८ में पूरी हुई। और ... में ९८ गाँवों में विद्यामंदिर खोले गए और नये पाठ्यक्रम का प्रयोग शुरू हुआ। ... मार्च में शिक्षा कमेटी की रिपोर्ट प्रकाशित हुई और बुनियादी तालीम को सरकार ने स्वीकार किया। इसलिए सरकार को इस नए पाठ्यक्रम को जल्दी से जल्दी चलाने की तरकीब सोचनी पड़ी। प्रयोग के लिए पहले क्षेत्र के तौर पर वर्धा तहसील के ... चुने गये और डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के शिक्षकों को विद्यामंदिर ट्रेनिंग स्कूल में पाँच ... की ट्रेनिंग दी गई।

सरकार के सामने दूसरा सवाल यह था कि मौजूदा नार्मल स्कूलों को बुनियादी तालीम के ट्रेनिंग स्कूलों में परिवर्तित कैसे किया जाय। वर्धा में जुलाई १९३९ में विद्या मंदिर ट्रेनिंग इन्स्टिट्यूट के नाम से एक केन्द्रीय कॉलेज खोला गया जिसमें नार्मल स्कूलों के कुछ शिक्षकों के साथ साथ हाईस्कूलों के ट्रेण्ड शिक्षकों को फिर से बुनियादी तालीम की शिक्षा देने की योजना की गई। इसीके साथ प्रान्तभर के प्रॅक्टिसिंग स्कूलों के शिक्षकों को फिर से इस नई तालीम में ट्रेनिंग दी गई।

अक्तूबर १९३९ में प्रान्त की स्थानीय स्वराज्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन सरकार ने वर्धा में बुलाया और उनके सामने चर्चा के लिए यह प्रस्ताव रक्खा गया कि स्थानीय स्वराज्य संस्थाओं के मौजूदा प्राथमिक स्कूलों ...

स्कूलों में बदल दिया जाय। इस योजना के सब पहलुओं पर काफ़ी चर्चा होने के बाद सम्मेलन ने इस योजना को दो शर्तों पर अपनी शालाओं में जारी करना स्वीकृत किया।

१. प्रान्तीय सरकार उत्पन्न माल को उतनी क़ीमत पर खरीदना स्वीकार करे जितनी कि स्थानीय संस्थाएँ और सरकार मिल कर सामग्री की क़ीमत और उस पर लगी मजदूरी के आधार पर तय करें, जिससे कि स्थानीय संस्थाओं को कोई नुक़सान न पहुँचे।

२. प्रान्तीय सरकार उन स्थानीय संस्थाओं को, जिन्हें कि अपने स्कूलों में योजना को जारी करने के लिए खर्च की या पूरे खर्चे के कुछ हिस्से की ज़रूरत हो, रुपया पेशगी दे, जो कि सालाना किश्तों में अदा कर दिया जाय।

अप्रैल १९४० में एक साल के काम के बाद, विद्यामन्दिर इन्स्टिट्यूट बन्द की गई। लेकिन सरकार ने नॉर्मल स्कूलों को बुनियादी ट्रेनिंग स्कूल बनाने की योजना पूरी नहीं की। सरकार का निश्चय अब यह रहा कि मराठी और हिन्दी के दो इलाकों में, वर्धा ज़िले के और सिवनी ज़िले के कुछ चुने हुए स्कूलों में छोटे पैमाने पर यह प्रयोग शुरू किया जाय और ये चुने हुए स्कूल डिस्ट्रिक्ट कौन्सिल से सरकार प्रयोग के लिए अपने हाथ में ले ले। इन चुने हुए स्कूलों के अलावा सिर्फ़ उन्हीं स्कूलों को यह प्रयोग शुरू करने की इजाजत दी जाय जहाँ ट्रेनिंग पाये हुए शिक्षक और बुनियादी दस्तकारी के सामान का पूरा पूरा इन्तज़ाम हो। यह सोचा गया कि सरकारी और ग़ैरसरकारी दोनों प्रयोगों के लिए शिक्षकों की माँग दो ट्रेनिंग स्कूलों से पूरी हो सकेगी। इसलिए वर्धा के और सिवनी के पुराने नॉर्मल स्कूल बेसिक ट्रेनिंग स्कूलों में परिवर्तित किये गये।

वर्धा तहसील के कुछ स्कूलों में तो जनवरी १९३९ से ही बुनियादी तालीम का प्रयोग शुरू हुआ था। लेकिन वहाँ बाक़ायदा काम नहीं हुआ था। नवम्बर १९४० में सरकार ने इस प्रयोग के लिए ४० स्कूल डिस्ट्रिक्ट कौन्सिल से एक नियत समय के लिये अपने हाथों में ले लिये। सरकार की ओर से ज़रूरी सामान, कच्चा माल आदि का इन्तज़ाम किया गया और निगरानी के लिए एक ख़ास परिदर्शक नियुक्त किये गये।

सिवनी डिस्ट्रिक्ट कौन्सिल ने अपने स्कूलों को सरकार के हाथ में देने से पहले इस बात पर ज़ोर दिया कि लगातार चार साल तक प्रयोग चलाने की वह स्वीकृति दे।

सरकार ने यह शर्त मन्जूर करने के बाद पहली मई १९४१ से चार सालों के लिए सिवनी ज़िले के ३० स्कूल सरकार के हाथों में दिये गये हैं। इन स्कूलों में,

प्रयोग चलाने के लिए डिस्ट्रिक्ट कौन्सिल के चुने हुए शिक्षकों को सिवनी बेसिक स्कूल में एक साल की ट्रेनिंग दी गई और जून १९४१ से काम शुरू के दोनों सरकारी इलाकों के अलावा इस सूबे के २३ स्कूलों में बुनियादी तालीम चलाया जा रहा है।

"बुनियादी स्कूलों में तैयार माल के निकास के लिए सरकार ने तौर पर यह तय किया है कि बुनियादी स्कूलों के सूत मिल के सूत के को बेच दिया जाये और प्रयोग के दरमियान में जो नुकसान होगा उसे उठाये।" *

सन् १९३९–४० में विद्यामन्दिर इन्स्टिट्यूट और विद्यामन्दिर ट्रेनिंग शिक्षक और विद्यार्थियों ने मिलकर बुनियादी स्कूलों के बच्चों के लिए पढ़ने और शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक साहित्य तैयार किया था। इस साहित्य या प्रकाशन का कोई इन्तज़ाम अबतक सरकार की तरफ से नहीं हुआ है।

बुनियादी तालीम का काम मध्यप्रान्त में फिलहाल शिक्षा विभाग सरकारी प्रयोग की हैसियत से चलाया जा रहा है। हिन्दुस्तानी तालीमी संघ बुनियादी तालीम की प्रगति से परिचित रहे, इसलिए सरकार की ओर से यह दी गई है कि साल में दो बार तालीमी संघ के मन्त्री शिक्षा विभाग के एक अफसर के साथ ट्रेनिंग स्कूल और बुनियादी स्कूलों का परिदर्शन करें।

बिहार—बुनियादी तालीम का प्रयोग बिहार में जून १९३८ से शुरू शिक्षा विभाग के दो अफ़सर इस काम के लिये चुने गए और एक संक्षिप्त ट्रेनिंग लिये वर्धा भेजे गये। इनकी मदद से सितम्बर १९३८ में पटना ट्रेनिंग स्कूल को ट्रेनिंग स्कूल में परिवर्तित किया गया। और ६० विद्यार्थी तालीम के लिये दाखिल गये। इस प्रयोग के संगठन के लिये शिक्षा मंत्री की सदारत में बुनियादी की बोर्ड मुकर्रर की गई। इस प्रयोग के बारे में पूरा अधिकार इस बोर्ड को दि है। इस बोर्ड में सरकारी और गैर-सरकारी दोनों तरह के सदस्य हैं। और इनमें हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के सदस्य हैं। बुनियादी ट्रेनिंग स्कूल के हेडमास्टर इसके मंत्री और बुनियादी तालीम के खास अफसर हैं। काँग्रेस मंत्रियों के पद-त्याग

* Proceedings of the sixth meeting of the Central Advisary Board of Education. page 22.

बिहार सरकार के एडवाइजर मि. इ० आर० जे० आर० कजिन्स इस बोर्ड के अध्यक्ष नियुक्त किये गये हैं।

इस बोर्ड ने बुनियादी तालीम के पहले प्रयोग के लिये चम्पारण जिले के बेतिया थाने में एक छोटा-सा इलाका चुना और ट्रेनिंग स्कूल के जो ६० शिक्षक तैयार होकर निकले उनकी मदद से अप्रैल १९३९ में ३५ नये बुनियादी स्कूल खोले गये। इन स्कूलों की शिक्षा, व्यवस्था आदि की निगरानी और इन्तज़ाम के लिये दो सुपरवाइज़र और एक आर्गनाइज़र नियुक्त किये गये हैं। ये सरकारी स्कूल हैं और इनकी इमारत, सामान, शिक्षकों और सुपरवाइज़रों की तनख्वाहें आदि का पूरा खर्चा सरकार ही उठा रही है।

चम्पारण ज़िला बोर्ड के अध्यक्ष के सहयोग से सरकार ने यह तय किया है कि इस इलाके के दूसरे प्रायमरी स्कूल और एक मिडल स्कूल धीरे-धीरे बुनियादी स्कूलों में परिवर्तित किये जायँगे। और मौजूदा शिक्षकों में से जितने योग्य निकलेंगे उन्हें बुनियादी तालीम की ट्रेनिंग देकर फिर इसी इलाके में काम में लाया जायगा। बोर्ड के सामने अभी यह योजना है कि चम्पारण ज़िले में जो नये बुनियादी स्कूल खोले गये हैं, प्रयोग का क्षेत्र अभी इन्हीं में सीमित रक्खा जाय और हर साल एक-एक दर्जा बढ़ाकर सात साल के पाठ्यक्रम का प्रयोग पूरा किया जाय।

इस तालीमी प्रयोग में वैज्ञानिक ढंग से जाँच के महत्त्व की ओर बोर्ड ने पूरा पूरा ध्यान दिया है। पहले साल का पाठ्यक्रम पूरा होने के बाद बुनियादी स्कूलों के काम की बाक़ायदा जाँच करने के लिये बोर्ड की तरफ से सरकारी और गैर-सरकारी शिक्षा के काम करनेवालों की एक बोर्ड नियुक्त की गई थी। दो साल के काम पूरा होने के बाद इसी तरह की दूसरी एक बोर्ड मुकर्रर की गई है। और इन दोनों मुआइनों की रिपोर्ट प्रकाशित की गई।

बुनियादी तालीम का ज़रूरी साहित्य तैयार करने के लिये बोर्ड ने एक साहित्य कमेटी नियुक्त की है और ट्रेनिंग स्कूल के एक अध्यापक के ऊपर इस काम की ज़िम्मेवारी सौंपी गई है। चम्पारण के बुनियादी स्कूल और पटना के प्रैक्टिसिंग स्कूल के अनुभव की बुनियाद पर यह तैयार किया जा रहा है। तीसरे ग्रेड के विद्यार्थियों के लिये पढ़ने की सामग्री तैयार हो गई है और प्रकाशित की जा रही है। दूसरे और चौथे दर्जों के बच्चों के लिये पढ़ाई की किताबें अभी तैयार की जा रही हैं।

स्कूलों के तैयार माल के निकास के बारे में यह व्यवस्था है कि बुनियादी में जितना सूत तैयार होता है, चर्खा संघ की बिहार शाखा उसे खरीदती है और बदले में सरकार उतनी ही कीमत की खादी ले लेती है।

देहाती स्कूलों के लिये सस्ती, सादी और उपयोगी इमारतें कैसी हों इसका भी बोर्ड की तरफ़ से किया जा रहा है।

युक्तप्रान्त—युक्तप्रान्त में बुनियादी तालीम का प्रयोग हर जिले म्यूनिसिपालिटी में एक बड़े पैमाने पर हो रहा है। लेकिन युक्तप्रान्त में बुनियादी का जो प्रयोग हो रहा है और जिसे तालीमी संघ बुनियादी तालीम समझता है, दोनों फ़र्क़ समझना ज़रूरी है।

यू० पी० की एज्यूकेशनल रिआर्गनाइज़ेशन कमेटी ने नीचे लिखे हुए इन शब्दों में बुनियादी तालीम का वर्णन किया है :—

"बच्चों की तालीम जहाँ तक हो सके जीवन की वास्तविक घटनाओं के जाय और एक या अधिक उत्पादक काम के साथ और बच्चों के सामाजिक प्राकृतिक वातावरण से उसका घनिष्ठ सम्बन्ध रहे।"

बुनियादी तालीम के इस वर्णन में और तालीमी संघ के माने हुए वर्णन में का कोई भेद नहीं है। लेकिन फ़र्क़ शुरू होता है जब इस कल्पना को प्रयोग के परिणत किया जाता है। युक्तप्रान्त में जहाँ जहाँ बुनियादी तालीम का काम हो उसका आम असर जो लिया जाता है वह यह नहीं कि एक बुनियादी दस्तकारी केन्द्र मान कर जहाँ तक हो सके उसी के इर्दगिर्द में शिक्षा का पूरा कार्यक्रम किया जाय, बल्कि यह कि तरह तरह की दस्तकारियों के द्वारा, चाहे वे उत्पादक कलात्मक हों, और कला के द्वारा बच्चों की तालीम को सरस और सजीव बनाने कोशिश की जाय।

इसके अलावा बुनियादी स्कूलों में दस्तकारी के काम के आर्थिक पहलू के युक्तप्रान्त का दृष्टिकोण ही दूसरा है। युक्त-प्रान्त की सरकार की ओर से एडवाइज़री बोर्ड ऑव एज्यूकेशन को जो नोट दी गई है, उस में यह फ़र्क़ ज़ाहिर गया है।

"सरकार ने यह तय किया है कि सूबे की योजना का ध्येय यह नहीं है बुनियादी स्कूल स्वावलम्बी बनें। लेकिन यह कि जहाँ तक हो सके दस्तकारी का

सामान स्कूलों में ही तैयार किया जाय। इस बात को ध्यान में रख कर कागज़ बनाने का काम शुरू किया गया। और स्कूलों में कला और दस्तकारी के लिए ज़रूरी कागज़ बनाने के प्रयोग स्कूलों में ही किये जा रहे हैं ताकि खर्चा कम हो। इसी तरह कताई-बुनाई का भी यही उद्देश्य रक्खा गया कि स्कूल के जरूरी सामान इसके ज़रिए मुहैया हो सके।" *

अभी प्रयोग का यह तीसरा साल है। हम पूरी तस्वीर नहीं देख सकते जबतक कि सात साल का प्रयोग पूरा न हो। लेकिन हम इस योजना का स्वागत करते हैं, क्योंकि जिन बुनियादी उसूलों के लिए संघ काम कर रहा है उनको वह मानता है।

युक्त-प्रान्त का प्रयोग अगस्त १९३८ में शुरू हुआ। इलाहाबाद में ग्रेज्युएट शिक्षकों को ट्रेनिंग देने के लिए बेसिक ट्रेनिंग कॉलेज खोला गया और अध्यापिकाओं को ट्रेनिंग देने के लिए इसी तरह बनारस में एक ट्रेनिंग स्कूल खोला गया। लेकिन बाद में यह भी बेसिक ट्रेनिंग कॉलेज, इलाहाबाद में ही शामिल कर दिया गया। ४५ शिक्षक और २८ अध्यापिकाएँ एक साल की ट्रेनिंग के लिए भर्ती किये गये। जनवरी १९३९ में सूबे की प्राइमरी पाठशालाओं से ९८ शिक्षक दस्तकारी की तालीम के लिए बेसिक ट्रेनिंग कॉलेज में भर्ती किये गये। बुनियादी तालीम के प्रयोग के लिए यह योजना तैयार की गयी कि इन ट्रेन्ड ग्रेज्युएट और दस्तकारी के शिक्षकों की मदद से रिफ्रेशर ट्रेनिंग सेन्टर खोले जायेंगे और सूबे के मौजूदा प्राइमरी स्कूलों के शिक्षकों को बुनियादी तालीम की संक्षिप्त ट्रेनिंग दी जायगी। इसके बाद जैसे जैसे ये शिक्षक तैयार होते जायेंगे हर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और म्यूनिसिपालिटी के चुने हुए स्कूलों में यह प्रयोग शुरू किया जायगा।

एक साल की ट्रेनिंग पूरी होने के बाद मई १९३९ में सूबे के सात इन्स्पेक्टरों के केन्द्रों में यानी मेरठ, आग्रा, बरेली, इलाहाबाद, लखनऊ, बनारस और फैज़ाबाद में सात रिफ्रेशर ट्रेनिंग सेन्टर कायम किये गये। हर केन्द्र में छः ट्रेण्ड ग्रेज्युएट और १४ दस्तकारी के शिक्षक नियुक्त किये गये। इन केन्द्रों में २५० डिस्ट्रिक्ट कौन्सिल और म्यूनिसिपालिटी के चुने हुए शिक्षक ट्रेनिंग के लिए भर्ती हुए। ट्रेनिंग की अवधि तीन महीने की थी।

---

* Proceedings of the sixth meeting of the Central Advisary Board of Education, Page 20.

पहले कोर्स में जिला बोर्डों और म्यूनिसिपैलिटियों के १,७२० शिक्षकों को ट्रेनिंग दी गयी और इनकी मदद से, अगस्त १९३९ में सारे प्रान्त में १,७०० स्कूलों के पहले दर्जे में यह नया प्रयोग शुरू किया गया। दूसरे और तीसरे कोर्सों में करीब ३,४०० शिक्षकों को ट्रेनिंग दी गयी और फरवरी १९४० तक प्रान्तभर के करीब ३,००० स्कूलों में बुनियादी दर्जा खोल दिया गया। बुनियादी स्कूलों की संख्या का औसत ९० प्रति बोर्ड या म्यूनिसिपैलिटी है। फरवरी १९४० से इन स्कूलों में दूसरा दर्जा खोलने के लिए शिक्षकों को ट्रेनिंग देने का इंतज़ाम शुरू किया गया।

जुलाई १९३९ में बेसिक ट्रेनिंग कॉलेज में पुरुष और स्त्री शिक्षकों की टोली की ट्रेनिंग शुरू हुई। यह टोली अप्रैल १९४० में पास होकर निकली और १९४० में इन नये अध्यापकों को जिला बोर्डों और म्यूनिसिपैलिटियों के शिक्षकों को ट्रेनिंग देने के लिए जुदा-जुदा केन्द्रों में भेज दिया गया। इस तरह हर केन्द्र में अध्यापकों की संख्या ११ हो गयी। जो ९८ दस्तकारी शिक्षक रिफ्रेशर कोर्स के केन्द्रों में काम कर रहे थे उन्हें वहाँ से वापस बुला लिया गया और अपने-अपने जिले के बुनियादी स्कूलों के सुपरवाइज़र बनाकर भेज दिया गया। इनमें से सबसे होशियार शिक्षकों को सरकारी नॉर्मल स्कूलों से लगे हुए मॉडेल स्कूलों में और सेन्ट्रल ट्रेनिंग स्कूलों में भेज दिया गया है।

जिन ग्रेजुएटों को १९३८-३९ में ट्रेनिंग दी गयी थी, उन्हें जुलाई १९४० में बेसिक ट्रेनिंग कॉलेज में वापस बुलवा कर तीसरे और चौथे दर्जों को पढ़ाने का तरीका और पाठ्यक्रम पर अमल करना सिखाया गया। इस दूसरे ट्रेनिंग कोर्स में इन्हें बुनाई, जिल्दसाज़ी और कागज़ बनाने की दस्तकारिओं का भी अभ्यास कराया गया। इनकी ट्रेनिंग दिसम्बर १९४० में पूरी हुई। और ये फिर अपने-अपने ट्रेनिंग सेन्टरों में भेजे गये।

बेसिक ट्रेनिंग कॉलेज में ट्रेनिंग पायी हुई महिलाओं को लड़कियों के नॉर्मल स्कूलों में या इन से लगे हुए मॉडेल स्कूलों में बुनियादी शिक्षा शुरू करने के लिए भेजा गया था। जुलाई १९४० में इन्हें भी वापस बुलवा लिया गया और इनकी जगह वे शिक्षिकाएँ भेज दी गयी हैं जो अप्रैल १९४० में ट्रेनिंग पाकर निकली हैं।

हर नॉर्मल स्कूल (लड़कों का और लड़कियों का) के एक अध्यापक और ड्राइंग-मास्टर को बेसिक ट्रेनिंग कालेज में रिफ्रेशर कोर्स पूरा कराया गया। इनकी

अब नॉर्मल स्कूलों में भी बुनियादी तालीम जारी करने का इन्तज़ाम किया गया है। इरादा यह है कि धीरे-धीरे यह योजना सब नॉर्मल स्कूलों में जारी हो जाय, ताकि नये बुनियादी स्कूल खोलने के लिए शिक्षकों को इन नॉर्मल स्कूलों में ही ट्रेनिंग मिल जाय।

इन्सपैक्टरों को भी धीरे-धीरे बेसिक ट्रेनिंग कॉलेज में ट्रेनिंग दी जा रही है। अभी ४९ सब-डिपुटी इन्स्पैक्टरों को ट्रेनिंग दी जा चुकी है और ४८ की तीन महीने की ट्रेनिंग चल रही है। दो साल के अन्दर तमाम सब-डिपुटी इन्स्पैक्टरों को बेसिक ट्रेनिंग कॉलेज में बुलवा कर ट्रेनिंग दे दी जायगी ताकि वे अपने-अपने ज़िलों के बुनियादी स्कूलों की निगरानी कर सकें।

अभी तक ८,६२२ शिक्षकों को ट्रेनिंग दी जा चुकी है और ४,७३८ स्कूलों में पहला बुनियादी दर्जा शुरू हो गया है। इसके क़रीब आधे स्कूलों में दूसरा दर्जा भी खुल गया है। सरकार का इरादा यह है कि इन मौजूदा स्कूलों को चौथे दर्जे तक के बुनियादी स्कूल बना देने के बाद दूसरे और स्कूलों में बुनियादी तालीम शुरु की जाये। नवम्बर १९४० से बुनियादी स्कूलों के बालवर्गों को भी बुनियादी तरीक़े पर चलाया जा रहा है। इस तरह बहुत से स्कूलों में तीन क्लासें बुनियादी तरीक़े पर चल रही हैं—बालवर्ग, पहला दर्ज़ा और दूसरा दर्जा। जुलाई १९४१ से तीसरे दर्जे की भी शुरुआत कर दी जायगी। रिफ्रेशर कोर्सों में शिक्षकों की ट्रेनिंग जारी रहेगी और जुलाई १९४२ तक बुनियादी स्कूलों में पूरे पाँच दर्जे काम करने लगेंगे। जनवरी १९४३ तक ५,००० ऐसे स्कूल पूरे बुनियादी तरीक़े पर चलने लगेंगे।

बेसिक ट्रेनिंग कालेज सिर्फ़ ट्रेनिंग केन्द्र ही नहीं है; बल्कि बुनियादी तालीम के प्रयोगों के लिये एक प्रयोगशाला भी है। यहाँ बुनियादी पाठ्यक्रम पर अमल करके देखा जा रहा है और शिक्षा की दृष्टि से नई नई दस्तकारियों की परख की जा रही है। कताई को तमाम दस्तकारियों का आधार बनाया गया है।

ट्रेनिंग कालेज में पढ़ाई की किताबें और पाठ्यक्रम के विषयों के बारे में हिदायतें तैयार की जा रही हैं और उन्हें प्रकाशित करने का इन्तज़ाम कर दिया गया है।

स्कूलों के लिए सस्ते मकान बनाने के प्रयोग भी हो रहे हैं। पक्के मकान पर १,००० रु० खर्च करने के बजाय फूस के छप्पर का मकान २५०-३०० रु० में तैयार हो जाता है। इस तरह का एक मकान ट्रेनिंग कालेज में दो साल से काम दे रहा है और हर मौसम के लिए ठीक मालूम पड़ता है। ऐसे ही मकान और ज़िलों में भी नमूने के तौर पर बनवाये जा रहे हैं।

जुलाई १९४१ से लड़कियों के प्राइमरी स्कूलों के लिए स्त्री-शिक्षिकाओं के लिये रिफ्रेशर कोर्स शुरू करने का इन्तज़ाम किया जा रहा है।

बम्बई प्रान्त-बिहार के जैसा बम्बई प्रान्त में भी बुनियादी तालीम कुछ चुने हुए स्कूलों के सघन हलकों में प्रयोग के तौर पर चलाया जा रहा है। १९३८ में इस प्रयोग के संगठन के लिए एक खास अफ़सर नियुक्त किये गये। खास अफ़सर के काम में मदद देने के लिए और प्रयोग के बारे में सरकार को सलाह देने के लिए श्री नरहरि भाई परीख की सदारत में एक गैर-सरकारी बोर्ड मुकर्रर किया गया। महाराष्ट्र, गुजरात और कर्नाटक में प्रयोग के लिए चार छोटे-छोटे क्षेत्र चुने गये और शिक्षकों को ट्रेनिंग देने के लिए महाराष्ट्र में लोणी में, गुजरात में अहमदाबाद के गुजरात विद्यापीठ में और कर्नाटक में धारवाड़ में तीन ट्रेनिंग स्कूल खोले गये। बाद गुजरात का ट्रेनिंग स्कूल अहमदाबाद से हटा कर प्रयोग के क्षेत्र के पास के क़रीब कतारगाम नाम के गाँव में खोला गया। उर्दू स्कूलों के शिक्षकों के लिये में जुलाई १९३९ में एक चौथा ट्रेनिंग स्कूल खोला गया।

बम्बई-प्रान्त में यह प्रयोग युक्त-प्रान्त के जैसा ही मौजूदा प्राइमरी शिक्षकों को ट्रेनिंग देकर और मौजूदा लोकल-बोर्डों के स्कूलों को धीरे-धीरे स्कूलों में परिवर्तित करके चलाया जा रहा है। लोकल-बोर्डों के शिक्षकों की टोली की ट्रेनिंग होने के बाद जून, १९३९ में चार सघन हलकों के ५९ और बाहर के बिखरे हुए २८ स्कूलों में पहले और दूसरे दर्जों में बुनियादी तालीम का प्रयोग शुरू किया गया। यह प्रयोग सरकारी शिक्षा विभाग स्थानीय शासन-संस्था दोनों की मातहत में चलाया जा रहा है। शिक्षा का उसकी निगरानी शिक्षा विभाग के हाथ में है और व्यवस्था का काम लोकल-बोर्ड के हाथ में। प्रयोग के लिए ज़रूरी खर्च का बँटवारा इस तरह किया गया दस्तकारी के सामान, कच्चा माल आदि का खर्च डिस्ट्रिक्ट कौंसिल उठाती शिक्षकों की ट्रेनिंग, अधिक शिक्षकों की और सुपरवाइज़रों की तनख्वाह वगैरह सब खर्च सरकार उठाती है। बुनियादी स्कूलों की निगरानी के लिये समुचित प्रबन्ध गया है। हर सघन हलके में हर १५-२० स्कूलों की निगरानी के लिये एक सुपरवाइज़र और एक दस्तकारी के सुपरवाइज़र नियुक्त किये गये हैं।

सन् १९४०-४१ में सूरत, धारवाड़, सातारा और पूर्व-खानदेश के सघन के स्कूल बदस्तूर चलते रहे; फ़र्क़ सिर्फ़ इतना हुआ कि इनमें तीसरा दर्जा

गया। कुल स्कूलों की संख्या ५८ (९ उर्दू के और ४९ दूसरी भाषाओं के) थी। इनमें से ९ स्कूल लड़कियों के और ४९ लड़कों के। बुनियादी स्कूलों में शिक्षा लेनेवाले बच्चों की कुल संख्या २,८... थी।

सघन हलकों के स्कूलों के अलावा दूसरे ज़िलों के २... स्कूलों में बुनियादी शिक्षा का प्रयोग चल रहा था। लेकिन इनकी निगरानी का कोई उचित प्रबन्ध न हो सका और ... अच्छी प्रगति नहीं कर सके। इसीलिए बेसिक एज्यूकेशन ऐड्वाइज़री कमेटी की सिफ़ारिश पर सरकार ने इनमें बुनियादी शिक्षा का प्रयोग बन्द कर दिया। सिर्फ़ पूना के तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ के तीन स्कूलों को और खेड़ा ज़िले के ... में नरहरि भाई पारीख की देखरेख में चलनेवाले एक स्कूल को प्रयोग जारी रखने की अनुमति दी गयी है।

पिछले साल खोले गये चार ट्रेनिंग स्कूलों में से कतारगाम, लोणी और धारवाड़ के तीन ट्रेनिंग स्कूल गये साल भी चालू रहे; सिर्फ़ जलगाँव का चौथा स्कूल बन्द कर दिया गया। इन स्कूलों में ज्यादातर मैट्रिक पास उम्मीदवार ही लिये जाते हैं, पर कुछ ऐसे शिक्षकों को भी ले लिया जाता है, जो एक साल की साधारण ट्रेनिंग पा चुके हों। अब तक १०३ शिक्षकों को बुनियादी ट्रेनिंग दी गयी।

निगरानी की व्यवस्था पहले साल ही की तरह रही। निरीक्षक लोग स्कूलों में जाते रहे और शिक्षकों को सलाह देते रहे। नमूने के पाठों, देहात-सुधार का काम और ...ातिरिक्त मनोरंजन की योजना भी बदस्तूर रही। ट्रेनिंग केन्द्रों के हेडमास्टर और बेसिक एज्यूकेशन ऐड्वाइज़री कमेटी के सदस्य भी सघन हलकों के स्कूलों में समय-समय पर जाते रहे हैं।

बच्चों के काते हुए सूत का क्या होगा इस प्रश्न का कोई संतोषजनक हल अभी तक नहीं हो सका है। और स्कूलों में रखने का ठीक इंतज़ाम न होने से बच्चों का उत्साह से काता हुआ सूत खराब ही होता दीखता है।

ऐड्वाइज़री कमेटी को यह लगने लगा कि शिक्षकों और अफ़सरों दोनों में ही बुनियादी शिक्षा के लिए उत्साह ठंढा पड़ रहा है। लड़ाई की वजह से रुपये की कमी भी कोई नया काम शुरु करने के रास्ते में एक बड़ी अड़चन थी। उधर कमेटी यह चाहती थी कि बुनियादी शिक्षा का काम कम-से-कम एक छोटे-से प्रयोग की तरह तो चलता रहे। इसलिए उसने बुनियादी शिक्षा के मौजूदा काम को चलाने के लिए कम-से-कम ज़रूरतों

के बारे में कुछ प्रस्ताव बनाये। कमेटी ने सरकार से प्रार्थना की कि स्कूलों में के काम के लिए और कच्चा माल और प्रस्तुत सूत रखने के लिए जगह का इंतज़ाम की सफ़ाई और प्रकृति-निरीक्षण तथा खेती-बाड़ी और खेल-कूद के लिये इंतज़ाम करे। कमेटी का एक साल का अनुभव यह था कि दफ़्तरी घिस-घिस से स्कूलों को सामान और कच्चा माल मिलने में और बच्चों का काता हुआ सूत बेचने में दिक्कत रहती है। इसलिए कमेटी ने यह सुझाव रक्खा कि इस काम की और स्कूलों के और भी छोटे-मोटे कामों की देख-भाल के लिए एक कमेटी बना दी जाय। यह भी सुझाया कि सब सामान देने के लिए एक अलग दफ़्तर क़ायम किया जाय। ने जब यह देखा कि शिक्षकों को दस्तकारी में कुशल बनाने के लिए और उनमें शिक्षा के प्रति उचित भावना उत्पन्न करने के लिये एक साल की ट्रेनिंग काफ़ी, तो उसने यह सुझाया कि ट्रेनिंग स्कूलों में सिर्फ़ मैट्रिक पास शिक्षक भर्ती और उन्हें कम-से-कम दो साल की ट्रेनिंग दी जाय। कमेटी ने यह प्रस्ताव भी उम्मीदवारों का चुनाव, भेंट और बातचीत (interview) के बाद किया कमेटी का प्रस्ताव यह भी था कि इन मैट्रिक पास बुनियादी शिक्षकों को ३० रुपये महीना वेतन दिया जाय और उनका ग्रेड ५५ रुपये का रक्खा जाय। का यह भी ख़याल था कि चूंकि बुनियादी स्कूलों के शिक्षकों और बुनियादी स्कूलों के अध्यापकों को दूसरे शिक्षकों से ज्यादा काम करना पड़ता है, इसका कुछ मुआविज़ा दिया जाना चाहिए। कमेटी की राय थी कि बुनियादी को ५ रुपये महीना और ट्रेनिंग स्कूल के अध्यापकों को ३० रुपये महीना या १५% (दोनों में जो कम हो) अतिरिक्त भत्ते के रूप में दिया जाय।

सरकार ने ऐड्वाइज़री कमेटी के ये तमाम प्रस्ताव नामंज़ूर कर सिफ़ारिशें कमेटी ने एकमत से की थीं। कमेटी की कार्यकाल ३१ जनवरी खतम हो गया और सरकार की नामंज़ूरी इसके बाद आयी। ८ अप्रैल सरकार ने बारह आदमियों की नयी ऐड्वाइज़री कमेटी नियुक्त की है।

रियासतों में बुनियादी तालीम

जम्मू-कश्मीर में बुनियादी तालीम का प्रयोग सन् १९३८ में शुरू बुनियादी तालीम के विकास में इस प्रयोग की एक ख़ास क़ीमत है, क्योंकि संघ के एक सदस्य की रहनुमाई में यह काम चलाया जा रहा है। इस नई योजना की रचना और पहली शुरुआत में प्रोफ़ेसर ख्वाजा गुलाम सैयदैन का

का हिस्सा रहा। अप्रैल १९३८ में ये कश्मीर के शिक्षा-विभाग के डिरेक्टर नियुक्त किए गए और साथ ही साथ रियासत में शिक्षा को नए सिरे से संगठित करने के लिए एक कमेटी नियुक्त हुई। इस कमेटी को डॉ. ज़ाकिर हुसेन की रहनुमाई हासिल थी। इस कमेटी ने दूसरी योजनाओं के अलावा रियासत में बुनियादी तालीम चलाने की योजना पेश की। सबसे पहले श्रीनगर में शिक्षकों के लिए ट्रेनिंग स्कूल खोला गया जिसमें हरसाल १०० शिक्षक भर्ती किए जाते हैं। इनमें से २५ जगह तो उन लोगों के लिए हैं जो निजी स्कूलों में शिक्षक हैं या जो शिक्षक बनना चाहते हैं और बाकी वे शिक्षक हैं जो शिक्षा विभाग में काम करते हैं।

इस ट्रेनिंग स्कूल में तीन बुनियादी दस्तकारियों के सिखाने का प्रबन्ध किया गया है—खेतीबाड़ी, गत्ते व लकड़ी का काम और कताई व बुनाई। ट्रेनिंग स्कूल के साथ साथ एक प्रेक्टिसिंग स्कूल भी है। जम्मू में काम शुरु करने के लिए वहाँ एक बुनियादी स्कूल खोला गया। पहले साल बुनियादी तालीम के प्रयोग चलाने के लायक ट्रेनिंग स्कूल के लिए अध्यापकों की कमी थी। इसलिए एक रिफ्रेशर कोर्स जारी किया गया और इस कोर्स को पूरा करके जो अध्यापक निकले उनके ज़िम्मे ट्रेनिंग का काम कर दिया गया। चूंकि पहले साल शिक्षकों के लिए यह काम बिलकुल नया था और योजना का अनुभव भी न था, इसलिए जो उस्ताद ट्रेनिंग के लिए आए थे उन्हें डेढ़ साल की ट्रेनिंग दी गई। इस समय में न केवल स्कूल के विद्यार्थियों ने, बल्कि ट्रेनिंग स्कूल के अध्यापकों ने भी दस्तकारी में आवश्यक योग्यता प्राप्त कर ली। अब शिक्षकों को एक साल की ट्रेनिंग दी जाती है, क्योंकि काम का ढाँचा अब पूरी तरह तैयार हो चुका है। अब तक २०० शिक्षकों को ट्रेनिंग मिल चुकी है और १०० शिक्षकों की तीसरी टोली ट्रेनिंग के लिए दाखल की गई है। इसके अलावा रियासत के बाकी शिक्षकों के लिए रिफ्रेशर कोर्सों की व्यवस्था की गई है, जिनमें अबतक ३५० शिक्षक शामिल हो चुके हैं। इन शिक्षकों को शिक्षा के तरीकों के साथ साथ दस्तकारी भी सिखाई गई है।

शिक्षा विभाग के सामने योजना यह है कि हर साल ३० मामूली प्राइमरी स्कूलों को लेकर उन्हें बुनियादी स्कूल बना दिये जाय। अभी तो हर ऐसे स्कूल में एक या दो ट्रेन्ड शिक्षक रक्खे गये हैं। जैसे जैसे और शिक्षक ट्रेनिंग पाकर निकलते जायेंगे बाकी दर्जों में भी बुनियादी तालीम का काम शुरु होता जायगा। अभी बुनियादी स्कूल

बड़े बड़े कस्बों में ही शुरु किये गये हैं जो निरीक्षण करनेवाले अफसरों के नजदीक हैं, ताकि उनका निरीक्षण आसानी से और बारबार हो सके।

कश्मीर के प्राइमरी स्कूलों में पाँच दर्जे होते हैं। बुनियादी तालीम सिर्फ पहले दो दर्जों में शुरु हुआ है। शिक्षा विभाग की योजना यह है कि आगे के दर्जे में बुनियादी तालीम का काम बढ़ाया जायगा और आवश्यकता के एक एक ट्रेन्ड शिक्षक और दिये जायेंगे। अभी रियासत के ६२ स्कूलों में काम चलता है।

इन स्कूलों में जो पाठ्यक्रम जारी किया गया है वह बहुत हद तक तालीम के पाठ्यक्रम से मिलता जुलता है। लेकिन इस पाठ्यक्रम को सिर्फ स्कूलों में ही नहीं, बल्कि रियासत के तमाम स्कूलों में जारी किया गया है। इसके जो स्कूल बुनियादी तालीम का काम नहीं कर रहे हैं, उनमें भी दस्तकारी का प्रबन्ध किया गया है। लेकिन यह दस्तकारी वहाँ शिक्षा के माध्यम का स्थान रखती; बल्कि इसकी शिक्षा शिक्षक स्वयं अपनी उपज और कोशिश से, अपनी और स्थानीय परिस्थिति के अनुसार देते हैं। बुनियादी तालीम के साहित्य का बहुत कीमती काम हो रहा है।

राजगढ़—मध्यभारत की भूपाल एजेन्सी में राजगढ़ नाम की एक रियासत है। इस रियासत में भी छोटे पैमाने पर बुनियादी तालीम के प्रयोग कायदा काम शुरु हुआ है। रियासत की ओर से १९३... में एक कार्यकर्ता लिए वर्धा की विद्या-मन्दिर ट्रेनिंग इन्स्टिटयूट में भेजे गए थे। इनके लौटने रियासत के प्राइमरी स्कूलों में इस नई तालीम के संगठन का काम इन पर गया। ब्यावरा नाम के गाँव में एक छोटा-सा ट्रेनिंग सेन्टर और एक मॉडेल स्कूल खोला गया। अब तक ३६ शिक्षकों को तीन तीन महीनों की ट्रेनिंग दी और रियासत के ज्यादा से ज्यादा पाठशालाओं के पहले दर्जे में यह प्रयोग शुरु गया है। इन स्कूलों के बच्चों का कता हुआ सूत इन्स्पेक्टर ऑव स्कूल्स किया जाता है और वे सेन्ट्रल जेल में इसकी बुनाई का इन्तज़ाम करते हैं। रियासत आम जनता में इसके प्रचार के लिए कोशिशें की जा रही हैं।

उड़ीसा—उड़ीसा में बुनियादी तालीम का प्रयोग सरकारी न रहकर सन् १९... राष्ट्रीय बन गया। बुनियादी तालीम के पिछले तीन वर्षों के जीवन में यह महत्त्वपूर्ण घटना है।

सन् १९३८ के सितम्बर में उड़ीसा की सरकार ने बुनियादी तालीम को प्रयोग के तौर पर चलाने का निश्चय किया और प्रयोग को चलाने के लिए श्री. गोपबन्धु चौधरी के सभापतित्व में एक गैरसरकारी बोर्ड कायम किया गया। प्रयोग शुरू करने के लिए कटक जिले के [illegible]जपुर थाने में एक देहाती क्षेत्र चुना गया। ट्रेनिंग स्कूल के लिए शिक्षकों का चुनाव हुआ और उन्हें ट्रेनिंग के लिए भेजा गया। श्री. गोपबन्धु चौधरी के प्रभाव से गाँववालों ने स्कूल और बुनियादी स्कूलों के लिए जमीन मुफ्त दी और वहाँ [illegible] वातावरण से मेल खाते हुए सादे मकान बनाये गये। सन् १९४० में रामचन्द्रपुर में ट्रेनिंग स्कूल चालू हुआ। सितम्बर १९३९ में २७ शिक्षकों की पहली टोली ट्रेनिंग पूरी कर निकली। मार्च १९४० में सरकार ने उचित सोच-विचार के बाद २५ बुनियादी स्कूल खोलने की पहली योजना बदल कर स्कूलों में मर्यादित पैमाने पर प्रयोग शुरू किया। मार्च १९४० में शिक्षकों की दूसरी टोली ट्रेनिंग स्कूल में भर्ती की गई।

अनेक अड़चनों के बीच में प्रयोग की शुरुआत हुई। स्कूलों के मकान [illegible] तैयार नहीं थे, बाढ़ के कारण [illegible] गड़बड़ हो गया, दस्तकारी के [illegible] जानेवाली इस नई तालीम की तरफ एक तो गाँववाले पहले से ही संदेह की दृष्टि से देखते थे और बुनियादी स्कूलों में छूतछात का भेदभाव न होने से यह भाव और भी [illegible] गया।

दिसम्बर १९४० में हिन्दुस्तानी तालीमी संघ ने प्रयोग का बाकायदा निरीक्षण [illegible] जिसमें देखा गया कि शुरू की मुश्किलें बहुत कुछ कम हो गई हैं। बुनियादी तालीम का असर बच्चों पर प्रकट हो रहा है और गाँववाले भी बहुत कुछ अनुकूल [illegible] गये हैं। शिक्षा-विभाग के अधिकारियों ने अपने मुलाहिजों में ट्रेनिंग स्कूल और बुनियादी स्कूलों के काम के बारे में अपना संतोष प्रकट किया।

जनवरी १९४१ में सरकार ने जो सूचनाएँ भेजीं उनसे मालूम हुआ कि बुनियादी तालीम के प्रयोग को आगे चलाने के सवाल पर सरकार फिर से सोच रही है। [illegible] फरवरी १९४१ में यह सरकारी विज्ञप्ति प्रकाशित हुई कि "डाइरेक्टर आव् प[illegible] की रिपोर्ट के अनुसार सरकार ने यह निश्चय किया है कि बुनियादी तालीम के प्रयोग को [illegible] आगे चलाना प्रान्त के हित की दृष्टि से वाञ्छनीय नहीं है।" बुनियादी तालीम का

... कहाँ तक हासिल किया, इसकी भी जाँच करने की। दो मदरसों में हमने ... चीज़ें जान-बूझकर तितर-बितर कर दीं और कुछ बच्चों को वहाँ ले जाकर ... सब ठीक है? हमें यह देख कर खुशी हुई कि बच्चों को इस बेतरतीबी ... तुरन्त लग गया और उन्होंने चीज़ें तरीके से जमा लीं।

दूसरी ओर कुछ स्कूलों में हमने देखा कि चीज़ें बड़ी अव्यवस्था में जहाँ-तहाँ ...। हम यह नहीं कह सकते कि यह बच्चों का काम था या शिक्षकों की गलती थी। ... जिन शिक्षकों का काम दूसरी दिशाओं में कमज़ोर था, उन्हीं में हमने यह अव्यव-... भी देखी। व्यवस्थितता की आदतें जल्दी नहीं बनतीं, इसके लिये निरन्तर ... की जरूरत है। परिदर्शक और शिक्षकों को चाहिये कि बच्चों को इसके अभ्यास के ... हर मुमकिन मौका दें।

... नई तालीम का एक और नतीजा होना चाहिए, आत्मप्रकाश का विकास। ... स्कूलों के बच्चों ने इस दिशा में काफ़ी तरक्की की है, और इतर स्कूलों के ... से कहीं ज्यादा अच्छे हैं। उनमें न वह संकोच है और न वह डर ही है, जो इलाके के लोगों के लिये स्वाभाविक है। हिम्मत से बोलते हैं और अपने विचारों ... भाँति प्रकट करते हैं।

कुछ स्कूलों के बच्चों ने परिदर्शकों को कुछ नाटक खेलकर दिखाये। कुछ बच्चों ने ... की कला में जो योग्यता दिखायी उससे हम पर खास असर पड़ा। शिक्षकों को ... के विकास की ओर खास ध्यान देना चाहिए। मामूली बच्चों ने भी अपनी उम्र ... के लिहाज़ से अच्छा अभिनय किया। अगर ट्रेनिंग स्कूल में उपयोगी विषयों ... नाटकों की रूपरेखा तैयार की जाय और फिर उनमें स्थानिक हालत का रंग चढ़ा ... नाटक शिक्षकों को दिये जायँ, तो बच्चों की मातृभाषा और अभिनय की कला के ... में सहायता मिले।

१३. आखिर में बुनियादी तालीम का असली मकसद तो यह होना चाहिए कि ... व्यक्तित्व का पूरा-पूरा विकास हो। यह मकसद कहाँ तक हासिल हो रहा है, इस ... राय देने का समय नहीं आया है। लेकिन हम यह महसूस करते हैं कि भिन्न दिशाओं में जो नतीजे मिले हैं, उनसे मालूम होता है कि हम ध्येय की ओर आगे ... हैं। बच्चों का विकास हर तरह से हो रहा है और अगर तरक्की की रफ्तार यही

रही, इससे भी तेज होने की गुंजाइश है, तो हम एक बड़ी हद तक अपना कर सकेंगे।"

अब देखा जाय कि कश्मीर में इस प्रयोग का क्या अनुभव है।

बुनियादी स्कूलों में बहुत-सी बातों से साफ पता लग जाता है कि बच्चों के व्यक्तित्व का सम्बन्ध है, उनका चौमुख विकास हो रहा है। बुनियादी स्वतन्त्र अनुशासन में बच्चे बड़े मज़े से व्यावहारिक बन गये हैं और उद्योग अभ्यास में मधु-मक्खियों की तरह उड़ते फिरते हैं। वे अपने शिक्षकों समझते; बल्कि विश्वास-पात्र मित्र समझते हैं। कई बार पहले भूख के लगने पर शिक्षक से कुछ खाने को माँगा। उनमें से झिझक और संकोच है; वे साधारण स्कूलों के बच्चों से ज्यादा साफ़-सुथरे और चुस्त हैं; उनमें भावना जागृत हुई है।

बच्चे अब बिना छुट्टी लिये स्कूल से बहुत-कम गैरहाजिर रहते हैं। स्कूलों की औसत-हाजिरी बढ़ती जा रही है। आत्म-प्रकाशन की क्रियाओं ने आशा से भी अधिक प्रगति दिखलायी है। वे आपने खींचे हुए रेखा भरते हैं जिससे मालूम होता है कि उनमें रँगों के मिलाने की काफ़ी उनकी निरीक्षण-शक्ति बढ़ी है और उनका बातचीत करने का ढंग भी अपेक्षा अधिक सुधरा हुआ मालूम होता है।

वे अब अपने चौगिर्द की वस्तुओं को देखकर पहले से ज्यादा और रस लेते हैं। वे फूलों और पालतू जानवरों से बहुत प्रसन्न होते हैं ओर की तमाम चीज़ों और अपने सम्पर्क में आने वाले तमाम आदमियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए बड़े उत्सुक रहते हैं।

बुनियादी स्कूलों के बच्चे सामूहिक खेलों और संयोजन क्रियाओं Activities) को बहुत पसन्द करते हैं। वे अपनी क्लास के कमरे संग्रहालय को सजाने में खूब दिलचस्पी लेते हैं। ट्रेनिंग स्कूल से लगे हुए यादी स्कूलों ने अपने-आप ही एक-एक छोटा बगीचा लगा लिया है। अपने आन्दोलनों की व्यवस्था करते हैं और उनमें बड़ा आनन्द मनाते हैं। से एक रोज़ाना समाचार-पत्रिका निकालते हैं और उसे अपनी क्लास के

चलाते हैं । केन्द्रीय स्कूलों के बच्चे स्टेशनरी (लिखने-पढ़ने का सामान) की दूकान और सेविंग बैंक भी सहयोग के सिद्धान्त पर चलाते हैं और शिक्षकों की मदद तभी लेते हैं जब किसी तरह की अड़चन पैदा होती है।

क्लास के कमरे की सफाई की ज़िम्मेदारी बच्चों पर है और वे हर सप्ताह कमरे का सामान हटा कर दीवारों और फ़र्श को कपड़े में झाड़ पोंछ कर साफ़ करते रहते हैं। स्कूल की या गाँव की सफ़ाई के काम में वे झाड़ू, बाल्टी, टोकरी, फावड़ा, वग़ैरा का उपयोग करने में बड़ा गौरव समझते हैं। मेहनत के हफ्ते में जो काम उन्होंने किया उसकी अधिकारियों ने बहुत प्रशंसा की है।

घर पर वे अपने मा-बापों की मदद करते हैं। वे बाज़ार से सौदा लाने में, पानी खींचने में, घर को सजाने में, झाड़ू लगाने में, गन्दगी साफ़ करने में, छोटे बच्चों को खिलाने में और जानवरों की देख-भाल करने में उनका हाथ बटाते हैं। इन बच्चों ने अपने-अपने मोहल्लों में खेल के केन्द्रों का संगठन किया है; जिनमें ९-१० साल तक की उम्र के तमाम बच्चे शामिल होते हैं। हमारे पास आयी हुई रिपोर्टों से पता लगता है कि बुनियादी स्कूलों के लड़कों ने सड़कों की मरम्मत की, अपनी अपनी गलियों में नालियाँ खोदीं और मोहल्ले के लोगों को या राहगीरों की सहायता पहुंचायी।"

इस प्रयोग में बच्चों की तरक्की पर जो नोट भेजा है उसका सारांश यह है:—

"दूसरे स्कूलों के बनिस्बत बुनियादी स्कूलों के बच्चे ज्यादा चुस्त हैं, साफ़ रहते हैं, बाक़ायदा काम करते हैं और ज्यादा तमीज़दार हैं।"

इस सवाल के जवाब में कि "दस्तकारी के ज़रिये तालीम का बच्चों के विकास पर क्या असर हुआ है" बुनियादी तालीम के खास अफ़सर ने जो नोट दिया है उसमें लिखा गया है कि "बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास में लगातार तरक्की है। उनके अन्दर सेवा की भावना भी पैदा हुई है। यह भी पाया गया है कि बच्चे अपने काम ज्यादा एकाग्रता और सफ़ाई से करते हैं, किसी तरह का अपव्यय नहीं करते।"

सरकारी शिक्षा विभागों की ओर से जो प्रयोग चलाए जा रहे हैं उनका कुछ परिचय ऊपर दिया गया है। अब नीचे एक छोटी-सी रियासत में एक गैरसरकारी बुनियादी स्कूल की रिपोर्ट देते हैं। काठियावाड़ की राजपिपला नाम की रियासत में अविधा नाम के एक गाँव में विजय विद्यामन्दिर नाम का एक मामूली हाईस्कूल है। जून १९३९ में एक सज्जन के उत्साह से इस स्कूल के पहले दो दरजों में बुनियादी तालीम का प्रयोग

शुरू हुआ और अब तीसरे दर्जे तक बढ़ाया गया। इस स्कूल के शिक्षक पहले से बुनियादी तालीम की ट्रेनिंग नहीं पाये हुए थे। दस्तकारी के ज़रिये इस नई तालीम के बारे में उन्होंने जो कुछ सीखा, काम करते करते ही सीखा। वातावरण अनुकूल है। बच्चों के माँ-बाप उदासीन हैं।

दो साल के काम के बाद शिक्षकों का अनुभव है कि "बच्चों में एक आश्चर्यजनक परिवर्तन दीख पड़ता है। वे पहले से चुस्त और सजीव हो गये हैं, उनमें संगठन की शक्ति पैदा हो रही है। पहले से साफ़ रहने लगे हैं, अपने काम में गहरी दिलचस्पी लेते हैं। अब तो धीरे धीरे अपने कपड़े के मामले में स्वावलंबी होने लगे हैं।"

पाठ्यक्रम के विषयों में योग्यता--इस नई तालीम के ज़रिये बच्चों के विकास की ओर एक विशेष दृष्टि से भी जाँच करना ज़रूरी है; वह यह कि पाठ्यक्रम के भिन्न भिन्न विषयों में बच्चों ने किस हद तक योग्यता प्राप्त की है।

दो साल के प्रयोग के बाद इसका अन्दाजा लगाने के लिए बुनियादी तालीम के भिन्न भिन्न केन्द्रों को तालीमी संघ की ओर से कुछ प्रश्न भेजे गए थे। इन प्रश्नों के जवाबों से जो आम नतीजे निकलते हैं उसका सारांश नीचे दिया जाता है:—

सब से पहले बुनियादी दस्तकारी में योग्यता का प्रश्न लिया जाय। क्योंकि दस्तकारी को शिक्षा का माध्यम माना गया है और जहाँ तक हो सके इसी के इर्दगिर्द सब विषयों की तालीम देनी है। अब तक ज्यादा से ज्यादा ट्रेनिंग स्कूलों और बुनियादी स्कूलों में बुनियादी दस्तकारी कताई है। लेकिन भिन्न भिन्न संस्थाओं में कताई की प्रगति के विवरण में बहुत फ़र्क़ रहता है। आज तक जितनी रिपोर्टें हमें मिली हैं उनसे आम नतीज़े निकालना आसान नहीं, क्योंकि कताई के पाठ्यक्रम के ठीक ठीक प्रयोग के लिए जो शर्तें रक्खी गई हैं वे बहुत-सी संस्थाओं में पूरी नहीं की गई हैं। सब से पहले तो पाठ्यक्रम में दस्तकारी के लिए जो समय रक्खा गया है वह शायद ही कहीं पूरे काम के लिए दिया गया है। ज़रूरी कच्चा माल और दस्तकारी के सामान अक्सर वक़्त पर पहुँचाए नहीं गये और न तो वे ठीक किस्म के रहे। प्रयोग शुरू करने की जल्दी में शिक्षकों को भी पहले दस्तकारी की पूरी तालीम नहीं दी जा सकी। फिर भी यह बात ध्यान के योग्य है कि ऐसी हालतों में भी बहुत-से स्कूलों में बच्चों ने अपेक्षित योग्यता प्राप्त की है इतना ही नहीं, कहीं कहीं तो इससे भी आगे बढ़े हैं। कुछ आँकडे नमूने के तौर पर नीचे दिये जाते हैं:—

पहली कक्षा-दूसरी छमाही, मार्च १९४१

	दस्तकारी का रोज़ाना वक्त घंटे-मिनट	तकली पर कातने की ½ घंटे की गति		सूत का नम्बर	सूत की मज़बूती फ़ीसदी
		औसत तार	ज़्यादा से ज़्यादा तार		
नये पाठ्यक्रम के मुताबिक काम का अन्दाज़ा	२–०	४५	०	१०	४०%
कतारगाम (गुजरात)	२–१०	४५	७५	१३	५५%
सेवाग्राम (वर्धा)	२–०	५०	६६	१०	४२%
वृन्दावन-रामपुरवा (बिहार)	१–३०	५३	१२०	१३	६०%
सिवनी (मध्यप्रान्त)	१–२५	४५	५३	१२	५७%

दूसरी कक्षा-दूसरी छमाही, मार्च १९४१

नयें पाठ्यक्रम के मुताबिक काम का अन्दाज़ा	२-३०	६०	०	१२	६०%
उंदीरखेडें (खानदेश)	२–०	६८	८२	१६	६५%
वृन्दावन-रामपुरवा (बिहार)	१–३०	६६	१२०	१४	६०%
गदग (धारवाड़)	२–०	६२	६३	१२	[illegible]%
सिवनी (मध्यप्रान्त)	१–१५	६३	७७	१८	६०%
सेवाग्राम (वर्धा)	२–०	६८	८५	१३	५८%

दूसरे विषयों में तरक्की की जाँच मौजूदा प्राइमरी स्कूलों के बच्चों की तरक्की के मुकाबले में की गई है।

जब बुनियादी तालीम का प्रयोग सब से पहले शुरू किया गया तो यह अन्देशा था कि हाथ के काम पर ज्यादा ध्यान देने से स्कूल शिक्षा के स्थान नहीं बल्कि कारख़ाने या कताई-घर बन जायेंगे। इसलिए अगर इन दोनों शिक्षा प्रणालियों के बच्चों ने भिन्न भिन्न विषयों में क्या तरक्की की है इसका मुकाबला किया जाय तो शायद दिलचस्पी से खाली न होगा।

कश्मीर—"मातृभाषा की पढ़ाई में बुनियादी स्कूलों के विद्यार्थी साधारण स्कूलों के विद्यार्थियों से बहुत आगे हैं। लिखाई, पढ़ाई और सवाल हल करने की कुशलता इनमें साधारण विद्यार्थियों से निस्सन्देह बहुत ज्यादा है। पढ़ाई के लिए दिलचस्पी पैदा करने और बनाये रखने में दस्तकारी ने खूब मदद दी है।"

बम्बई—बच्चों को रोज़ दो घण्टे दस्तकारी के काम के लिए देने पड़ते हैं। इसलिए भिन्न भिन्न विषयों का ज्ञान पक्का करने के लिए जो बारम्बार अभ्यास की ज़रूरत रहती है उसके लिए थोड़ा ही समय बचता है। इसलिए हिसाब, ... सामाजिक विज्ञान आदि कुछ विषयों में बच्चे कभी कभी कमज़ोर रह जाते हैं। ... जो ज्ञान उन्हें मिलता है वह प्रत्यक्ष अनुभव के ज़रिये मिलता है न कि बाहर से अन्दर ठूँस दिया जाता है। बुनियादी स्कूलों के बच्चे दूसरे स्कूलों के बच्चों से ... में कम नहीं उतरते हैं।

मध्यप्रान्त और बरार—पाठ्यक्रम का ज्यादा से ज्यादा हिस्सा बच्चों ने ... किया है। थोड़े से जो विषय रह गये हैं वे या तो बच्चों की समझ के बाहर हैं या दूसरे किसी कारण से अनुकूल नहीं है। मातृभाषा—आम तौर से बच्चों के आत्मप्रकाश में अच्छा विकास हुआ है और बड़ी दिलेरी, आज़ादी और भाव से अभिनय करते हैं। हिसाब—हिसाब की चार मोटी प्रक्रियाओं में बच्चे कुछ ... हैं। सीखी हुई बातों को दोहराने और पक्का करने के समय की कमी ... की जाती है। हिसाब का ज्यादातर ज्ञान दस्तकारी के काम के सिलसिले में दिया जाता है, इसलिये यह विषय अब बच्चों के लिए बड़ा दिलचस्प साबित हुआ है। सामाजिक विज्ञान—इस विषय में बच्चों की तरक्की बड़ी अच्छी है। बच्चे समाजसेवा के काम में दिलचस्पी लेने लगे हैं। इससे उनमें समाज के जीवन के बारे में आँखें ...

सामान्य विज्ञान—इस विषय को पढ़ाने के लिए स्कूलों में कुछ वैज्ञानिक सामग्री की ज़रूरत होती है । ज्यादा से ज्यादा देहाती स्कूलों में इसका अभाव रहता है । लेकिन इस विषय में बच्चों की गहरी दिलचस्पी है और प्रकृति के निरीक्षण के सिलसिले में जितना समय बाहर बिताते हैं उसमें उनकी बड़ी खुशी है । खेती-बागवानी—इस विषय की तालीम के लिए जमीन, बीज, खाद, खेती के औज़ार, बैल, हल आदि बहुत सामान की ज़रूरत रहती है । ज्यादा तर स्कूलों में इसका कोई इन्तज़ाम नहीं है, इसलिए खेती की पढ़ाई, थोड़ा बगीचे का काम और प्रकृति-परिचय तक ही सीमित है । लेकिन बच्चों को यह काम बहुत पसंद है । पौधों के जीवन के बारे में बहुतसा ज्ञान उनमें आ गया है, खेती-बाड़ी की मोटी मोटी बातें वे समझने लगे हैं ।

विजय विद्या मन्दिर, अविधा—हम दूसरे स्कूलों के मुकाबले में बराबर हैं, सिर्फ शायद मौखिक हिसाब में कुछ कम हों । सामाजिक विज्ञान और सामान्य विज्ञान में तो दूसरे स्कूलों के बच्चों के साथ हमारे बच्चों का कोई मुकाबला ही नहीं । मातृभाषा में भी हमारे बच्चों का ज्ञान बहुत ज्यादा है ।

कला की शिक्षा—बुनियादी तालीम के पाठ्यक्रम में कला को एक महत्त्व का स्थान दिया गया है । उसके बाद दोनों कान्फ्रेंसों में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि दस्तकारी के इर्दगिर्द में जो तालीम दी जाती है उसमें कला एक महत्त्व का स्थान रखती है । लेकिन यह बात हमें मानना पड़ेगी कि एक युक्तप्रान्त के सिवा अब तक बुनियादी स्कूल और ट्रेनिंग स्कूलों में कला को जो स्थान मिलना चाहिए था, नहीं मिला । युक्तप्रान्त में डॉ. इबादुर्रहमान खान की रहनुमाई में कला के साथ दस्तकारी के अनुबन्ध का प्रोत्साहनीय काम हो रहा है । कला को सब दस्तकारियों का आधार माना गया है । आशा है कि आगे जाकर यह काम बुनियादी तालीम की सारी योजना का एक कीमती पहलू बनेगा ।

संगीत—इस प्रयोग की एक विशेषता यह रही है कि सब बुनियादी स्कूलों में संगीत का एक वातावरण तैयार हो रहा है । दस्तकारी के काम के साथ खेल-कूद, गाँव की सफ़ाई आदि किसी भी सामूहिक काम के साथ एक साथ मिलकर गाना स्कूलों के कार्यक्रम का एक लाज़िमी हिस्सा बन गया है । शिक्षकों को भी इससे नए नए गीतों की रचना में प्रेरणा मिल रही है । यह तो मानना ही पड़ेगा कि ये गीत कोई ऊंचे दर्जे के नहीं हैं । लेकिन जो शुरूआत हुई है उससे आशा होती है कि आगे जा कर इस नई

तालीम से ऐसे नये लोक-गीत और कला तैयार होगी जो देहात की रोजमर्रा की से गहरा सम्बन्ध रक्खे।

शारीरिक शिक्षा—सब बुनियादी स्कूलों और ट्रेनिंग स्कूलों में शारीरिक पर समुचित ज़ोर दिया जा रहा है और ख़ास करके यह कोशिश की जा रही है खेल-कवायद किये जायँ जिनके लिये साधनों की ज़रूरत न हो, और पुराने लोक स्कूलों के ज़रिये फिर से नया जीवन दिया जाय।

बुनियादी पाठ्यक्रम-अमल में

बुनियादी तालीम के पाठ्यक्रम की प्रस्तावना में यह साफ तौर से बताया कि यह पाठ्यक्रम कोई आख़िरी चीज़ नहीं है, सिर्फ इस नई तालीम का प्रयोग करने के लिए एक आजमाइशी बुनियाद के तौर पर शिक्षकों के सामने रक्खा जा

"इस पाठ्यक्रम को हमने यह दिखाने के लिए तैयार किया है कि जि न्वयात्मक शिक्षा की हिमायत हमने की है, वह शिक्षा अमल में लाई जा और उसके अनुसार पक्का पाठयक्रम भी बनाया जा सकता है। लेकिन हमें कि जैसे जैसे ट्रेनिंग स्कूलों, कॉलेजों और बुनियादी तालीम के स्कूलों में हम इस योजना को बाक़ायदा अमल में लाना शुरू करेंगे, और अपने अनुभवों ठीक हिसाब रखते जायेंगे वैसे वैसे इसकी त्रुटियों और बारीकियों का ज्ञान बढ़ेगा और उसके अनुसार हम इसमें रद्दोबदल भी कर सकेंगे। इस तरह कुछ दिनों के बाद हमारा पाठयक्रम आप ही आप पक्का हो जायेगा। इसलिए को यह समझना चाहिए कि यह पाठयक्रम कोई आख़िरी चीज़ नहीं है, स्वयं इसका प्रयोग करना है। इसकी कमी और बेशी को ध्यान में रखते बदलने को तैयार रहने से ही यह योजना सफल हो सकती है।"

देहली कान्फ्रेन्स में बुनियादी तालीम के काम करनेवालों से यह प्रार्थना थी कि पिछले दो तीन सालों के अनुभव की बुनियाद पर वह अपनी राय दे कि तक इस पाठ्यक्रम को बुनियादी दस्तकारी के इर्दगिर्द में और बच्चों के चारों प्रकृति और समाज की ज़िन्दगी है उसके साथ सम्बन्ध रख कर अमल में लाना हुआ है। पटना बुनियादी ट्रेनिंग स्कूल के एक अध्यापक ने चम्पारन ज़िले के स्कूलों में पाठ्यक्रम के प्रयोग की बुनियाद पर एक गहरा अध्ययन तैयार कान्फ्रेन्स के सामने पेश किये। इस अध्ययन का निचोड़ यह है:—

"प्रान्त में दो वर्षों के अनुभव के बाद यह मालूम हुआ है कि पाठ्यक्रम के बहुत बड़े भाग का समवाय उद्योग की क्रियाओं के साथ ही किया जा सकता है और बाकी का बाकी दो प्रतिवेशों के साथ। जिन थोड़े विषयों का समवाय सीधे और स्वाभाविक ढंग से नहीं हो सका है उनकी जरूरत भी हम लोगों ने नहीं महसूस की है। सम्भव है आगे चल कर उनका भी समवाय स्वाभाविक ढंग से किया जा सके।"

बुनियादी तालीम की दूसरी संस्थाओं ने जो रिपोर्टें पेश की हैं उनसे भी यही नतीजे निकलते हैं।

अनुबन्ध का तरीक़ा

यह हमें एक और गहरे सवाल की तरफ़ ले जाता है कि किस हदतक यह पाठ्यक्रम ठीक ठीक तरीक़े से बुनियादी तालीम के उसूलों के मुताबिक़ अमल में लाया जा रहा है। क्या बच्चों के विकास के लिए दस्तकारी के काम का और बच्चों की आसपास की ज़िन्दगी का पूरा पूरा उपयोग किया जा रहा है? क्या शिक्षकों में इस तरीक़े के बुनियादी उसूलों का ज्ञान और इसके प्रयोग में कुशलता दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे हैं?

हमारे पास जितना मसाला है उसकी बिना पर इसके बारे में कोई आख़िरी राय बनाना मुश्किल है। बिहार में इन्स्पेक्टरों की बोर्ड ने बहुत सोच-विचार के बाद साव-धानी से जो राय प्रकट की है वह सचाई से सबसे नज़दीक मालूम होती है:–

"यह बात साफ़ ज़ाहिर है कि सब शिक्षक सब स्कूलों में जिस तरीक़े से यह पाठ्यक्रम अमल में लाना चाहिए उस तरीक़े से नहीं कर पाये हैं लेकिन हम यह कह सकते हैं कि आम तौर से सब शिक्षक इस दिशा में प्रयत्न कर रहे हैं और कुछ को काफ़ी कामयाबी भी मिली है।"

मिसाल के तौर पर हम कुछ शिक्षकों की डायरी से नमूने दे रहे हैं। पर हम साफ़ कर दें कि ये नमूने जो हम पेश कर रहे हैं आम शिक्षकों की डायरियों से ही चुने गए हैं, ख़ास अच्छे शिक्षकों की डायरियों से नहीं।

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ ने बुनियादी स्कूलों के शिक्षकों के लिए पुस्तक के रूप में 'बुनियादी तालीम के काम का तफ़सीलवार लेखा' प्रकाशित किया है। लेखे के शुरू में उसकी उपयोगिता के बारे में लिखा है कि बुनियादी तालीम की नई स्कीम के अमल के दौरान में यह तजरबा हुआ है कि जब तक रोज़मर्रा के काम का बाक़ायदा

और वैज्ञानिक ढंग पर लेखा न रखा जाय तब तक यह पता लगाना मुश्किल है कि बुनियादी पाठ्यक्रम पर अमल करने में कितनी तरक्की हुई और क्या क्या कठिनाइयाँ पेश आईं। इन किताबों को हर माह भर कर भेजने के लिए हमने कुछ स्कूलों को प्रार्थना की थी। उसके अनुसार जनवरी १९४१ से हमारे पास स्कूलों से उनके काम की लिखतें आ रही हैं। इन लिखतों के कुछ नमूने हम देना चाहते हैं। जब तक पूरे साल की लिखतें हमारे पास नहीं आ जातीं तब तक हरएक दर्जे का अलग-अलग विषय का पाठ्यक्रम कहाँ तक पढ़ाया गया, कौन सी पढ़ाई नहीं गयीं, दस्तकारी के साथ कितने विषयों का समवाय हो सका, सामाजिक प्राकृतिक परिस्थिति के साथ कितने विषय अनुबन्ध के साथ पढ़ाये गये आदि विचार नहीं हो सकता। लेकिन तो भी एक महीने की अलग-अलग स्कूलों की लिखतें, उस महीने में हर स्कूल ने क्या क्या बातें पढ़ाईं, उन बातों का दस्तकारी के साथ किस तरह अनुबंध किया यह अगर तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाय तो काफ़ी उपयोगी साबित होगा।

यहाँ छः स्कूलों का, इस जनवरी १९४१ के काम का विवरण दे रहे हैं।

पहला दर्जा-दूसरी छमाही-जनवरी, १९४१

लोणन्द (सतारा) कताई—१. तकली पर कातने के प्रश्न ४ और ९ से १२ तरीकों से कताई की। २. बच्चों ने तार गिने और लट्टी बनायी। ३. सूत अटेरन पर अटेरा। ४. टूटा हुआ धागा जोड़ने का अभ्यास किया गया। ५. लट्टियों को तौल कर उनका अंक मालूम किया गया। ६. लट्टीसे १२ फुट तार निकाल कर बच्चों ने शिक्षक का कस निकालने के काम में मदद की। ७. तकली, लपेटा, पूनी, राख और बुनियादी दस्तकारी के इन साधनों पर बातचीत की गयी।

दस्तकारी के इन विषयों के साथ अन्य विषयों की किन-किन बातों का अनुबंध किया गया वह नीचे दिया जाता है:—

मातृभाषा—१. खादी के सम्बंध से राष्ट्रीय झंडे का प्रश्न उठाया गया। उस पर से हरे और लाल रंग की झंडियों के बारे में बता कर, इन झंडियों से रेलगाड़ी का काम लिया जाता है; इस पर से 'रेल गाड़ी का खेल' पाठ पढ़ाया। २. कपास की फ़सल को बरसात की ज़रूरत है, इस पर से 'बरसात' पाठ पढ़ाया। ३. बच्चों

घे का प्रसंग उठा कर फूल के पौधों के सम्बंध से 'बापू का बाग' पाठ लिया। ४. उद्योग के साधनों पर दो-दो सरल श्रुतलेख लिखवाये। ५. उन्हीं पर प्रश्नोत्तर र आत्म-प्रकाशन का अभ्यास किया गया। ६. बच्चों ने अपने सूत से चाबुक बनाया। सके बाद बच्चों को 'घोडा-घोडा' यह कविता सिखायी और 'घोडा-घोडा' खेल ी खेला गया। ७. 'चलो अब बिनौला बोयें' यह गीत अभिनय के साथ सिखाया और बच्चों को अपने-अपने घर पर कपास बोने के लिए प्रोत्साहित किया। ८. कपास रेशम का सवाल उठा कर 'चीन देश का पहला बादशाह हांगटी के अष्टप्रधानों का दरबार' यह नाट्य खेला गया।

गणित—१. रोज़ काती हुई पूनियों की संख्या स्लेट पर लिखना, सुबह की पूनियाँ + दोपहर की पूनियाँ—कती हुई पूनियाँ=बचत पूनियाँ। इस तरह जोडना और घटाने का अभ्यास किया गया। २. इसी तरह रोज़ के सूत के तारों की संख्या स्लेट पर लिखना और सुबह के तार + गति के तार = कुल तार इस तरह जोड़ लगाना। ३. अपने-अपने सूत का वज़न करना। ४. पूनी की ७-७ आदि के गुट्ट से गिनती सिखाना। ५. कते हुए तारों से २ अंकों का जोड़ और १ अंक की बाकी लेना। ६. चरखे का परेता दिखा कर रेखा-गणित का वर्ग- चतुर्भुज की आकृति की पहिचान। ७. रुपया और आना सूत का वज़न कर सिखाना। ८. ऊपर की बातों पर मौखिक गणित लेना।

समाज—विज्ञान—कातने की जगह साफ़ करना। २. दस्तकारी का सामान ठीक तरह से काम में लाना और काम होने पर निश्चित जगह पर साफ़ कर ठीक रख देना। ३. हाथ साफ़ धोकर सूत कातना। ४. घर के काम में लाये हुए पानी से कपास के पौधों को बढ़ाने का काम लेना। ५. लपेटा बनाने वाले गाँव के बढ़ई लोगों के काम का अवलोकन किया गया। ६. कपड़े के सिलसिले में रेड इंडियन लोगों की कहानी ली गयी। ७. संक्रांति के दिन मूल--उद्योग के साधनों की पूजा की गयी।

साधारण—विज्ञान—१. बढ़े हुए नाखूनों से सूत कातने में दिक्कत होती है, इस सिलसिले में बच्चों को नाखून काटने को कहा गया। २. कपास के पौधे का निरीक्षण किया और पौधों से कपास चुनी। ३. गोबर के खाद का कपास की फ़सल के लिए उपयोग, इस सिलसिले में गोबर के खाद का ज्ञान दिया।

चित्रकला—लपेटा का चित्र खिंचवाया।

लोणी (पूना)

कताई—१. इस माह में बच्चों ने शास्त्रीय तरीके से कपास साफ़ किया। २. बच्चों को धुनना पहले ही दफ़ा सिखाया; धुनने के काम में आनेवाली चीज़ों के नाम

बतायें; उनकी किस तरह पकड़नी चाहिए, किस हाथ में पकड़नी चाहिए; गोटी... हाथ में पकड़ा जाय, धुनाई का सामान कहाँ रक्खा जाय, रूई चटाई पर किस... बिछाई जाय आदि धुनने के बारे में बातें बतायीं। ३. पूनी बनाना बच्चे पहले... जानते थे, उन्हें पूनी अच्छी बनाने के लिए समय समय पर सूचनाएँ दीं। ४. त... पर कातने के १३ से २६ तरीक़ों से कताई की गयी, ये तरीके इस माह में नये सि... गये। ५. मुरी अभी तक बच्चे अच्छी तरह नहीं लगा सकते थे इसलिए बच्चों को... लगाना सिखाया।

कताई के साथ अन्य विषयों का समवाय—

मातृभाषा—१. सूत का कपड़ा बनता है इस पर से 'दिनू की पोशाक', 'राष्ट्रीय झंडा' पाठ पढ़ाये। २. धुनाई और कपास का खेत इन विषयों पर ... रचना ली गई। ३. 'चरखा-गीत' यह कविता सिखाई।

गणित—कताई-धुनाई के काम के सिलसिले में ४०१ से ९९९ तक ... २ से ९ तक के पाढ़ों पर हिसाब, छोटी-बड़ी संख्या की पहचान, सरल जोड़... बाकी का काम लिया।

समाज-विज्ञान—अच्छा सूत कातने के लिए कपास से कचरा अलग करना चाहिए... सिलसिले में जहाँ जहाँ हम काम करते या बैठते-उठते हैं, वह सब जगह साफ... की ज़रूरत बच्चों को बतलायी और खेलने का मैदान, रास्ता तथा क्लास का ... कर लिया। २. कताई के उद्योग से शरीर को व्यायाम मिलता है, इस पर से... कताई में हम ऊब जाते हैं तब खेल खेलना चाहिए; खेल से शरीर को व्यायाम मिल... यह बच्चों को बताया और कवायद और खेल लिये।

साधारण-विज्ञान—बिनौले बो कर कपास की खेती की जाती है, इस सि... सिले में मिर्च, भटा, टमाटर के पौधे क्यारियों में लगवाये। इसी तरह कपड़े के ... जिस तरह कपास उपयोगी है, उसी तरह भोजन के लिए मिर्च, भटा, टमाटर ... उपयोगी हैं यह बात बच्चों से कहायी।

चित्र-कला—खादी की टोपी का चित्र खिंचवाया।

उंदीरखेडें (खानदेश)

कताई—बाईं जाँघ पर सूत काता। तकली पर कातने के भिन्न-भिन्न ... बच्चों को दिखाये और कौनसा आसन ज्यादा सुभीते का है, यह बताया।

कताई के साथ अन्य विषयों का अनुबन्ध—

मातृभाषा—कपास की खेती के अनुरोध से 'पाठशाला का खेत' यह पाठ पढ़ाया। बच्चों से तकली का वर्णन लिखवाया। 'कपास का पौधा' इस विषय पर बातचीत और संभाषण किया गया। पौधे की ऊंचाई, पत्तों का आकार, फूल का रंग तथा कपास चुनने के बारे में खास कर संभाषण किया गया। बच्चों को 'मुर्गी को बिनौला मिला' यह कहानी सुनाई।

गणित—सुबह के तार और दोपहर के तार का हिसाब कराया। उस पर से जोड़-बाकी का अभ्यास कराया। गज़, तार, कली और लट्टी ये पैमाने सिखाये और उस पर सरल हिसाब कराये।

समाज-विज्ञान — कपड़ों के सिलसिले में 'एस्किमो' की कहानी पढ़ाई।

संगीत—कातते वक्त सरल गाने सामूहिक तौर पर गाने का अभ्यास कराया गया।

सेवाग्राम (वर्धा)

कताई—तकली पर कातने की पहली और तीसरी चौकड़ी का अभ्यास किया गया। दाहिने और बाएँ हाथ की कातने की गति देखी गयी। बच्चों ने कपास के खेत से कपास चुन कर लाया। इसी कपास को हाथ-ओटनी पर बच्चों ने ओटा। उँगलियों से भी कुछ कपास के बिनौले अलग किये। तीसरे-चौथे दर्जे के बच्चों ने धुनी हुई रूई की पूनी बनाई।

साफ़ कपास चुनना चाहिए। ख़राब और कचरा कपास चुनने से आगे चल कर सूत ख़राब निकलता है, कपास में कीड़ा का खाया हुआ ढोंढा न चुना जाय आदि बातें कपास चुनने के सिलसिले में बच्चों को बतायी गयीं। ओटते समय बच्चों को हाथ-ओटनी के छड़, बेलन आदि हिस्सों की जानकारी दी। साधन न हो तो भी हम सिर्फ़ उँगलियों से बिनौले निकाल सकते हैं, इस तरह से निकाली हुई रूई हाथ-ओटनी की रूई से ज्यादा अच्छी होती है, यह बात बच्चों को बताई।

मातृभाषा—कताई सम्बंधी २ वाक्य काले तख्ते पर लिख कर बच्चों से वाचन और लेखन लिया। कपास चुनना, ओटना और धुनना इन विषयों पर संभाषण और प्रश्नोत्तर लिये।

गणित—रोज़ तीन दफ़ा काती हुई पूनियाँ व तारों के बच्चों ने अपने-अपने खातों में लिखा और उनका जोड़ किया। तारों के हिसाब से जोड़ व घटाने का अभ्यास मौखिक और स्लेट पर कराया। बच्चों ने चुना हुआ कपास और ओटने के बाद निकली हुई रूई व बिनौला तौला और इस तरह सेर, छटाक व तोलों का अभ्यास कराया गया।

समाज-विज्ञान—हर शनिवार को बच्चे अपनी सभा करते हैं। हरएक बच्चा सप्ताह की कताई-धुनाई के काम की रिपोर्ट पढ़ता है और गति ज्यादा क्यों आयी या सूत खराब या अच्छा क्यों निकला? इसका कारण... इसपर सब बच्चे बहस करते हैं। रेशम के कपड़ों के सिलसिले में चीन ... भुवाँग और उनकी रानी जिसने पहले-पहल रेशम खोज निकाला, की कहानी ...

माणेकपोर (सूरत)

कताई—तकली पर दाहिने हाथ से कातने का अभ्यास लिया। बायें ... कातना सिखाया। कातते समय योग्य आसन पर बैठाया गया और राख ... कराया गया। जाँघ, पिंडली और पाँव के तलवे पर कातने का अभ्यास कराया। सूत की समानता काली पट्टी पर सूत लपेटकर जाँचना बताया और मोटा ... सूत नजर से पहचानने का अभ्यास कराया। एक-सा और मजबूत सूत कातने ... सूचनाएँ दीं। तकली के ऊपर एक से डेढ़ फुट लंबा तार रखने को बताया। ... से कस निकालना सिखाया। तकली पर कुकडी ठीक भरने को सिखाया। ... की तरफ ध्यान दिया। वज़नदार तकली भारी घूमती है, इसका ज्ञान दिया।

मातृभाषा—तकली की कविता सिखायी।

गणित—बच्चे अपने-अपने तार स्लेट पर लिखते हैं। सबेरे के तारों ... तार कितने कम ज्यादा हैं, निकालते हैं। पूरे दिन के तारों का जोड़ करते हैं। ... सब बच्चों के तारों को जोड़ते हैं। दो बच्चों के तारोंपर से जोड़-बाकी ... कराया गया। तार की लम्बाई के सिलसिले में गज़, फुट, इंच के पैमाने बताये। अपने एक दिन के तार तथा आठ दिन के तारों का जोड़ करते हैं। बच्चों की ... बना कर उन टोलियों के तारों को जोड़ते हैं और सबेरे के तारों से दोपहर के ... कम या ज्यादा हैं, निकालते हैं। इसी तरह एक दिन के तथा आठ दिन के तारों ... निकाल कर घटाने का अभ्यास किया गया। इस तरीके से हज़ार तक संख्या ... और वाचन लिया और दो अंकों की जोड़ व घटाने का अभ्यास कराया।

कतारगार (सूरत)

कताई—दाहिने हाथ से तकली पर कातने का अभ्यास कराया और बायें ... कातना शुरू किया। धुनी हुई रूई में से १९४ तोले पूनियाँ बनाई गईं।

गणित—बच्चे हर रोज़ के कते हुए तार और पूनियों की लिखते रखते हैं। अपने कताई के साधन तकली और लपेटा की लम्बाई नापी और तार की ...

सम्बंध से गज़, हाथ, फुट व इंच का अभ्यास किया। कताई के साधनों की कीमत के सिलसिले में रुपया, आना, पाई को सिखाया। रोज़ के तारों की लिखतों से दो अंकों के जोड़ने और घटाने का अभ्यास लिया।

सामान्य-विज्ञान—उद्योग के लिए शरीर और हाथ-पैर सबल और तन्दुरुस्त होने चाहिए; इस सिलसिले में आरोग्य और स्वास्थ्य की बातें बताईं।

ऊपर का विवरण देखने से हमें पता चलता है कि हरएक स्कूल के शिक्षक ने अपने-अपने तरीके से अपनी अपनी शक्ति के अनुसार कताई के इर्दगिर्द में दूसरे विषयों की शिक्षा देने की कोशिश की है।

शिक्षकों की कठिनाइयाँ

बुनियादी तालीम के प्रयोग का यह एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। इसलिये बुनियादी तालीम के पाठ्यक्रम को अमल में लाने में शिक्षकों की क्या कठिनाइयाँ होती हैं, उन्हें हमें समझने की कोशिश करनी चाहिए। जहाँ तक हम समझ पाये हैं शिक्षकों की दिक्कतें खास करके दो हैं:—एक बुनियादी दस्तकारी में उन्हें काफ़ी ज्ञान और कुशलता नहीं रहती है, इसलिए शिक्षा के साधन के रूप में उसका वे पूरा पूरा उपयोग नहीं कर सकते। दूसरा उनकी मदद और मार्गदर्शन के लिये काफ़ी साहित्य उनके पास नहीं रहता।

शिक्षा के क्षेत्र में कोई भी नया रास्ता ढूँढ़ने की कोशिश में ये दिक्कतें लाज़िमी हैं। शिक्षकों की जिस पहली टोली से काम शुरू किया गया दस्तकारी के काम से उनका बिलकुल परिचय नहीं था, सामान्य ज्ञान में भी कुछ कमी थी; लेकिन हमें प्रयोग शुरू करने की जल्दी थी इसलिए बगैर पूरी तालीम दिए ही उन पर इस नई तालीम के मुश्किल प्रयोग शुरू करने की भारी जिम्मेवारी सौंपी गई। ट्रेनिंग स्कूलों के लिए भी दस्तकारी के ज़रिए तालीम देने के लिए शिक्षक तैयार करना एक बिलकुल नया काम था।

बुनियादी दस्तकारियों का शास्त्रीय अभ्यास—इसलिए आज बुनियादी तालीम के काम करनेवालों के सामने सब से पहिला काम यह है कि शिक्षा के साधन की हैसियत से दस्तकारियों का शास्त्रीय अध्ययन किया जाय। यह काम ट्रेनिंग स्कूलों में ही ठीक तरह हो सकता है। ट्रेनिंग स्कूलों को इस काम में मदद पहुँचाने के लिए मई १९४० में तालीमी संघ ने बुनियादी दस्तकारी समिति कायम की। इस कमेटी में पिछले दो सालों के अनुभव की रोशनी में पहले तीन दर्जों के लिए कताई के पाठ्यक्रम में कुछ सुधार किए हैं और शिक्षकों के लिए विस्तार से कताई का पाठ्यक्रम तैयार किया है। कताई के भिन्न भिन्न पहलुओं के शास्त्रीय विकास का काम हाथ में लिया गया है।

कताई के गणित के बारे में दो किताबें प्रकाशित की गई हैं और तैयार हो रही हैं। के यन्त्र शास्त्र का पाठ्यपुस्तक भी तैयार हो रहा है। ट्रेनिंग स्कूल और स्कूलों में कताई की लिखतें (रेकार्ड) रखने के लिए और कताई में तरक्की के लिए तरीके खोजे जा रहे हैं। कताई बुनाई की दस्तकारी के सिलसिले में जितने भाषिक शब्द काम में आते हैं उनका कोष तैयार करने का काम भी हाथ में लिया गया। लेकिन तालीमी संघ की यह कोशिश कारगर तभी हो सकती है जब कि ट्रेनिंग स्कूल बुनियादी स्कूलों का पूरा सहयोग मिले।

साहित्य की तैयारी–शिक्षकों की मदद के लिए तीन किस्म के साहित्य मालूम पड़ते हैं। एक तो बुनियादी दस्तकारियों के भिन्न भिन्न पहलुओं के बारे में दस्तकारी के इर्दगिर्द में पढ़ाई के तरीके के बारे में शास्त्रीय साहित्य, दूसरा शिक्षकों के ज्ञान भण्डार बढ़ाने के लिए विज्ञान, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र आदि विषयों की सरल पुस्तकें और तीसरा बच्चों की पढ़ाई की किताबें। ऐसा साहित्य का थोड़े से समय में बनना मुश्किल है। इसे तो ट्रेनिंग स्कूल और बुनियादी स्कूलों में अनुभव के आधार पर सावधानी के साथ धीरे धीरे तैयार करने की जरूरत है। यह एक आशा का लक्षण है कि बुनियादी तालीम का एक केन्द्र पाठ्यक्रम को अमल में लाने के दौरान में काफ़ी साहित्य बनाने की कोशिश कर रहा है।

लेकिन हम यह नहीं माने कि साहित्य के अभाव से निरा नुकसान ही है। हमारे शिक्षक और बच्चे छपे हुए शब्दों के इस तरह गुलाम हो गए हैं कि हम आशा कर सकते हैं कि किताबों की कमी से शायद उनमें सोचने की ताकत आ जाए हो। इसके अलावा जब बच्चे और शिक्षक यह समझेंगे कि एक साथ मिल कर एक साहित्य की रचना कर रहे हैं उनकी पढ़ाई में एक नया आनन्द और आत्मसम्मान होगा। कश्मीर की रिपोर्ट यह कहती है—

"जो एक सौ किताबें शिक्षकों ने खुद तैयार की हैं और जिन्हें अपने हाथ के चित्रों से सुशोभित किया है, बच्चे दूसरे क्लासों की अलमारियों में भरी हुई किताबों से कहीं ज्यादा रस से पढ़ते हैं।"

चम्पारण के बुनियादी स्कूलों के एक शिक्षक शिक्षकों की कठिनाइयों के बारे में यह लिखते हैं—

"आज बेसिक स्कूल के बच्चों के पास पढ़ने लायक किताबें नहीं हैं। बिना पढ़े उन्हें सन्तोष नहीं होता। लेकिन जब से उन्हें यह मालूम हुआ है कि

तालीम के लिए अभी किताबें बनी नहीं हैं, जो बनेंगी सो उन्हीं की रचनाओं के आधार पर बनेंगी तब से उन्हें अपने काम में विश्वास आने लगा है, किताबों की कमी खटकती नहीं है व सन्तोष बढ़ रहा है। वे समझते हैं कि किताबें तो वे खुद बनाते जा रहे हैं।"

बुनियादी तालीम के शिक्षक—शिक्षा की कोई भी सृजनात्मक योजना में विद्यार्थियों के साथ साथ शिक्षकों का भी विकास होना लाज़िमी है। इस लिये जब कोई भी नई शिक्षा की योजना की जाँच की जाय उसकी सफलता की कसौटी बच्चों के विकास के साथ साथ शिक्षकों के विकास पर भी निर्भर है। इसलिए यह जानने की कोशिश होनी चाहिए की इस नए प्रयोग से शिक्षकों का कहाँ तक विकास हुआ है।

इस विषय में भिन्न भिन्न केन्द्रों से जो सूचनाएँ मिली हैं वे ध्यान देने योग्य हैं।

कश्मीर—जहाँ तक शिक्षकों का सम्बन्ध है यह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि इस नई योजना का शिक्षकों के अपने काम के बारे में अच्छा असर पड़ा है। वे ज्यादा सजग और विचारशील बने हैं और पहले से ज्यादा ज़िम्मेदारियों को समझते हैं। और शिक्षा को जीवन और बच्चों की रुचि के नज़दीक लाने की कोशिश करते हैं।"

विजय विलामन्दिरों के शिक्षकों ने जैसे पहले हम कह चुके हैं काम के दौरान में ही ट्रेनिंग हासिल की। शिक्षकों में जो परिवर्तन हुए वे इन शब्दों में बयान किए गए हैं। "शिक्षक तमाम दिन बहुत खुशी से काम करते हैं, उनका साधारण ज्ञान बढ़ गया है बाल मनोविज्ञान में अन्तर्दृष्टि भी विकसित हो रही है और जीवन का दृष्टिकोण बदल गया है। हाथ के काम का महत्त्व भी समझने लगे हैं।"

बुनियादी स्कूल और समाज—बुनियादी शिक्षा के प्रधान उद्देश्यों में से एक है—अपने गाँव का अधिक अच्छा नागरिक बनने में बढ़ते हुए बच्चे को मदद करना। इस शिक्षा-योजना को ठीक तरह से अमल में लाने के लिये यह जरूरी है कि स्कूल और समाज के जीवन में नजदीक का सम्बन्ध हो। अब यह पूछना जरूरी है कि जो बुनियादी स्कूल आज चल रहे हैं उन में किस हद तक इस उद्देश्य की पूर्ति होती है?

अधिकांश बुनियादी स्कूलों का कार्य ऐसे वातावरण में शुरू हुआ जब कि उनके आसपास का समाज उदासीन या विरोधी था। औसत दर्जे के ग्रामवासी का रुख गाँव के स्कूल के प्रति हमेशा ही उदासीनता से भरा हुआ रहा है। तथापि यह आमतौर पर अनुभव किया गया है कि जहाँ-कहीं भी स्कूलों में अच्छा काम हुआ है और बुनियादी पाठ्यक्रम को चलाने की सच्ची कोशिश की गई है, वहाँ यह उदासीनता और विरोध धीरे

धीरे सहानुभूति और सहयोग में बदल गया है। बिहार के बुनियादी स्कूलों का इस परिवर्तन का एक स्पष्ट उदाहरण है।

बिहार में यह प्रयोग बिलकुल प्रतिकूल परिस्थितियों में शुरू हुआ था। जो चुना गया गया था वह ख़ास तौर से पिछड़ा हुआ था। मतलबी लोगों ने इन स्कूलों के बारे में तरह तरह की बुरी अफ़वाहें फैलाने में गाँववालों के अन्धविश्वासों का लाभ उठाया। इस लिये महीनों तक बच्चों के माता-पिता और संरक्षक बहुत सशंक रहे। स्कूलों में हाज़िरी भी बहुत कम रही। पहिले वर्ष के आख़िर में इन्स्पेक्टरों ने लिखा कि "यह विरोध धीरे धीरे ख़त्म हो रहा है और स्कूलों के प्रति सद्भावना बढ़ रही है।" तो भी उन्होंने यह महसूस किया कि बुनियादी स्कूलों को गाँवों के जीवन से और भी ज्यादा मिलाना चाहिये। इस उद्देश को पूरा करने के लिये उन्होंने कई तरीके सुझाए। वे तरीक़े काम में लाए गए और दूसरे वर्ष के अन्त में इन्स्पेक्टरों ने खुशी के साथ यही देखा कि समाज पर स्कूलों का असर और भी बढ़ गया है। कई जगहों पर वहाँ की जनता में उत्साह आगया है और वे स्कूलों की सक्रिय सहायक हो गये हैं। और सब और से तो प्रायः सभी जगह सहयोग का वातावरण फैल गया है।

आर्थिक पहलू--इस योजना के आर्थिक पहलू के बारे में कुछ बातें कही जाती हैं—

ज़ाकिर हुसेन कमेटी ने कताई का जो पहला पाठ्यक्रम बनाया था उसके अनुसार ३ घंटे २० मिनट रोज़ काम करने पर २८८ दिनों के वर्ष में, बीमारी तथा अन्य कारणों से गैरहाज़िरी के लिये छूट दे कर, बुनियादी दस्तकारी कताई से बच्चे की औसत कमाई पहली कक्षा में २॥=) और दूसरी कक्षा में ७) होनी चाहिये।

पाठ्यक्रम में जो मान निश्चित किया गया था वह कुछ ही जगहों में पूरा हुआ। इसका कारण यह है कि समय, कुशल शिक्षक और ठीक तरह का सामान और कच्चा माल देने के संबंध में पाठ्यक्रम में जो शर्तें रखी गई थीं वे पूरी नहीं हुईं।

बिहार के बुनियादी स्कूलों में व्यक्तिगत कमाई का सावधानी के साथ हिसाब लगाया गया था और उसका नतीजा नीचे लिखा हुआ है:—

"यदि व्यक्तिगत कमाई पर ध्यान दिया जाय तो निस्संदेह नतीजा पूरी तरह प्रोत्साहन देने वाला मालूम होगा। दूसरी कक्षा के बच्चों ने वास्तव में जितना समय दस्तकारी में लगाया उतने में उन में से २८ प्रतिशत ने पाठ्क्रम में अपेक्षित कमाई की ...

प्रतिशत, २९ प्रतिशत ने ७५ प्रतिशत से ९९ प्रतिशत तक, ३१ प्रतिशत ने ५० प्रतिशत से ७४ प्रतिशत तक तथा १२ प्रतिशत ने ५० प्रतिशत से कम कमाई की। इसी प्रकार पहली कक्षा में २७ प्रतिशत ने १०० प्रतिशत या अधिक, १८ प्रतिशत ने ७५ प्रतिशत से ९९ प्रतिशत तक, २६ प्रतिशत ने ५० प्रतिशत से ७४ प्रतिशत तक और २९ प्रतिशत ने ५० प्रतिशत से कम कमाई की। दूसरे शब्दों में, दूसरी कक्षा में ७८ प्रतिशत और पहली कक्षा में ७१ प्रतिशत बच्चों ने अपेक्षित मान के ५० प्रतिशत से अधिक कमाई की। ❀

यह बात दिलचस्पी पैदा करनेवाली होगी कि वर्ष की अधिक से अधिक व्यक्तिगत कमाई कक्षा २ में ५।) ३ और कक्षा १ में १॥।=) रही। इसके उलटे कम-से-कम व्यक्तिगत कमाई कक्षा २ में ।)४ और कक्षा १ में -)३ हुई। इसमें कोई संदेह नहीं कि यदि किसी भी प्रकार से औसत हाज़िरी अच्छी होने लगे और दस्तकारी के लिये जितना समय पाठ्यक्रम में नियत किया गया है उतना उस पर लगाया जाय तो पाठ्यक्रम के बनाने वालों की अपेक्षाएँ न केवल आमतौर पर पूरी ही होंगी, बल्कि स्कूल के बच्चों की एक खासी संख्या इन अपेक्षाओं से भी आगे बढ़ जायगी।

वर्ष भर में बच्चोंने जो सूत काता तथा इसका जो कपड़ा बुनाया गया और बाग में जो उत्पत्ति हुई इस सब के, फलस्वरूप २११२ रु० ३ आने ख़ज़ाने में जमा किए गए। बचा हुआ माल २६८ रु० ३ आने ९ पाई का था। इस तरह बच्चों के एक वर्ष के काम से कुल उत्पत्ति २३८० रु० ६ आने ९ पाई की हुई। इसमें से ५१६॥) कपास की कीमत, ५७७-)६ बुनाई की मज़दूरी और १६२≶)६ १९३९-४० के रूत की कीमत जो इस साल बेचा गया काटने पर कुल ११२४॥-)९ बचे। यह बुनियादी स्कूलों के तमाम बच्चों की एक वर्ष की असली कमाई हुई। *

❀ Basic Education in Bihar-Report on progress in 1940-41 Govt. Press, P. 37.

* इसके बाद (अप्रैल-सितम्बर १९४१) बिहार के कंसेन्ट्रेट एरिया के २७ स्कूलों की तीसरी कक्षा में सुधरे हुए पाठ्यक्रम के साढ़े पाँच महीने चलाने पर जो नतीजा हासिल हुआ है, वह यह है:—

विद्यार्थियों की कमाई सुधरे हुए पाठ्यक्रम के अनुसार, बुनियादी दस्तकारी के लिये पहली कक्षा में २ घंटे, दूसरी कक्षा में २½ घंटे और तीसरी कक्षामें ३ घंटे समय

योजना के आर्थिक पहलू के विचार के साथ बुनियादी स्कूलों में होनेवाले यश के निकास का संबंध जुड़ा हुआ है। बिहार की सरकार को छोड़कर किसी प्रान्त की सरकार ने बुनियादी स्कूलों में कते हुए सूत के निकास का कोई संतोषजनक प्रबंध नहीं किया। कुछ ग़ैर सरकारी स्कूलों और ख़ास कर आविधा के विजय मंदिर और गुरुकुल कांगड़ी में बच्चों को वस्त्र-स्वावलंबी बना देने के आदर्श पर काम हो रहा है। दूसरे ग़ैर सरकारी स्कूल अखिल भारतीय चर्खा संघ की स्थानिक शाखाओं से कपड़ा बुनवा कर अपने ही गाँवों में बेचने की कोशिश कर रहे हैं।

मध्यप्रदेश और बंबई की सरकारें अपने प्रान्तों के बुनियादी स्कूलों में कते हुए सूत के उपयोग के बारे में कोई निश्चय नहीं कर सकीं। बंबई की सरकार ने जुलाई १९४० से फ़रवरी १९४१ तक अपने प्रान्त की बुनियादी शिक्षा के बारे में जो रिपोर्ट भेजी है उसमें कहा गया है:—

"सूत के निकास का प्रश्न पूरी तरह तै नहीं हुआ और कोई निश्चित आँकड़े दिये नहीं जा सकते। करीबन ३५००) का सूत काता गया है।"

पिछले तीन सालों से हिन्दुस्थान के मुख़्तालिफ हिस्सों में बुनियादी तालीम का जो प्रयोग चल रहा है, इस रिपोर्ट में उसके भिन्न भिन्न पहलुओं का परिचय देने की कोशिश की गई है। हम यह आशा करते हैं कि इस परिचय से नई तालीम के काम करनेवालों

देना चाहिये। इस मान पर पहुँचने की कोशिशें की जा रही हैं। सुधरे हुए पाठ्यक्रम के अनुसार पहिले ६ महीनों में तीसरी कक्षा में पूरी कमाई ४-) होनी चाहिये। अनिवार्य कारणों के लिये इस में से २५ प्रतिशत निकाल देने पर अपेक्षित कमाई ३)९ होती है। ३० सितंबर को समाप्त होनेवाली पहली छमाही में २)८ कमाई हुई, जोकि अपेक्षित कमाई की ६७ फ़िसदी है। नियत मान पर न पहुँचने के कई कारण हुए। अच्छी रुई काफ़ी नियमित रूप से नहीं दी जा सकी; सत्र के पहिले आधे हिस्से में जो समय दिया गया वह ३ घंटों से कम था; सत्र भी पूरे ६ महीनों का न होकर केवल ५½ महीनों का—१५ अप्रैल से ३० सितंबर तक—रहा। इसके आतिरिक्त कुछ बच्चों की अनियमित हाज़िरी से भी औसत कम हो गई। इन कमियों की ओर ध्यान दिला दिया गया है और आशा की जाती है कि अगली छमाही में यह दूर हो जायँगी। तो भी, तीन स्कूल ऐसे हैं जिनकी औसत कमाई अपेक्षित कमाई से भी ज्यादा है। एक बच्चे की व्यक्तिगत कमाई ७) है, अर्थात् अपेक्षित कमाई की २३६ फ़ी सदी है।

का उत्साह बढ़ेगा। क्योंकि इस रिपोर्ट से इतना साफ होना चाहिए कि भिन्न भिन्न हालतों में भी इस प्रयोग के नतीजे आशाजनक रहे हैं। हम यह भी विश्वास करते हैं कि बच्चों की तालीम में जो भी दिलचस्पी रखते हैं उनके लिए इस रिपोर्ट में अध्ययन की कुछ सामग्री मिलेगी। क्योंकि यह एक ऐसे नए प्रयोग का विवरण है जो शिक्षा की पद्धति में पाठ्यक्रम में, व्यवस्था में, बच्चों के व्यक्तित्व के विकास में शिक्षकों के विकास में एक नई क्रान्ति ला रही है और जिसका आखरी ध्येय है एक नए आदर्श समाज और एक नए मनुष्य की रचना।

हिंदुस्तानी तालीमी संघ नम्रता के साथ यह निवेदन करता है कि इन तीन सालों के अधूरे प्रयोग से भी काम करनेवालों का यह विश्वास पक्का हो रहा है कि हम अपने ध्येय की ओर धीरे धीरे अग्रसर हो रहे हैं।

नई तालीम

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ का मुखपत्र

सम्पादिका

आशा देवी

तीसरा साल | सन् १९४१

लेख-सूची

लेख

लेखक-सूची

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम, वर्धा की

प्रकाशित पुस्तकें

१-शिक्षा में अहिंसक क्रान्ति (हिन्दी)	१-४-०
२-एज्यूकेशनल रिकॉन्स्ट्रक्शन (अंग्रेजी)	१-४-०
३-बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा (हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी)	०-८-०
४-एक क़दम आगे (हिन्दी, अंग्रेजी)	१-४-०
५-दी लेटैस्ट फैड (अंग्रेजी)	१-०-०
*६-मूल उद्योग कातना (हिन्दी, मराठी)	०-६-०
७-ओटना व धुनना (हिन्दी, उर्दू)	०-६-०
*८-तकली (हिन्दी, मराठी)	१-०-०
९-गत्ते का काम (हिन्दी, अंग्रेजी)	१-१-०
,, ,, (हिन्दी-सजिल्द)	१-४-०
१०-खेती-शिक्षा (हिन्दी, मराठी)	०-१२-०
११-कताई-गणित, भाग १	०-८-०
१२-कताई-गणित, भाग २	०-४-०
१३-बुनियादी तालीम के काम का तफ़सीलवार लेखा (हिन्दी और अंग्रेज़ी साथ साथ)	०-२-०
*१४-दो साल का काम (दिल्ली कॉन्फरेन्स की रिपोर्ट)	१-०-०

*इन पुस्तकों के उर्दू अनुवाद छप रहे हैं।

प्रकाशक : श्री आर्यनायकम्, मंत्री, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम, वर्धा
मुद्रक : वल्लभदास जाजू, श्रीकृष्ण प्रिंटिंग वर्क्स लिमिटेड, वर्धा।

Reg. No. I

नई तालीम

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ का मुखपत्र

सम्पादिका
आशा देवी

सम्पादक—
बद्रीनाथ वर्मा

वार्षिक : सवा रुपया
एक अङ्क : दो आना

वर्ष ३, संख्या १
जनवरी १९४२

लेख-सूची

लेख

चन्दे के बारे में सूचना

चन्दा ख़त्म होने का लेबल जिन ग्राहकों के अंकों पर हो, वे आगामी [illegible] चन्दा १।) रु० हमारे पास उस महीने की २५ तारीख़ के भीतर भेज देने की कृपा [illegible] २५ तारीख़ तक चन्दा न आने पर आगामी अंक वी. पी. द्वारा भेजा जायगा।

किसी कारणवश नई तालीम बन्द करना हो तो ग्राहकों से अनुरोध है, [illegible] उसकी सूचना हमें उस महीने की २५ तारीख़ के भीतर देने की कृपा करेंगे। वी. [illegible] **लौटा कर हमें फजूल ख़र्चे में न डालें।**

मनी-ऑर्डर भेजते वक्त या पत्र-व्यवहार में अपना ग्राहक नंबर ([illegible] ज़रूर लिखिए।

नई तालीम

भाग ४ | सेवाग्राम, १ जनवरी १९४२ | संख्या १

नई या बुनियादी तालीम।

"रचनात्मक काम के क्षेत्र में यह एक नई चीज है। लेकिन इसका भी क्षेत्र विशाल है; जिसमें बहुत से कांग्रेस के भाइयों के लिये काम करने की गुंजाइश है। इस तालीमी योजना का ध्येय है—देहात के बच्चों को आदर्श देहाती बनाना। यह योजना उन्हींको सामने रख कर बनाई गई है। इसके लिये प्रेरणा भी गाँव से ही मिली है। काँग्रेस के लोग जो नींव से ही स्वराज की इमारत खड़ी करना चाहते हैं; बच्चों को भूल नहीं सकते। विदेशी हुकूमत ने अनजान में सही लेकिन बड़े निश्चित रूप से शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों से ही शुरू किया। आज की मौजूदा इब्तदाई तालीम तो एक तमाशा है। न उसका हिन्दुस्तान के देहातों की और न शहरों की ज़रूरतों से कोई ताल्लुक है। बुनियादी तालीम हिन्दुस्तान के सब बच्चों को—चाहे वे शहरों के हों या गाँवों के—हिन्दुस्तान में जो कुछ अच्छा से अच्छा और क़ायमी है उससे जोड़ देती है। इससे उनके शरीर और मन दोनों का विकास होता है, उनका अपनी भूमि से सम्बन्ध रहता है और उनके सामने भविष्य का एक उज्ज्वल चित्र रहता है; जिसको अमली रूप देने में वह अपने स्कूल के जीवन की शुरुआत से ही हिस्सा बटाने लग जाता है। काँग्रेस के लोग अगर इस काम में हाथ लगायें तो उन्हें काफ़ी रस मिलेगा और जितना फ़ायदा उनके सम्पर्क में आनेवाले बच्चों को मिलेगा उतना खुद उन्हें भी होगा।"

मो॰ क॰ गान्धी

("Constructive Programme-its meaning and place. विधायक कार्यक्रम—उसका रहस्य और स्थान" से अनूदित)

नई तालीम का चौथा साल

इस अंक से 'नई तालीम' का चौथा साल शुरू होता है। पिछले तीन साल इसने अपनी ताकत भर बुनियादी शिक्षा में लगे भाई-बहनों की सेवा करने की कोशिश की। आगे भी ऐसा ही करने का इसका पक्का मनसूबा है। बुनियादी तालीम का काम इस समय जिस मंजिल पर पहुँचा है वह कई दृष्टियों से बड़े ही महत्त्व का है। साढ़े तीन साल पहले जब इस तालीम की बुनियाद पड़ी और जगह-ब-जगह ४. बुनियादी स्कूल खुले तो सभी लोग नए थे। किसी को इसका अनुभव न था। उनके सामने ५. बुनियादी शिक्षा का आदर्श था पर आदर्श तक पहुँचने के लिए कोई निश्चित या जाना हुआ मार्ग न था। ६. सामने एक योजना थी पर उसको काम में लाने का तरीका मालूम न था। सबके सामने अन्धकार था और उस अन्धकार में टटोल कर रास्ता निकालना था। आज वह अन्धकार पूरा-पूरा हटा नहीं है पर तीन साल के अनुभव ने हमारे रास्ते को कुछ आलोकित कर दिया है। हम अब कितनी ही बातों को साफ़-साफ़ समझने लगे हैं, अपनी राह के गड्ढों और खाइयों को देखने लगे हैं। अभी आख़िरी मंज़िल बहुत दूर ज़रूर है और ज़रा-सी भूल, ज़रा-सी गलती, ज़रा-सी गफ़लत या असावधानी से हम ठोकरें खाकर गिर सकते हैं और अपने काम को हानि पहुँचा सकते हैं। फूँक-फूँक कर कदम बढ़ाना आज भी हमारे लिए उतना ही ज़रूरी है जितना पहले था। पर पहले से आज यह फ़र्क है कि अब हम कुछ ज्यादा भरोसा, कुछ ज्यादा विश्वास के साथ आगे बढ़ सकते हैं। हमारे पास अब तजरबे हैं जो हमारी राह को रौशन करेंगे और खतरों से हमें होशियार करेंगे। अगर हमने इन तजरबों, इन अनुभवों से पूरा-पूरा और ठीक-ठीक काम लिया तो हमारी राह काफ़ी आसान हो जा सकती है और हमारी प्रगति का वेग—तरक्की की रफ़्तार—अपेक्षा कृत तेज़ हो सकती है। इसलिए आज सदा से अधिक एक के तजरबों से दूसरों को फायदा उठाने की ज़रूरत है। 'नई तालीम' का ख़ास काम, उसका विशेष उद्देश्य बुनियादी शिक्षा का काम करनेवालों के सामने स्थान-स्थान के अनुभवों, जगह-जगह के तजरबों को रखना और उनसे उनको परिचित करा कर उनके कामों में मदद पहुँचाने का प्रयत्न करना है। यह काम बहुत ही ज़रूरी है, यह तो कोई इनकार नहीं कर सकता। लेकिन इसको ठीक-ठीक करने के लिए उन सब भाई-बहनों

सहायता और सहयोग की आवश्यकता है जो अपना समय और विचार बुनियादी शिक्षा के प्रयोगों या और तरीकों से इसे बढ़ाने में लगा रहे हैं।

मुझे पूरी उम्मीद है कि आज की अपनी जिम्मेदारी की महत्ता को समझ कर वे पहले से भी कहीं ज्यादा अपना सहयोग हमें देंगे और अपने तजरबों को बयान कर, और दूसरों के तजरबों की जानकारी हासिल कर अपने काम को पूरी सफलता तक पहुँचावेंगे।

बद्रीनाथ वर्मा

नई तालीम का तीन साल का काम पूरा हुआ; चौथे साल का आरम्भ हो रहा है। तीन साल पहले जब इस छोटीसी पत्रिका की शुरुआत हुई तब, इस प्रयोग का भी पहला ही साल था। काम करने वाले कम थे, अनुभव की पूँजी थोड़ी थी, सामने का रास्ता अनिश्चित था। इसी आशा से इस पत्रिका की शुरुआत की गई थी कि इस नए प्रयोग का नया रास्ता बनाने में यह एक साधन बनेगी।

आज तीन साल के काम के बाद यह सवाल पूछने का समय आया है कि यह पत्रिका इस बुनियादी तालीम के विकास में कोई सच्ची मदद पहुँचा रही है या नहीं। क्या इसके जरिए बुनियादी तालीम के काम करनेवाले एक दूसरे को अपने अनुभव पहुँचाते आये हैं? क्या इसके पन्नों में उनकी कठिनाइयों का और सवालों का हल करने की कोशिश की जा रही है? क्या इसके जरिए एक नए तालीमी साहित्य की बुनियाद डालने का प्रयत्न किया जा रहा है?

पिछले तीन सालों में इन्हीं मकसदों को सामने रख कर 'नई तालीम' काम करती आयी है। लेकिन साथ साथ यह भी अनुभव करती आयी है कि इस तालीमी प्रयोग में एक सजीव और सक्रिय साधन बनने के लिये पूरी ताकत अभी इसमें आयी नहीं है।

इसलिये इस चौथे साल से हम पत्रिका के इस आदर्श को सामने रख कर एक नई आशा और नये उत्साह के साथ काम शुरू करते हैं। इस नये उत्साह का एक विशेष कारण यह है कि इस साल से इस पत्रिका के सन्चालन और सम्पादन में आचार्य बद्रीनाथजी वर्मा का भी सहयोग रहेगा। बुनियादी तालीम का काम करनेवाले सभी, आचार्य बद्रीनाथजी वर्मा के नाम से परिचित हैं। बिहार के राष्ट्रीय जीवन के हर पहलू में और

ख़ास करके राष्ट्रीय शिक्षा के संगठन में बद्रीबाबू एक मुख्य हिस्सा लेते आए हैं। ... में बुनियादी तालीम के प्रयोग के संगठन और विकास में भी उनका एक बड़ा हिस्सा ... एक अनुभवी पत्रकार की हैसियत से भी वे सुप्रातिष्ठित हैं। हमें आशा है कि ... सहयोग से इस पत्रिका की ताक़त बढ़ेगी, उसमें एक नये जीवन का सञ्चार होगा।

साथ ही साथ इस पत्रिका का कार्यालय भी अगले महीने से पटना ... जा रहा है। 'नई तालीम' का सम्पादन और प्रकाशन का केन्द्र बदलने का ... और भी एक उद्देश्य है। पटना के बेसिक ट्रेनिंग स्कूल और चम्पारन के बुनियादी स्कूलों में आज बुनियादी तालीम का जो काम चल रहा है, उसके दैनिक विकास के ... रोजमर्रा के सवाल और कठिनाइयों के साथ युक्त रहने से यह पर्चा अधिक ठोस बन सकेगा, ऐसी हमें आशा है।

लेकिन आख़िरी बात यह रह जाती है कि 'नई तालीम' बुनियादी तालीम का सच्चा पर्चा तभी बन सकता है जब कि बुनियादी तालीम के काम करनेवालों का ... ख़ास करके बुनियादी तालीम के शिक्षकों का पूरा-पूरा सहयोग मिले।

शिक्षा के इतिहास में एक मुश्किल से मुश्किल तालीमी प्रयोग में हम हाथ ... हुए हैं। इसके ज़रिए एक नया मनुष्य, एक नये समाज की रचना की आशा हम ... हैं। उसके लिये एक नया चित्त, एक नया दृष्टिकोण, एक नई सोचने की और ... करने की आदत, एक नया तालीमी तरीका, एक नया संगठन और एक नये साहित्य की ज़रूरत है। इस नई सृष्टि में सब के हाथ और सब के चित्त की ज़रूरत है। ... सम्मिलित प्रयत्न से जो नई तालीम विकसित होगी वही हमारी सच्ची बुनियादी ... शिक्षा होगी।

इस बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा के विकास में यह नई तालीम भी एक साधन है। हम चाहें तो इसे एक सच्चा साधन बना सकते हैं। इस चौथे साल के प्रारम्भ में ... बुनियादी तालीम के काम करनेवाले सभी से यह प्रार्थना करती हूँ कि आप ... बढ़ाइए कि नई तालीम अपना काम पूरा करे, शिक्षकों का सच्चा साथी और बुनियादी तालीम का एक सच्चा साधन बने।

आशादेवी

पटना ट्रेनिङ्ग स्कूल में एक साल का काम

(जनवरी १९४१ में पटना ट्रेनिंग स्कूल में एक साल की तालीम के लिये ३० विद्यार्थी भर्त्ती किये गये थे। इनकी बुनियादी दस्तकारी, कताई-धुनाई और खेती-बागवानी थी और सहायक उद्योग गत्ते का काम। दिसम्बर १९४१ में इनकी ट्रेनिंग पूरी हुई। बुनियादी स्कूलों के पहले तीन दर्जों को पढ़ाने के लिये ये शिक्षक योग्य समझे गये हैं। इस साल में उन्होंने क्या काम किया और बुनियादी तालीम के प्रयोग के लिये अपने को किस तरह तैयार किया; इसका एक संक्षिप्त विवरण एक गुरु-छात्र (प्युपिल-टीचर) के अपने शब्दों में दिया जाता है। —सं०)

दूसरी जनवरी १९४१ से २३ दिसम्बर १९४१ तक पटना बुनियादी ट्रेनिंग स्कूल में किये कामों का संक्षिप्त विवरण :—

काम के दिन

२ री जनवरी से २३ दिसम्बर तक कुल ३५६ दिन होते हैं। इसमें निम्न लिखित तातीलों तथा कामों के कारण स्कूल बंद रहा।

त्यौहारिक तातीलें	७८ दिन
मैट्रिक परीक्षा	५ ,,
स्काउट ड्यूटी	५ ,,
लार्ड बेडेन पावेल की मृत्यु	१ ,,
दिल्ली यात्रा	११ ,,
मधुबनी यात्रा	५ ,,
कैजुयल लीव	३ ,,
रविवार	५१ ,,
स्काउट ट्रेनिंग कैम्प	७ ,,
कुल	१६६ दिन
अतः कुल काम के दिन	१९०

दस्तकारी का काम—कताई के कुल घंटे २४७½; ओटाई, तुनाई तथा धुनाई के कुल घंटे १०० । गत्ते के काम में कुल ५४½ घंटे तथा कृषि के काम में ५४¾ घण्टे समय लगा। अतः हमने सब मिलाकर ४५६¾ घंटे समय लगाया।

कताई विज्ञान में निम्नलिखित काम हुए:—

रूई की सफ़ाई, खोलाई, तुनाई, ओटाई, धुनाई तथा कताई। वर्षभर में कताई विज्ञान के किन किन क्रियाओं में कितना समय लगाया इसका ब्योरा निम्नलिखित है।

क्रिया	समय	सामान वज़न तोलों में	मज़दूरी
झूल	८ घंटे	—	—
ओटाई	२ ,,	२० तोले कपास	—
तुनाई	११½ ,,	२५ तोले	—
धुनाई	७८½ ,,	२११ तोले	४।।।)
कताई	२४७½ ,,	१३४½ तोले	
कुल	३४७½ ,,	३९०½ तोले	४।।।)

गत्ते के काम में ५४ घंटे ३० मिनट लगे। और इसमें मेरी कुल मज़दूरी ३ रु. ११ आ. ६ पा. हुई। इसमें निम्नांकित चीज़ों को हमने बनाया:-

१ एकसरसाईज़ बुक पर जिल्द बांधना।
२ मार्बुल पेपर (पानी रंग का)।
३ मार्बुल पेपर (तेल रंग का)।
४ वर्गाकार तथा आयताकार लिफ़ाफ़ा।
५ रेशमी जिल्द बनाना।
६ पोर्ट फोलियो।
७ बुक कैरिअर।
८ ब्लॉटिंग पैड।
९ ऑफिस फाइल।
१० परमनेन्ट कॅलेण्डर।
११ फैन्सी ट्रे डीरा।
१२ ढक्कन सहित आयताकार बक्स।
१३ पेन्सील ट्रे।

खेती बागवानी—तीसरी दस्तकारी खेती-बागवानी है। इसमें मैंने ५४ घंटे ४५ मिनट काम किया। इसके अन्दर अमली काम कुल १८ घंटे हुआ। बाकी घंटे ४५ मिनट में पर्य्यवेक्षण, सिद्धान्त की बातें तथा कृषि के तरीके बतलाए गए। अतः १८ घंटे अमली काम की मज़दूरी ९ आना हुई। कृषि में हमने निम्नांकित बातें तथा विषयों का अध्ययन किया।

पर्य्यवेक्षण तथा सैद्धान्तिक—(१) हलों का पर्य्यवेक्षण, (२) पंजाब हल, बिहार हल, बिहार कल्टीवेटर, बोरिंग का कुआँ, फार्म का खाका, पौधों के विषय में ज्ञान, चना, मटर, अरहर, गेहूँ, तीसी इत्यादि का पर्य्यवेक्षण। कम्पोस्ट कैसे बनता है, पत्तियाँ, पुआल, पतहुल, जल्द सड़ने वाली चीजों के द्वारा तैयार करना, गोबर से उसे ढक देना, साइप्रस के पौधों को पटाना, विनोवर, नैरो क्रेजर, लिवर पेग हॅरो, हॉर्स हो क्या है, कैसे बने तथा किस काम में आते हैं उसकी जानकारी हम लोगों को हुई। स्कूल की फुलवारी में सभा, भिण्डी, तरोई इत्यादि के पौधों को रोपना, तथा उनकी निकाई, कोड़ाई और पटवन का काम करना। रब्बी तथा खरीफ़ पौधों की विशेष जानकारी। सैद्धान्तिक बातों में पृथ्वी की बनावट, हवा, वायुमंडल, मिट्टी की प्राकृतिक बनावट, मिट्टी, वह पौधों के किस काम में आती है; पौधों की उपज के लिए आवश्यक चीज़ों की जानकारी हुई।

कताई विज्ञान

ओटने, कपास साफ़ करने, तुनने और धुनने के सम्बन्ध के साथ साथ कपास तौलने, सुखाने, ओटने, साफ करने, खोलने, फिरकी बनाने, कंघी करने, रेशा निकालने, रेशा सीधा करने, तुनने, समानान्तर करने, धुनने, आसन लगाने, धुनकी पकड़ने, गुठला पकड़ने, झूल करने, रूई उड़ाने, रूई चढ़ाने, पोल समेटने, पूनी बनाने, हाथ घुमाने, पूनी नापने, बन्डल बनाने इत्यादि का ज्ञान प्राप्त किया। साथ ही साथ इन क्रियाओं के करते वक्त धुनकी सजानें में मोढिया, ककिड़, चढ़ाने में, तांत कसने, आत्मा लगाने, डंडी बांधने, जोती लगाने, पट्टा बांधने, कमान बांधने, झूल डोरी लगाने के कामों की पूरी जानकारी हो गई है।

तकली और चरखे पर कातते समय तकली नचाने, चरखा पकड़ने, पूनी पकड़ने, नच और तकुए में पूनी लगाने, ऐंठने, पूनी खिंचने, सूत निकालने, घोटने, लपेटने, कुकड़ी बनाने, सांधने, जोड़ने, परेतने, लपेटने, तार गिनने, सूत बांधने, लच्छी और गुन्डी बनाने, सूत को कपड़े से भिगोने, माल और अमाल लगाने, चमरख बनाने, कण्डी कीटनें और लगाने, चकती और पच्चड़ लगाने, माल तैयार करने की क्रियाएँ हम लोगों ने सिख ली हैं।

इसके अतिरिक्त सूत का अंक, कस, मज़बूती, समानता, निकालने की भी जानकारी हो गई है। तकली, तकुवा, धुनकी की जाँच, उनकी फिटिंग, तेल देना माल अमाल

लगाना, राल बनाना, राल लगाना, धनुष तकुवा, बिहार चरखा, यरवडा चक्र के पुर्जों के नाम, कीमत, आविष्कार की जगह, उनका इतिहास का भी ज्ञान हो चुका है। अपेक्षित, फलित, वास्तविक गति निकालना; रूई क्यों फटती है, कताई के भिन्न भिन्न आसनों से क्या लाभ, गति देने से कितना चक्कर, कपास, ढेढ़ी की पहचान, ढेढ़ी रखने का तरीका, कपास की सफाई, तुनाई, धुनाई, लेखे रखने का महत्त्व, धुनने का आदर्श, पोल जाँचना, तनी या ढीली ताँत, उसकी थरथराहट, कनी पड़ना, पूनियाँ क्यों पड़ती हैं, इनका कारण क्या है तथा इनसे कताई धुनाई में कौनसा असर पड़ता है, इनका सुधार कैसे हो सकता है, इन सबों की पूरी पूरी जानकारी हमें हो गई है। कपास से बिनौले अलग करने की क्रिया को ओटना कहते हैं। सलाई पर ओटनी, हाथ ओटनी, पटरी, हथेली सलाई, बोंड़ी, बेलन, छूड, लाट, कना, पिढ़िया वगैरह।

कृषि

पटना ट्रेनिंग स्कूल में कृषि के काम के लिए अपना बाग है तथा गवर्नमेंट एक्सपेरिमेन्टल कृषि फार्म मीठापुर में है। स्कूल की फुलवारी में हम लोगों में से प्रत्येक पाँच छात्रों को एक-एक प्लाट दे दिया गया है। जिसका रकवा २२'×१५' है। हम लोग कभी कभी उस में अमली काम करते हैं। पर्य्यवेक्षण या और कुछ अमली काम को करने के लिए मीठापुर फार्म में भी जाते हैं। इसके लिए हफ्ते में ३ घण्टे समय मिलता है। अपने प्लाट को नाप कर उसमें तरह तरह की क्यारियाँ बनाते हैं। क्यारियों के बनाने में, ज़मीन को कोड़ने, ढेलों को फोड़ने, ज़मीन बराबर करने, उस में खाद मिलाने और ढाल तयार करने की ज़रूरत पड़ती है। क्यारियों के बनाने के बाद हम लोग उन में बीज या पौधे आवश्यकतानुसार लगाते हैं, पानी छिड़कते हैं, उनको बारम्बार पटाते और निकौनी करते हैं। गरमी और अधिक नमी से पौधों को बचा रखने का उपाय करते हैं। पौधों की देखभाल करते हैं। यदि पौधों में किसी प्रकार के कीड़े लग गये तो उन्हें दूर भगाने की कोशिश करते हैं। चिड़ियों और जानवरों से अपनी फसलों की रक्षा के भी उपाय करते हैं। दूसरे साल के लिए बीज सुरक्षित रखते हैं। कीमती पौधों को गमले में हिफ़ाजत से रखते हैं। बाग़वानी के साधन तथा उपयुक्त प्रक्रियाओं पर हम लोग आपस में बातें किया करते हैं तथा रस्सी, खुरपी, हँसिया, झँझर, बाल्टी, मुंगरी, चटाई, घास की टोकरी, खाद, कम्पोस्ट का गड्ढा, बीज का ...

चारा, तरह तरह के पौधे, सन्दूक, दवाइयाँ, पिचकारी और फ्लिट, गमला, तागा, बाँस इत्यादि की उपयोगिता जानते हुए उनपर बातचीत किया करते हैं। मधुमक्खी पालन, पशुपालन, प्रकृति से सम्बन्ध रखने वाली कृषि की कहावतें इत्यादि के बारे में बातचीत की। स्कूल के संग्रहालय में तरह तरह की पत्तियाँ, फूल, बीज, छाल और जड़ें संग्रह की। बरसात के पहले पानी नहीं मिलने से घास झुलसी हुई थी। वर्षा होने से धान की रोपनी हुई। सभी पौधे लहलहा उठे। बरसात में साँप और छोटे छोटे कीड़े नज़र आते हैं। साँप कीड़ों को खाता है। ये कीड़े पौधों को नुकसान पहुँचाते हैं। इसलिए गैर-जहरीले साँप किसानों के सहायक हैं। ज्यादा पानी पड़ने से, घास उपज जाने से और कड़ी धूप लगने से पौधों का रंग पीला हो जाता है। पौधों की नाक पत्ती है। पौधा अपना खाना जड़ से लेता है। पेटिया, झकड़ा और मूसला तीन तरह की जड़ें होती हैं।

बरसात शुरू होते ही हमलोगों ने बोरा, रामतरोई, सेम, लौकी, फ्रेन्च बीन और साग के बीज खेत में डाल दिए। बैंगन और फूलगोभी, गाँठ-गोभी के पौधे लगाए।

सरकारी फार्म में नये नये ढँग के हलों, जोतने, कोड़ने के औज़ारों, अनाज चालने, फटकने, ओसाने, दौनी करने, हेंगा देने के औज़ारों को देखा, उनपर नोट लिखा तथा उनको थोड़ी थोड़ी देर के लिए काम में लाकर देखा। साथ ही हमने खेती सम्बन्धी सैद्धान्तिक ज्ञान भी प्राप्त किया। मिट्टी की बनावट, फसलों के रोग और शत्रु, पशु-पालन, आबहवा का खेती पर प्रभाव, खेती के आर्थिक शास्त्र, खेती सम्बन्धी यंत्र, तथा बागों की सजावट आदि के ज्ञान प्राप्त किये। मौसिमी फूल कब और किस मौसिम में लगते हैं, उनके लगाने का तरीका, पानी देने के तरीकों का पूरा पर्यवेक्षण किया। जैसे:—डहेलिया, कौर्नफ्लावर, एस्टर, नस्टरासियम, कैन्डीटफ्ट, मरवेनस, पिन्क, ल्युपिन, स्नैपड्रैगन, बरबेना, स्वीट पी, सीनेरेरिया, कौसमस, मेरीगोल्ड इत्यादि।

गत्ते का कामः—

ज़ाकिर हुसैन कमिटी की रिपोर्ट के द्वारा वही दस्तकारी बुनियादी दस्तकारी मानी जा सकती है जिसके द्वारा हम सभी विषयों को जान सकें और उससे हमारा सर्वाङ्गीण विकास हो सके। ऐसी बात हम कृषि और मूल उद्योग कातने-बुनने में पाते हैं। उन्हीं उद्योगों के द्वारा अन्न तथा पहनने के लिए कपड़ा मिलता है। इसी प्रकार गत्ते, लकड़ी और धातु

का काम जानना हमारे लिए अत्यन्त ज़रूरी है। लेकिन ७–८ साल के बच्चे और धातु से उपयोगी चीज़ें बनाने के लिये ज़रूरी औज़ारों का इस्तेमाल नहीं कर सकते। इसलिये लकड़ी और धातु का काम शुरू करने के पहले, बच्चे दो वर्ष तक कागज़ काटना और गत्ते की उपयोगी चीज़ें बनाना सीखते हैं। गत्ता लकड़ी से नरम है; इसको एक सात साल का बच्चा जिस तरह चाहे काट सकता है। दो वर्ष तक यह काम करते करते बच्चों के मानसिक विकास के साथ-ही-साथ उनकी शारीरिक उन्नति भी होती है। इस काम के करने से औज़ारों को अच्छी तरह पकड़ने तथा प्रयोग करने की आदत उन्हें पड़ जाती है और उनके हाथ मज़बूत हो जाते हैं। हम लोगों को उन्हीं बच्चों को पढ़ाना है, इसलिए हमें भी उन सब चीज़ों का ज्ञान परमावश्यक है।

इस दस्तकारी के लिए बहुत कम औज़ारों की ज़रूरत होती है। कुछ औज़ार हर बच्चे के लिए चाहिए और कुछ ऐसे भी हैं जिनसे कई लड़के मिलकर काम कर सकते हैं। प्रत्येक बच्चे के लिए एक-एक चाकू, लकड़ी का स्केल का होना अनिवार्य है। एक कैंची से दो लड़कों का काम चलता है। इसके अलावे एक एक स्क्वायर, टेकुवा, हथौड़ी से चार लड़के तक काम कर सकते हैं। इन औज़ारों से गत्ते की अधिक से अधिक चीज़ें बनाई जा सकती हैं। काम करते समय किसी उपयोगी चीज़ को बनाने के बाद हमें बड़ी खुशी होती है। काम करते वक्त गणित के ज्योमिट्री का पूरा पूरा ज्ञान इस से होता है। सरलरेखा, वक्ररेखा, धरातल, ठोस, कोण, समकोण, न्यूनकोण, अधिककोण, ऋजुकोण, त्रिभुजाकार, वर्गाकार, आयताकार, वृत्ताकार, षट्कोण, इत्यादि अनेक आकारों का ज्ञान होता है। लेई बनाते समय स्टोव जलाना, हवा देना तथा उनकी क्रियाओं का पूरा पूरा ज्ञान हुआ। इस काम को करते हुए मैंने एल० स्क्वायर, चाकू, नरहनीं, कतरनी, कैंची, स्केल, [illegible] हथौड़ी, चिमटा, पिलास, टेकुवा, चिकनाकर, सिकन्जा इत्यादि औज़ारों का प्रयोग किया है। आर्थिक दृष्टि से भी यह दस्तकारी हमारे तथा हमारे देश के लिए कम लाभदायक नहीं है। स्कूलों में गत्ते की जितनी चीज़ें जैसे:–स्याहीसोख का गद्दा, तख्ती, [illegible] फाइल, पोर्ट फोलियो, लिफ़ाफ़ा, जिल्द (पुस्तकों तथा कापियों का) हमलोगों ने तैयार की हैं। इनमें से मैंने क्या क्या बनाया है इसका विवरण मैं पहले ही कर चुका हूँ। पहले जब कि हमारे स्कूलों में इन सबों का प्रचार नहीं था तो ये चीज़ें विदेश से मँगाई जाती थीं। इसमें तो ख़ास कर मार्बुल पेपर तो काफ़ी तादाद में बाहर से आता था। किन्तु बुनियादी स्कूलों में इन चीज़ों के बनने से देश को आर्थिक लाभ हो रहा है।

मातृभाषा:--जिस तरह से आत्मभीव प्रकाशन तथा शब्द भण्डार बढ़ाने की जरूरत बच्चों के लिए हैं उसी प्रकार से मेरे लिए भी शब्दभण्डार बढ़ाने की जरूरत पड़ी। बुनियादी ट्रेनिंग में आने के पहले मुझे तकली, चरखा, पूनी, तकुवा के सिवाय इसके विषय में और कुछ मालूम नहीं था। किन्तु कामों के करते करते तथा चीज़ों के देखने से मुझे बहुत कुछ मालूम हो गया; जिनकी सूची निम्नाङ्कित है:- कपास, ओटनी, सलाई-पटरी, धुनकी, आत्मा, कांकड, मोढ़िया, डंडी, लटकन, कामठा, कमरा और कमान, आसनीं, सादरी, गुठला, हत्था, पूनी, सलाई, पटरी, रखौटी, तकली का डिब्बा, परेता, अटेरन, कस मापकयंत्र, कुप्पी, खूँटा, चक्का, धुरी, खूँटी, चमरख, कण्ठी, माल, अमाल, राल, लपेटन, तार, कली, लच्छी, गुन्डी, हुद्दी, तांत, कचरा, मकठा, बट, चुटकी, अँगूठा, तर्जनी, बिनौला, फिरकी, कपास, रोजिया, नवसारी, मोगला, मोचडी, गज्जर, टरिया, हेमती, देवकपास, कम्बोडिया, कोकटी, अमेरिकन, व्हेरम, जरमुंडी, कानपुरी, बनी, सिबान, भडौंच, सुरती, बागड, माठिया, टिपेरा, जटा, इत्यादि इत्यादि कपासों के नाम मालूम हुए। इसके अतिरिक्त ओटने, धुनने तथा कातने के समय उन यन्त्रों के भिन्न भिन्न भागों के नाम मालूम हुए। जिनकी एक संक्षेप सूची नीचे है:-

चरखा, लाट, बेलन, कन, मूँठ, पौदान, चूंड, काठ, काठ की घोड़ी, सलाख, फासलां, खाँच, पहट्ट, पटियी, ओटवैया, पट्टा, गाँठ, पत्तर, झूल, धुनकी, पींजन, आँत, पुट्ठा, काँकड़, डंडी, फराठी, धनुष, रस्सी, होलगेज, काँटी, कील, सुपड़ी, पंखा, ... इत्यादि इत्यादि।

उपर्युक्त शब्दों का ज्ञान होने के अलावे इन्हें काम में लाया और इनके नहीं रहने से क्या नुकसानी हो सकती है, इसपर भी ध्यान दिया।

अब दूसरी क्रिया कृषि को करते समय कुछ नये शब्द तथा क्रियाओं का ज्ञान हुआ। जैसे:-खुरपी, खूँटी, झंझर, बाल्टी, मुंगरी, खाद, कमपोस्ट, गड्ढा, बीज का थैला, चारा, तरह तरह के पौधें, पिचुकारी, फ्लिट, इत्यादि के नाम तथा उपयोगिता जानते हुए हमने अपना शब्दभण्डार बढ़ाया।

नई शिक्षा प्रणाली की विशेषता यह है कि अन्य विषयों के समान मातृभाषा की शिक्षा भी दस्तकारी, सामाजिक प्रतिवेश या भौतिक प्रतिवेश के द्वारा ही दी जाती है। मातृभाषा की समुचित शिक्षा ही सारी शिक्षा की नींव है। जब तक आदमी अपनी मातृ-

भाषा अच्छी तरह बोल नहीं सकता और न सही और साफ़ लिख सकता है तब तक विचारों में स्पष्टता नहीं आ सकती। इसके अलावे मातृभाषा एक ऐसा साधन है, द्वारा हम अपने देश के विचारों,भावनाओं और आकांक्षाओं को प्रगट कर सकते हैं। भाषा ही वह स्वाभाविक साधन है, जिसके द्वारा हम सुन्दर चीज़ों की सराहना करते हैं।

मातृभाषा की पढ़ाई के साथ साथ एक प्रश्न हिन्दुस्तानी का भी जुटा हुआ। वर्धा स्कीम में शिक्षकों को हिन्दुस्तानी का ज्ञान भी होना अनिवार्य है। जिनकी मातृ हिन्दी है उनके लिए उर्दू पढ़न लिखने की योग्यता अपेक्षित है। किन्तु जिनकी जबान उर्दू है उनके लिए हिन्दी पढ़ना लिखना अनिवार्य है। हिन्दुस्तानी को स्कूल के क्रम में अनिवार्य रखने का ध्येय यह है कि बुनियादी स्कूलों में पढ़े बच्चे देश की जबान को काम के लायक जानते हों, और बड़े होकर हिन्दुस्तान के दूसरे सूबों के साथ आसानी से काम कर सकें।

इसके अतिरिक्त साहित्य सौंदर्य के पाठों का प्रगतिशील अध्ययन तथा संक्षिप्त-लेख, हिन्दी साहित्य के इतिहास का परिशीलन, गाथा और चारण काल से आधुनिक साहित्य तक क्रमवार इतिहास; तुलसी, कबीर, सूर का विवेचन, अलंकार तथा उनके भेद, प्रभेद का सविस्तर वर्णन तथा दस्तकारी में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों बुनियादी शिक्षा पर लेख तथा अन्य निबन्धों का अध्ययन किया। इन सब का रूप से नोट मातृभाषा की कॉपी में लिखा। इनके अतिरिक्त प्रेमचन्द, शिवपूजन मैथिलीशरण गुप्त, जशशंकरप्रसादजी की पुस्तकों का स्वाध्याय किया।

गणित–

गणित की शिक्षा का ध्येय यह है कि छात्रों को इस योग्य बना दें कि वे धन्धे के और घरेलू और सामाजिक जविन के सिलसिले में खड़े होनेवाले हिसाब और नाप–जोख के सवालों को आसानी और जल्दी से हल कर सकें। चूँकि हमें बालकों को पढ़ाना है, इसलिए हमें भी गणित का ज्ञान तथा पढ़ाने का तरीका बताया गया है, जो बच्चों के काम में आ सके। अतः गणित के विषय में निम्नलिखित बातें हमने सीखीं:-जितने तार हमको कातने हैं उसको अपेक्षित गति कहते हैं। हम मुच कितना सूत कातते हैं, वह हमारी वास्तविक गति है। तार और अंक से जो निकालते हैं वह फलित गति है। फलित गति निकालते समय गुणा, भाग तथा वर्गमूल

ज्ञान दिया जाता है। कस तथा मज़दूरी निकालने का तरीका भी सीखा, इसके अतिरिक्त बच्चों को सिखाने के लिये पाठ्यक्रम के गणित के हिस्से को सीखा और तीसरे ग्रेड तक के गणित को पढ़ाने का ढंग क्या होगा तथा किन किन अवसरों पर ये सब पढ़ाये जायँगे, इन पर काफ़ी अध्ययन तथा गौर किया।

समाज-विज्ञान
नागरिकता की शिक्षा:—

बेसिक स्कूल के शिक्षकों का अधिकांश समय स्कूल ही में व्यतीत होता है। हमलोग प्रति दिन समय पर क्लास में जाकर दस्तकारी की चीजों को जिनसे हमें अभी काम करना है, सजाकर रखते हैं। अगर कोई चीज़ ठीक हालत में नहीं रहती तो उसे दुरुस्त करने की कोशिश करते हैं। क्योंकि वे सब हमारी अपनी चीज़ों से भी बढ़कर हो जाती हैं। इस अभ्यास के द्वारा हमारे अन्दर उत्तरदायित्व का भाव बढ़ता है। हम लोग देखते हैं कि पब्लिक जगहों (रेलवे स्टेशन, टिकटघर, पोस्ट ऑफिस, मेलेबाज़ार, तीर्थस्थान) में अनावश्यक भीड़ लग जाती हैं। किन्तु हमलोग ऐसे जगहों पर अपना काम क्यू सिस्टम (Que System) से लेते हैं। यहाँ तक कि क्लास बदलते समय, क्लास में आने पर, दस्तकारी की चीज़ों को बाँटने और लेते समय, तथा मेस में भोजन करते समय भी क्यू सिस्टम का अभ्यास करते हैं। अपने शरीर की स्वच्छता तथा कपड़ों की सफ़ाई के साथ साथ दस्तकारी के चीज़ों की सफ़ाई, क्लास के कमरे की सफ़ाई, बिछावन, ओढ़ना, पैख ना,तथा पेशाब घरों की सफ़ाई पर भी काफ़ी ध्यान देते हैं। रद्दी की टोकरी, कक्षा की आलमारियों की सफ़ाई, स्कूल में पीने का पानी की रक्षा तथा अपने खाने पीने के सामानों की रक्षा तथा सफ़ाई के ऊपर काफ़ी ध्यान रहता है।

शिक्षकों तथा साथियों का यथोचित अभिवादन करना, स्वच्छ भाषा का उपयोग, शील के साथ प्रश्न करना तथा उत्तर देना, किसी काम में अपनी बारी की प्रतीक्षा करना, दस्तकारी के सामानं तथा औज़ारों का समुचित उपयोग, काम के बाद कक्षा को साफ़ करके छोड़ना, दस्तकारी के सामानों को यथास्थान और यथाक्रम रखना, खेल में ईमानदारी के साथ खेलना, हारजीत में सचाई को बड़ा समझना इत्यादि इत्यादि बातों पर हम लोगों का पूरा ध्यान रहता है। अमली कामों को करते समय हम इन्हें कार्य में परिणत करते हैं और यथाशक्ति तथा यथासम्भव इन पर अमल करने की कोशिश भी करते हैं। स्कूल में रहते

गये केवल सैद्धान्तिक ज्ञान के समान खोखला नहीं होने पाता। क्योंकि हमें प्रत्येक प्रतिवेश में व्यावहारिक ढंग से हर पहलू को बरतना पड़ता है। समाज-विज्ञान हमें स्वयं साफ़ रहने, अपने घर, दरवाजे, आसपास के रास्तों इत्यादि को साफ़ रखने, मेले, बाज़ार के अवसरों पर आगन्तुकों की सहायता देने, गुरुजनों की सेवा करने, पर्व, त्योहारों के अवसरों पर अपनी कला प्रदर्शित कर अपने घरों, स्कूलों या सार्वजनिक स्थानों को सुसज्जित करने, बालविवाह, अन्ध-विश्वासों को रोकने, कृषि आदि को आधुनिक वैज्ञानिक ढंग से उन्नत करने, अपने स्थानीय उद्योगों की उन्नति तथा सुधार करने, प्राकृतिक घटनाओं के पर्य्यवेक्षण करने तथा सत्य और अहिंसा का पालन करते हुए एक सच्चा नागरिक बनने सिखाता है। इसका बड़ा भारी असर हमारे जीवन पर पड़ा है।

सामान्य विज्ञान:—

बुनियादी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य योग्य नागरिक तैयार करना है। अत: हमें प्राकृतिक परिस्थितियों का अनुभव होना अत्यावश्यक है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति की पढ़ाई में साधारण विज्ञान का स्थान बहुत ज़रूरी समझा जाता है।

मस्तिष्क के विकास के लिए पर्य्यवेक्षण और प्रयोग आवश्यक क्रियाएँ हैं। पर्य्यवेक्षण का शिक्षा में बहुत ऊंचा स्थान है। अपने से पर्य्यवेक्षण करना, स्वयं तुलना करना, प्रयोग करना यही शिक्षा ग्रहण करने की मुख्य सीढ़ियाँ हैं।

दस्तकारी का काम करते समय हमारे पाठ्यक्रम के बहुत से विषय स्वाभाविक ढंग से अनुबद्ध हो जाते हैं। कताई के काम में हमें बही रखनी पड़ती है, उसमें कताई के दिन तथा हिसाब रखना पड़ता है।

कताई की दूसरी क्रियाओं के साथ साथ सामानों को दुरुस्त करना पड़ता है। बरसात के दिनों में हमारे पास की तकलियों में, तकुवे में जरासी भी असावधानी से जंग [मुरचा] पकड़ लेती है। तांत जल्द टूटने लगती है। धुनाई तथा तुनाई का काम असम्भव हो जाता है। गरमी के दिनों में दोपहर में सूत इतना टूटता है कि कातना मुश्किल हो जाता है। यदि भिगोया कपड़ा परेते पर न रखा जाय तो मजबूती दिन प्रतिदिन घटती जाती है। पूनियाँ खुली रहने से खुल जाती हैं। अत: मौसिमों का असर हमारी कताई की क्रियाओं पर तथा उद्योग के सामानों पर प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है।

धुनाई क्लास में हमें नाक बांध कर काम करने की ज़रूरत पड़ती है। ऐसा नहीं करने से हमारे नाक के बाल रूई के रेशों से भर जाते हैं। रूई के भीतर की गर्द नाक के

हुए या घर पर जाने के बाद भी हमारा ध्यान अपने रहने के कमरे या मकान की सफ़ाई, आसपास के रास्तों तथा गलियों की सफ़ाई, पानी का नल या गाँव के कुएँ के आसपास की जगहों की सफ़ाई पर रहता है। इसको हम सिर्फ कहते ही नहीं बल्कि करते भी हैं। हम लोगों में से प्रत्येक को किसी न किसी तरह की जिम्मेदारी के काम दे दिये गये हैं। जितने खेल हैं, उनके अलग अलग कैप्टन हैं। सामाजिक बैठक के मन्त्री, पत्र-पत्रिकाओं के मन्त्री, मेस मैनेजर, कताई मोनीटर, क्लास मोनीटर इत्यादि इत्यादि लोगों के सुपूर्द हैं। शिक्षकों के लगाव में हम लोग प्रायः रहा करते हैं। जिससे हमारी सभी त्रुटियाँ दूर होती रहती हैं।

इतिहासः—

इतिहास का संपूर्ण ज्ञान समवायी ढंग से नहीं हो सका है। कारण कि इन विषयों का ज्ञान हम लोगों को पहले से भी था। साथ ही साथ समयाभाव के कारण लोगों ने स्वाध्याय से पाठ्यक्रम में दिये गये विषयों पर टिप्पणी लिखकर तैयार किया। ये सभी कहानी के तौर पर लिखी गई हैं। इनमें बहुतसी कहानियाँ ऐसी भी हैं कि जिनका वर्णन बहुत ढूंढ़ने पर मिलता है या मिलता ही नहीं। ये सब कहानियाँ दस्तकारी को माध्यम मानते हुए लिखी गई हैं कि जिनसे दस्तकारी के साथ इनका समवाय सुलभ ढंग से हो जाय। इन कहानियों के कहने से भी बच्चों के अन्दर काफ़ी विकास हो सकता है।

भूगोलः—

भूगोल का ज्ञान समवायी ढंग से हुआ है। दस्तकारी की चीज़ें, रुई, कपास, चरखा, तकली वगैरह कहाँ से आती हैं, उनके नाम, स्थान, हमारे यहाँ से वह कितनी दूर है, वहाँ से आने-जाने के साधन, वहाँ ये चीजें क्यों उपजती हैं; हमारे यहाँ क्यों नहीं? इत्यादि का ज्ञान तथा समवाय दस्तकारी से सुलभ ढंग से हो जाता है। इसके अतिरिक्त सुदूर मनुष्यों का जीवन, अरब देश के बेडुईन, अफ्रिका के पिग्मी, अमेरिका रेड-इन्डियन, अफरीदी लड़के की कहानी, जापानी लड़के की कहानी, स्विस लड़के की कहानी का भी ज्ञान आसानी ढंग से हो गया है। कुछ कहानियों को हमने पुस्तकों में से अध्ययन कर लिखा है और कुछ बतलाई गयी हैं।

हमें अपने समाज, अपने अड़ोस-पड़ोस की प्रकृति तथा निकट के उद्योगों के बीच जीवन बिताना पड़ता है। तथा दस्तकारी, सामाजिक और प्राकृतिक परिस्थिति का ज्ञान भी प्राप्त करना होता है। परन्तु यह ज्ञान पुरातन शिक्षा प्रणाली के द्वारा

गये केवल सैद्धान्तिक ज्ञान के समान खोखला नहीं होने पाता। क्योंकि हमें प्रत्येक प्रतिवेश में व्यावहारिक ढंग से हर पहलू को बरतना पड़ता है। समाज-विज्ञान हमें स्वयं साफ़ रहने, अपने घर, दरवाजे, आसपास के रास्तों इत्यादि को साफ़ रखने, मेले, बाज़ार के अवसरों पर आगन्तुकों की सहायता देने, गुरुजनों की सेवा करने, पर्व, त्योहारों के अवसरों पर अपनी कला प्रदर्शित कर अपने घरों, स्कूलों या सार्वजनिक स्थानों को सुसज्जित करने, बालविवाह, अन्ध-विश्वासों को रोकने, कृषि आदि को आधुनिक वैज्ञानिक ढंग से उन्नत करने, अपने स्थानीय उद्योगों की उन्नति तथा सुधार करने, प्राकृतिक घटनाओं के पर्य्यवेक्षण करने तथा सत्य और अहिंसा का पालन करते हुए एक सच्चा नागरिक बनने सिखाता है। इसका बड़ा भारी असर हमारे जीवन पर पड़ा है।

सामान्य विज्ञान:—

बुनियादी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य योग्य नागरिक तैयार करना है। अतः हमें प्राकृतिक परिस्थितियों का अनुभव होना अत्यावश्यक है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति की पढ़ाई में साधारण विज्ञान का स्थान बहुत ज़रूरी समझा जाता है।

मस्तिष्क के विकास के लिए पर्य्यवेक्षण और प्रयोग आवश्यक क्रियाएँ हैं। पर्य्यवेक्षण का शिक्षा में बहुत ऊंचा स्थान है। अपने से पर्य्यवेक्षण करना, स्वयं तुलना करना, प्रयोग करना यही शिक्षा ग्रहण करने की मुख्य सीढ़ियाँ हैं।

दस्तकारी का काम करते समय हमारे पाठ्यक्रम के बहुत से विषय स्वाभाविक ढंग से अनुबद्ध हो जाते हैं। कताई के काम में हमें बही रखनी पड़ती है, उसमें कताई के दिन तथा हिसाब रखना पड़ता है।

कताई की दूसरी क्रियाओं के साथ साथ सामानों को दुरुस्त करना पड़ता है। बरसात के दिनों में हमारे पास की तकलियों में, तकुवे में जरासी भी असावधानी से जंग [मुरचा] पकड़ लेती है। तांत जल्द टूटने लगती है। धुनाई तथा तुनाई का काम असम्भव हो जाता है। गरमी के दिनों में दोपहर में सूत इतना टूटता है कि कातना मुश्किल हो जाता है। यदि भिगोया कपड़ा परेते पर न रखा जाय तो मजबूती दिन प्रतिदिन घटती जाती है। पूनियाँ खुली रहने से खुल जाती हैं। अतः मौसिमों का असर हमारी कताई की क्रियाओं पर तथा उद्योग के सामानों पर प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है।

धुनाई क्लास में हमें नाक बांध कर काम करने की ज़रूरत पड़ती है। ऐसा नहीं करने से हमारे नाक के बाल रूई के रेशों से भर जाते हैं। रूई के भीतर की गर्द नाक के

भीतर इस तरह घुस जाती है कि हम परेशान हो जाते हैं। इसलिए साफ़ ... चीज़ है और उसकी सख्त ज़रूरत क्यों है, इसका अनुभव हमलोग उद्योग की ... में करने लगते हैं।

इसके अतिरिक्त कताई सम्बन्धी वैज्ञानिक क्रियाओं को करते समय यन्त्र ... क्रियाओं का ज्ञान, ओटाई के समय, सलाई पटरी और हाथ ओटाई में फ़र्क, ... पहले कपास सुखाने की ज़रूरत, बिनौले के चारों तरफ रेसे सटे रहने के कारण ... रूई से गन्दगी, कचरे और मकठे क्यों निकालें जायँ, तुनी हुई रूई तुरंत ... जाय, कामठा, झूल, सादरी की जरूरत क्या, लटकन की रस्सी नारियल की ... पटरी तिरछी क्यों, पूनियाँ आने आने भर की क्यों, गत्ते का तख्ता रखने की ज़रूरत ... बिहार चरखे के माल में राल क्यों, इत्यादि इत्यादि बातों का ज्ञान हमें हो चुका है।

बाग़वानी का काम करते समय भी सामान्य विज्ञान की ज़रूरत पड़ जाती है। ... का सबसे अच्छा वक्त कौन है, सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय पटाने से लाभ, ... पौधों में कीड़ों का लगना, पक्षियों का पौधों को हानि पहुँचाना, उनसे बचने के ... ऋतु--परिवर्तन का बाग तथा पौधों पर असर, कुछ पक्षियों से लाभ, जैसे बगुला, ... गिद्ध, कौआ, चील, इत्यादि पक्षी हमारे दोस्त क्यों कि वे खेतों के फसलों को नुकसान पहुँचाने वाले कीड़ों को चुनकर खा जाते हैं। दशहरे के मौके पर नीलकंठ का ... महत्व क्यों, फसलों की उपज पर मौसिमों का असर, चन्द्रमा और सूरज ... का असर पौधों पर कैसा है; ग्रहण वगैरह के मौके पर सूरज, चाँद की हालत ... उस समय का असर लोगों के ऊपर कैसा होता है।

उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त हमने साधारण विज्ञान के पर्य्यवेक्षण और ... विषयों में नीचे लिखे हुए विषयों को भी पढ़ा है:—हवा, हवा का महत्व, पानी, ... तथा अस्वच्छ पानी, सौर्य्य जगत्, प्रशान्त चन्द्रमा, हवा में धूल, अशुद्ध पानी, ... में पारस्परिक अवलम्बन, पौधों का जानवरों पर अवलम्बन, स्वजातीय कीड़े, ... और फेंकने वाली हवा में अन्तर, तौल और दबाव में अन्तर, आग और हवा-... काम, पौधों तथा फूलों का पर्य्यवेक्षण, बड़ी इलायची, चम्पा, यात्रीपौधा (Travel-ller's tree) सिनरेरिया, तेजपत्ता, विलायती कटहल, हींग का पौधा, ... पौधा, छोटी इलायची, काली पीपर, डहेलिया, कौनफ्लावर, ऐस्टर, नस्टरसियम, ... टफ्ट, सखेनस इत्यादि इत्यादि। कृषि फार्म का पर्य्यवेक्षण, दाल में उफान क्यों, ... मीठी कैसे हो; भींगी तौलियों से पानी जल्द क्यों उठता है; स्याही-सोख का ... उठाना, पौधों का भोजन; पौधों का खाद्य, दो किस्म के पदार्थों का सटना और ...

...रे का फूल तथा उसका पर्य्यवेक्षण, सामुद्रिक सतह पर तथा ऊँचे सतह पर पानी का ...लाव इत्यादि।

साधारण विज्ञान में प्रकृति परिचय, उद्‌भिद-विज्ञान, पशु विज्ञान, शरीर विज्ञान, आरोग्य विज्ञान, शरीर चर्चा, रसायन शास्त्र, ग्रह-नक्षत्रों का ज्ञान और वैज्ञानिकों की कहानियाँ सभी का समावेश है। यहाँ तो हमें स्वयं काम करना है और उसी के द्वारा ज्ञान प्राप्त करना है।

चित्रकला:—

चित्रकला से हम अकथनीय वस्तुओं को भी सुलभ बना देते हैं। जो चीज़ वर्णन करने से समझ में नहीं आती है उसे चित्र के द्वारा समझाया जाता है। हमारे यहाँ के सभी उद्योगों में चित्रकला की ज़रूरत है। कताई के उद्योग में हमलोगों को उसके क्रियाओं के साथ-साथ यन्त्रों का जैसे:— धुनकी, ओटनी, हत्था, पटला, तकली, चरखा, धनुष, तकुवा, सादरी, कमान, परेता, अटेरन, लटवा इत्यादि का चित्र बनाना होता है।

बागवानी में अपनी उपजायी हुई तरकारियों, फसलों, पत्तियों, फूलों इत्यादि का चित्राङ्कन करते हैं। बागवानी के सामान आदि के अलावे साड़ी का किनारा; रंगीन, सादा, कई डिज़ाइन का बनाते हैं। इससे दो लाभ हैं, बुनकर को भी तथा हमें भी, प्राकृतिक दृश्यों, जानवरों, पशुपक्षियों की चित्रकारी भी हमलोग करते हैं।

संगीत:—

ज़ाकिर हुसेन कमिटी की रिपोर्ट के अनुसार संगीत सिखाने का ध्येय यह है कि विद्यार्थी कुछ अच्छे राग और भाव के गीत सीख जायँ। और उनमें सुन्दर संगीत के प्रति अनुराग पैदा हो। इसी आधार पर हमलोगों को भी संगीत की शिक्षा दी गई है। हमलोगों ने राष्ट्रीय, सामाजिक, तथा उद्योग सम्बंधी गानों को गाया; गाने का सिलसिला एक साथ मिलकर था। कताई के समय भी जब कि हमलोगों की तबियत ऊब जाती थी तो गाना गवाया जाता था। इससे पुनः नयी फुर्ती का संचार होता और गति की भी वृद्धि होती थी।

मनोविज्ञान:—

मनोविज्ञान का ज्ञान होना प्रत्येक शिक्षक के लिए ज़रूरी है। बिना मनोविज्ञान जाने हुए कोई शिक्षक सफल शिक्षक नहीं हो सकता। मनोविज्ञान के द्वारा शरीर, दिमाग, तथा अंग-प्रत्यंग का हाल जाना जाता है। अतः इसे ध्यान में रखते हुए हमलोगों को मनोविज्ञान की शिक्षा दी गई और उसमें निम्नाङ्कित विषय पढ़ाए गये:—

स्नायुमण्डल, स्वाभाविक गुण, खेल, निर्विकल्पक और सविकल्पक प्र... चेतना, उद्वेग, संवेदन, स्थायी भाव, स्मरणशक्ति, कल्पना, विचार, सम्बन्ध, ... जिज्ञासा, संचय, विधायकता इत्यादि।

खेल:—

वर्धा शिक्षा के मुताबिक जो भी शारीरिक व्यायाम कराए जाएँ वे ऐसे हों कि सामानों की ज़रूरतें न पड़े और जरूरत पड़े भी तो पैसे कम खर्च हों। यद्यपि कि हमारे ट्रेनिंग स्कूल में भिन्न भिन्न खेलों की सामग्रियाँ होते हुए भी हमलोग तर चिक्का, कबड्डी, हरदी-गुरदी, रूमाल-चोर तथा और भी देहाती खेल ... इस तरह शरीर में फुर्ती आती है और हमलोग मज़बूत तथा स्वस्थ रहते हैं। ... बैठक, हाथ-पैर और समूचे बदन का व्यायाम भी कराया जाता है।

चूँकि पटना ट्रेनिंग स्कूल में जगह काफ़ी है और खेलने के साधन ... वर्तमान हैं, इसलिए फुटबौल, हौकी, वौली बौल, बैडमिन्टन आदि खेल ... समय पर खेल लिए जाते हैं।

इतना होते हुए भी व्यायाम शिक्षक देशी ढंग से नित्य एक घंटा ... आदेश के साथ हमें ड्रिल सिखाते हैं; और धीरे धीरे लड़कों को कैसे शिक्षा ... लड़के मन लगाकर कैसे कसरत करेंगे, अपने शरीर की रक्षा कैसे करेंगे आदि ... अच्छे ढंग से बताते हैं। सालभर में हमलोगों ने निम्नाङ्कित व्यायाम, खेल ... ड्रिल सीखे हैं:—

जोड़ा बदलौवल, सलाम, सुनसान, हरदी-गुर्दी, हरिन का बच्चा, ... कुत्ता, नाक-पैर, हू-टी-टी-कमान्डर, छुट्टी देने का तरीका, स्वास्थ्य ठीक रखने ... नित्य करने लायक कसरतें, झंडी की कसरत, मार्चिंग, जिलेबीवाला, ... ग्रामोफोन, Vaulting and tumbling, पोल-ड्रिल, डण्डे की कसरत इत्यादि।

रोवर क्रू [तरुण दल]-हमारे स्कूल के कार्यक्रम में रोवरिंग को एक ... स्थान दिया गया है। हमारे व्यायाम शिक्षक इसकी ट्रेनिंग हफ्ते में एक दिन ... में एक दिन देते हैं।

जब कहीं स्काउटिंग या रोवरिंग से सम्बंध रखनेवाली बातों की शिक्षा ... है तो हमलोग उन बातों की ट्रेनिंग पाने के लिए भेजे जाते हैं। गत नवम्बर माह ... में हमलोगों की ट्रेनिंग के लिए स्काउट-मास्टर-ट्रेनिंग कैम्प हुआ था। उसमें ... ट्रेनिंग स्कूल के छात्र शिक्षक भी थे। गत जनवरी माह में हमलोगों का ...

(दरभंगा) सब डिविजन के अन्तर्गत उद्योगप्रधान गाँवों को देखने के लिए गया था। इसके बाद पटना हाईकोर्ट के मैदान में प्रोविन्सियल स्काउट रैली के सुअवसर पर हम-लोगों ने जाकर काफ़ी उत्साह से कामों को करने में भाग लिया था। अप्रैल के माह में हम लोगों की रोवर क्रू पार्टी विक्रमकृषि फार्म, बिहटा सुगर मिल्स तथा मनेर दरगाह आदि स्थानों को देखने को गई थी।

इस तरह से रोवरिंग और स्काउटिंग की शिक्षा सदा यहाँ हमलोगों को मिलती रहती है। शिक्षा के अलावे सार्वजनिक कामों में हाथ बटाने के लिए भी भेजा जाता है। नगर के अन्दर जब कभी कोई बड़ा आयोजन होनेवाला होता है तो हम रोवर वहाँ भेजें जाते हैं। हम वहाँ जाकर अधिकारियों को अपने कामों का संचालन करने तथा जनता को उस अवसर से लाभ उठाने में काफ़ी सहायता करते हैं।

एम्बुलेन्स डिविजनः पटना ट्रेनिंग स्कूल में हम गुरुछात्रों का एक एम्बुलेन्स डिविजन है। ट्रेनिंग के लिए नियमित रूप से सप्ताह में एक दिन ब्रिगेड का पैरेड, स्ट्रेचर पैरेड और फर्स्ट एड का लेक्चर होता है।

पढ़ाने का व्यावहारिक अभ्यासः-

शिक्षकों की ट्रेनिंग में ट्रेनिंग के अन्तर्गत पढ़ाने का व्यावहारिक अभ्यास एक आव-श्यकीय तथा महत्वपूर्ण अंग है। व्यावहारिक शिक्षण का आरम्भ ट्रेनिंग कोर्स के चौथे या पाँचवें महीने के बाद सुगमता से किया जाता है। अतः हमलोगों का व्यावहारिक शिक्षण जुलाई माह से शुरू हुआ। हमारा व्यावहारिक शिक्षण १४ जुलाई १९४१ से १९ जुलाई ४१ तक रहा। हमें बारी बारी से उद्योग के अभ्यास और सामाजिक परिस्थितियों के निरीक्षण के आधार पर व्यावहारिक शिक्षण आरम्भ कर देना पड़ा। इस व्यावहारिक शिक्षण के पहले हमें ट्रेनिंग तथा प्रैक्टिसिंग स्कूल के स्थायी शिक्षकों के द्वारा दिए गये पाठों को देखने का अवसर नहीं प्राप्त हुआ था। इसकी व्यवस्था पीछे हुई। अतः हमें पाठों की योजना (Scheme of lessons) की तयारी, या किस प्रकार से व्यावहारिक शिक्षण आरम्भ करना चाहिए, इसका कोई अनुभव नहीं था। किन्तु ग्रेड-शिक्षक की मदद तथा पुराने व्यावहारिक शिक्षण के पाठों की योजना देखने से उस का ढंग हमें मालूम हो गया।

इसके बाद पहले दिन हमने अपने दर्जे के शिक्षक की पढ़ाई का अध्ययन और पर्य्यवेक्षण किया। दूसरे दिन से मैंने अपना व्यावहारिक शिक्षण प्रारम्भ कर दिया

किन्तु कभी कभी जब कि हमारे शिक्षण में कुछ गड़बड़ी होने लगती तो ग्रेड शि० उसे स्वयं बालकों को बतलाते थे। इस प्रकार तीसरे दिन से हमें अच्छी तरह पढ़ाने का अवसर मिला। हमारे अभ्यास की व्यवस्था एक सप्ताह की थी। अतः एक सप्ताह के दिनों तक अभ्यास की व्यवस्था हो जाने से हमको काम तथा उस से अनुबद्ध विषयों की योजना बना देने में अधिक अच्छा सुअवसर मिल गया।

अभ्यास करनेवाला शिक्षक तथा ग्रेड शिक्षक दोनों साथ साथ काम करते हैं। जब एक शिक्षक वास्तविक शिक्षण करते हैं तब दूसरे शिक्षक वर्ग में किए गए कामों तथा शिक्षक और छात्रों के बीच के प्रत्येक प्रश्नोत्तरों को अपनी नोटबुक में लिख जाते हैं। प्रत्येक दिन के अन्त में दिनभर के प्रस्तावित काम तथा अनुबद्ध विषय के योजना के अनुसार ठीक उत्तर मिले तथा कितने न मिल सके; उन्हें लिख लेना होता प्रतिदिन बच्चों की दैनिक डायरी में कौनसी लिखने पढ़ने की सामग्री प्राप्त हुई; यह नोट कर लेना होता था। एक सप्ताह के बाद से शिक्षण समाप्त हो जाता है। नये शिक्षक बनने वालों को सिखने का मौका मिल जाता है। जिससे वे अपने इलाके में जाकर बिना किसी कठिनाई के अपना काम शुरू कर सकें। इसके बाद हम ने अपने अपने पाठों की रिपोर्ट तैयार की। बादमें तीन तीन प्रोजेक्ट पर पाठों का नोट तैयार किया।

सारांश यह है कि हमलोगों ने प्रथम तीन ग्रेडों तक पढ़ाने के लिए अच्छा दिमागी ज्ञान पा लिया। उद्योग के सभी काम पूर्ण रूप से समाप्त हो चुके हैं। तथा दो प्रतिवेशों का समवायी ज्ञान की भी जानकारी हो चुकी है।

सामाजिक मजलिश की बैठक (Social Club)

बुनियादी स्कूल के शिक्षकों को ग्रामोन्नति के कामों के सिवाय ग्रामीणों के का प्रबन्ध करना है। अतः इस कार्य के निमित्त गुरुछात्रों को तैयार करने ट्रेनिंग स्कूल में एक सोशल क्लब खोला गया है। हमारे होस्टल सुपरिंटेन्डेन्ट साहब सभापति हैं। क्लब की बैठक में वादविवाद, व्याख्यान, गाने, बजाने, पाठ, नकल, नाटक, नृत्य, वगैरह का प्रबन्ध होता है। इसके लिए हफ्ते में एक रक्खा गया है। उसी दिन को साढ़े सात से साढ़े नौ बजे रात तक यह बैठक होती इसमें सभी गुरुछात्र भाग लेते हैं और अपनी अपनी योग्यता का परिचय सामने देते हैं।

बुनियादी पाठ्यक्रम–अमल में

[तीसरा दर्जा—सामाजिक विज्ञान]

हमारी समाज–सेवा

हम लोगों के क्लास की पहली छमाही खत्म होने पर ता० ८-१०-४१ ई० से लेकर ता० १८-१०-४१ ई० तक कताई और धुनाई की जाँच हुई। इसी बीच में ११-१०-४१ को हमलोगों ने गाँव की भलाई का काम करने के लिये बालसभा की। उसमें हमलोगों ने तीन बातें तय की। [१] स्कूल, मठिया और बकुचिया गाँव की सफ़ाई की जाय। [२] मठिया गाँव के लोग सड़क के दोनों बगल में पाखाना कर देते हैं; इससे गाँव की हवा ख़राब रहती है। इसलिये वहाँ दो खाईनुमा पाखाने बनाये जायँ। इस काम में गाँववालों से मदद लेने के लिये ता० १३-१०-४१ ई० को गाँववालों की सभा की जाय।

ता० १३-१०-४१ ई० को गाँववालों की सभा हुई। उस सभा में पटना ट्रेनिंग स्कूल के मास्टर बाबू द्वारिका सिंह और बाबू श्रीनारायण चौधुरी और हमलोगों के सुपरवायज़र साहब भी आये थे। उस सभा के सभापति पंडित छकौड़ीप्रसादजी थे। बाबू द्वारिका सिंह ने कहा कि हमको इस स्कूल के लड़कों का काम देखकर बहुत खुशी हुई है। आप लोगों के लड़के तरक्की कर रहे हैं। आज मैं मठिया गाँव से होकर यहाँ आ रहा था। रास्ते में सुपरवायज़र साहब ने कई लड़कों के घर दिखाये। लड़के अपने अपने घर पर तरह-तरह के फूल लगाये हैं; उनका घर भी साफ़-सुथरा है। इससे मालूम होता है कि लड़के जो स्कूल में सीखते हैं उसको घर पर भी करते हैं। लड़के घर पर जो काम करें उसको आपलोग करने दें और जहाँ तक हो सके उसमें मदद करें। यह खुशी की बात है कि लडके गाँव में पाखाना बनाने का विचार कर रहे हैं। मर्द लोग तो पाखाने के लिये बाहर चले जाते हैं। लेकिन औरतें लाज के मारे बाहर नहीं निकलती। वे रात को ही निकलती हैं और डरके मारे दूर न जाकर घरके पास ही पाखाना कर देती हैं। यह हालत आप ही के गाँव की नहीं; समूचे हिन्दुस्तान की है। औरतों के लिये पाखाना बहुत ज़रूरी है। पाखाना बनाने में आपलोग लड़कों को कुछ मदद कर दें। कुछ लोग खरदे दें। कुछ लोग बाँस दे दें। कुछ लोग देह से मदद कर दें। गाँव के लोगों ने मदद करने के लिये कहा।

ता० १४-१०-४१ ई० को हमलोगों ने स्कूल की सफ़ाई की। ठाट का
दीवाल में जहाँ कि मिट्टी गिर गयी थी उसको लेवारा। मिट्टी, गोबर से क्लास को
के हाते के अगल–बगल को साफ़ किया। मास्टर साहबलोगों के डेरे को
ता० १५-१०-४१ ई० को बकुचिया गाँव की सफ़ाई की। सड़क और गलियों को
पानी के एकसरे गढ़े को भरा। ता० १६-१०-४१ ई० को हमलोगों के स्कूल
ट्रेनिंग स्कूल के हेड-मास्टर पंडित रामशरण उपाध्याय, बाबू द्वारिका
श्रीनारायण चौधरी आये थे। उनलोगों ने हमलोगों के स्कूल की सफ़ाई देख
ख़ुशी ज़ाहिर की। द्वारिका बाबू ने हमलोगों के स्कूल के मुलाहिज़े में भी
स्कूल साफ़ है। उसी दिन शाम को हमलोगों ने माठिया गाँव की सफ़ाई
खाईनुमा पाखाने बनाये गये। गाँव के लोगों ने हम लोगों को मदद की।

इस काम का गाँव पर अच्छा असर पड़ा है। मठिया में लोगों ने अब
नुमा पाखाने बनाये हैं। पटखौली गाँव के लोगों ने भी दो पाखाने बना लिये
चिया के पंडित गोपाल तिवारी ने एक दिन स्कूल में आकर कहा कि हमलोगों
में भी पाखाने बनाये जायँ। एक दिन बकुचिया में भी जाकर हमलोग
बनायेंगे। अब मठिया की सड़क साफ़ रहती है। अब हमलोग अपने-अपने
चरखा चलवाने की भी कोशिश कर रहे हैं। मठिया में तीन और बकुचिया में
चलने लगे हैं। हमलोग उन लोगों की रूई धुन देते हैं। पूनी बना देते हैं।
कर देते हैं। पंडित छकौड़ी प्रसाद तिवारी ने एक धुनकी भी ख़रीदी है।

देवता प्रसाद दूबे,
तीसरा दर्जा, मठिया–बकुचिया बुनियादी
ज़िला चम्पारन, बिहार।

बुनियादी तालीम का साहित्य

"बुनियादी तालीम के दो साल"—दूसरी बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा परिषद्, जामिआनगर, दिल्ली, अप्रैल १९४१ की रिपोर्ट। प्रकाशक—हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम, वर्धा। *

बुनियादी तालीम की पहली कल्पना गान्धीजी ने लोगों के सामने रक्खी, तब से इस विषय में तीन परिषदें हुई। एक तालीमी संघ की स्थापना के पहले और दो उसके बाद। कमनसीबी से मैं इनमें से एक में भी हाज़िर न हो सका था और तीनों की छपी हुई रिपोर्टें देख कर ही सन्तोष और इनमें हुए कामकाज की जानकारी मालूम कर लेनी पड़ी। ऊपर लिखी हुई किताब में बुनियादी तालीम शुरू होने के बाद हुई दूसरी परिषद् का अहवाल (रिपोर्ट) है। यह मजलिस अप्रैल १९४१ में दिल्ली में हुई थी। डॉ० ज़ाकिर हुसेन इसके सदर थे और डा० राजेंद्रप्रसादजी ने इसका उद्घाटन किया था।

पहली कॉन्फ्रेन्स अक्टूबर १९३९ में पूना में हुई थी। अगरचे उस वक्त कार्यकर्ताओं का इस दिशा में अभी तक "अनुभव भी कम था और नाकाफ़ी भी" फिर भी जितना अनुभव हुआ था उसके सार के तौर पर परिषद् का नीचे लिखा प्रस्ताव है:—

"बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा का काम देश के भविष्य के लिए इतना अधिक महत्त्वपूर्ण है कि भविष्य में चाहे जो राजनैतिक परिवर्तन हों यह तो बिना किसी रुकावट के जारी रहना ही चाहिए।"

बाद करीब डेढ़ साल बीत गया। दरमियान में सरकार की कुछ भी नीति हो, इन प्रयोगों को दिलचस्पी से करनेवाले सरकारी तथा खानगी कार्यकर्ताओं को नये अनुभव और सुझाव मिलते गए। तब फिर से इसका ऊहापोह करने और एक दूसरे के अनुभव और फायदा उठाने के लिए दूसरी परिषद् बुलाई गई, जिसका कि इस पुस्तक में विवरण है।

प्रस्तावना, ८ भाग और एक परिशिष्ट भाग ऐसे १० अलग अलग भागों से यह विवरण बना हुआ है। हरएक भाग में बहुत मसाला भरा हुआ है, जो कि सिर्फ बुनियादी तालीम में ही नहीं; बल्कि सरेआम शिक्षा के क्षेत्र में दिलचस्पी लेनेवाले हर कोई शख्स को बहुत रस और बोध देनेवाला मालूम होगा।

---

* प्राप्तिस्थान:— हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम, वर्धा और सस्ता साहित्य मण्डल, कनाट सर्कस, नई दिल्ली।

परिषद् का काम तीन दिन तक चला और मालूम होता है कि बहुत ... और उत्साह से चला। इसके साथ एक प्रदर्शनी भी रक्खी गई थी, जो मालूम ... कि बहुत बोधप्रद और दिलचस्प बनी होगी। परिषद् में उड़ीसा, बिहार, बम्बई, ... युक्तप्रान्त और कश्मीर के जिम्मेवार कार्यकर्ताओं ने अपने अपने विभागों में ... तालीम के काम की रिपोर्टें पेश कीं और उनमें निखालस भाव से अपनी ... निष्फलता और आशा-निराशाएँ प्रकट कीं।

डॉ० ज़ाकिर हुसेन का प्रमुख स्थान से दिया हुआ भाषण गौर करने लायक ... मेहनत और मज़दूरी या पेशे और पैसे की गरज़ से किया हुआ दस्तकारी का काम ... तालीमी दृष्टि से किए हुए काम का उन्होंने बताया हुआ भेद खयाल में रखने लायक ... वे कहते हैं:—

"मेरा खयाल है कि जब हम तालीम के सिलसिले में काम का ज़िक्र करें ... वही काम ध्यान में रखना चाहिए जिससे तालीम हो; आदमी, अच्छा आदमी ... काम तालीमी काम नहीं होता। काम तालीमी तभी हो सकता है कि उसके शुरू ... कुछ तैयारी करे। जिस काम में बुद्धि को स्थान न हो वह काम मुर्दा मशीन ... सकती है। इससे बुद्धि की शिक्षा व संस्कार नहीं होते। काम से पहले काम ... काम का खाका मस्तिष्क में बनाना ज़रूरी है, फिर दूसरा क़दम भी बुद्धि का ... है, यानी इस नक्शे को पूरा करने के साधन सोचना। तीसरा क़दम होता है ... किसी को लेना, किसी को छोड़ देना और चौथा क़दम है—किए हुए को ... कि जो नक्शा बनाया था, जो करना चाहा था वही किया और जिस तरह ... का इरादा किया था उसी तरह किया या नहीं; और नतीजा इस योग्य है ... कि इसे किया जाता। ये चार मञ्जिलें न हों तो तालीमी काम हो ही नहीं सकता।"

रिपोर्ट के दूसरे भाग में देश में चलते हुए भिन्न भिन्न बुनियादी स्कूलों के ... दार सञ्चालकों के भाषण हैं। हरएक ने अपने खास खास अनुभव, प्रयोग, ... और खुद को मिली हुई रोशनी का बयान दिया है और अन्त में श्री. शिवदया... ने कुछ कठिनाइयाँ और श्री. उत्तमसिंह तोमर ने दिक्कतों के रूप में पाँच सवाल ... किए हैं तथा उन पर डॉ० ज़ाकिर हुसेन ने जवाब दिए हैं।

ये दिक्कतें ऐसी हैं कि जो बारबार पूछी जायँगी, इसलिए उन्हें यहाँ दे देना ... होगा; ताकि इस पुस्तक के पाठक उन्हें और उनके उत्तरों को विस्तार से पढ़ने ... खयाल रक्खेंगे:—

"१. दस्तकारी के लिए कितना समय दिया जाय?

२. पाठ्यक्रम की कम से कम इतनी बातें तो कायम रहनी ही चाहिएँ, जिससे लोग पाठ्यक्रम के मूल आधार को छोड़ कर सीमा से बाहर न चले जायँ ?

३. बुनियादी तालीम बच्चों की सर्वाङ्गिण उन्नति का दावा करती है। लेकिन जब तक बच्चों को अच्छा खाना और साफ़-सुथरा कपड़ा नहीं मिलता, तब तक बुनियादी तालीम का यह किस्सा एक तरह से अधूरा ही है। कम से कम एक वक्त का खाना स्कूल की तरफ से देने का इन्तज़ाम होना चाहिए।

४. ऐसा इन्तज़ाम होना ज़रूरी है कि बच्चे जो कुछ सामान बनावें वह सरकार ख़रीद लें।

५. बच्चों और शिक्षकों दोनों के लिए किताबों की ज़रूरत है। बच्चों की बनिस्बत शिक्षकों के लिए किताबों की ज्यादा ज़रूरत है। वे जल्दी तैयार होनी चाहिएँ।"

डॉक्टर साहब ने इन पर बहुत अच्छे जवाब दिए हैं। वे पूरे पूरे यहाँ देने से जगह बहुत रुक जायगी, इसलिए उनमें से कुछ भाग ही उतारता हूँ:—

"दस्तकारी के लिए कितना वक्त देना चाहिए ? बात सच्ची यह है कि नापतौल के सवाल में पूरे तजरबे बगैर कोई जवाब देना ठीक नहीं होगा। इस वक्त जो लोग दस्तकारी का वक्त कम करना चाहते हैं वे तजरबे से दलील नहीं देना चाहते। इस से हम ठीक रास्ते पर नहीं आ सकेंगे पर तजरबी मदरसों को हमारी योजना पहले सच्चाई से चलना चाहिए और फ़िर इसमें तब्दीली की तजवीजें करनी चाहिएँ।"

"दूसरे सवाल के जवाब में मुझे यह कहना है कि अगर लोगों ने सोच-समझ कर और अपनी ज़रूरतों को सामने रख कर पाठ्यक्रम को कुछ बदल दिया है तो ठीक किया है, मगर कोई ऐसी तब्दीली जिससे उसका मकसद उलट जाय ठीक नहीं। उन्हें अपने ऊपर इतनी ही पाबन्दी रखनी चाहिए।"

"तीसरी बात बच्चों के खाने के बारे में कही है। हिन्दुस्तान के गाँवो की हालत जानने वाला तोमर साहब की बात पर 'हाँ' न कहेगा तो क्या कहेगा ? लेकिन यह सवील हकूमत के जवाब देने का है। हम तालीम का काम करने वाले तो यही कर सकते हैं कि इस बात को हरदम जताते रहें और जताने से थकें नहीं और कभी निराश न हों, यहाँ तक कि हकूमतों से भी निराश न हों।"

मुझे अदब के साथ कबूल करना चाहिए कि डॉक्टर साहब के इस जवाब से मुझे सन्तोष नहीं हुआ। हमने तालीम की एक नई तजवीज़ बनाई, क्योंकि पुरानी हमें

बुरी मालूम हुई। उस तजवीज़ में हमने साफ़ कर दिया कि अगर हमें ठीक तरह से देश के बच्चों को तालीम देना है तो उनके लिए यह सरञ्जाम पैदा करना होगा और यह खर्च करना होगा। अगर हम यह समझते हैं कि वे सब खर्च करने पर यदि भूखे बच्चों से काम लेना होगा तो वह नहीं होनेवाला है, तो हमारा फ़र्ज था। हमारी तजवीज़ के अन्दाज़ पत्रों में हम बच्चों के नाश्ते का खर्च भी रख देते और उस पर ज़ोर देते। बुनियादी तालीम जिस तरह बिना दस्तकारी के सफल नहीं हो सकती वैसे ही बिना खुराक भी नहीं हो सकती। लेकिन मुझे डर है कि न सिर्फ हकूमतों में बल्कि खुद शिक्षा-शास्त्रियों में भी यह खयाल इतना आम नहीं। इसलिए तालीमी संघ या दूसरी भी तालीमी कान्फ्रेन्सों में इस बात पर चुप्पी ही रक्खी जाती है। कभी इस पर कुछ सिफारिशी प्रस्ताव भी नहीं बनाया जाता। मेरी राय में यह बात ऐसी नहीं कि के लिए साम्यवादी ही राज होने की ज़रूरत है, या उसे साम्यवादी विचार के ही शिक्षाशास्त्री पेश कर सकते हैं। खैर।

तोमरजी ने पेश की हुई चौथी दिक्कत और उसका उन्होंने बताया हुआ हल डाक्टर साहब ने मन्जूर करते हुए कहा:—"मैं इस बात को हमेशा कहता आया और अब भी कहता हूँ कि मदरसों में बच्चे जो दस्तकारी सीखें, उनसे जो चीज़ें बनें उनको बेचना मदरसे का काम नहीं है, उस्ताद का काम नहीं है। सरकार जी चाहे तो माल को इकट्ठा कर के आग लगा दें और घर फूँक तमाशा देखें?"

"अगर सरकार बुनियादी तालीम को चलाना चाहती हैं, उसे कौम के लिए सही तालीमी व्यवस्था समझती हैं, तो उन्हें जानना चाहिए कि काम की चीज़ें स्कूलों में बनेंगी और उनको काम में न लिया जायगा तो बड़ी मूर्खता होगी? मगर यह काम हकूमत ही को करना होगा। बुनियादी तालीम की तजवीज़ बनाने वालों के मन में पहले दिन से ही इस मामलें में कोई सन्देह न था, न अब है और न हो सकता है, क्योंकि इस की कोई दूसरी सूरत मुमकिन ही नहीं है।"

मैं महसूस करता हूँ कि इस उत्तर में ज़ाकिर साहब ने वाजिब से कुछ ज्यादा कह दिया है। यह बात ठीक है कि बने हुए माल को बेचने या उपयोग में लेने की आखिरी फ़र्ज और जिम्मेदारी सरकार की होनी चाहिए। लेकिन मुझे यह कहना ठीक नहीं मालूम होता कि "जो चीज़ें बनें उनको बेचना मदरसे का काम नहीं है, उस्ताद का काम नहीं है।" मेरी राय में बनाने में जिस तरह तालीमी काम है, उसी तरह बेचने में भी है और अच्छी तालीम की निगाह से भी मदरसे और उस्तादों पर इस काम का कुछ बोझ होना नामुनासिब नहीं माना जाना चाहिए। हाँ, इस

आख़िरी फायदे—टोटे की मदरसों या उस्तादों पर जिम्मेवारी नहीं डाली जा सकती। और माल बनवाते वक्त ही ऐसा ख़याल भी रक्खा जाना चाहिए कि बहुतसा माल सरकारी खातों के ही काम में लाया जा सके। सरकार के "यहाँ रुपये की गंगा बहती हो तो, या उनसे कोई पूछने वाला न हो तो, भी माल को आग लगा दे नहीं सकते। क्योंकि बुनियादी तालीम की दृष्टि से ही वह काम गैर होगा। बुनियादी तालीम का मक़सद सिर्फ़ काम की दस्तकारी के ज़रिए बच्चे को अच्छी तालीम देकर अच्छा आदमी बनावें इतना करने भर से पूरा नहीं होगा। उनकी चीज़ें कौम के उपयोग में आनी ही चाहिए। अगर वे बे—ज़रूरती पैदा की जाती हैं, भले ही वे उपयोग में लाई जा सकनेवाली हों, फिर, भी यह नहीं कहा जा सकेगा कि काम की यानी ज़रूरी चीज़ें पैदा की जा रही हैं। वह उस प्रकार का उद्योग हुआ, जैसा अमेरिका में चलता है, जिसमें लाखों मन दूध, गेहूँ, मांस, मच्छी आदि को पैदा कर के नाश कर दिया जाता है। और, फ़र्ज कीजिए की वहाँ डेअरी या गेहूँ की खेती के द्वारा सब तालीम देने का इन्तजाम है, फिर भी मेरे विचार से वह वर्धा योजना के विचार की बुनियादी तालीम न होगी।

पाँचवी दिक्कत—किताबों की कमी—को बेशक डाक्टर साहब ने माना है और उसकी ज़रूरत पर पूरा ज़ोर दिया है और उसकी मुश्किल पर भी ध्यान खींचा है।

रिपोर्ट के तीसरे भाग में बिहार प्रान्त के बुनियादी स्कूलों में हुआ "पहले दो ग्रेडों म समवायी पढ़ाई के दो वर्षों का अनुभव" का ब्यौरेवार बयान है। इसके संवाददाता श्री. पाण्डेय यदुनन्दनप्रसाद के अनुभव बहुत आशा से भरे हुए हैं। शिक्षा के विविध विषयों को लेकर उसका उद्योग, समाज और कुदरत से समवाय करने का इन्होंने किस तरह प्रयत्न किया है, उसका बारीकी से वर्णन दिया है। अपने अनुभव का उपसंहार करते हुए वे कहते हैं:—

"प्रान्त में दो वर्षों के अनुभव के बाद यह मालूम हुआ है कि पाठ्यक्रम के बहुत बड़े भाग का समवाय उद्योग की क्रियाओं के साथ ही किया जा सकता है और बाकी का बाकी दो प्रतिवेशों के साथ। जिन थोड़े विषयों का समवाय सीधे और स्वाभाविक ढंग से नहीं हो सका है उनकी ज़रूरत भी हमलोगों ने अभी तक नहीं महसूस की है। सम्भव है, आगे चल कर उनका भी समवाय स्वाभाविक ढंग से किया जा सके।"

रिपोर्ट के चौथे भाग में 'अनुबन्ध' की पद्धति पर चार अच्छे निबन्ध हैं और चारों मनन करने योग्य हैं। श्री. उत्तमसिंह तोमर और श्री. जीवनलाल पण्डित ने इसमें

होनेवाली भूलों से बचने के लिए कुछ अच्छे इशारे दिए हैं। और श्री. गोपालराव कर्णी ने कुछ मौलिक बातें बताई हैं। जगह रोकने की डर से उन्हें यहाँ छोड़ देता हूँ।

पाँचवें भाग में भिन्न भिन्न सूत्रों में उस्तादों को तैयार करने के लिए किए गए का ब्यौरेवार विवरण है, और छठे में "बुनियादी शिक्षा में कला का स्थान" बतानेवाले निबन्ध हैं। इसका जिक्र करते हुए श्री आर्यनायकम् ने अपनी भूमिका में कहा "हमारा विश्वास है कि कला के द्वारा आत्मभाव प्रकाशन बुनियादी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अङ्ग है। लेकिन कुशल कार्यकर्ताओं के अभाव में बुनियादी तालीम का यह पहलू अभी तक अधूरा ही है।" इसी विषय की चर्चा करने के लिए कान्फ्रेन्स की खास बैठक रक्खी गई थी। और यद्यपि रिपोर्ट में सिर्फ दो ही सज्जनों के व्याख्यान पाए जाते हैं, वे छोटे होते हुए भी बहुत क़ीमती हैं। डॉ॰ इबादुर्रहमान ने ठीक ही कहा है कि कला को दस्तकारी नहीं मानना चाहिए, बल्कि उसे दस्तकारी का मददगार समझना चाहिए। जब कला और दस्तकारी दोनों साथ साथ चलेंगी, बच्चों को शिक्षा देने की एक बड़ी चीज़ पैदा हो जायेगी।"

सातवें भाग में प्रदर्शनी का वर्णन है और आठवें में कॉन्फ्रेन्स के निर्णय दिए हैं। आख़िर के परिशिष्ट में पाठ्यक्रमों के फेरफार बताए गए हैं।

मुझे यकीन है कि प्राथमिक शिक्षा में दिलचस्पी लेनेवाले सब तरह के शिक्षा-शास्त्री इस रिपोर्ट के पढ़ने से लाभ उठाए बगैर नहीं रहेंगे।

२१-१२-४१

किशोरलाल घ० मशरूवाला

'नई तालीम' के नियम

१—हिन्दी 'नई तालीम' अंग्रेज़ी महीने की हर पहली तारीख को सेवाग्राम से और उर्दू 'नई तालीम' हर पहली तारीख को जामिया मिलिया, दिल्ली से प्रकाशित होती है। दोनों में मज़मून एक ही रहते हैं।

२—हिन्दी तथा उर्दू 'नई तालीम' का वार्षिक मूल्य सवा रुपया है। एक अङ्क की क़ीमत दो आना है। वार्षिक मूल्य पेशगी लिया जाता है।

३—ग्राहक किसी भी महीने से बन सकते हैं, पर साल-भर से कम के ग्राहक नहीं बनाये जाते।

४—दोनों पत्र प्रकाशित होते ही सावधानी के साथ ग्राहकों को भेज दिये जाते हैं। अगर एक हफ्ते के अन्दर अङ्क न मिले, तो पहले डाकखाने से पूछताछ करके फिर लिखना चाहिए। पत्र न मिलने की पुरानी शिकायतों पर ध्यान न दिया जायगा।

५—तीन महीने से कम के लिए पता बदलवाना हो, तो अपने डाकखाने से इन्तज़ाम करलें।

६—ग्राहकों को चाहिए कि रैपर पर पते के साथ दी हुई अपनी ग्राहक-संख्या हमेशा याद रक्खें और पत्र-व्यवहार में ग्राहक-संख्या लिखना न भूलें, वरना कोई कार्रवाई न की जायगी।

व्यवस्थापक, 'नई तालीम'
सेवाग्राम, वर्धा, सी० पी०

Reg. No. N.

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम, वर्धा की

प्रकाशित पुस्तकें

१–शिक्षा में अहिंसक क्रान्ति (हिन्दी)

२–एज्यूकेशनल रिकॉन्स्ट्रक्शन (अंग्रेजी)

३–बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा (हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी)

४–एक कदम आगे (हिन्दी, अंग्रेजी)

५–दी लेटैस्ट फैड (अंग्रेजी)

*६–मूल उद्योग कातना (हिन्दी, मराठी)

७–ओटना व धुनना (हिन्दी, उर्दू)

*८–तकली (हिन्दी, मराठी)

९–गत्ते का काम (हिन्दी, अंग्रेजी)

,, ,, ,, (हिन्दी-सजिल्द)

१०–खेती-शिक्षा (हिन्दी, मराठी)

*११–कताई-गणित, भाग १

१२–कताई-गणित, भाग २

१३–बुनियादी तालीम के काम का तफ़सीलवार लेखा (हिन्दी और अंग्रेजी साथ साथ)

*१४–दो साल का काम (दिल्ली कॉन्फरेन्स की रिपोर्ट)

* इन पुस्तकों के उर्दू अनुवाद छप रहे हैं।

प्रकाशक : श्री आर्यनायकम, मंत्री, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम, वर्धा
मुद्रक : ऋषभदास जाजू, श्रीकृष्ण प्रिंटिंग वर्क्स लिमिटेड, वर्धा।

नई तालीम

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ का मुखपत्र

सम्पादिका
आशा देवी

सम्पादक
बद्रीनाथ वर्मा

वार्षिक : सवा रुपया
एक प्रति : दो आना

वर्ष ४, संख्या २
मार्च १९५२

लेख-सूची

चन्दे के बारे में सूचना

चन्दा ख़त्म होने का लेबल जिन ग्राहकों के अंकों पर हो, वे आगामी वर्ष का चन्दा १।) रु० हमारे पास उस महीने की २५ तारीख़ के भीतर भेज देने की कृपा करें। २५ तारीख़ तक चन्दा न आने पर आगामी अंक वी. पी. द्वारा भेजा जायगा।

किसी कारणवश 'नई तालीम' बन्द करना हो तो ग्राहकों से अनुरोध है कि उसकी सूचना हमें उस महीने की २५ तारीख़ के भीतर देने की कृपा करेंगे। वी. पी. **लौटा कर हमें फ़िज़ूल ख़र्चे में न डालें।**

मनी-ऑर्डर भेजते वक्त या पत्र-व्यवहार में अपना ग्राहक नंबर ( ) ज़रूर लिखिए।

नई तालीम

भाग ४ सेवाग्राम, १ मार्च १९४२ संख्या ३

रेगिस्तान में नखलिस्तान

हाल में बिहार गवर्नर के सलाहकार मिस्टर ई. आर. जे. आर. कज़िन्स ने बिहार के बुनियादी स्कूलों का मुआयना किया और उसका नोट हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के मन्त्री श्री आर्यनायकम् के पास भेजा है। बुनियादी तालीम के खिलाफ सरकारी अफ़सरों की अविचारी आलोचनाओं के रेगिस्तान में बुनियादी स्कूलों की तारीफ करनेवाला मिस्टर कज़िन्स का यह नोट देखकर खुशी होती है।

—मो. क. गान्धी

"हरिजन" से]

चम्पारन के बुनियादी स्कूलों का मुआयना

बोर्ड ऑफ बेसिक एजुकेशन, बिहार के अध्यक्ष मि. कजिन्स का मुआयना

ता० २१ जनवरी १९४२ को बिहार के गव्हर्नर महोदय के एडवायज़र और बोर्ड ऑफ बेसिक एजुकेशन, बिहार के अध्यक्ष श्रीमान ई. आर. जे. आर. कजिन्स साहब, सी. एस. आई. सी. आई. ई., आई. सी. एस. ने चम्पारन जिले के अन्दर वृन्दावन इलाके के सघन क्षेत्र में बिहार सरकार की तरफ़ से प्रयोग के तौर पर जो बुनियादी स्कूल चलाये जाते हैं उनके काम देखने के लिये एक रोज़ का समय दिया, इन स्कूलों के चार दर्जों के विद्यार्थियों के काम की जाँच की और दस्तकारी के ज़रिये किस तरह यह नई तालीम दी जा रही है उसका परिचय लिया। आपने बच्चों की कताई, बागवानी, गत्ते, लकड़ी और धातु के कामों को देखा। उनके लेखों की किताबों, डायरियों, सचित्र दैनिक मौसिमी चार्टों,

प्रोजेक्ट की पुस्तकों और शिक्षक तथा छात्रों के सहयोग से जो पाठ्य... तैयार की गई है उसे गौर से देखा।

बच्चों के खेल और कसरतों को देखा। एकता एवं जातीय सौहार्द से ओत... अनेक राष्ट्रीय गानों को सुना। अन्त में आपने विभिन्न बुनियादी पाठशालाओं... एकत्रित तीन सौ से अधिक बालचरों तथा शेर बच्चों के अभिवादन को स्वी... किया। उस खराब मौसिम के होते हुए भी आपने वृन्दावन और चौरे... परुकिया के केन्द्रों में एकत्रित अठारह बेसिक स्कूलों के विद्यार्थियों को किसी... किसी रूप में देखा। आपने जो कुछ देखा उसमें काफी दिलचस्पी लेते हुए... आये और बच्चों के चमकते हुए चेहरे, उनकी कुशाग्र बुद्धि, स्वच्छता तथा... लेपन से प्रसन्नचित्त दीख पड़े। आपको इस बात की खुशी हुई कि बच्चे... में इन स्कूलों में काम करते हुए आनन्द का अनुभव करते हैं और ऐसा... पड़ता था मानों आपके इस निरीक्षण ने बुनियादी शिक्षा प्रणाली के महान... के प्रति आपके आत्मविश्वास को और सुदृढ़ कर दिया हो।

मिस्टर कजिन्स ने अपने मुआयने में यह नोट दिया:—

"मैंने इस स्कूल का आज पहली बार मुआयना किया। जो कुछ... देखा बड़ी दिलचस्पी के साथ देखा। बच्चों के चेहरों में बुद्धि का प्रकाश... झलकता था। और वह अपने काम में सच्चा आनंद ले रहे थे। वे सब साफ... और सुघड़ थे। स्कूल के सारे वातावरण का जो असर मुझपर पड़ा उससे... बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। इस नई तालीम में जो महान आशाएँ हैं उनके बारे... मैं पहले ही से अच्छी राय रखता था। इस स्कूल को देखने से मेरी यह... और पुष्ट हुई।"

वृन्दावन इलाके के शिक्षकों और छात्रों के नाम उन्होंनें यह संदेश भेजा:—

मुझे दुःख है कि जोरों की वर्षा होने के कारण बुनियादी स्कूलों के... का जो मेरा प्रोग्राम था उसमें बाधा होती गई और उसे काट-छांट कर... कर देना पड़ा। मगर तब भी २७ स्कूलों में से १८ स्कूलों के शिक्षकों और छात्रों... से मिलने का मुझे मौका मिला-६ से वृन्दावन रमपुरवा में और १२ से... टोला पडुकिया में। वहाँ जो कुछ भी मैंने देखा उन सबों से मुझे अत्यन्त प्रसन्नता... एवं मनोरंजन हुआ। यह सच है कि जब तक सातों वर्ग पूरे नहीं हो जाते... तक तो हम इस प्रयोग पर पूर्ण-रूप से निर्णय करने में समर्थ नहीं हो सकते, किन्तु...

इतना तो मैं कहूँगा कि बच्चों को जो सफ़ाई है, उनकी जैसी तीव्र वृद्धि है और अपने कामों में जो प्रत्यक्ष आनन्द वे ले रहे हैं, इन सब बातों का मुझ पर पूरा असर पड़ा और मुझे पूरा विश्वास है कि हम लोग ठीक रास्ते पर चल रहे हैं और यह भी कि ये बच्चे जब १४ वर्ष के होंगे और पूरे बुनियादी करीक्युलम (पाठ्यक्रम) से होकर निकलेंगे तो कभी वे उन लड़कों की तुलना में पीछे न पड़ेंगे जो उनकी ही उम्र के होंगे मगर जिनकी शिक्षा साधारण प्रणाली के अनुसार हुई होगी।

एक उत्साह बढ़ानेवाली विशेष बात और है जिस पर मैं सब से ज्यादा ज़ोर देता हूँ वह यह कि इन स्कूलों ने गाँव के लोगों की शुभेच्छा और दिलचस्पी प्राप्त करने में निःसन्देह सफलता पाई है और जब तक ऐसी हालत कायम है तब तक यह सर्वथा असम्भव है कि यह प्रणाली सफल न हो। चौबटोला-पडुकिया के मालिकों और निवासियों ने जो सार्व-जनिक-सेवा-भाव दिखलाया है वह अत्यन्त ही सराहनीय है। उन्होंने अपने स्कूल के लिये अत्युत्तम खेलने का मैदान दे डाला है, सड़कें बनवा दी हैं और बालचरों के इतने बड़े दल के लिये जैसा कि मैंने कदाचित ही कभी देखा होगा, पूरे सामान जुटा दिये हैं। सब से बढ़ कर तो यह है कि वे इस बात पर ज़ोर दे रहे हैं कि गाँव के लड़के बराबर स्कूल जाया करें। कुछ और स्कूलों को मैं नहीं देख सका मगर मुझे विश्वास दिलाया गया है कि सार्वजनिक सेवा-भाव के इसी प्रकार के प्रमाण उन स्कूलों के सम्बन्ध में भी मिल रहे हैं। मुझे विश्वास है कि इन गाँववालों को अपने इन प्रयत्नों का फल भरपूर मिलेगा और यह कि जिस अर्थ में शिक्षा साधारणतः समझी जाती है उस अर्थ की शिक्षा तो इन गाँवों के भावी बच्चे पायेंगे ही। इसके सिवा इन स्कूलों के द्वारा मानसिक जागरुकता, हाथों की निपुणता, स्वास्थ्य और सफ़ाई के गुण भी प्राप्त करेंगे। फलतः ये गाँव जैसा कि वे अभी तक रहे हैं, भविष्य में उनसे कहीं बढ़कर स्वास्थ्यकर, आकर्षक और प्रकाशमान होंगे।"

बिहार के गवर्नर साहब का मुआयना

तारीख़ १०-२-४२ को बिहार के गवर्नर हिज़ एक्सेलन्सी सर टी. ए. स्टीवर्ट साहब ने वृन्दावन बेसिक स्कूल का मुआयना किया। उन्होंने बड़ी दिलचस्पी के साथ स्कूल का सारा काम देखा। उन्होंने कताई-बुनाई, गत्ते और लकड़ी का काम, धात का काम और बाग़वानी के काम की भिन्न भिन्न प्रक्रियाओं

में लगे हुए बच्चों का निरीक्षण किया। इन कामों के इर्दगिर्द में पढ़ाई के कुछ नमूने देखे और काम के साथ साथ बच्चों के गीत सुने, बच्चों की रचना के कुछ नमूने भी उन्होंने सुने।

स्कूल का काम देखने के बाद गवर्नर साहब ने नीचे लिखे हुए अभिमत दिये:—

"इस स्कूल का काम देखने से कज़िन्स साहब का जो अनुभव रहा मेरा भी अनुभव वही है। हमने एक बड़े महत्त्व का प्रयोग हाथ में लिया है। इस स्कूल में अपने थोड़ी देर के मुआयने की बुनियाद पर उसकी कामयाबी की उम्मीद के बारे में अपनी राय जाहिर करने में मुझे हिचिक-सी मालूम होती है। लेकिन फिर भी मैंने बहुत-कुछ बातें देखीं जिससे हिम्मत बढ़ती है। और पहिले जो कुछ देखा उसमें और इसमें फ़र्क़ है। मैं बड़ी हमदर्द और दिलचस्पी के साथ इस बुनियादी तालीम के भावी विकास को देखता रहूंगा।"

स्कूल के मुआयने के बाद गवर्नर साहब ने ८६१ स्काउट और शेर बच्चों की रैली देखी। इस रैली में वृन्दावन के २७ बुनियादी स्कूलों के और प्रक्टिसिंग स्कूल के स्काउट हिज़ एक्सीलेंसी चीफ़ स्काउट से मिलने के लिये कुमारबाग़ में इकट्ठे हुए थे। रैली से पहले चार दिन के लिये स्वावलंबन के तरीक़े पर एक कैम्प चलाई गई थी। सब टोलियाँ अपना-अपना खाना स्वयं पकाती थीं। और हर तरह का काम, जिस में सफ़ाई का काम भी शामिल था, अपने हाथ से ही करती थीं।

स्काउट और शेर बच्चों का अभिवादन स्वीकार करने के बाद गवर्नर साहब स्काउटों के खेल देखते रहे। इन में बच्चों के स्वागत गान, हिन्दी में एक साथ चलने का गान, कुश्ती का मैच, सामूहिक ड्रिल, कसरत के खेल, पिरैमिड बनाना, देहाती झगड़े, फ़र्स्ट एड, बिदाई का गाना शामिल थे। कमान्डिंग अफ़सर मिस्टर बी. पी. सिन्हा ने सब आवाजें और हुक्म हिन्दुस्तानी में ही दिये थे।

तमाम काम बड़ी खूबसूरती से वक्त की पाबन्दी का पूरा ख्याल रखते हुए किया गया था। उस में बुनियादी शिक्षा प्रणाली और स्काउटिंग दोनों का अच्छा परिचय मिला।

रैली समाप्त होजाने के बाद हिज़ एक्सीलेंसी गवर्नर महोदय ने निम्नलिखित सँदेसा वृन्दावन के स्काउटों के लिये छोड़ा। यह सँदेसा बेसिक शिक्षा बोर्ड बिहार के मंत्री रायसाहब पं० रामशरण उपाध्याय ने स्काउटों को पढ़ कर सुनाया।

वृन्दावन के स्काउटों के लिये संदेश

गवर्नर का कैम्प, बिहार १-२-४२

मुझे बहुत अफ़सोस है कि व्रिन्दावन में मेरे पास इतना कम समय था कि मैं तुम्हारे खेल और तुम्हारे काम को ज्यादा न देख सका और न तुमसे बातें करने के लिये ठहर ही सका। फिर भी मैं तुम्हें यह बता देना चाहता हूँ कि देहात के जीवन को सुधारने और उसकी हर प्रकार से तरक्की करने में लड़के स्काउट अपना काम अच्छी तरह से कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि तुममें से हरएक अपनी शक्तिअनुसार इसमें मदद ज़रूर देगा, और इसके लिये हमेशा स्काउटों के सिद्धांत और नियम मानने के अलावा कोई दूसरा अच्छा रास्ता नहीं हो सकता।

टी. ए. स्टीवर्ट
चीफ़ स्काउट, बिहार

पटना बेसिक ट्रेनिङ्ग स्कूल की पहली प्रदर्शनी

बुनियादी तालीम की योजना में प्रदर्शनी का एक महत्त्व का स्थान है और शिक्षकों की ट्रेनिंग का यह भी एक ज़रूरी अंग है। इस उद्देश्य को सामने रख कर १४-१-४२ से १६-१-४२ तक तीन दिनों के लिये पटना बेसिक ट्रेनिंग स्कूल में एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। बिहार सरकार के एडवाइज़र और बोर्ड ऑफ बेसिक एजुकेशन बिहार के सभापति मि. ई. आर. जे. आर. कज़िन्स ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

ता. १४-१-४२ को इस प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ। प्रदर्शनी के उद्घाटन करने के लिये श्रीमान कज़िन्स साहिब का अनुरोध करते हुए रायसाहिब पंडित रामशरण उपाध्याय, सेक्रेटरी बेसिक एजुकेशन बोर्ड, बिहार ने कहा:—

"बेसिक ट्रेनिंग स्कूल की इस पहली प्रदर्शनी के अवसर पर आज आप लोगों का स्वागत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। बुनियादी स्कूल गाँव की सामाजिक जिन्दगी का केन्द्र है और सामाजिक जीवन से सम्बन्ध रखनेवाली सारी दिलचस्पियों को स्वाभाविक ढंग से आलिंगन करना ही इसके कार्यक्षेत्र का

प्रधान अंग है। इसलिए शिक्षकों की ट्रेनिंग के कार्यक्रम में समय-समय प्रदर्शनी का आयोजन करने तथा समाजसेवा के काम करने का प्रबन्ध किया है, ताकि गुरुछात्र अपने-अपने स्कूल में इस तरह के कामों का प्रबन्ध तथा कर सकें।

बिहार में बुनियादी तालीम का प्रयोग आज तीन वर्षों से चल रहा है फिर भी बहुतेरे लोगों को अभी तक यह नहीं मालूम हो सका है कि यह है। इसलिए आपकी अनुमति लेते हुए मैं इस शिक्षा के कुछ सिद्धान्तों के प्रकाश डालूँगा।

बुनियादी शिक्षा, शिक्षा का कम से कम वह अंश है जिसे पाकर राष्ट्र सभी बच्चे चाहे लड़के हों या लड़कियाँ, इस तरह योग्य नागरिक बन जिससे वे एक संगठित समाज में समुचित समय में समुचित स्थान ग्रहण सकें। इस तरह की कम से कम शिक्षा सब के लिए अपेक्षित है पर जिन्हें हर तरह की शिक्षा पाने का सुअवसर सुलभ है तथा इच्छा रखते हैं वे आगे बढ़ सकते हैं। यह शिक्षा मातृभाषा के द्वारा ही देनी है और सात साल उम्र से शुरू होकर सात साल तक देनी है। शिक्षा की इस अवधि में शिक्षा केन्द्र किसी किस्म की उत्पादक दस्तकारी होनी चाहिए। और बच्चों में दूसरे गुण पैदा करने हैं और उनको जो शिक्षा-दीक्षा देनी है उसका सम्बन्ध तक हो सके इसी केन्द्रीय दस्तकारी से होना चाहिए और इस दस्तकारी चुनाव में इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि वह बच्चों के सामाजिक भौतिक प्रतिवेशों के अनुकूल हो।

नीचे लिखी बातें निचोड़ स्वरूप दी जा सकती हैं।

(१) जो भी दस्तकारी चुनी जाय वह ऐसी हो कि उसके ज़रिए शि देने की काफी गुंजाइश हो। आदमी के ज़रूरी कामों और दिलचस्पियों लगाव रखनेवाली सभी बातें इसमें होनी चाहिए और यह भी ज़रूरी है बातें शिक्षा के पूरे पाठ्यक्रम में फैलायी जा सकें।

(२) उद्योग की शिक्षा मशीन की तरह नहीं हासिल की जाय, इस अभ्यास समुचित तथा वैज्ञानिक ढंग से हो तथा व्यावहारिक ज्ञान और कुशल को ध्यान में रखते हुए किया जाय। दूसरे शब्दों में उद्योग से जो कुछ हासिल किया जा सके उसकी आर्थिक दृष्टिकोण से क़ीमत हो और यह स्कीम धीरे-

स्कूलों में शिक्षकों की तनख्वाह जैसे आवृत्त होनेवालें खर्च का ज्यादा से ज्यादा हिस्सा खुद निकाल सके।

यह सही तौर से समझ लेना चाहिए कि आवृत्त होनेवाले खर्च में मकान बनाने, सामान, पुस्तकें, नकशे, औज़ार तथा यन्त्र इत्यादि खरीदने के खर्च नहीं शामिल किये गए हैं। अधिक माल तैयार होने पर उचित क़ीमत देकर खरीद लेने तथा हर तरह की बाज़ारू सहूलियतें देने की ज़िम्मेवारी सरकार पर है।

यह स्कीम सर्वसाधारण के लिए है। इसलिए इसे लोगों की आम हालत को भी ध्यान में रखना है। हिन्दुस्तान के निवासी ज्यादातर गाँवों में रहनेवाले हैं और ८० प्रतिशत से भी अधिक वे विखरे हुए सात लाख गाँवों में रहते हैं। लोग ज्यादातर गरीब हैं। उन्हें भरपेट भोजन नहीं मिलता। उनमें नासमझी है, अज्ञानता है, उन्हें सफ़ाई और स्वास्थ्य की सहूलियतें सुलभ नहीं हैं। नागरिकता की बहुत कम जानकारी है। आज के युग में हरएक नागरिक के लिए जो कर्त्तव्य तथा सहूलियतें अपेक्षित हैं उनसे वे अनभिज्ञ हैं। इसलिए व्यापक ढंग से कम से कम जो शिक्षा प्रदान करनी है उसमें इस बात का ख्याल रखना है कि लोगों के जीवन में वह इस तरह की शक्ति प्रदान करे जिससे उनका जीवन ऊँचा उठ सके। हमें ऐसी शिक्षा की ज़रूरत है जो जिन्दगी की तैयारी के लिए हो और वह जिन्दगी की तैयारी बहुसंख्यक के लिए चाहिए। जीवन को तैयार करने वाली शिक्षा काम से सरोकार रखती है। ऐसे वातावरण में पैदा हुए बच्चे के लिए शिक्षा का माध्यम कोई काम या उत्पादक दस्तकारी होनी चाहिए। काम, खेल तथा उत्पादक दस्तकारी के ज़रिए जो शिक्षा मिलती है उस पर प्रकृति, विज्ञान, तथा मनोविज्ञान की छाप रहती है और दुनिया के हरएक उन्नतिशील देश में इसी से मिलती जुलती शिक्षा दी जाती है। उत्पादक दस्तकारी जहाँ शिक्षा का माध्यम है, वह बचपन की आवश्यकताओं को ही केवल पूरा नहीं करती वरन वह वैज्ञानिक भी है। इसलिए ऐसे स्कूल का ध्येय जो इस तरह की नयी पढ़ाई के लिए शिक्षक तैयार करना है, पुरानी पद्धति के शिक्षकों को तैयार करनेवाले स्कूलों से बिलकुल भिन्न होगा। नयी रोशनी का शिक्षक तैयार करनेवाला यह स्कूल केवल किताबी योग्यता रखने वाले विद्वानों को ही तैयार न करेगा वरन् वह ऐसे दक्ष, तीव्र बुद्धिवाले तथा कुशल दस्तकार को तैयार करेगा जिनमें पूर्व देशीय संस्कृति रहेगी और जो समाज की सेवा करने के लिए सदा इच्छुक रहेंगे तथा अपनी भावी सन्तान की आवश्यकताओं को समझेंगे जो शिक्षा के मध्यबिन्दु में निहित है।

ट्रेनिंग स्कूल के कामों के संगठन का विवरण सुनाकर मैं आप लो और ज्यादे समय लेना नहीं चाहता। ये आप लोगों में से जिन्हें इसके प्रति सहानु भूति तथा दिलचस्पी है वे इन तीन दिनों तक प्रदर्शनी में आने का कष्ट करें तथा साल में कभी-कभी स्कूल का कार्यक्रम व्यावहारिक ढंग से देखकर इस के बारे में ज्यादे से ज्यादे जानकारी हासिल कर सकते हैं।

चम्पारण जिले के बेतिया इलाके में खोले गए बुनियादी स्कूलों में करने लायक शिक्षक तैयार करने के लिए गुरुछात्रों की ट्रेनिंग तीन बुनियादी दस्तकारियों के द्वारा देने का उद्देश्य रखा गया है। बुनियादी दस्तकारियाँ हैं १ खेती, २ कताई और बुनाई, । ३ लकड़ी और धातु के काम, और ये तीन जीवन की तीन आवश्यकताओं (भोजन, कपड़ा और रहने की व्यवस्था) को पूरा करती हैं।

बच्चे जो सात साल की उम्र में ही स्कूल में दाखिल होते हैं वे वास्त खेती, बढ़ईगिरी तथा लोहारगिरी जैसे दस्तकारियों के अभ्यास के ला नहीं समझे जाते। इसलिए इस प्रारम्भिक अवस्था में बागवानी, क तथा गत्ते का ही काम शुरू किया गया है जो उपर्युक्त दस्तकारी के प्रवेश-स्वरू हमारे प्रयोग के इन स्कूलों में बच्चे तीसरे ग्रेड तक पहुँच गए हैं और जल वे चौथे दर्जे मे जायेंगे। इस तरह धीरे धीरे हमारे इन स्कूलों में इन तीनों दस्त कारियों का पूर्ण रूप से अभ्यास शुरू हो जायगा। ट्रेनिंग स्कूल में अब खेती दस्तकारी के लिए पूर्ण रूप से प्रबन्ध हो गया है। स्कूल की फूलवारी में ही बागवा का काम कराया जाता है और वास्तविक खेती करने, खेती के कामों का अव कन करने तथा उन्हें बारीकी से अध्ययन करने के लिए हमारे गुरुछात्रों बिहार सरकार द्वारा प्रयोग के लिए कायम किए गए मीठापुर फार्म में अनु मिल गयी है। कताई तथा बुनाई की ट्रेनिंग के लिए हमारे स्कूल में सुन्दर प्रबन्ध है। गत्ते का क्लास धीरे धीरे लकड़ी तथा धातु के काम के क्लास परिणत हो रहा है। इसका समुचित प्रबन्ध आगामी साल में पूरा हो जायगा।

यहाँ पर जिस प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है तथा जिसका उद् घाटन होने जा रहा है उसमें हमारे ट्रेनिंग स्कूल के गुरु-छात्र तथा मॉडल स्कूल के छोटे बच्चे बुनियादी दस्तकारियों की विभिन्न क्रियाओं का प्रदर्शन करेंगे। उद्योग की विभिन्न क्रियाओं का प्रदर्शन करते समय उनसे सरोकार र

वाले शिक्षा की कुछ सम्भावनाओं को भी स्पष्ट करने की कोशिश की जायगी। टंगे हुए चार्ट्स तथा नक्शों में भी शिक्षा की कुछ सम्भावनाओं का स्पष्टीकरण किया गया है, दस्तकारी से पैदा किए कुछ सामानों का प्रदर्शन किया गया है तथा उनकी बिक्री का भी प्रबन्ध है। बेसिक स्कूलों के लिए तैयार किए गए पढ़ाई लिखाई के कुछ चित्र संकेतस्वरूप रख दिए गए हैं जिससे उसी आधार पर शिक्षक खुद उस तरह के चित्र तैयार कर सकें। लोगों का ध्यान आकर्षित करने तथा दिलचस्पी पैदा करने के विचार से ही प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। आशा है, जिन महाशयों तथा देवियों को इस नयी पढ़ाई में अभिरुचि है वे स्कूल के कामों के अवलोकन में ज्यादे समय देने का कष्ट कर इस स्कीम का गहरा अध्ययन करेंगे। प्रदर्शनी की सजावट में स्कूल के शिक्षकों तथा विद्यार्थियों ने जो मेहनत की है उसकी क़ीमत हम तभी समझेंगे जब इस प्रदर्शनी के फलस्वरूप लोग इस बुनियादी शिक्षा की खूबियों से पूर्णतया परिचित हो सकेंगे।

इन शब्दों के साथ मैं श्रीमान् को प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के लिए अनुरोध करता हूँ तथा इसके उद्घाटन करने के लिए आपने आने का जो कष्ट उठाया है उसके लिए पटना ट्रेनिंग स्कूल तथा प्रैक्टिसिंग स्कूल के सभी शिक्षकों, गुरुछात्रों तथा छोटे बच्चों की ओर से धन्यवाद देता हूँ।"

इसके बाद श्रीमान् कज़िन्स साहब ने अपना भाषण दिया। आपने कहा:—"मुफ्त और लाज़िमी तालीम देना हर सरकार का फ़र्ज है। किन्तु इसका बहुत अधिक खर्च ही इसका बहुत बड़ा बाधक था। केवल लोअर प्राइमरी तक की शिक्षा ही प्रान्त की कुल आमदनी ले भागती। इसी मौके पर बुनियादी तालीम हमारे सामने आई। इसकी बड़ी खूबी इसके सस्तेपन में है। इसमें बच्चे सीखते हुए कमाते हैं और कमाते हुए सीखते भी हैं। वे किसी उद्योग में लगे रहते हैं और जो चीज़ें पैदा करते हैं वे बाज़ारों में बिक कर उन्हें अपने पैरों खड़ा होने लायक बनाती हैं। यहीं इसी शिक्षा का प्रयोग किया जा रहा है। यह सात साल तक चलेगा और तभी इसको पूरा समझा जा सकेगा तथा इसकी सफलता देखी जा सकेगी। अब तक तो इसकी उम्र तीन ही साल की है। फिर भी, निष्पक्ष होकर देखने से, मुझे यह कहने में ज़रा भी हिचकिचाहट नहीं होती कि चौदह साल की उम्र तक इन स्कूलों के लड़के दूसरे स्कूलों के लड़कों से और-और विषयों में कुछ अच्छे तो जँचेंगे ही, हाँ इनमें ज्यादा रहेगी आत्मनिर्भरता और स्वावलम्बन।

इस शिक्षा-प्रणाली को बच्चों में उनके पूरे जीवन की बुनियाद डा
उन्हें सच्चे "नागरिक" बनाकर सुधरे हुए गाँवों की बुनियाद डालनी
नागरिक, जिनमें सफ़ाई और स्वास्थ्य का ज्ञान होगा; जिनमें स्वा
और आत्मनिर्भरता रहेगी। हमारे बुनियादी शिक्षण में वह ताक़त है जो
में पूरी दिलचस्पी पैदा करती है और इस देश के भविष्य के लिये इस में
ज्यादे सम्भावनाएँ निहित हैं। इसलिये मैं चाहता हूँ कि आपलोग यहाँ के
में जाकर कुछ समय तक यहाँ के काम तथा उनके तरीक़ों का अध्ययन क

उड़ीसा में बुनियादी तालीम का सप्ताह

जनवरी के आख़िरी दिनों में कटक ज़िले के रामचन्द्रपुर और ग्राम
गाँवों में उड़ीसा के बुनियादी स्कूलों का वार्षिकोत्सव मनाया गया।
११ महीने हुए, १ ली मार्च १९४१ से सरकार की तरफ़ से बुनियादी ताली
प्रयोग बन्द कर दिया गया था। लेकिन बुनियादी तालीम के कार्यकर्ताओं
निश्चय से बुनियादी तालीम का काम बराबर चलता रहा।

इस काम को जिंदा रखने के लिये और आगे चलाने के लिए उत्कल
शिक्षा परिषद् नाम से एक राष्ट्रीय परिषद् की स्थापना की गई। एक छोटा
बजेट तैयार किया गया। कुछ शिक्षक कम वेतन पर इन स्कूलों में काम करने
तैयार हो गये। जो १५ स्कूल सरकार ने बन्द कर दिये थे उनमें से सात
का काम चलता रहा और साथ साथ इन स्कूलों का काम आगे बढ़ाने के
छोटे पैमाने पर कुछ नये शिक्षक भी तैयार किये जाने लगे।

कठिनाइयाँ बहुत रहीं। स्कूल का सामान, दस्तकारी के औज़ार आदि
सरकार उठा ले गई थी। धीरे धीरे उनका फिर से इन्तज़ाम करना
स्कूलों के मकानों का सवाल रहा, आख़िर सरकार से गाँववालों ने इन
स्कूलों की इमारत ख़रीद ली। लेकिन इस बीच में देखरेख न होने की वजह
इन इमारतों की भी बुरी हालत थी। धीरे धीरे उनकी मरम्मत भी हा
लेनी पड़ी। पैसे की कमी थी, शिक्षकों को ठीक वक्त पर वेतन नहीं दिया जा
लेकिन इन कठिनाइयों के रहते हुए भी या शायद इन कठिनाइयों ही की वजह

काम आगे बढ़ता रहा। गाँववालों का पूरा-पूरा सहयोग रहा। बच्चों की संख्या बढ़ी। शिक्षक जब यह समझने लगे कि यह अब सरकारी प्रयोग नहीं बल्कि यह हमारा अपना काम है तब एक नये उत्साह और जोश के साथ काम करने लगे। स्कूलों के काम का मियार भी धीरे धीरे ऊँचा उठने लगा। इसके बीच मे हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के कुछ कार्यकर्त्ताओं ने भी आकर इस काम को देखा, संतोष प्रगट किया और हर तरह से उसकी मदद देने का निश्चय किया। इससे कार्यकर्त्ताओं का उत्साह बढ़ा।

२६ जनवरी १९४२ को उड़ीसा के इन राष्ट्रीय बुनियादी स्कूलों का एक साल का काम पूरा हुआ। नया साल शुरू हुआ। इसी उत्सव को मनाने के लिये रामचन्द्रपुर गाँव में बुनियादी तालीम का सप्ताह मनाया गया।

यह बुनियादी तालीम का सप्ताह सिर्फ़ एक शिक्षा का अनुष्ठान नहीं रहा। उस देहाती वातावरण में गाँववालों के उत्साह और सहयोग से इसने एक देहाती उत्सव का रूप लिया। रामचन्द्रपुर शहरी सभ्यता से बहुत दूर निपट देहाती इलाके में ब्राम्हणी नदी के किनारे एक छोटासा गाँव है। इस गाँव के बाहर ब्राह्मणी नदी के किनारे एक बड़े आम के बगीचे में इस उत्सव का आयोजन रहा। सातों बुनियादी स्कूलों के बच्चे, शिक्षक, उनके माँबाप, गाँववाले और बुनियादी शिक्षा के काम करनेवाले और कुछ मेहमान भी इस उत्सव के लिये इकट्ठे हुए थे। गाँववालों ने सब को अपना ही मेहमान मान लिया और इसे अपना ही उत्सव समझा। गाँव के बाजन्नदारों ने वहाँ आकर डेरा डाला और सुबह से शाम तक अपने बाजे बजाते रहे। स्त्रियों ने नुमाइश और सभा मण्डप की सजावट की। और गाँववाले बच्चों और मेहमानों के खाने के लिये चावल, दाल, घी, साग, भाजी, दूध, दही और चूड़ा भेजते रहे।

२६ जनवरी स्वाधीनता दिवस से कार्यक्रम शुरू हुआ। उस दिन हर स्कूल में नया साल शुरू हुआ। बच्चों और शिक्षकों ने अपने-अपने स्कूल सजाये। झंडा चढ़ाया गया। गाँववालों की सभा बुलाई गई। नये साल का काम शुरू हुआ।

२८ जनवरी सबेरे सात स्कूलों के बच्चे और शिक्षक रामचन्द्रपुर गाँव में इकट्ठे हुए। सुबह झंडा-वन्दन से काम शुरू हुआ। सात स्कूलों के सब से छोटे विद्यार्थी ने अपने हाथ से झंडा फहराया।

दोपहर को डेढ़ बजे से फिर कार्यक्रम शुरू हुआ। डेढ़ से दो बजे तक स्कूलों के विद्यार्थी, शिक्षक और उत्सव के अतिथि सज्जन सब का सम्मिलित घंटे का सूत्रयज्ञ रहा। २ बजे से ४ बजे तक सात स्कूलों के बच्चों की कवायद, खेलकूद, नाटक, गीत, अभिनय आदि का प्रदर्शन रहा। ४ बजे ... का उद्घाटन हुआ।

शाम को ७ बजे सम्मिलित प्रार्थना के बाद आम के बगीचे में गाँववालों की एक आम सभा बुलाई गई। और इस सभा में तालीमी संघ के सदस्यों ने ... तालीम का ध्येय और आदर्श सरल शब्दों में गाँववालों को समझाया।

दूसरे दिन सुबह ४ बजे की सम्मिलित प्रार्थना से कार्यक्रम शुरू हुआ। प्रार्थना के बाद श्री गोपबन्धु चौधरी ने बच्चों को तारों के बारे में कुछ बातें बतलाईं।

८ बजे से फिर बच्चों की सामूहिक ड्रिल और झंडावन्दन और दो... १।। बजे से सम्मिलित सूत्रयज्ञ और बच्चों के खेल, नाटक आदि का ... रहा। खेलकूद के बाद बच्चों ने एकसाथ जलपान किया और राष्ट्रीय ... गाते-गाते अपने-अपने गाँवों को लौटे।

इसके बाद सम्मेलन की दूसरी कार्रवाई शुरू हुई। पहले उत्कल ... शिक्षा परिषद् का वार्षिक अधिवेशन हुआ। इसमें उत्कल के कुछ प्रमुख नेता ... हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के कुछ सदस्य भी उपस्थित थे। परिषद् के ... एक साल के काम की रिपोर्ट और आगे के दो साल के लिये एक बजट ... किये। इसके लिये ज़रूरी खर्चे का प्रबन्ध करने के बारे में चर्चा हुई।

दूसरे दिन शिक्षकों का सम्मेलन शुरू हुआ। शिक्षकों के एक ... काम का अनुभव, उनकी कठिनाइयों और सवालों पर चर्चा हुई। ... में तालीमी संघ के मंत्री श्री आर्यनायकम् और श्रीमती आशादेवी शामिल थीं।

इस सम्मेलन में बुनियादी दस्तकारी कताई, और इसी के ... पढ़ाई के बारे में चर्चा हुई। बच्चों की हाज़िरी किस तरह से बढ़ाई ... व्यवस्थित की जाय, इस पर भी ... विचार हुआ।

हाजिरी का सवाल बुनियादी स्कूलों के लिये एक बुनियादी सवाल है। अव्यवस्थित हाजिरी से काम का संगठन मुश्किल होता है, क्लास का औसत मियार नीचे उतरता है और क्लास के विद्यार्थियों की संख्या पूरी न होने से कार्यकर्त्ताओं को प्रयोग का पूरा अनुभव नहीं मिलता।

इस सवाल पर शिक्षकों ने काफी सोच विचार किया है। उन्होंने स्कूल जाने लायक बच्चों की पूरी गणना तैयार की है और बच्चों के माँबाप से भी बातचीत की है। उनकी राय से ऐसा निश्चय किया गया कि जिन बच्चों के माँबाप बच्चों को नियमित स्कूल भेजने की प्रतिज्ञा करें उन्हीं के बच्चे स्कूल में भर्ती किये जायँ। और जिन बच्चों की हाजिरी अव्यवस्थित हो उन्हें स्कूल से खारिज किया जाय। आशा है कि इस पाबंदी में जो बच्चे उन्हें मिलेंगे उनकी संख्या चाहे कम हो जाय परन्तु उनकी हाजिरी नियमित रहेगी। और इससे काम व्यवस्थित और नियमित रहेगा।

एक और सवाल पर गहराई से विचार किया गया कि इस बुनियादी तालीम के प्र ोग में हरएक दर्जे के लिये एक शिक्षक की जरूरत है या एक शिक्षक एक से अधिक दर्जों को संभाल सकता है। इस सवाल पर काफी चर्चा करने के बाद यह तय हुआ कि शिक्षा के आदर्श की दृष्टि से और हमारी राष्ट्रीय आर्थिक स्थिति की दृष्टि से हमें यह आदर्श सामने रखकर काम करना चाहिये कि एक शिक्षक तीस बच्चों की पूरी-पूरी जिम्मेदारी उठा सके। चाहे यह बच्चे एक दर्जे के हों या दो दर्जों के। इसी निश्चय के मुताबिक यह तय हुआ कि जितने स्कूलों में दो दर्जों के बच्चों की संख्या लगभग तीस है वहाँ एक ही शिक्षक दोनों दर्जों को एक साथ पढ़ाने की कोशिश करे। और प्रयोग और सोच विचार की बुनियाद पर इसके लिये धीरे धीरे एक तरीका भी तैयार किया जाय।

इसके बाद बाहर के मेहमान तो बिदा हुए; लेकिन इन सात स्कूलों के नये और पुराने बीस शिक्षक अभी एक हफ्ते के लिये रामचन्द्रपुर में एक साथ रहेंगे। इनके लिये एक हफ्ते का रिफ्रेशर ट्रेनिंग कैम्प का इन्तजाम किया गया है। श्री गोपबन्धु चौधरीजी खुद इस ट्रेनिङ्ग कैम्प को चलायेंगे। इस सप्ताह में बुनियादी दस्तकारी कताई और सामान्य विज्ञान के पाठ्यक्रम का खास अभ्यास किया जायगा।

यह एक हफ्ता जो हम बुनियादी तालीम के कार्यकर्ताओं ने स्कूलों के बच्चों, शिक्षक, और गाँववालों के साथ बिताया, हमको कुछ बता गया। इन दिनों में बुनियादी तालीम की एक नई तसवीर हमने आँखों के सामने देखी। आज तक तो यह बुनियादी तालीम शिक्षी का प्रयोग है। इसमें विश्वास रखनेवाले और इसके काम करनेवाले बाहर से गाँव के बच्चों को लेकर इसका प्रयोग कर रहे हैं। इसलिये यह अभी उस आदर्श की सच्ची बुनियादी तालीम नहीं बनी है जिसका वर्णन गांधीजी ने "राष्ट्रीय शिक्षा" के शब्दों में किया है। लेकिन जब वह दिन आयेगा जब कि यह बाहर से आया हुआ प्रयोग न रहेगा, जब गाँववाले इसे अपनी ही चीज और यह देहाती जीवन का एक स्वाभाविक विकास बनेगा; तब इसका दूसरा ही रहेगा। बुनियादी तालीम के उस भावी रूप की थोड़ीसी झलक रामचन्द्रपुर में बुनियादी तालीम के सप्ताह में देखने को मिली। देहाती शिक्षा के साधन और देहाती कला और देहाती संगीत इस शिक्षा का और शोभा रहेंगे। देहाती कारीगर अपने हाथों की कुशलता से, देहाती अपने हाथों की सेवा और सजावट से और देहाती किसान अपनी मेहनत उपज से इसकी पुष्टि करेंगे। यही रहेगी सर्वाङ्ग सम्पूर्ण सच्ची बुनियादी तालीम।

प्रदर्शनी–अब इस बुनियादी तालीम के सप्ताह के साथ साथ जिस बुनियादी तालीम की नुमाइश तैयार की गई थी उसके बारे में कुछ कहना ज़रूरी है। बुनियादी तालीम के कार्यक्रम में प्रदर्शनी एक बड़े महत्त्व का अङ्ग है। अगर यह प्रदर्शनी ठीक तरह से तैयार की जाय तो बुनियादी स्कूलों के बच्चों और शिक्षकों के साल भर के काम का एक सच्चा परिचय बन सकती है। ज़ाकिर हुसेन समिति की रिपोर्ट में इस सालाना प्रदर्शनी को साल भर के काम की जाँच की कसौटी माना गया है। "अगर हर साल ज़िले के सब स्कूलों के काम की एक प्रदर्शनी (नुमाइश) की जाय, तो उससे काम की एक सच्ची कसौटी कायम रखने में बहुत मदद मिलेगी।"

रामचन्द्रपुर में जिस प्रदर्शनी की तैयारी की गई थी, वह बुनियादी तालीम का एक सच्चा परिचय रहा। रामचन्द्रपुर में बुनियादी स्कूल और ट्रेनिंग स्कूलों की इमारत और छप्पर ... दीवारों ... बनी हुई है। इस

दीवारों की बाहरी तरफ़ देहाती स्त्रियों ने पीसे हुए चावल के पानी से हंस, मछली आदि के जोड़े और दूसरे देहाती चित्र बनाये थे। अन्दर दीवारों पर चटाई लगा कर उस पर चार्टस् वगैरा लटकाये गये थे और नीचे बांस की मेज़ बना कर उस पर बच्चों के हाथ के काम के संग्रह, उनकी कापियाँ, चित्र, ग्राफ आदि रक्खे गये थे।

प्रदर्शनी के दो हिस्से किये गये थे। एक बच्चों के काम की और दूसरी शिक्षकों के काम की। बच्चों के काम की प्रदर्शनी पाठ्यक्रम के विषयों के मुताबिक सजाई गई थी। सब से पहिले सामान्य विज्ञान के काम की प्रदर्शनी रही। उड़ीसा के बुनियादी स्कूलों में सामान्य विज्ञान के पाठ्यक्रम पर पूरा पूरा ध्यान दिया जा रहा है। खास करके ग्रह नक्षत्र के परिचय के बारे में जो काम हुआ है वह सराहनीय है। शिक्षकों का अनुभव है कि बच्चे इसमें बहुत दिलचस्पी लेते हैं और बड़ी खुशी और उत्साह के साथ रात को तारे देखने के लिये स्कूल आते हैं। पहिले, दूसरे और तीसरे सब दर्जों के बच्चे तारे पहिचानने में बराबर दिलचस्पी लेते हैं। पहिले दर्जे के बच्चे सिर्फ उसका आनन्द लेते हैं। दूसरे दर्जे के बच्चे इसका परिचय लिखते जाते हैं और तीसरे दर्जे के बच्चे तारों के चार्ट्स बनाते हैं।

तारों का ज्ञान देने के लिये देहाती साधनों से कुछ वैज्ञानिक यंत्र (apparatus) भी तैयार किये गये हैं। इनमें से खास करके श्री गोपबन्धु चौधरीजी के पुत्र श्री मनोमोहन चौधरीजी ने एक देहाती कारीगर की मदद से जो नक्षत्र वितान [astroglobe] तैयार किये हैं यह विशेष तौर पर उल्लेख करने योग्य है। दो हिस्सों में आकाश वितान के नक्षत्र मण्डल की पूरी पूरी नकल बताई गई है।

प्रदर्शनी देखने से मालूम हुआ कि बुनियादी स्कूलों में बच्चों का वैज्ञानिक कौतूहल जाग्रत करने की और उनकी पर्यवेक्षण शक्ति विकसित करने की पूरी पूरी कोशिश की जा रही है। पर्यवेक्षण के बाद दूसरे दर्जे के बच्चों ने जो रचनायें तैयार की हैं उनका कुछ परिचय दिया जाता है।

(१) आकाश वितान, (२) छः मौसिमें, (३) कपास के पौधे का पर्यवेक्षण, (४) हमारी नदी की बाढ, (५) मच्छड़, (६) मकड़ी, (७) मैंने क्या देखा, क्या किया और क्या सीखा।

इसके बाद बुनियादी दस्तकारी कताई का विभाग था। इस विभाग में बच्चों का तैयार पोल, पूनियाँ, सूत, बच्चों के सूत से गांव में बुने हुए कपड़े, बच्चों के हाथ का रंगा हुआ सूत, बच्चों के हाथ का बाँस का लपेटा, पूनी सलाई, धुनने की चटाई, चटाई बाँधने के लिये वगैरह के नमूने रक्खे गये थे। बच्चों की कताई का रोज़ाना, मासिक और मासिक हिसाब, गति के आलेख और हिसाब की कापियाँ भी थीं। अलावा कताई के जरियें बच्चों की बुद्धि का विकास किस तरह हो रहा है और मातृभाषा के साथ साथ कताई का समवाय किया जा रहा इसका परिचय देने के लिये कताई के इर्दगिर्द बच्चों की रचनाओं के नमूने दिये गये थे।

तीसरा दर्जा—तकली की बनावट, कताई की गति बढ़ती और घटती है। मेरा धनुष तकुवा।

दुसरा दर्जा—कपास की सफ़ाई और रूई की धुनाई। किस मौसिम में कैसे धुने। अच्छी पूनी और अच्छे सूत की पहिचान। धुनाई के लिये चटाई कैसे और क्यों बनाई? हैकी लपेटा मैंने कैसे बनाया? सूत कातते-कातते मन में क्या सवाल आये?

इसके बाद बुनियादी स्कूलों के सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम की के लिये शिक्षकों ने जो तसवीरें और अन्य सामान तैयार किये हैं और बच्चों जो काम किया है और उसके बारे में उन्होंने जो लेख लिखे हैं उसके चार्ट्स् थे।

प्रदर्शनी का दूसरा हिस्सा शिक्षकों के काम का था। इस हिस्से में कते हुए सूत, उनके सूत के बुने हुए कपड़े, उनकी तैयार की हुई बच्चों के का सामान और पाठन सामग्री, उनकी डायरियाँ और नोट बुक रक्खी गई। इस प्रदर्शनी से यह बात साफ़ मालूम हुई कि शिक्षक इस पाठ्यक्रम की प्रयोग करने के लिये भरसक कोशिश कर रहे हैं और इसके बारे में सोच रहे। एक बात देख कर हमें बड़ी खुशी हुई कि बच्चों की स्वाभाविक जिज्ञासा वृत्ति शिक्षकों की श्रद्धा है और इस जिज्ञासा वृत्ति के जरिये उनकी बुद्धि का विकास करने के लिये भी वे तत्पर रहते हैं।

बुनियादी पाठ्यक्रम अमल में

सामाजिक विज्ञान—मौसिमी त्योहार कैसे मनायें

उस दिन हमारे क्लास में मौसिम के ऊपर बात चल रही थी। उसी सिलसिले में वसन्त ऋतु की बात आगई। हमारे एक साथी के पूछने पर मास्टर साहब ने बतलाया कि वसन्त पंचमी के दिन से ही लोग वसन्त की श्रीगणेश करते हैं। इसी मौसिम के आगमन पर उस दिन लोग खुशी से वसन्तोत्सव मनाते हैं। मास्टर साहब ने यह भी बतलाया कि विद्यार्थियों के लिये तो वह पंचमी का दिन और वसन्तोत्सव और भी महत्वपूर्ण है। क्योंकि उसी दिन में सरस्वती पूजा भी प्रशस्त है।

इसके दूसरे ही दिन हम लोगों की बाल सभा की बैठक थी। सभा में यह बात पेश हुई कि हम लोग भी वसन्तपंचमी के दिन सरस्वती पूजा करके वसन्तोत्सव क्यों न मनायें। बात सबों की एक राय से पास हो गई। हम लोगों ने वसन्तोत्सव और सरस्वती पूजा करना तय कर लिया। हमारे मास्टर साहब ने कहा कि पूजा के लिये बहुतसी चीजों की ज़रूरत होगी। साथ ही स्कूल और अहातों की सफ़ाई, लड़कों और उनके कपड़ों की विशेष सफ़ाई भी ज़रूरी है। अब बात यह उठी, कि पूजा के लिये किन किन चीज़ों की ज़रूरत होगी और वह चीज़ें हमें कैसे मिलेंगी। मास्टर साहब ने बतलाया कि पूजा में पहले सरस्वतीजी की मूर्ति चाहिये। फिर फूल-पत्ती, चन्दन और प्रसाद के लिये फल-फूल मिठाई भी चाहियें। इन चीज़ों के लिये पैसे की ज़रूरत हुई। हम लोगों ने पैसे जमा करने के लिये चन्दा माँगना तय किया। फिर क्या था। दूसरे ही दिन हमने चार रुपये जमा कर लिये। मेरे स्कूल में तीन क्यारियों में कन्द बोये गये थे। तीन चार छौद (गहरे) केले भी तैयार थे। कन्द भी तैयार हो चला था। हमने अपने हेड मास्टर साहब के पास दरख्वास्त दी कि पूजा के लिये कन्द और केले हमें दिये जायें। श्रीमान हेडमास्टर साहब ने कन्द और केले हमें दे दिये। अब सवाल यह उठा कि केले पकाये कैसे जायें। कमला भाई ने इस की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ली और उसी दिन केले को काट कर धूप में डाल दिया। दूसरे दिन गड़े खोद कर उसमें केले को पुआल से लपेट कर गाड़ दिया और उसमें धुवाँ पहुँचाने के लिये बड़ी होशियारी से एक छेद बनाया। और उसमें एक गमले को मूँह से ऊपर कर औंधा हुआ गाड़ दिया। गमले

के पेंदे में एक सूराख़ था। उसमें आग डालकर फूंक फूंक कर गड़े के केले तक धुवां पहुँचाने लगे। केले पकाने के इस तरीके को हमारे बहुत से भाई जानते थे। वे बड़ी दिलचस्पी से इसे देखते रहे। तीन दिनों तक गड़े में रहा। कमला ने केले को उखाड़ा। केला पीला-पीला बहुत सुंदर दिखाई देता था। इधर हम लोगों ने सफ़ाई काम के लिये टोली बना ली थी। एक के जिम्मे क्लास की सफ़ाई, दूसरे के अहाते और तीसरे के जिम्मे सड़क की सफ़ाई दी गई थी। तारीख़ २०-१-४२ को हम लोग सब के सब सफ़ाई के काम में लग गये। क्लास की छतों को झाड़ दिया। सहन की लिपाई गोबर और मिट्टी से की। सामान को सजा कर रख दिया। फुलवाड़ी अहाता और सड़कों की उचित सफ़ाई हो गई। तारीख़ २१-१-४२ को हम लोग सब के सब सात बजे स्नान करके स्कूल में दाखिल हो गये; पूजा की तैयारियाँ होने लगीं। कुछ भाइयों ने प्रसादी बनाना शुरू किया। कन्द को काट काट कर प्रसाद बनाया। केले को काट कर दो थालों में रक्खा। एक भाई चनपटिया बाज़ार से मिठाई ले आये। पूजा की ख़बर और पूजा देखने के लिये गाँव के लोगों को बुलावा भेजा, लोग तो जानते ही थे। और सब कामों में हमारी मदद कर ही रहे थे। शिष्टता के ख्याल से बुलावा भी भेजा गया। देवता भाई अपनी बड़ी दरी ले आये। और बिछावन वगैरा ठीक कर लिये। श्री अच्युतानन्द बाबू एक ग्रामोफून लेकर आ गये और सुन्दर सुन्दर गाने के रिकार्ड चढ़ाकर लोगों का मनोरंजन करने लगे। ११ बजे पूजा शुरू हो गई। हाँ, सरस्वतीजी की मूर्ति नहीं मिल सकी। इसलिये एक फोटू ही को रखकर मानस-पूजा की गई। पूजा हेडमास्टर साहब ने ही की। दो बजे पूजा ख़त्म हो गई। लड़कों तथा गाँव के लोगों को अबीर लगाया गया। प्रसादी बाँटी गई। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या ब्राह्मण, क्या हरिजन सबों ने एक साथ बैठकर प्रसादी पाई। इसके बाद गाँव के बहुत से लोगों ने एक साथ हारमोनियम, ढ़ोलक आदि के साथ गाने गाये किये। २॥ बजे बेसिक एजुकेशन बोर्ड, बिहार के श्रीमान सेक्रेटरी साहब, आर्गे-नाईज़र साहब, और सुपरवाईज़र साहब के साथ आये। उन्होंने हम लोगों के कामों से खुशी ज़ाहिर की और हमें उत्साहित किया। श्रीमान सेक्रेटरी साहब ने हम सभी बालकों को अबीर लगा लगा कर आशीर्वाद दिया। हमने उन्हें विदाई दी। हमारे हर्ष का ठिकाना न था।

गिर्जानन्दन प्रसाद सिंह
छात्र, तीसरा दर्जा, बेसिक स्कूल, शंभुआपुर (चम्पारन)

रोजनामचा

प्रतिदिन के कामों तथा अनुभवों का नियमित रूप से लेखा रखना उन्नति का एक बहुत अच्छा साधन है ऐसा सभी मानते हैं। दैनिक दिनचर्य्या के लिखते समय दिन और रात के बीते हुए समय पर एक दृष्टि डाली जाती है और किस दिन कितने समय का सदुपयोग अथवा दुरुपयोग हुआ इसका पता सरलता से लग जाता है। एक दिन के अनुभव से दूसरे दिन के काम की तैयारी अधिक अच्छे ढंग से की जा सकती है और जैसा जिस दिन के लिए सोचा गया था वैसा हो पाया अथवा नहीं, इसकी जांच का अवसर भी मिल जाता है। सबों के लिए दिन-रात की अवधि चौबीस घंटे की ही होती है। फिर भी उतने ही समय में कोई-कोई बहुत से कामों को अच्छे ढंग से नियमित कर लेते हैं और साथ ही अपनी दैनिक नित्य क्रिया और विश्राम के लिए भी समुचित समय निकाल लेते हैं और किन्हीं-किन्हीं के लिये दिन की उतनी ही अवधि जीवन के साधारण कर्तव्यों के लिए भी पर्याप्त नहीं होती और उन्हें सदा ही समय का रोना रहता है। जीवन की सफलता अथवा असफलता कार्य की कुशलता अथवा अकुशलता पर निर्भर है। जीवन के एक-एक क्षण का अच्छा से अच्छा और सर्वाङ्गीण उपयोग कार्य-क्षमता की कुंजी है। और समय के ऐसे सफल उपयोग के लिए नित्य का संकल्प और नित्य की परीक्षा अनिवार्य है। और दैनिक दिनचर्य्या के लिखने का अभ्यास इस अनवरत संकल्प और परीक्षा का साधन है।

इस प्रकार दैनिक दिनचर्य्या तो सभी उन्नति के चहानेवालों को रखनी चाहिए। किन्तु मौलिक शिक्षा की योजना में इस अभ्यास का अपना एक विशेष स्थान है। इस शिक्षा का उद्देश्य व्यतिवत्त्व का सर्वांगीण विकास है। शिक्षण का माध्यम कोई न कोई जीवनव्यापी उद्योग है। इस उद्योग का अभ्यास शास्त्रीय ढंग से बच्चों की प्राकृतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों के अनुकूल करना है। इस प्रकार उद्योग और परिस्थितियों में निहित शिक्षण की संभावनाओं के नियमित शोध और उपयोग के द्वारा बच्चों की स्वाभाविक आंतरिक शक्तियों का पूर्ण विकास कर उन्हें पारस्परिक सहयोग [illegible] संगठित समाज का कुशल, सफल तथा स्वावलम्बी सदस्य बनाना है और उन्हें पूर्ण जीवन के लिए तैयार करना है। इस शिक्षा में एक-एक क्षण का महत्त्व है और एक-एक अनुभव का महत्व है। इसके एक-एक क्षण और एक-एक अनुभव सम्पूर्ण जीवन की अटूट लड़ियाँ हैं। जीवन की महान शृंखला इन्हीं से पिरोई और बंधी है। और इस प्रकार जीवन की तैयारी और व्यक्तित्व

के विकास के लिए [illegible] नित-नित के [illegible] के उपयोग और उसके [illegible] का वृत्तान्त अनिवार्य हैं। फिर भी इस शिक्षा का साधन [illegible] निकला पुस्तक नहीं। इसका साधन है काम और प्रत्येक [illegible] में [illegible] 'विधि' और विधि की शास्त्रीयता का ज्ञान और काम के [illegible] ढंग से मापने और निर्णय करने की योग्यता। फलतः यदि छात्र [illegible] के कामों का संक्षिप्त वर्णन [illegible] उससे प्राप्त ज्ञान का लेखा नियमित रखता है तो उसके [illegible] में कुशलता, उत्तमता और शास्त्रीयता आए [illegible] ही नहीं सकती। उसे अपने वर्तमान प्रयत्नों को पीछे के प्रयत्नों से [illegible] का अवसर मिलता है और वह किस क्रम से और किस मात्रा में आगे [illegible] है [illegible] मिल जाता है। वह जो कुछ लिखता है [illegible] अनुभवों का वर्णन ही लिखता है और इस प्रकार स्कूल के कामों का [illegible] के अभ्यास उसे मौलिक रचना द्वारा आत्मप्रकाश का अवसर देता [illegible] अपनी दिनचर्य्या को वह लिखते समय पढ़ता है, लिखने के बाद [illegible] पूर्वाभ्यास से तुलना के लिए पढ़ता है, पूर्वविज्ञान की जागृति के लिए [illegible] और प्रतिमास तथा प्रतिवर्ष के अपने काम का अंदाज करने और उसकी [illegible] लिखने के लिए पढ़ता है। इस प्रकार दिनचर्य्या उद्देश्य-पूर्ण [illegible] साथ-साथ पढ़ने में निपुणता की प्राप्ति का भी साधन बन सकती है।

अब यह विचार करना है कि स्कूल की दिनचर्य्या में क्या लिखा [illegible] और वह किस प्रकार लिखा जाय? स्कूल के बच्चों की दिनचर्य्या में [illegible] वर्णन होना चाहिए और उस काम से प्राप्त ज्ञान का वर्णन होना [illegible] हमारा स्कूल काम का स्कूल है। काम का संबंध जीवन के [illegible] स्कूल का जीवन, घर का जीवन, गाँव का जीवन, समाज का [illegible] और प्राकृतिक प्रतिवेश का जीवन। इस प्रकार स्कूल के घंटों के भीतर [illegible] नित अनेकानेक काम होते हैं और उनके सम्बन्ध में अनेकानेक ज्ञान की [illegible] होती है। बच्चों की लिखने की योग्यता स्कूल में प्रवेश के समय बिलकुल [illegible] होती, फिर आरंभ होकर क्रमशः विकसित होती हुई भी बहुत दिनों तक [illegible] ही रहती है। और चूंकि हमारा स्कूल काम का स्कूल है, न कि कोरी लिखाई का, इसलिए हम केवल दिनचर्य्या के लिखने में ही स्कूल के [illegible] अधिक भाग को लगा नहीं सकते। यदि ऐसा करें, तो फिर दिनचर्य्या की [illegible] समाप्त ही [illegible] हो जाय। इसलिए स्कूल में लिखी गई हमारे बच्चों की दिनचर्य्या प्रत्येक क्षेत्र में उनके क्रमगत विकास का प्रतिबिंब होना चाहिए।

हमारे [illegible] जाते हैं [illegible] पढ़ना नहीं जानते । बोलते का है भाषा अधिकतर गंवार होती है । उन्हें अपने आसपास कुछ कुछ ज्ञान होता है । हमें उन्हें स्कूल के काम से प्रेम और उनमें यह विश्वास लाना है कि स्कूल का काम उनके इर्द जीवन का ही एक अंग है । [illegible] समझा बुझाकर अथवा लालच देकर अथवा शिक्षा देकर [illegible] है, बल्कि काम को उनके इस रूप से [illegible] कि उसमें भाग लेने [illegible] उनमें आपसे आप पैदा हो जाय और उसकी [illegible] नैसर्गिक झुकाव हो जाय । [illegible] सभी बच्चे इस संसार में कुछ न कुछ आंतरिक शक्तियों के साथ प्रवेश करते हैं । इनका सम्बन्ध उनकी प्राकृतिक और सामाजिक परिस्थितियों [illegible] और इनका क्रमगत विकास उन शक्तियों के उचित [illegible] अवसर पर निर्भर रहता है और जब कभी ये अवसर आ जाते हैं, तो भीतर की शक्तियाँ उस ओर अपने आप आकृष्ट होती हैं । एक बार का अभ्यास दूसरी बार के अभ्यास के लिए उत्तेजित करता है । अभ्यासों से आत्मविश्वास आता है । आत्मविश्वास से संकल्प, संकल्प से क्रियाशीलता, क्रियाशीलता से ज्ञान और आनन्द और इस प्रकार चक्र चलता है और जीवन क्रमशः पूर्णता की ओर अग्रसर होता जाता है ।

हमारे प्रथम वर्ग के बच्चों की दिनचर्य्या इसी उद्देश्य से लिखी जायगी । शिक्षक कुशल माली की तरह अपने फूलों के पनपने तथा बढ़ने का सब साधन प्रस्तुत कर देगा । बच्चे उस अनुकूल वातावरण में जीवन के खेल खेलेंगे जिनके रूप होंगे तरह तरह के रचनात्मक तथा उत्पादक काम और फल होगा व्यक्तित्व का क्रमगत विकास । दिन-दिन काम अनेक होंगे और [illegible] अनेक होंगे किंतु अनुभवी और चतुर वैद्य की तरह शिक्षक बच्चों के मनोभावों की नाड़ी पर हाथ रखेगा और परखेगा कि उनमें किन कामों से तथा किन शिक्षणों से बच्चों का अधिक से अधिक मनोरंजन हुआ और उस प्रकार किन-किन को उन्होंने अपने जीवन का अंग बना लिया । दिन के अंत में दिन [illegible] के ऊपर प्रश्नों के द्वारा शिक्षक उन्हें बच्चों से निकाल [illegible] और [illegible] जैसी ही सरल भाषा में उस दिन के कामों तथा सीखी गई बातों का छोटा सारांश लिख, शिक्षक उन्हें उस दिन की दिनचर्य्या सुना देगा । बच्चे अपनी दिनचर्य्या नित-नित सुनेंगे और उनके हृदयों में उन्हें स्वयं लिख सकने की इच्छा उत्पन्न होगी ।

साल भर
ा काम
सम्पादिका
आशा देवी
सम्पादक
सवा रुपया
दो आना

१. मेरा सु...
उड़ीसा ...
३. कताई कि...
४. आकाश वि...ान (मनमोहन चौधरी)
५. जोरदार काम—... जाँच का एक तरीका (रामशरण उपाध्याय)

चन्दे के बारे में सूचना

चन्दा खत्म होने का लेबुल जिन ग्राहकों के अंकों पर हो, वे आगामी चन्दा ...) रु० हमारे पास उस महीने की २५ तारीख के भीतर भेज दें, ... २५ तारीख तक चन्दा न आने पर आगामी अंक वी० पी० द्वारा भेजा जायगा।

किसी कारणवश 'नई तालीम' बन्द करना हो तो ग्राहकों से अनुरोध है उसकी सूचना हमें उस महीने की २५ तारीख के भीतर देने की कृपा करेंगे। वी० पी० **लौटा कर हमें फिज़ूल खर्चे में न डालें।**

मनी ऑर्डर भेजते वक्त या पत्र-व्यवहार में अपना ग्राहक नंबर जरूर लिखें।

संख्या ४

मेरा साल भर का काम

[पटना बेसिक ट्रेनिंग ... प्रैक्टिसिंग स्कूल ... अपनी शक्ति के अनुसार अपने काम का ... मासिक और ... रिपोर्ट तैयार करते हैं। चौथे दर्जे के एक विद्यार्थी की मासिक ... नई तालीम में प्रकाशित हो चुकी है। नीचे साल भर के काम की रिपोर्ट ... प्रस्तुत किए जा रहे हैं। बच्चे की भाषा में कोई सुधार नहीं किया गया है। – सं०]

कताई का हिसाब :

स्कूल में २६१ दिन काम हुआ। मैं २६१ दिन हाज़िर था और ३२ दिन ... । मेरी गैरहाज़िरी की वजह यही थी कि मैं १८ रोज घर पर था और १४ दिन बीमार था। मैंने १९२ दिन तक कताई की। कताई में ४१५ घंटा काम किया। स्कूल में २२० दिन कताई का काम हुआ। हर महीने की रिपोर्ट लिखने में दो तीन दिन लग जाते थे। अक्तूबर महीने में रमजान था, इसलिये हमलोगों को सिर्फ ४ ... होता था। उस में रोज़ाना औसत समय कताई में २ घंटा १५ मिनट देते थे। हमारी मज़दूरी २ रु० ३ आ० ३ पाई आयी। कताई के दिन कम होने की वजह से और गति कम होने से कताई की मज़दूरी कम हो गई। हमारे सूत का अंक २१ आया। सूत का कस सैकड़े ६० है। सूत की समानता सैकड़े ५० है। क्लास भर की औसत मज़दूरी १ रु० ... आ० आयी। क्लास की मज़दूरी २५ रुपया आयी।

मैं तकली से आध घंटे में ८० तार कातता हूँ। मैं चरखे से १ घंटे में ... ४० ... ता हूँ। मैं १ घं० २० मि० में ७ तो० रूई की धुनाई करता हूँ। पाठ्यक्रम के मुताबिक अपेक्षित गति चरखा से २६० तार है। तकली से आध घंटे ... तार कातते हैं।

साल भर के काम :—

(१) कपास साफ़ करना ।
(२) फिरकी बनाना ।
(३) ओटना ।
(४) तुनाई करना ।
(५) धुनाई करना ।
(६) खोलाई करना ।
(७) पूनी बनाना ।
(८) कातना ।
(९) चरखा फिट करना ।
(१०) धुनकी सजाना ।
(११) राल बनाना ।
(१२) लच्छी बनाना ।
(१३) माल बनाना ।
(१४) कुट काटना ।
(१५) अग्नि कारज़ बनाना ।
(१६) जमीन कोड़ना ।
(१७) क्यारी बनाना ।
(१८) पौधा लगाना ।
(१९) पटाना ।
(२०) घास साफ़ करना ।

उद्योग की जानकारी-तकली के हिस्से ४ हैं । खूँटी, सींक, चकती, नच, ... का वजन ... रुपया भर है । सीधी तकली की पहचान यह है कि तकली को नचाने ... एक जगह नाचे और उसमें थरथराहट न हो । सूत ३ तरह के होते हैं; तीखा, कड़ा ... नरम सूत । बुनाई के लिये कड़ा सूत अच्छा है । तकली को एकबार नहीं नचाने से ... दबाव ठीक नहीं रहने से सूत में गुठली पड़ जाती है । चकती गोल रहने से नचाने ... गति बढ़ती है । कुकड़ी ३ तरह की होती है । गाजर की तरह, शंकु की तरह, ... तरह । पिंडली आसन से गति अधिक होती है । पिंडली आसन से कातने पर सूत ... जल्द लपेटा जाता है और कताई का हाथ लम्बा निकलता है । अंक निकालने के ५ ... हैं । सूत तौलकर, परेता का वजन लेकर, आँख से देखकर, आन्तर की पूनी बनाकर, ... हाथ नापकर पता लगा सकते हैं । कस निकालने के दो तरीके हैं । कसमापक ... से और आँख से देखकर भी पता लगा सकते हैं । यरवदा चक्र का वजन २½ ... लम्बाई १६ इंच चौड़ाई ९½ इंच है । मूल चक्र का व्यास ७½ इंच है । और गति ... का व्यास ५ इंच है । मूल चक्र को एकबार घुमाने पर गतिचक्र ६ बार घूमे और ... १७ ... स्प्रिंग खराब रहने से चरखा भारी चलता है, माल अमाल छोटी ... चरखा भारी चलता है । तेल नहीं देने से चरखा भारी चलता है । कुकड़ी बड़ी बनने ... शुरूवाला धागा ... रहने से माल फिसलती है । बैठनी की डोरी नहीं देने से ... टेढ़ा हो जाता है और भद्दी आवाज निकलती है । चमरखी कड़ी हो और छेद बड़ा नहीं ... उसको अच्छी चमरखी कहेंगे । धुनकी ४ तरह की होती है, छोटी पिंजन, मझोली धुनकी, बड़ी धुनकी और मुजवाली धुनकी । धुनिया को रुई बहुत धुननी रहती है और ... चारों और घूम ... कर रुई धुनते हैं इसलिये उन लोगों की धुनकी के लिये ... नहीं रहता है । कमठा इसीलिये बाँधते हैं जिसमें कमठे की लचक से धुनाई अच्छी

और हाथ पर जोर नहीं पड़े । मोटी ताँत से लम्बे रेशे वाली रुई नहीं धुन सकते; क्योंकि मोटी ताँत में कंपन कम रहता है । अच्छी रुई की पहचान यह है कि रेशे मज-बूत हों और मुलायम हों, लम्बे हों । सेमर की रुई के रेशे छोटे हैं और कमजोर हैं इस-लिये कताई के काम में नहीं लाते हैं । ताँत में रुई इसलिये सटती है कि ताँत मोटी रहती है । और उसके रेशे उभरे रहते हैं । मोढ़िया और कांकर नहीं रहने से ताँत टूटती है । पोल तीन तरह की होती है : पक्की पोल, कच्ची पोल, उतरी पोल । एक इंच में जै बार ताँत लपेटी जाय वही ताँत का नम्बर कहलाता है । तुनाई में रेशों को एक सीध में करते हैं । और धुनाई में रेशों को अलग अलग करते हैं । अच्छी धुनाई की पहचान पूनी सलाई से करेंगे ।

मातृभाषा—मैंने दिन भर के काम और सीखी बातों को लेकर डायरी लिखी । एक हफ्ते की डायरी लिखी । महीने भर की रिपोर्ट तैयार की । रुई उपजने की जगहें नोट की । यरवदा चक्र बनने की जगहें नोट की । कताई-धुनाई की मजदूरी का लेखा तैयार किया । नवम्बर और दिसम्बर महीने में पाठ्यक्रम के मोताबिक काम का अन्दाजा ठीक किया । बाल सभा की बैठक हुई । हम लोगों ने बहस किया । कागज के लिये हेड मास्टर साहब के पास अर्जी लिखी । नरसरी के मैनेजर के पास व्यापारी चिठ्ठी लिखी । म्युनिसिपैलिटी के कामों को नोट किया । रवीन्द्रनाथ, श्रीकृष्ण, रामचन्द्र, बुद्धदेव, गैलिलियो, फ्रैंकलिन, [illegible]डे, वासकोडीगामा; को[illegible] और जापानी बच्चे की कहानी सुनी । बालक, किशोर, [illegible]नर, बालसखा, और शिशु पत्रों को पढ़ा । जरूरी बातों को नोट किया ।

मैंने नीचे लिखे पाठ पढ़ा—पक्की पोल । कस की कमी । कताई का दंगल । बाप की बेवकूफी से बेटे की जान गई । बनीये की जान आफ़त में । कोलम्बस । हिन्दुस्तान का सम्पत्ति का रास्ता । तुम्हारे लिये मैं क्या करता हूँ ? नया सिलेबस ? मधुबनी कैसे पहुँचा । खादी का पैसा किस के घर ? चरखे की चाल । बहुत कम नम्बर मिले ।

मैंने नीचे लिखे पर लेख लिखा—बाजार । बरसात । सोनपुर का मेला । म्युजियम । प्रदर्शनी । मीठापुर फार्म । सिवान रुई । गाय मोटी ताजी कैसे रहे । नरसरी के पौधे । पुराना और नया चौथा दर्जा ।

संगीत—कताई करते समय नीचे लिखे गाने हम गाते रहे—

(१) तकली हमारी कैसी सुन्दर सुहा रही है । (३) भारत प्यारा देश हमारा ।
(२) हमें अपनी तकली चलानी पड़ेगी । (४) मा त का इसमें मान [illegible] ।

(५) कोई नहीं है गैर नाता। (९) हरि बिन तेरा कौन सहारा।
(६) मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना (१०) शुद्ध खद्दर बेहतर है पेन्हन के
(७) चरखा कातो तो भारत सुधार होवे (११) चरखा चलाओ भाई।
(८) होवे सूरज-सा आकार। (१२) चल री तकली घन घन घन
(१३) सूत कातो जरा।

चित्रकारीः—कस निकालते समय कसमापक यन्त्र का चित्र बनाया। चक्र, गति चक्र का व्यास नापते समय का चित्र बनाया। स्कूल की फुलवारी में लाढा चल रहा था, उसको देखकर चित्र बनाया। सूत का अंक निकालते समय [illegible] चित्र बनाया। ग्लास का चित्र बनाया। धुनकी के कमठा फिट करते समय [illegible] चित्र बनाया। दीवाली की छुट्टी में दीपक का चित्र बनाया। जाड़े में धुनियाँ बहुत आते हैं, इसे देखकर धुनिये का चित्र बनाया। बरसात में हरी घास थी, उसे [illegible] उसका चित्र बनाया। गर्मी में झुलसी हुई घास देखकर उसका चित्र बनाया। [illegible] देखने गये थे, तो पीला फूल नजर आया, उसका चित्र बनाया। तकली का [illegible] चित्र बनाया। परेत का चित्र बनाया। मीठापुर फार्म में सरसों का पौधा देखकर [illegible] चित्र बनाया। हाट पर गये थे तो बैगन देखकर उसका चित्र बनाया। तकुआ [illegible] करते समय हथौड़ी, निहाई का चित्र बनाया। पोलो मैदान गये थे तो स्काउट के [illegible] देखा, उसे देख कर चित्र बनाया। क्यारी कोड़ते समय खुरपी का चित्र बनाया।

गणितः— क्लास से कते तारों का हिसाब करते समय जोड़ बनाया। [illegible] औसत गति निकालते समय भाग बनाया। सिलेबस में दी गई गति के मोताबिक [illegible] गति निकालते समय ऐकिक नियम के सवाल बनाये। क्लास में किसकी गति अधिक इसका पता लगाते समय मौखिक घटाव बनाया। फलित गति निकालते समय [illegible] छोटा रूप किया। सूत तौल कर अंक निकालते समय लंबा भाग बनाया। [illegible] वजन [illegible] निकालते समय तोला, आना का घटाव बनाया। पूनी के [illegible] निकालते समय साधारण भाग बनाया। सूत की मजबूती निकालते समय ऐकिक [illegible] हिसाब बनाये। कताई के हाथ और तकुये की नोक से कोण बनाते समय समकोण, [illegible] और अधिक कोण की जानकारी हुई। सूत तौलते समय बटखरों का इस्तमाल किया [illegible] तौलना सीखा। कताई की मजदूरी निकालते समय मिश्र गुणा और भाग बनाया। मिश्र [illegible] और भिन्न का छोटा रूप करना सीखा। क्लास की मजदूरी जोड़ते समय भिन्न का जोड़ बनाया [illegible] मूलचक्र और गतिचक्र का व्यास नापते समय, फुट इंच का हिसाब बनाया। [illegible]

अंक निकालते समय भाग बनाया। कताई की औजारों की कीमत निकालते समय रु० आ० का जोड़ बनाया। रुई पूनी के वजन निकालते समय तोला, आना का घटाव सीखा। छीजन पूनी का कौन सा हिस्सा है, इसका हिसाब करते समय भिन्न का भाग बनाया। धुनाई की मजदूरी निकालते समय गुणा बनाया। महीने भर के प्रोग्राम बनाते समय जोड़, घटाव, गुणा और भाग बनाया। कापी बनाते समय और फुटपर अग्री कागज साटते समय फुट, इंच का हिसाब सीखा। फुलवारी का नक्शा बनाते समय वर्ग आयत का हिसाब बनाया। क्यारी नापते समय फुट, इंच, का हिसाब बनाया। "नई रोशनी" पढ़कर बिहार की आबादी जानते समय करोड़ तक की संख्या मालूम की। हिन्दुस्तान में हर साल कितने गज कपड़े चाहिये इसे निकालते समय करोड़ तक की संख्या मालूम किया। अपने घर खाने-पीने के खर्च का हिसाब करते समय सेर, छटाँक का जोड़ घटाव बनाये।

सामान्य विज्ञान—बरसात में लोगों की हालत खराब थी। जानवरों और पौधों की भी हालत खराब थी। बरसात होने पर पौधों की हालत अच्छी थी। बरसात के मौसिम में धोती जल्द नहीं सूखती, क्योंकि हवा में नमी है। बरसात में पुरवा हवा बहती है जिससे रोगी की हालत खराब रहती है। पानी की तीन हालतें हैं। ठोस, तरल, गैस। जाड़ा में पानी जम कर बर्फ हो जाता है। मौसिम तीन हैं। जाड़ा, गर्मी, बरसात। रोज कसरत करने से आदमी तन्दुरुस्त रहता है। साफ हवा खुली जगह में मिलती है। बरसात का पानी कुछ नाली में बह जाता है। कुछ घास ले लेती है। कुछ जमीन के नीचे चला जाता है और कुछ भाफ बन कर उड़ता है। ५-९-४१ के दिन चन्द्र ग्रहण लगा था। और २१-९-४१ को सूर्य ग्रहण लगा था। जहां खूब पानी पड़ता है वहां बड़ी बड़ी घास होती है। यही वजह है कि हिमालय में खूब जंगल है। घास के बढ़ जाने से पौधे पीले हो जाते हैं। पौधों के दुश्मन कीड़े, जानवर, घास और चिड़िया हैं। कुछ चिड़ियां किसानों के लिये बहुत मददगार हैं। बरगद और पीपल के पेड से बहुत फायदे हैं। आश्विन महीने में बरसात बीत रही थी। जाड़ा आ रहा था, इसलिये मौसिम के बदलने से लोग बीमार पड़ते थे। गंगा के पानी में कीड़ों को मारने की ताकत है। इसका पानी कभी गंदा नहीं होता। सूरज हम लोगों से हरदम बराबर दूरी पर नहीं रहता है। इसलिये दिन-रात बराबर नहीं होती। जाड़े का दिन छोटा होता है। जाड़े में सूरज की रोशनी तीरछी मिलती है। जब रात चन्द्रमा के उगने के साथ शुरू होती है तो शुक्ल पक्ष होता है। जब रात अंधेर से शुरू होती है तो कृष्ण पक्ष होता है। ज्यादा धूप लगने से पौधा पीला होता है। पौधा

अपना खाना जड़ से लेता है। जड़ तीन तरह की होती हैं। मूसला ... और पेंटिया जड़। पौधा पत्ती से सांस लेता है।

जमीन फुलाई रहने से पौधों की जड़ आसानी से फैलती है। ... की होती है ... काली, चिकनी और बलुआही। गंगा के किनारे की जमीन ... स्कूल की फुलवारी की मिट्टी बलुआही है। मीठापुर फार्म की मिट्टी काली है। ... चीजें मिलती हैं। पौधों को (Carbon) कारबन हवा से मिलता है। ... कुहरा नजर आता है। जाड़े में पछवा हवा बहती है। नाक से सांस लेते हैं। घड़ी का आविष्कार गैलिलियों ने किया था।

समाज विज्ञानः— घडी के आविष्कार के बारे में कहानी सुनी। ... किसानों को क्या फायदा है इसे समझा। गति, कीमत और रखने की ... बिचार से यरवदा चक्र और बिहार चर्खे का मिलान किया। चर्खा संघ कार्यम ... वजहें मालूम हुई, पटने जिले में चर्खा संघ की ओर से कताई बुनाई और खादी ... की जगहें कहां कहां हैं इसे समझा और नोट किया। बिहार प्रांत की चौहद्दी, ... और जिलों का नाम सीखा। अपने प्रांत में रूई कहां कहां उपजती है, इसको ... किया। यरवदा चक्र बनने की जगहें मालूम हुई। पटने जिले का नक्शा बना ... कताई-बुनाई और खादी भंडार की जगहों को दिखलाया। नक्शा बना कर पटने ... पाँचों सब-डिविजन को दिखलाया। कताई और खादी भंडार की जगहों तक कैसे ... इसके नक्शा बनाकर रेलवे लाइनों को दिखाया। सिवान हम लोगों से उत्तर-... के कोने पर पड़ा है। वह सारन जिले में है। छपरा जिला चम्पारन और ... के बीच में पड़ता है। हिन्दुस्तान के नक्शे में यरवदा चक्र को बनने की ... को देखा। मधुबनी में यरवदा चक्र की लकड़ी कालीकट और रंगून से आती ... हम लोगों ने भागलपुर से रेशम का कीड़ा मंगाया था। उसकी जिन्दगी ... प्रकार है:- १-८-४१ के दिन रेशम का कीड़ा अंडा के शक्ल में था। १०-८... के दिन वह ड़ेढ इंच लंबा हो गया। १३-८-४१ के दिन अढाई इंच लंबा हो ... उसका रंग हरा हो गया। २१-८-४१ के दिन वह काफी मोटा हो गया। ... पीला पड़ गया। खाना छोड़ दिया। २-९-४१ के दिन रेशम का घर बनाकर ... बन्द हो गया। ९-९-४१ के दिन कीड़ा तितली बन गया। इस तरह रेशम ... कीड़े की जिन्दगी ४० दिन तक रही। हमारे प्रान्त में ३६३४०१५१ आदमी ... उसमें १८२२४४२८ मर्द और १८११५७२३ औरतें हैं। लोग गांव छोड़कर शहर ... इसलिये रहते हैं कि नौकरी और रोजगार करें। सफाई का इन्तजाम शहरों में ...

...लिटी करती है । पाखाना-पेशाब घरों का इन्तजाम कराती है । इसका खर्च टैक्स से चलता है । इसके सरदार को चेयरमैन कहते हैं । जमीन संबंधी झगड़ों का फैसला दिवानी कचहरी करती है । मारपीट के झगडे का फैसला फौजदारी कचहरी में होता है। खून का मामली जज देखता है । दुनियाँ में कुल छः महादेश हैं । पाँच महासागर हैं । हिन्दमहासागर, उत्तरीमहासागर, दक्षिणीमहासागर, पैसिफिक महासागर और अटलान्टिक महासागर । अमेरिका को नई दुनियाँ कहा जाता है, क्योंकि उसका पता १४९२ ई० में लगा । अमेरिका की खोज कोलम्बस ने की थी । कोलम्बस ने हिन्दुस्तान को इसलिये खोजने की कोशिश की कि हिन्दुस्तान बहुत धनी है । उसने इन्डीज इसीलिए नाम रखा कि उसने जाना कि यही हिन्दुस्तान है । हिन्दुस्तान तक समुद्री रास्ते की खोज वास्कोडिगामा ने की । वह अपने मुल्क से पूर्वी दिशा में रवाना हुआ । रास्ते में उसे अरब के व्यापारियों से भेंट हुई । ये व्यापारी हिन्दुस्तान से आ रहे थे । उनके साथ सूती कपडे थे । हमारी कपास और रूई की जरूरत चर्खा संघ पूरी करता है । मधुबनी में रूई खास अंक के सूत कातने के लिए है । १६ अंक का सूत कातने के लिए नहीं है । हमारे मुल्क में वर्धा, सिवान, कोकटी, देवकपास, हेमती, नवसारी और कम्बोडिया रूई होती है । दुनियाँ में सबसे ज्यादा रूई संयुक्त अमेरिका में उपजती है । आजकल रूई की खपत तकली और चरखे से कताई करके होती है । मिलों में भी कताई होती है । उपज का आधा भाग दूसरे मुल्कों में भेज दिया जाता है । हिन्दुस्तान में मिलों का चलना १८५३ ई० से शुरू हुआ । हमारे देश में ३९० मिलें हैं । हिन्दुस्तान में हर साल ६२५ करोड गज़ कपड़े की जरूरत है । हमारे मुल्क में ४०० करोड़ गज़ मिलों पर तैयार होता है । ७५ करोड़ जापान से और विलायत से आता है । और १५० करोड़ गज़ करघा से तैयार होता है । सोनपुर का मेला कार्तिक पूर्णिमा के दिन लगता है । सोनपुर सारन जिला में है । वह बी. एन. डब्ल्यु. रेल्वे का स्टेशन है । बाज़ार तीन तरह के होते हैं । सोनपुर के मेले में दूर दूर के लोग आते हैं । इसीलिए राष्ट्रीय बाज़ार कहा जाता है । पुराने ज़माने में तकली पत्थर और लोहे की बनी हुई थी ।

खेलकूद-कसरत-कवायद ।

(१) हाथ पैर और कमर की कसरत की । (२) सांस लेने और छोडने का कसरत की । (३) हाथी का खेल खेला । (४) गेन्द का खेल खेला । (५) और भी नीचे लिखे खेल हुए । कबड्डी, रूमाल-चोर, चूहा-बिल्ली, अन्धा खेल, लंगडीदौड़, सीधी दौड़, सांप की चाल, आंख मुदौअल, सच बोलो, बैंगन की चोरी ।

जगदीश प्रसाद

चौथा दर्जा, ट्रेनिंग स्कूल, ... बेसिक स्कूल ।

उड़ीसा में बुनियादी तालीम की प्रगति

बच्चों के और शिक्षकों के काम के कुछ नमूने

तारों का परिचय

बैसाख से आश्विन तक आसमान में वृश्चिक नक्षत्र दिखाई देता है। यह ... सुन्दर सजाये गये हैं कि देखने में एक अच्छा खासा बिच्छू सा बैठा मालूम होता ... बिच्छू की छाती के ऊपर एक लाल नक्षत्र है उसका नाम ज्येष्ठा है। उसके ... बीच में एक और बड़ा नक्षत्र है। उस का नाम 'अनुराधा' है। और जहाँ ... पूँछ खत्म होती है वहाँ पर एक और नक्षत्र है उसका नाम मूला है।

बिच्छू की पूंछ छाया पथ में जाकर मिलती है। यह पूरब में उदय होता ... पश्चिम में अस्त हो जाता है।

रामचन्द्रपुर-दूसरा ...

१९ दिसम्बर रात को ८ बजे मैंने काल पुरुष नक्षत्र पहचाना। बिलकुल ... की तरह दिखाई देता है। बीच के तीन तारे उसकी कमर हैं। नीचे के दो तारे ... पैर है। कमर में तलवार लटक रही है।

औरंगाबाद-दूसरा ...

मैंने एक ढेंकी लपेटा बनाया

मैंने एक ढेंकी लपेटा बनाया। यह लपेटा देखने में बिलकुल ढेंकी की तरह ... इसीलिये इसका नाम ढेंकी लपेटा है। यह बाँस से तैयार होता है। इससे सूत ... जल्दी लपेटा जाता है। यह लपेटा हमने खुद तैयार किया है। जब घर से स्कूल ... थे तब एक अच्छासा पतला सुन्दर बाँस लेते आये। अगर बाँस पका और सीधा न ... तो टक से टूट जाता और हमारा लपेटा अच्छा न होता। और न उसका नाप ठीक ... होता।

जो बाँस हम घर से अपने साथ लाये थे उससे १८ इंच नाप का एक ... टुकड़ा काट लिया। अगर काता से काटते तो बाँस घना जाता। इसीलिये आरी से ... उपर डेढ़ इंच छोड़कर बाँस में छेद किया। ऊपर के छेद से एक फुट नापकर दूसरा ... किया। नीचे के छेद से जितना बाँस का हिस्सा बचा वह लपेटा पकड़ कर सूत लपेटने ... लिये है।

लपेटे के नीचे वाले छेद के नाप की एक बाँस की छोटी सलाई छीली। इस ... का नाप ३½ इंच है। सलाई उस छेद के अन्दर घुसा कर जमाई।

सलाई को इस तरह जमाई कि दोनों तरफ बराबर रही। नहीं तो सूत फिसल कर निकल आयेगा और लच्छियाँ निकालने में मुश्किल होगी। और जब सूत उतारेंगे तब सूत शायद टूट जाय। इस लपेटे में ४ फीट नाप का सूत लपेटा जा सकता है। इस लपेटे की तैयारी में मुझे एक घंटा वक्त लगा। अगर बाज़ार में बेचा जाय तो मज़दूरी मिला कर दो पैसे कीमत है।

अब्बासीपुर, दूसरा दर्जा

हमने सूत कैसे रंगा

जामुन के एक पुराने पेड़ का छिलका लाये। उसमें से तौल कर दो सेर निकाल लिया। एक मिट्टी की हाँडी में १० सेर पानी डाला और उसमें यह दो सेर छिलका डाल दिया। फिर एक चूल्हे में अच्छी आग जलाकर दो घंटे उबाला। उबालने के बाद एक फटे कपड़े के टुकड़े से छान लिया और वह पानी फिर दूसरी हाँड़ी में डाल दिया। आधा सेर सूत साफ पानी से धोकर निचोड़ लिया। और उसी पानी में सूत डाल कर उलट पुलट कर ३० मिनिट तक उबाला। फिर सूत ऊपर उठा कर आधी छटाँक नमक छोड़ दिया। नमक घुल जाने के बाद फिर वह सूत ४० मिनिट तक उबाला। उसके बाद हाँड़ी उतार कर रक्खी और सूत निचोड़ कर दूसरी हाँडी में आधा सेर पानी में दो छटाँक फिटकिरी डाल कर फिर उबाला। फिर वह सूत निकाल कर निचोड़ कर सूखने डाला। रंग पक्का हो जाने के बाद साबुन के गरम पानी से धोकर फिर सुखाया।

इस कुल काम में ७ घंटे वक्त लगा।

रामचन्द्रपुर, दूसरा दर्जा

किस मौसिम में कैसे धुनें।

साल में बारह महीने और छः मौसिम होते हैं। इनमें से तीन गर्मी, जाड़ा, बरसात बड़े मौसिम माने जाते हैं। गर्मी के दिनों में धूप ज्यादा रहती है, गरम हवा चलती है। घर की सब चीज़ें गरम हो जाती हैं। रुई और धुनकी की ताँत भी बहुत गरम हो जाते हैं और इस गरमी से बार बार टूटते हैं। इसलिये गर्मी में सबेरे के वक्त ही रुई धुनना चाहिये। ठंढ के समय रुई धुनने से रुई के रेशे भी ठीक रहते हैं और ताँत भी नहीं टूटती। बहुत गर्मी के वक्त अगर रुई धुनी जाय तो रुई खराब हो जाती है।

गर्मी के बाद बरसाद आती हैं। हवा में नमी बहुत रहती है। और धुनकी की ताँत और रुई बहुत नरम हो जाती है। ताँत पर रुई के रेशे चिपक जाते हैं। बरसात के दिनों में जब भी थोड़ी धूप निकले रूई और धुनकी को धूप में रख दें। और उसी गरम धुनकी से रूई धुनना चाहिये।

बरसात के बाद जाड़े का मौसम आता है । जाड़े के दिनों में उत्तर से ठंडी हवा आती है । हवा में नमी बिलकुल नहीं रहती है । सूखी हवा चलती है । जिस चीज़ पर लगती है वह चीज़ जलदी ही सूख जाती है । धूप तेज़ नहीं रहती । जाड़े के मौसम में हम जब चाहे रुई धुन सकते हैं ।

हलदीवसन्त, दूसरा दर्जा

बच्चों के सवाल

१. चाँद, सूरज और तारे कहाँ से आते हैं ?
२. बिनौले जब पानी में भिगोते हैं तो उसमें से कल्ला क्यों नहीं निकलता ?
३. बीज तो इतने छोटे हैं, उनमें से निकल कर पेड़ इतने बड़े कैसे हो जाते हैं ?
४. आसमान के तो खम्बे नहीं हैं, फिर खड़ा कैसे है ?
५. पेड़ तो हरे होते हैं फिर फूल पीले और लाल कैसे होते हैं ?
६. पानी में मुँह क्यों दिखलाई देता है ?
७. पानी को काट क्यों नहीं सकते ?
८. तारे रातको दिखलाई देते हैं, दिन को क्यों नहीं दिखलाई देते ?
९. कुम्हार को हाँडी बनाना किसने सिखाया ?
१०. घड़ी अपने मन से कैसे चलती रहती है ?

रतलाङ्ग; पहला दर्जा

१. सब पेड़ तो बीज से निकलते हैं फिर केले के पेड़ बिना बीज के कैसे निकल आते हैं ?
२. मिर्ची का फूल तो सफेद होता है लेकिन उसका फल पहले हरा और फिर लाल कैसे हो जाता है ?

रामचन्द्रपुर, पहला दर्जा

पाठ्यक्रम के बारे में मेरा अनुभव

मातृभाषा—दूसरे दर्जे में साल भर के प्रयोग के बाद मेरा अनुभव यह है कि अगर दस्तकारी के काम के लिये ज्यादा समय दिया जाय तो बच्चों के पढ़ने और लिखने में कोई हर्ज नहीं होता । आखिर में हम देखेंगे कि बच्चे खुद लिखना पढ़ना सीखने के लिये अपनी कोशिश करते हैं । इस मौके का अच्छा उपयोग किया जाय तो शिक्षक और विद्यार्थी दोनों के लिये काम आसान हो जाता है ।

सामान्य विज्ञान—आकर्षण-शक्ति—दूसरे दर्जे के बच्चे आसानी से न्यूटन की कहानी और आकर्षण शक्ति को समझ लेते हैं । ... दूसरे दर्जे के बच्चे भी ग्रह नक्षत्र

बारे में कुछ जानने के लिये और उनके चार्ट्स तैयार करने के लिये उत्सुक रहते हैं। इसालिये तीसरे दर्जे तक न ठहर कर दूसरे दर्जे से ही बच्चों को ग्रहों के बारे में कुछ जानकारी दे सकते हैं।

सूर्य्य व चन्द्रग्रहण—दूसरे दर्जे के बच्चे चन्द्रग्रहण और सूर्य्यग्रहण के कारण नहीं समझ सकते।

गणित-ग्राफ-आलेख-के दूसरे दर्जे के बच्चे अपनी कताई की गति के ग्राफ (आलेख) तैयार कर सकते हैं। सिक्के और वजन लिखने के लिये गिनती का तरीका न इस्तैमाल करके रकम के तरीके का इस्तैमाल ज्यादा अच्छा रहेगा।

मधु मिश्र-शिक्षक, दूसरा दर्जा
रामचन्द्रपुर बुनियादी स्कूल।

बुनियादी दस्तकारी-मातृभाषा-दूसरे दर्जे के लिये एक पाठ

तकली-आदमी का शरीर भिन्न २. भागों में बटा हुआ है। इन भागों को अंग कहते हैं। हाथ शरीर का ही एक अंग है। हाथ और भी छोटे छोटे भागों में बँटा हुआ है। इन छोटे भागों के अलग अलग नाम हैं और इनको प्रत्यंग कहते हैं। उंगली एक प्रत्यंग है। इन अंग प्रत्यंगों को अलग अलग काम बाँटे गये हैं। अगर शरीर के किसी अंग को चोट पहुँच जाय तो वह अच्छी तरह से काम नहीं कर सकता।

आदमी की तरह तकली के भी अंग-प्रत्यंग होते हैं। इन्हें अलग अलग काम बाँटे गये हैं। तकली के शरीर का एक अंग लोहे की सलाई का बना है। इसका नाम डंडी (सींक) है। यह अंग तकली की रीढ़ है। रीढ़ की हड्डी टूट जाने से आदमी के जीवन का ही अन्त है। तकली की डंड़ी टूट जाने से तकली बिलकुल बेकार हो जाती है। डंडी के ऊपर का हिस्सा टेढ़ा है। इसका नाम नाक है। तकली का एक अंग गोल पीतल का बना है। इसका नाम चकती है। चकती के नीचे डंडी का कुछ भाग निकला हुआ है। इस प्रत्यंग का नाम अनी है।

अनी न हो तो तकली ज़मीन पर टिककर नहीं घूमेगी। चकती निकालने से तकली ज़ोर से नहीं घूमेगी। नाक न हो तो कुकड़ी से सूत खिसक आयेगा। और अगर डंडी न हो तो तकली का जीवन ही समाप्त है। कहाँ सूत लपेटा जायेगा? और किसे पकड़ कर हम तकली घुमायेंगे।

डंडी-तकली में एक लम्बी सी चीज़ लगी हुई है। इसका नाम डंडा है। तकली की डंडी लोहे की बनी है। बाँस या लकड़ी से भी तकली की डंडी बनाते हैं। पहले लोगों को लोहा नहीं मालूम था। उस समय वह तकली की डंडी बाँस या लकड़ी से बनाते थे। महेन्जोदारो से बाँस की डंडी की एक तकली मिली है। कहा जाता है कि यह तकली प्रायः देस

हजार साल के पहले बनाई गई थी। आज कल भी बिहार तथा बंगाल प्रान्त में ... डंडी की तकली का रिवाज है। बाँस की डंडी की तकली से ज्यादा महीन ...

लोगों ने पहले पहाड़ से लोहे का पत्थर ढूँढ निकाला। उस पत्थर को आग में ... कर लोहा निकाला। उसी लोहे से उन्होंने कुदाल और फावड़ा बनाये। बाद में ... हुआ कि ज़मीन के नीचे लोहेका ख़ज़ाना है। ज़मीन के नीचे दबे हुए लोहे को ... खान कहते हैं। उड़ीसा की मयूरभञ्ज रियासत में लोहे की खान है। ज़मीन खोदकर ... निकाला जाता है। इस निकाले हुए लोहे को कच्चा लोहा कहते हैं। कच्चा लोहा ... रहता है। यह आसानी से टेढ़ा हो जाता है और रगड़ने से जल्दी घिस जाता है। ... लोहे में कुछ चीजें मिला देने से वह कड़ा हो जाता है। तब हम उसको फौलाद ... हैं। फौलाद को टेढ़ा करके छोड़ देने से फिर सीधा हो जाता है। ज्यादा टेढ़ा करने ... टूट जाता है। रगड से जल्दी नहीं घिसता। इस्पात की डंडी सब से ... होती है।

छत्री की कमानी भी फौलाद की ही बनाई जाती है। पुरानी छत्री की कमानी ... तकली की डंडी आसानी से बन जाती है। आजकल तकलियाँ अधिक तर पुरानी छत्री ... कमानी से ही बनाई जाती है।

चकती—तकली की डंडी में एक गोल चीज लगी है। इसका नाम चकती है। ... तकली की डंडी और चकती के रंगों में फ़र्क है। डंडी और चकती अलग अलग ... से बनी है। डंडी लोहे से बनाई गई है। चकती पीतल से बनाई गई है। लोहे ... और भी कई तरह की चीजें खान से निकलती हैं। उन्हें धातु कहते हैं। ताँबा, ... तथा जस्ता आदि कई धातुओं के मिलाने से पीतल बनती है।

तकली की चकती गोल होती है। गोल चीज़ अच्छी घूमती है। एक ... चवन्नी और एक चौकोर चवन्नी घुमाकर देखो। गोल चवन्नी अच्छी घूमेगी। ... लोगों को यह बात मालूम नहीं थी। पहाड़ के ऊपर से लकड़ी गिरा गिरा कर लाते ... आदमी ने इस बात का पता लगाया। गाड़ी का पहिया और तकली की चकती इसीलिए ... गोल बनाई गई। क्या तुम एक बात और भी जानते हो? यह पृथ्वी पहले गोल नहीं ... थी। घूमते घूमते गोल हो गई।

डंडी चकती के बीचसे निकलनी चाहिये। नहीं तो तकली ठीक नहीं घूमेगी। ... पहिये के बीचमें धुरी न हो तो पहिया ठीक नहीं घूमता। गोले की बीच की जगह ... को मध्यबिन्दु कहते हैं। मध्यबिन्दु से गोले का सिरा हर जगह बराबर दूरी पर रहता ... है। चकती के मध्यबिन्दु से नीचे निकला हुआ भाग अनी कहलाता है।

पहिया के बिना गाड़ी अधूरी है। चकती के बिना तकली अधूरी है।

कताई कितनी हो

बुनियादी शिक्षा के संबन्ध में प्रायः यह प्रश्न उठा करता है कि कताई कितनी हो। ज़ाकिर हुसेन कमिटी ने स्कूल के प्रतिदिन के साढ़े पाँच घंटों में ३ घंटे २० मिनट तक मूल उद्योग के रूप में कताई की राय दी थी। यों तो बहुतेरों ने इसके विरुद्ध सम्मति दी। किन्तु प्रयोग के कुछ महीनों के बाद पाया गया कि जो वास्तव में इस क्षेत्र में काम कर रहे थे वे भी ऐसा कहते थे कि पहले और दूसरे वर्षों में ३ घन्टे २० मिनट मूल उद्योग में देते हुए वे इस महत्वपूर्ण योजना के अन्य अंगों के लिए समुचित समय नहीं पाते थे। कारण स्पष्ट था। प्रयोग बिलकूल नया था। प्रयोग करने वाले नये थे। उद्योग द्वारा शिक्षा की कल्पना नयी थी। शिक्षक चाहे तो उद्योग में नवसिखुए थे या उद्योग में कुशल होते हुए भी शिक्षा-शास्त्र तथा शिक्षण-कला का उन्होंने थोड़े दिनों का ही अभ्यास किया था और कार्य का क्षेत्र था बहुत ही विस्तृत और बहुत ही जटिल, उद्योग की क्रियाओं का शास्त्रीय ज्ञान तथा अभ्यास, पुनः उन में निहित मानसिक विकास की सम्भावनाओं का शोध, उनके लिए जिज्ञासा की उत्पत्ति और उस जिज्ञासा की पूर्ति में अनुभव के आधार पर वांछित ज्ञान की प्राप्ति में सहायता, प्राकृतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों से परिचय, उनके निरीक्षण के फलस्वरूप सामने आने वाली उलझनें, उन उलझनों के सुलझाव, और सबसे बढ़कर पारस्परिक सहयोग की दृढ भित्ति पर समाज का निर्माण और उस समाज के अंगी स्वरूप व्यक्तित्व का शुद्ध स्वस्थ और सर्वांगीण विकास।

फलत: उद्योग के विशेषज्ञों की राय से अभी प्रयोग की अवधि के लिए जामिया नगर में बुनियादी सम्मेलन की बैठक ने यह आज्ञा दे दी है कि पहले वर्ग में प्रति दिन दो घन्टे, दूसरे में ढाई घन्टे, तथा तीसरे में तीन घन्टे समय मूल उद्योग में दिए जायँ। साथ ही अनुभव के आधार पर इन तीन वर्गों की प्रत्येक छमाही के अंत में अपेक्षित योग्यता और उसके भीतर नितदिन के काम का औसत भी ठीक कर दिया है।

इस निर्णय का एक अच्छा फल यह हुआ है कि प्रयोग में लगे हुए शिक्षक अब समझते हैं कि हमें इस संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार समय मूल उद्योग में प्रतिदिन देना ही चाहिए। पहले वे सोचते थे कि वर्ग के सभी कामों के साथ ३ घन्टे २० मिनट प्रति दिन मूल उद्योग में समय देना उनकी शक्ति के बाहर था तब फिर वे चाहे जितना भी समय दें। अब वे सोचते हैं कि दो घंटे से आरंभ कर तीसरे वर्ष में ३ घंटे तक भी यदि वे न पहुँचे तो यह उनके लिये लज्जा की बात होगी और अपने साथियों के सामने उन्हें नीचा देखना होगा। इसलिए शिक्षकों में प्रायः प्रत्येक ही समय की संशोधित मात्रा पर पहुँचना अपना एक बहुत बड़ा कर्तव्य समझता है। गत अक्टूबर १९४१ में परिभ्रमण करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि बिहार के प्रयोग-क्षेत्र के स्कूलों में शिक्षक समय की

दृष्टि से संशोधित पाठ्यक्रम के निर्णय पर प्रायः पहुँच से गये हैं किंतु ... प्रकार का भय-सा अनुभव करने लगा। मूल उद्योग में प्रति दिन के लिए ... किए हुए समय में कभी कहीं कुछ कार्यकर्ताओं को ऐसा तो संकेत नहीं हो रहा है ... इस थोड़ी-सी सफलता से ही संतुष्ट हो जायँ तथा मौलिक शिक्षा योजना के ... स्वावलम्बन के आदर्श को बिलकुल भूल जायँ। इसलिए इस पर कुछ विचार ... जान पड़ते हैं।

सभी शिक्षक और शिक्षार्थी और साथ ही सभी परीक्षक और परीक्षार्थी इस ... को जानते हैं कि पाठ्य-क्रम में जितने भी विषय रखे जाते हैं, उनमें पूरी योग्यता ... माप के पूर्णाङ्क रखे जाते हैं, साथ ही साथ उत्तीर्ण समझे जाने के लिए पास अंक ... किए होते हैं। पास के लिए कम से कम निश्चित अंक जब तक न पावे, कोई भी ... या परीक्षार्थी पाठ्य-क्रम के अध्ययन या अभ्यास में सफल नहीं समझा जाता। ... करने वालों में भी श्रेणियाँ होती हैं जो कम से कम या उस के आस पास के अंक ... वे तीसरे दर्जे के समझे जाते हैं, जो पूर्णाङ्क का आधा या उसके आस पास के अंक ... हैं वे दूसरी श्रेणी या औसत दर्जे में गिने जाते हैं और जो उनसे भी ऊपर के अंक ... प्राप्ति करते हैं उनकी गणना प्रथम श्रेणी में होती है। पूरे पूर्णांक के अधिकारी ... में सौ पाने वाले का कहना ही क्या है। सफलता के पूरे पाने वाले वे ही हैं और ... पास होने में किसी की कोई कृपा या रियायत नहीं है।

मैं निवेदन करूँगा कि ज़ाकिर हुसेन कमिटी द्वारा निर्धारित मूल उद्योग की ... अवधि तथा अपेक्षित योग्यता अब भी हमारे पूर्णांक का माप दण्ड है और उसी ... ही हमें सौ में सौ अंक का अधिकारी बना सकती है। हमें सब विचारों से तथा सब ... से उस माप में खरा उतरने का लक्ष्य सदा ही अपने सामने रखना चाहिये। आगे ... हुए, हमारी चेष्टा सदा ही वहीं पहुँचने की होनी चाहिए और दिन-दिन, महीने-महीने और वर्ष-वर्ष हमारे ज्ञान तथा अनुभव वहाँ हमें पहुँचा देंगे ही। तब तक के लिए यदि ... कम संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार काम करने में पूरे तौर से सफल हो जायँ और ... छात्र कम से कम उस पाठ्यक्रम में अपेक्षित योग्यता की प्राप्ति कर लें तो हमें ... संतोष तो अवश्य होगा कि हम कम से कम अंकों से पास जरूर कर गए, असफलता ... कालिमा से अपने को बचा लिया।

इसलिए मेरे विचार से इस नवीन योजना का सफल शिक्षक वही है जो ... अनुच्छेद में दिखलाए गए व्यक्तित्व के विकास के सभी साधनों को काम में लाता हुआ ...

मूल उद्योग में कम से कम संशोधित पाठ्यक्रम की अपेक्षित योग्यता की प्राप्ति अपने छात्रों को अवश्य कराता है तथा नित्य प्रति मूल उद्योग के लिए निर्धारित पूर्ण समय को देता हुआ उसके भीतर की शिक्षा के सभी संभावनाओं का उपयोग स्थानीय, प्राकृतिक और सामाजिक परिस्थितियों के अनुकूल करता है। बच्चे केवल शिक्षक की आज्ञा से नियत समय के लिए अपने उद्योग में लगे हुए हैं या अभिरुचि और उत्साह के साथ और इस समझ के साथ कि काम उनके लिए ज़रूरी चीज़ों के सीखने का ज़रिया है, इसकी जाँच की कसौटी उसकी खिली हुई मुखाकृति होगी। उद्योग के साथ-साथ उनका क्रमगत मानसिक विकास हो रहा है या नहीं इसका परिचय उनकी दैनिक दिनचर्या के क्रमगत विकसित लेखों से मिलेगा। उनमें अनुकूल सामाजिक सहयोग की भावना दृढ हो रही है अथवा नहीं, इसकी परीक्षा उनके शरीर तथा इर्द-गिर्द की सफ़ाई, उनके काम की व्यवस्था, उनका रहन-सहन तथा उनके अपने पराये के बर्ताव से होगी।

शिक्षक तथा छात्र प्रत्येक वर्ग के अंत में अपनी प्राप्त योग्यता तथा श्रेणी का पता लगा सकें इसके लिए इस लेख के साथ एक नक़शा दे दिया जाता है। जिस छात्र को अथवा समष्टि रूप से जिस वर्ग को कम से कम नीची श्रेणी तक की योग्यता की प्राप्ति न हो, उसे अपने को असफल समझना चाहिए। इस नक़शे के अध्ययन के संबंध में कुछ बातें विचार करने की हैं। जहाँ तक किताबी अथवा सैद्धान्तिक योग्यता मात्र का संबंध है वहाँ सैकड़े ३०, ३६, ४५ इत्यादि के अंकों की प्राप्ति से भी सफल किन्हीं परीक्षार्थियों को समझ लिया जाय तो उससे किन्हीं दूसरों की कोई क्षति नहीं होती। वे इतना जानते हैं कि अमुक व्यक्ति अमुक परीक्षा में तीसरे दर्जे में आया है और उन्हें यदि पहले दरजे के व्यक्ति के बिना काम नहीं चलता तो वे नीचे के व्यक्ति से काम नहीं लेंगे। किन्तु उद्योग की परीक्षाओं में ऐसी बात ठीक ठीक लागू नहीं होती। उद्योग के द्वारा चीज़ें तैयार होती हैं। वे चीज़ें काम की होंगी या निकम्मी होंगी, उसी प्रकार उद्योग में लगा व्यक्ति काम में आने वाली चीज़ों को तैयार करेगा या निकम्मी वस्तुओं को तैयार करेगा। यदि किसी की तैयार की हुई चीज़ें निकम्मी होती हैं तो उसे किसी भी श्रेणी में सफल नहीं समझा जा सकता। इसलिए साथ के नकशे में काम की उत्तमता तथा उपयोगिता के विचार से जो अपेक्षित योग्यता पाठ्यक्रम में निश्चित की गई है उसका श्रेणी विभाग नहीं किया गया है। सूत का अंक और उसकी मज़बूती और समानता जिस वर्ग में जितनी निर्धारित है उतनी आनी ही चाहिए। गति जितनी जिस वर्ग के लिए निश्चित की गई है, यदि उतनी नहीं आती तो फिर किसी व्यक्ति को उस वर्ग की योग्यता प्राप्त हुई, ऐसा क्योंकर माना जा सकता है। हाँ, समय के विचार से कम अथवा अधिक उत्पत्ति हो सकती है। और उसी अनुपात से मज़दूरी भी घट-बढ़ सकती है। इसलिए श्रेणी का विभाग केवल मज़दूरी के विचार से दिखलाया गया है।

इसमें भी जहाँ पहले और दूसरे वर्ग में पूर्णांक के नीचे तीन श्रेणियाँ की गई हैं वहाँ तीसरे और चौथे में दो ही रखी गई हैं। पहले और दूसरे वर्ग में संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार मूल उद्योग में नित्य प्रति का समय ३ घंटे २० मिनट से घटाकर २ घंटे तथा २॥ घंटे कर दिए गए हैं। किन्तु तीसरे में समय ३ घंटे हैं तथा चौथे में ज्यों के त्यों ३ घंटे २० मिनट। इसलिए इन वर्गों में प्रथम श्रेणी में आए हुए वे ही माने जा सकते हैं जो मौलिक पाठ्यक्रम में निश्चित योग्यता को प्राप्त करें। बृन्दावन सघन क्षेत्र के कुछ स्कूलों के तीसरे वर्ग की पहली ६ माही के छात्रों का काम इस का प्रमाण है।

तात्पर्य यह है कि पाठ्यक्रम में निर्धारित समय की कताई प्रति दिन होनी चाहिए और पूरी सफलता तभी समझनी चाहिए जब उद्योग में अपेक्षित योग्यता तथा उसकी प्राप्ति व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के साथ हो जाय।

वर्ग	श्रेणी	पहली ६ माही की अपेक्षित मज़दूरी			दूसरी ६ माही की अपेक्षित मज़दूरी	
		रु०	आ०	पा०	रु०	आ०
पहला	पूर्णाङ्क	१	०	९	२	८
,,	प्रथम श्रेणी	०	१२	०	१	१४
,,	द्वितीय श्रेणी	०	११	०	१	२
,,	तृतीय श्रेणी	०	८	३	०	१३
दूसरा	पूर्णाङ्क	३	१३	९	५	७
,,	प्रथम श्रेणी	२	१४	३	४	१
,,	द्वितीय श्रेणी	१	८	३	१	१२
,,	तृतीय श्रेणी	१	२	०	१	९
तीसरा	पूर्णाङ्क	५	१	०	६	८
,,	प्रथम श्रेणी	,,	,,	,,	,,	,,
,,	द्वितीय श्रेणी	४	२	६	९	३
,,	तृतीय श्रेणी	३	१	९	३	१४
चौथा	पूर्णाङ्क	७	८	९	८	२
,,	प्रथम श्रेणी	,,	,,	,,	,,	,,
,,	द्वितीय श्रेणी	५	२	६	६	३
,,	तृतीय श्रेणी	३	१३	९	४	१०

[नवीन शिक्षक से]

रामशरण उपाध्याय

आकाश वितान

[सामान्य विज्ञान के पाठ्यक्रम में ग्रह-नक्षत्रों के परिचय को एक मुख्य स्थान ...या गया है। लेकिन आज तक बहुत ही थोड़े बुनियादी स्कूल और ट्रेनिंग स्कूलों में ...यक्रम के इस पहलू पर काफी ध्यान दिया जा रहा है। खुशी की बात है कि उड़ीसा ...बुनियादी स्कूलों में बच्चे और शिक्षक बड़े उत्साह के साथ इसका अध्ययन कर रहे हैं। ...च्चों को नक्षत्र-वितान का ठीक ठीक परिचय देने के लिए श्री मनोमोहन चौधरी ने ...र्ता साधानों से एक गोलक बनाया है। इस गोलक का परिचय उन्होंने दिया है। आशा ...बुनियादी तालीम की दूसरी संस्थाएँ भी इससे फायदा उठायेंगी। —सं०]

बाहरी विश्व के परिचय का पहला कदम नक्षत्र मंडलों का परिचय है। आकाश ...जितने मुख्य सितारे नज़र आते हैं उन्हें पहचानने की सहूलियत के लिये कुछ मंडलों ...बाँट दिया है। पास पास नज़र आने वाले सितारों को लेकर किसी वस्तु या जानवर ...खाके से उनकी सजावट के सादृश्य की कल्पना की गई है। इससे बेतरतीब से ...धर उधर बिखरे हुए सितारों में एक तरह का सिलसिला व तरतीब का आरोप किया ...या है। जिससे उन्हें याद रखने में हमारी स्मरणशक्ति को सहायता मिलती है।

जैसे जमीन के नमूने के तौर पर गोलक (Globe) व नक्शों का उपयोग हम ...रते हैं उसी तरह आसमानी दृश्य के भी नक्शे और गोलक बनाये गये हैं। फर्क इतना ...है कि ज़मीन के सिर्फ़ एक निहायत छोटे से टुकड़े को हम एक बारगी देख सकते हैं। ...किन आसमानी गोलक का आधा हिस्सा हमारी नज़र में एक साथ आता है। ज़मीन ...नक्शे से देश और भूखंडों की सिर्फ कल्पना भर कर सकते हैं। लेकिन आसमानी ...क्शे या गोलक में हम सितारों को जिस तरह देखते हैं, आसमान में भी वास्तव रूप में ...सी तरह वे नज़र आते हैं।

ज़मीन के गोलक (Globe) के नमूने पर बनाये गये आसमानी गोलक (Astro globe) में यह एक दिक्कत है कि जब कि हमारे चारों ओर फैले हुए आस-...मान के दृश्य को हम भीतर से देखते हैं तब किसी गोले पर अंकित नक्शे को बाहर से ...देखना पड़ता है। फल यह होता है कि गोले पर दिये हुए नक्शे से आसमान में स्थित ...मंडलों को पहचानना थोड़ा कठिन हो जाता है।

यूरुप में कई जगहों पर प्लैनेटेरियम (Planetarium) की चर्चा सुनी गई ...। प्लैनेटेरियम में एक बड़े प्रेक्षक-गृह की छत पर बाहरी आसमान का नमूना देखने

में आता है। आसमान की दैनिक गति की भाँति उसमें भी परिवर्तन ... है। लेकिन इसका बनाना एक बहुत बड़े साहस का काम है। एक प्लैनेटेरियम के ... में लाखों ही रुपये खर्च हो सकते हैं और इसलिये यह हिन्दुस्तान के बड़े बड़े ... विद्यालयों की भी पहुँच के बाहर हैं।

ज्योतिर्विज्ञान (Astronomy) की किताबों में दिये गये आसमानी नक्शे ... उपयोग, किसी यंत्र के अभाव में हम एक खास ढंग से कर सकते हैं। काले या किसी ... गहरे रंग के कागज़ पर उसकी नकल उतार कर अगर हम उसमें सितारों की जगह ... कर दें और उस कागज़ को सिर पर उलट कर पकड़े रहें और उसके पीछे रोशनी ... तो उस पर से हम सितारों को पहचान सकते हैं। आसमान के जिस अंश का नक्शा ... लें उसमें के किसी मुख्य सितारे को पहचान लेने से बाकी को पहचान लेना ... जाता है। लेकिन इसमें एक असुविधा यह है कि सारे आसमान का नक्शा ... कागज़ पर आजाने से उसमें काफी वक्रता (Distortion) आजाती है। ... की दिशा हम सही ढंग से मालूम नहीं कर सकते। बहुत टटोलना पड़ता है। ... यहाँ बुनियादी स्कूलों में ज्योतिर्विज्ञान सिखाने के लिये आसमानी गोलक और प्लैनेटेरियम ... की मिलावट से एक नया यंत्र बनाया गया है, जिसमें दोनों की खूबियाँ हैं। जो ... अॅस्ट्रोग्लोब की तरह सस्ता है और जिसमें प्लैनेटेरियम की तरह वास्तविक तद्रूपता है।

प्लैनेटेरियम मानो एक इतना बड़ा गोला है, जिसके अन्दर प्रेक्षक बैठ सकता है ... गोले के दो टुकड़े कर देने से उस आधे का निरीक्षण हम भीतर की ओर से आसानी से ... कर सकते हैं। गोले को ज्यादा बड़ा करने की जरूरत नहीं होती। हमने उत्तरी और ... दक्षिणी दो गोलार्ध बनाये हैं। लोहे के तार व बाँस के ढाँचे (Frame work) ... कपड़ा लगाकर यह बनाये गये हैं। गोलार्धों का व्यास पाँच फुट का रक्खा है। ... गोलार्ध लकड़ी की चौखट या पाये पर बिठाये गये हैं। चौखट में कुछ छोटी छोटी ... हैं और यह गोलार्ध उन्हीं पर स्थित हैं ताकि उन्हें आसानी से घुमाया जा सके।

गोलार्धों पर नक्शों की मदद से सितारे और मंडल यानी भूमिका पर फीके ... चिह्न कर दिये गये हैं। और सितारों की जगह पर छोटे छोटे छेद भी कर दिये गये हैं। ... कपड़े पर कागज़ और रंग लगाकर उसे बिलकुल अस्वच्छ कर दिया गया है। जिससे ... एक तरफ की रोशनी दूसरी तरफ से दिखलाई न दे। जब हम गोलार्ध के बाहर ... रखकर भीतर की ओर से केन्द्र के पास से देखते हैं तब उस पर अंकित सितारे छेद में से ... आते हुए प्रकाश के द्वारा बिन्दु के रूप में नज़र आते हैं। आसमान में सब सितारे उज्ज्वल ...

में बराबर नहीं हैं। कोई बहुत धीमे हैं तो कोई बहुत उज्ज्वल हैं। कपड़े में छेदों को छोटे बड़े करके वस्तुस्थिति से काफी सादृश्य करने की कोशिश की गई है। समय के अनुसार गोलार्ध को घुमा कर ठीक जगह पर लाने से आकाश में जो सितारा जिस दिशा में उस समय होता है, यंत्र पर भी ठीक उसी दिशा में और उसी रूप में हम उस नमूने को देखते हैं। इससे यंत्र की सहायता से आसमान के सितारों को पहचानना बहुत आसान हो जाता है।

इन दोनों गोलार्धों के बनाने का खर्च ५० रुपये से कुछ ज्यादा आया है। जब कि शीशे का एक छोटे से ऐस्ट्रोग्लोब की क़ीमत ६० रुपया है।

अब तजुर्बे से मालूम होता है कि गोलार्धों का व्यास सिर्फ ४ फुट करने पर भी काम चलेगा। इससे खर्च काफी कम होने की सम्भावना है। इस पहले यंत्र में उसके अक्ष और भूमि के बीच के कोण को घटाने बढ़ाने का कोई प्रबन्ध नहीं किया गया है। कटक का अक्षांश (Latitude) २०° है तो यहाँ के लिये बनाये हुए यंत्र का उपयोग २० या उस के एक दो डिग्री इधर उधर के अक्षांश पर स्थित जगहों पर ठीक ठीक हो सकेगा। यह बात ज़ाहिर है कि देशान्तर रेखा (Longitude) का कोई भी असर नहीं होता। अक्षांश के अनुसार "सफाइन" की व्यवस्था आसानी से की जा सकती, लेकिन उस से खर्च कुछ ज्यादा आता। यह कोई ऐसा यंत्र नहीं है जिसे दूर दूर लेकर घुमा जाय। इसीलिये खर्च कम करने की दृष्टि से खास जगह के लिये यंत्र बनाने में कोई हानि नहीं है।

—मनमोहन चौधरी

बरी, कटक, उड़ीसा।

ज़ोरदार काम—जाँच का एक तरीका।

पिछले चार सालों से बुनियादी तालीम का प्रयोग चल रहा है। इस प्रयोग को अमल में लाने में शिक्षा के हर एक पहलू पर एक नई ही दृष्टि से विचार करने की और शिक्षा के कार्यक्रम के हर एक हिस्से को नये सिरे से संगठन करने की ज़रूरत रही है।

किसी भी शिक्षा के कार्यक्रम का एक महत्त्व का अङ्ग है—काम की प्रगति की जाँच। खास करके जब शिक्षा में इस तरह का एक मौलिक सुधार या क्रांति का काम हाथ में लिया जाता है, तब इस जाँच का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। क्योंकि हम जब तक पुराने ढर्रे पर काम करते हैं तब तक तो हमें पक्की सड़क पर चलना है। उस सड़क का हर एक कदम और हर एक निशाना भी निश्चित है। इसलिये हम चाहें तो आँखों पर पट्टी बाँध कर भी चल सकते हैं। हमें इतना ही देखना है कि हम एक निशाने से दूसरे निशाने तक पहुँचते हैं या नहीं।

लेकिन जब हमें बिलकुल नये सिरे से काम करना है, जब हमें हर कदम बनाते बनाते चलना है तब हमारे लिये प्रगति की जाँच की और भी सख्त जरूरत है। क्यों कि हमें हर कदम पर देखना है कि हम आगे बढ़ रहे हैं या नहीं, बनता जाता है या नहीं।

बुनियादी तालीम के काम करनेवालों के लिये भी यही बात है। हर कदम पर यही देखते हुए चलना है कि अपने सामने जो ध्येय हमने रखा है और हम सचमुच आगे बढ़ रहे हैं या नहीं। इस नये प्रयोग से बच्चों का [illegible] हो रहा है या नहीं।

आज तक शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति की जाँच करने के लिये एक ही तरीका लाया गया है। वह है परीक्षा का तरीका। इस तरीके से काम की या [illegible] की सच्ची जाँच नहीं हो सकती। इससे [illegible] होकर बुरा असर ज्यादा [illegible] इस के बारे में किसी को भी सन्देह नहीं। जाकिर हुसैन समिति की रिपोर्ट [illegible] गया है :—

"हमारे देश में परीक्षा लेने का जो तरीका चल रहा है उसे तो अपने शिक्षा पद्धति का एक अभिशाप ही समझना चाहिये। एक तो तालीम का तरीका [illegible] था तिस पर परीक्षा को ज्यादा से ज्यादा महत्व देकर उस पद्धति को और भी [illegible] दिया गया है। जानकार लोगों की यह राय है कि विद्यार्थियों और स्कूलों के [illegible] माप के तौर पर इम्तहान न तो सही हैं और न सम्पूर्ण ही हैं। यही नहीं [illegible] यह काफी हैं और न इस पर भरोसा ही किया जा सकता है। इसलिये देश [illegible] के लिये हम जिस शिक्षा-योजना की सिफारिश करते हैं, उसे इसके जहरीले [illegible] बचना चाहिये"।

तब बुनियादी तालीम के काम करनेवालों के सामने यह सवाल उठा [illegible] बुनियादी स्कूलों के काम की प्रगति जाँचने के लिये क्या तरीका अख्तियार किया [illegible] इसके बारे में भी इस रिपोर्ट में थोड़ासा इशारा किया है।

इन परीक्षाओं की मंशा हम इस तरह पूरी कर सकते हैं कि किसी [illegible] इलाके में स्कूलों के काम की देखरेख, [illegible] क्रम की तरफ से बराबर होती रहे। उसका तरीका यह हो कि शिक्षा समिति (Educational board) द्वारा [illegible] निरीक्षक कुछ चुने हुये विद्यार्थियों की योग्यता नाप करके उसीके आधार पर [illegible] बनाएं और उसी की मदद से विद्यार्थियों की योग्यता की परीक्षा करें।

"शिक्षा समिति के जो सदस्य पाठ्यक्रम बनाने और सुधारने के लिये [illegible] हों उनकी मदद से [illegible] तैयार की जाय [illegible] इस तरीके की [illegible]

ज़रिये अगर बीच में देखरख होती रहेगी तो स्कूलों की शिक्षा पद्धति की उपयोगिता बहुत बढ़ जायेगी। और आखिरी क्लास की पढ़ाई की मुद्दत में भी कम से कम छः हफ्ते बढ़ जायेंगे। आज कल विद्यार्थी इस समय को, परीक्षा रूपी अग्नि परीक्षा के पहिले नोटों के रटने और किताबों को दोहराने में बरबाद करते हैं। नई योजना के अनुसार इस समय का उपयोग दो तरह से किया जा सकता है। एक तो बुनियादी दस्तकारी में विद्यार्थियों की योग्यता नापने के लिये हफ्तों लम्बी परीक्षा ली जा सकती है; दूसरे जिन जिन गाँव या गाँवों के बच्चे स्कूल [illegible] उन गाँवों की उन्नति के लिये ठोस काम किया जा सकता है।

पिछले तीन सालों से पटना के बेसिक ट्रेनिङ्ग स्कूल में और चम्पारण ज़िले के सघन इलाके के बुनियादी स्कूलों में काम की जाँच के लिये यही तरीका काम में लाया जा रहा है। जैसे जैसे काम का अनुभव आगे बढ़ता जा रहा है वैसे वैसे ही इस पद्धति में क्रमिक विकास हो रहा है। इस काम के लिये एक खास नाम 'जोरदार काम या अविराम काम (Intensive work) का प्रयोग हो रहा है।

इस पद्धति के विकास में तीन बातों पर खास तौर पर ध्यान दिया गया है:—

(१) इस काम की पद्धति से या ज़ोरदार काम के कार्यक्रम से पूरा पूरा तालीमी फ़ायदा उठाने के लिये यह ज़रूरी है कि विद्यार्थी खुद समझकर अपने आप इस कार्यक्रम में पूरा पूरा हिस्सा लें। जिस योग्यता तक उन्हें पहुँचना है, [illegible] ठीक ठीक समझें। अपने शिक्षकों के सहयोग से ऐसा कार्यक्रम तैयार करें जिससे पूरा क्लास उस योग्यता तक पहुँच सके। और यह जानने के लिये कि उस योग्यता तक पहुँचने में वह कहाँ तक सफ़ल हुए हैं, अपनी और अपनी क्लास की बराबर जाँच करते जायँ।

(२) इस पद्धति में और एक खास बातपर ध्यान देना ज़रूरी है कि जहाँ पुरानी पद्धति से व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा या स्पर्धा की प्रेरणा मिलती थी इस पद्धति से सामूहिक भाव का विकास होना चाहिये [illegible] पहले से ही बच्चे जानेंगे कि किसी एक व्यक्ति विशेष को परीक्षा में उत्तीर्ण होकर व्यक्तिगत यश नहीं लेना है। लेकिन जहाँ तक सम्भव हो पूरे वर्ग को एक निश्चत योग्यता प्राप्त करनी है, सबको मिलकर समाज सेवा के एक काम को हाथ में लेकर पूरा करना है।

(३) मेहनत का काम पुरानी पद्धति में भी था और नई पद्धति में भी है; लेकिन मेहनत बुरी चीज़ नहीं है, अगर इस मेहनत के साथ [illegible] भी ताज़री

दबाव न हो और अगर अपनी प्रेरणा से और अपने उद्यम से सामने एक निश्चित... रखकर वह मेहनत की जाय। पुरानी पद्धति से परीक्षा के लिये जो मेहनत... थी, उसके सामने था एक अनिश्चित भय। बच्चे चाहे कितनी ही क्यों न... करें उसके आखिर में उनकी योग्यता की जाँच इस मेहनत की बुनियाद पर... किसी एक बाहरी परीक्षक पर निर्भर रहती है। लेकिन ज़ोरदार काम की योजना... तरह से बनाई जाय तो विद्यार्थी जानेगा कि किस योग्यता तक उसे पहुँचना... व्यक्तिगत और संम्मिलित प्रयत्न से हर रोज कहाँ तक पहुँचना है। यह प्रयास... आत्म-उद्यम और आत्म प्रयास रहेगा। इसमें बाहरी कोई अज्ञात और अनिश्चित... का स्थान नहीं है।

अप्रैल १९३९ में चम्पारण के बुनियादी स्कूल खोले गये थे। और... पहली टोली भरती की गई थी। इन बच्चों का तीन साल का काम अप्रैल... पूरा होता है। इस काम की जाँच के लिये मार्च के दूसरे हफ्ते से तीसरे दर्जे के... ज़ोरदार काम का कार्यक्रम शुरू हुआ। बेसिक एज्युकेशन बोर्ड के सेक्रेटरी श्री... उपाध्याय ने स्वयं चम्पारण के बुनियादी स्कूलों में कुछ दिन बिताये। और शिक्षक... के बच्चों के सहयोग से इस काम की योजना तैयार की और काम भी शुरू किया...

...अप्रैल का महिना बहुतसे बुनियादी स्कूलों के लिये साल का आखिरी... और साल भर के काम की जाँच का समय है। हम मानते हैं कि तीन साल के... बुनियाद पर बिहार ने इस पद्धति विकसित की रही है, बुनियादी तालीम के... वाले सभी संस्थायें इससे फायदा उठा सकेंगी। इसी उद्देश्य से इस काम के... एक संक्षिप्त विवरण बुनियादी तालीम के कार्यकर्ताओं के सामने रखा जाता है।

इस कार्यक्रम को किस तरीके से संगठन किया जाय इसके बारे में कुछ दिन... बुनियादी स्कूलों के शिक्षकों को नीचे लिखी हुई हिदायतें भेजी गयी थीं:-

अभी ... ढाका के कई स्कूलों का निरीक्षण करते हुए ... और ... में साल के अन्त के ज़ोरदार काम ... अवसर मिला। इस ज़ोरदार ... बच्चे पूरा पूरा लाभ उठावें इसके लिये आवश्यक है कि ... इस काम के उद्देश्य ... पूरा समझें और इसके ढाँचा बनाने (Plan) ... रचयिता ने ... उनका पूरा पूरा हाथ ...

हरेक दर्जे के अन्त में बच्चों की ... निश्चित योग्यता प्राप्त करनी है। ... ज़ोरदार काम करने के पहिले उसे देख लेना चाहिये। साथ ही जिस छमाही ... में इस तरह का काम करना है उसके चौथे और पाँचवें महीने तक उन्होंने कितना ...

...स की है, उसकी जाँच कर लेनी चाहिये। उसके बाद उन्हें हिसाब करना चाहिये कि ...ब कितना समय बच रहा है, उसमें स्कूल के घंटों के भीतर कितना अधिक से अधिक ...म वे कर सकते हैं और उस पर भी यदि कुछ कमी रह जाय तो उस कमी को पूरा ...ने के लिये उन्हें स्कूल के बाहर या आवश्यकतानुसार छुट्टियों में भी कितना समय दे ...कर अपने को पूरा योग्य बना लेना चाहिये। साथ ही जो एक दो महीने ...हले से ही अपेक्षित योग्यता प्राप्त कर चुके हैं, उन्हें अविराम कार्य की अवधि के अपने ...यत्नों से उच्चतम योग्यता की प्राप्ति कर आदर्श बनना चाहिये और इस प्रकार अपने ...छड़े हुए भाइयों की औसत बढ़ाकर पारस्परिक सहयोग के उदाहरण का नमूना लोगों के ...मने रखना चाहिये।

उदाहरणार्थ:—पहले दर्जे की ... छमाही के अन्त में पाठ्यक्रम के अनुसार ...बुनियादी दस्तकारी ... बच्चों की तकली पर कातने की गति—दोनों हाथों को एकसा ...समय दे कर और अटेरन छोड़ कर—१ घंटे में १० नं. सूत के ९० तार ... चाहिए। ...त की समानता कम से कम ६०%, मजबूती कम से कम ४०% और छीजन अधिक से ...अधिक ५% होना चाहिये। जोरदार (अविराम) काम आरम्भ करने के एक सप्ताह ...पहले उस दर्जे में एक घंटे की तकली पर नियमित रूप से कताई कर इस बात की जाँच ...कर लेनी चाहिये कि बच्चे की गति कितनी पहुँची है और उनके सूत की समानता ...र फी सैकड़े कितनी है और कताई करने ... छीजन कितनी ... की ...सब इन बातों में क्या है इसकी ... से ...जायगा।

फिर भी पाठ्यक्रम के ... है ... औसत काम की मात्रा ...चे लिखे अनुसार होनी चाहिये—

कताई १ घंटे में १० नं० के ६० तार; खोलाई १ घं० में १½ तोले और ज्यादा ...ज्यादा छीजन ४%, छमाही के भीतर स्कूल के काम के दिन कितने ... के दिनों को ...छोड़ दे कर बच्चे लगा लेंगे। उदाहरणार्थ: वृन्दावन के स्कूलों में १ जुलाई से ३१ ...सम्बर १९४१ के १८४ दिनों में स्कूलों में काम के दिन छुट्टियों के (२६ रवि- ...वार, अन्य छुट्टी) ५४ दिनों को ... कर १३० दिन हैं। बच्चे जोड़ कर पता लगायेंगे ...अक्तूबर के अन्त तक या नवम्बर के अन्त तक कितने काम के दिन हो चुके हैं ...वह भी जोड़ेंगे कि इन महीनों में उन्होंने कताई और खोलाई कितने कितने घंटे की ...और उन घंटों में उन्होंने कितने तार सूत काते हैं या कितने तोले ... है। यदि

चाहते हैं। यह भी कुछ [illegible] नहीं। विज्ञान और अध्यात्म यही [illegible] का में विचार करूँगा। [illegible] चरखा टूट गया तो क्या मैं सिर [illegible] रहूँ? मैं बढ़ई के पास [illegible] इसे दुरुस्त करा लूँगा। इसी [illegible] ट खाया हो तो मेरे आँसू बहाते रहने से काम नहीं चलेगा, उसका [illegible] इलाज अपने काम में लग जाना चाहिए। इसी तरह आत्मा की अलिप्तता का होना चाहिए। उसकी आदत पड़नी चाहिए। मेरे स्कूल का यही तरीका [illegible] पर्चा बनाने नहीं बैठूँगा। बच्चों की बोली पर से ही उनको [illegible] समझ लूँगा।

[illegible] में ज्ञानदृष्टि प्रमुख

[illegible] भोजन करते हैं और दूसरे लोग भी भोजन करते हैं। लेकिन दोनों [illegible] फर्क है। विद्यार्थियों का भोजन ज्ञानमय होना चाहिए। उन्होंने अनाज पीसा और [illegible], उसमें भूसा कितना निकला वे लिख कर रखेंगे। मान लीजिए सेर में आठ [illegible] भूसा निकला, यानी दस प्रतिशत हुआ। यह बहुत हुआ। दूसरे दिन पड़ोसी के घर [illegible] वे उसका भूसा तौलेंगे। उन्हें दिखाई देगा कि उसके आटे में से ढाई तोले भूसा [illegible] लता है। दस प्रतिशत भूसा निकलने में क्या बिगड़ा? उतना भूसा पेट में [illegible] तो नहीं चलेगा? आदि सवाल उन्हें सूझने चाहिए; पूछने चाहिए और उनके [illegible] जवाब भी उन्हें मिलने चाहिएँ। अगर ऐसा हुआ तो गीता की भाषा [illegible] हरएक काम ज्ञान का साधन होगा। ज्वर आया तो वह ज्ञान देकर [illegible]गा। वह प्रयोग होगा। फिर से वैसा बुखार नहीं आयेगा। इस तरह जहाँ में [illegible]क बात ज्ञानदृष्टि से की जाती है वह स्कूल और जहाँ हरी बात कर्मदृष्टि [illegible] ती है वह कारखाना। इस तरह प्रयोग की बुद्धि से और ज्ञानदृष्टि से हरएक [illegible] करना हो तो उसके लिए थोड़ा खर्च होगा, लेकिन उसमें से [illegible] कमाई [illegible] होगी। स्कूल में चरखा यानी अच्छा चरखा लगेगा। ऐसा वैसा [illegible] चलेगा [illegible] कुछ कम हुआ तो चलेगा, लेकिन वह आदर्श होना चाहिए। कपास तौल [illegible] लिया जायेगा। उससे कितने बिनौले निकले, वे भी तोले जायँगे। रोजिया [illegible] तने बिनौले निकले, व्हेरम से इतने क्यों? इस तरह सवाल पूछे जायँगे [illegible] उसके जवाब भी दिए जायेंगे। बिनौले की शकल मटर के जैसी है, लेकिन [illegible] वजन में फर्क क्यों है? बिनौले में तेल है, इसलिए वह हलका है। इसी [illegible] के दूसरे कौनसे अनाज हैं, इसे देखा जायगा। इसके लिए तराजू लगेगा या [illegible] बाजार से मोल नहीं लाना है। उसे स्कूल में ही बनाना होगा। यह [illegible] शुरू किया कि विज्ञान शुरू हुआ। इस तरह हरएक काम करने [illegible]

बच्चे राष्ट्र के धन हैं। फिर भी उनके भोजन में न तो दूध है, न घी! प्रति मास के हिसाब भोजन खर्च ढाई रुपये! इसे क्या कहा जाय? देश की हालत ... नहीं सकते, तो भी कम से कम जितना देना आवश्यक है उतना तो देना चाहिए। कुछ दिन पहले जेल में सत्याग्रहियों को योग्य भोजन नहीं मिलता ... दूध नहीं दिया जाता था, इसके बारे में उनकी शिकायत थी। बापू की ...ना से बाहर के डॉक्टरों ने निरामिष-भोजी लोगों के लिए कम से कम ... दूध चाहिये इसकी जाँच की और फैसला दिया था कि हरएक को ... से कम रोजाना ३० तोले दूध देना चाहिए और चूँकि सरकार ने कैदियों ... रखा है; इसलिए उसे यह कमसे कम जरूरत तो पूरी करनी ही चाहिए। ... हम खुद ही अगर स्कूलों में इसे अमल में न लाएँ तो क्या यह शोभा ...गा? बच्चों को दूध मिलना चाहिए। उन्हें अच्छा खाना मिलना चाहिए। ...गर ऐसा न करेंगे तो उनमें तेजस्विता पैदा न होगी।

...रा अधिकार

मैंने कुछ बातें शिक्षकों को, कुछ विद्यार्थियों को और कुछ जनता को ...ताईं। ये सब बातें मैंने मेरे अनुभव से बताई हैं। मैं आशा करता हूँ कि ...नका योग्य उपयोग होगा। *

[ग्रामसेवा वृत्त' से] **विनोबा**

ज़ोरदार काम—जाँच का एक तरीका

सालभर के काम के आखिर में विद्यार्थियों के दस्तकारी के काम में ...योग्यता का अन्दाजा करने के लिये बिहार के बेसिक ट्रेनिंग स्कूल और बुनियादी स्कूलों में जिस पद्धति का विकास हो रहा है उसकी कुछ चर्चा नई तालीम के पिछले अङ्क में की गई है। ज़ोरदार काम के इस कार्यक्रम में सबसे बड़ी बात यह है कि अगर ठीक ठीक इसे अमल में लाया जाय तो यह सिर्फ जाँच का एक तरीका ही नहीं; बल्कि बुनियादी तालीम के कार्यक्रम का एक मुख्य हिस्सा बन सकता है।

लेकिन, जैसा कि बेसिक एजुकेशन बोर्ड के सेक्रेटरी श्री रामशरण उपाध्यायजी ने 'शिक्षकों की हिदायतों' में कहा है "इस ज़ोरदार काम से बच्चे ...रा पूरा लाभ उठावें इसके लिये आवश्यक है कि वे इस काम के उद्देश्य को ...रा पूरा समझें और इसका ढाँचा बनाने में उनका पूरा पूरा हाथ हो।" यह

* तुमसर के राष्ट्रीय स्कूल में ता० १४-२-४३ को दिया हुआ भाषण

पिछले एक महीने से चम्पारन के बुनियादी स्कूलों के तीसरे इसी ध्येय को सामने रख कर दस्तकारी में जोरदार काम चल रहा है प्रयोग की प्रारम्भिक अवस्था है। इस पद्धति के पूरे तौर से विकास समय लगेगा। लेकिन अभी जिस तरीके से काम चल रहा है उसका कुछ बच्चों के अपने शब्दों में देने की कोशिश की जायगी। नीचे चम्पारन बुनियादी स्कूल के तीन बच्चों की रोजनामचा बही से कुछ काम दिये जाते हैं। बच्चों ने शिक्षकों के सहयोग से किस तरह से काम की की उसकी कल्पना इससे मिलेगी।

[१]

"अब हम लोगों का साल बीत रहा है। इस लिये हम लोगों ने की जाँच की। सिलेबस में लिखा हुआ है कि एक घँटे में धुनने की गति तोला पूनी बनाना मिलाकर होनी चाहिये।

आज मैंने चार तोला रूई २० मिनिट में पूनी बनाना मिला कर है। अब मैं दूसरे बुनियादी स्कूलों का औसत बढ़ाने के लिये कोशिश करूंगा।

उसके बाद चर्खे की कताई की जाँच की। लगातार तीन घंटा सूत के बाद सूत गिना तो ६९० तार हुआ जिसका अंक १२, कस ६५% और ६०% हुई।

पुराने सिलेबस से मैं ३० तार कम हूँ। और सिलेबस में दिया है, मेरा अंक १२ है इसलिये मैं पूरा करने के लिए जोर २-३-४२ को तकली पर जाँच की तो ३ घंटे में ३३८ तार हुआ और १२ सिलेबस में ४८० तार है, अंक १२, इससे भी ११० तार कम हूँ। इसलिये जोर लगाकर पूरा करूंगा।

१३-३-४२— अभी ५ महीने में मेरा ५५ गुंडी सूत हुआ है। सिलेबस ११७ गुंडी लिखा है। ६२ गुंडी पूरी करने के लियें १३ मार्च से १५ अप्रैल अभी समय है। दिन बाकी हैं। जिसमें ५ दिन रविवार हैं। २९ ६२×४×१६०=३९६८० तार कातना बाकी है।

परन्तु मेरी ३ घंटे की गति ६९० तार है। इसलिये ३९६८०÷६९० के तीन गुने घंटे अर्थात् ५७×३=१७१ घंटे काम करना पड़ेगा।

१३ मार्च से १५ अप्रैल तक समय है जिसमें ५ रविवार हैं। छोड़ कर २९ दिन काम के दिन हैं। १७१÷२९=६ घंटा रोजाना काम है। ३ घंटा स्कूल के समय में काम करना पड़ता है इसलिये ३ घंटा समय में पूरा करेंगे।

क्लास भर की कुल गुंडी (अक्टूबर से फरवरी तक) १४७८ हुई। क्लास की औसत हाज़िरी २८ है। इसलिये १४७८÷२८=५३ गुंडी। ११७-५३=६४ गुन्डी प्रति छात्र को कातना है। क्लास का औसत समय निकाला गया तो ६: घंटे आया है। इस जोरदार काम में रातो दिन मिहनत कर के पूरा करेंगे।"

लक्ष्मणसिंह

बेसिक स्कूल, चौबटोला—पडुकिया, चम्पारण

"सिलेबस में लिखा हुआ है कि एक घंटे में ४ तोला रुई धुन लेना चाहिये। मैंने ४ तोला रुई २५ मिनट में धुन ली है। मैं सिलेबस से आगे बढ़ गया हूं। सिलेबस में लिखा हुआ है कि यरवदाचक्र पर ३ घंटे में ७२० तार कातना चाहिये। मेरी गति यरवदाचक्र पर ३ घंटे में [illegible] तारें आई है। मैं सिलेबस से आगे बढ़ गया हूं। लेकिन हमारे जो कमजोर साथी हैं उनकी भी मदद करना है। * सूत का अंक १६ हुआ है, मजबूती ७०%।

हम लोगों के साल का अन्त हो रहा है। इस लिये धुनाई करके अपनी जाँच की। सिलेबस में लिखा हुआ है कि तकली पर ४० मिनिट में ९५ तार कातना चाहिये। तो मैंने तकली पर ८० तार काता है। अंक ११। कस ६०% हुआ। इस लिये मैं आगे बढ़ने की कोशिश करूंगा।

१२-३-४२- आज मैंने तकली पर लगा तार ३ घंटे सूत कातकर अपनी जाँच की तो सिलेबस के मुताबिक नहीं पहुंचा हूं। सिलेबस में ३ घंटे में ३४० तार हैं। और मैंने लगा तार ३ घंटे काता तो ३२५ तार हुआ है। वजह यह है कि तकली पर कताई छूट गयी थी। अब से अपनी कमी पूरी करूंगा। सूत का अंक १३, कस ६०%, समानता ७०%।

ता० १२-२-४२- मेरा पाँच महीने में ७४ गुंडी सूत हुआ है। ११७ गुंडी सिलेबस में दिया हुआ है। इस लिए ११७-७४=४३ गुंडी पूरा करने के लिये २४ दिन समय है। जिसमें ५ रविवार हैं। २९ दिन में १०२ घंटा कातने पर पूरा होगा। १०२÷२९=४ घंटा रोज़ाना कातने से पूरा होगा। ३ घंटा स्कूल के समय में और १ घंटा फाजील समय देना होगा। ५ रविवार भी बचता है उसमें भी कातकर पूरा करूँगा।"

मुन्शी सिंह

पुराना तीसरा दर्जा, बेसिक स्कूल,

चौबटोला-पडुकिया, चम्पारण

* स्कूलों में ऐसा एक सिलसिला बन गया है कि जो लड़का आगे बढ़ गया है वह पिछड़े हुए लड़कों को औसत तक पहुँचाने में मदद करे।

[३]

"हम लोगों का साल बीत रहा है। इसलिये मैंने अपनी धुनाई की। तो देखा कि सिलेबस में दिया हुआ है कि १ घंटे में ४ तोला पूनी बनाने धुनाई खतम होनी चाहिये। तो इसमें भी देखा कि मैं आगे हूँ। क्योंकि मैंने ३ में ४ तोला रूई पूनी बनाने के साथ धुन ली है। इसलिये मैं धुनाई में से आगे हूँ। परन्तु जोरदार काम में काफी परिश्रम कर के दूसरे साथियों और दूसों को आगे बढ़ने के लिये मदद करूंगा। कताई में देखा तो सिलेबस में दिया है ३ घंटे में अटेरना मिला कर ७२० तार कातना चाहिये। मैंने यरवदा चर्खेपर घंटे काता तो अटेरना मिलाकर ८८१ तार हुआ। इसलिए मैं सिलेबस से आगे सूत का वजन ४।=, अंक १३, कस ६० और समानता ६५ % हुई। ता० ११-३ धुनाई की जाँच फिर की तो देखा कि कल से भी आगे बढ़ गया हूँ। धुनाई १$\frac{2}{3}$% हुआ।

ता० १२-३-४२–मैंने अपनी तकली की कताई की जाँच की तो देखा कि कातना और अटेरना मिलाकर ४१२ तार हुआ। उसका वज़न निकाला तो २॥ हुआ। उसका अंक १० हुआ। कस ६०, समानता ६६ हुई। और पुराने सिलेबस में दिया हुआ था कि तकली पर ३ घंटे में परेतना मिलाकर ४४० तार, और कस ६०% चाहिये। इसलिए मैं जोरदार काम में मिहनत कर के उस को पूरा करने के बाद चौथे दर्जे के लायक हो जाऊँगा। सिलेबस में ६ महीने में ११ तैयार करना दिया हुआ है। और मैंने ५ महीने में ९३ गुंडी सूत काता है। ११७–९३=२४ गुंडी२४×४=९६ लट्टी९६×१६०=१५३६० तार अभी कातना और मैंने ता० १०-३-४२ को चर्खे की कताई की गति की जांच ली तो ८८१ तार हुआ। इसलिए १५३६०÷८८१=२० इसके तीन गुना घंटे काम गया और हमको समय १३ मार्च से १५ अप्रैल तक ३४ दिन है जिसमें ५ ३४–५=२९ दिन रहे जिसमें २ घंटा के अनुसार काम करेंगे तो सिलेबस के पहुँचेंगे। लेकिन सिलेबस के बराबर पहुँचते हुए २७ स्कूलों में भी आगे बढ़ने जी-जान से मिहनत करेंगे।"

नोट—क्लास भर का औसत समय हम लोगों ने निकाला तो रोज़ाना ६ घंटा पड़ा।

बुनियादी तालीम का पहला साल

बुनियादी पाठशाला बोरी, तहसील सिवनी, मध्यप्रान्त

हिन्दी मध्यप्रान्त में बुनियादी तालीम के प्रयोग के लिए प्रान्तीय सरकार ने सिवनी तहसील को चुना है। और मई १९४२ से इस तहसील के तीस डिस्ट्रिक्ट कौन्सिल के स्कूलों में पहले दर्जे से यह काम शुरू हुआ। इन स्कूलों में बोरी की बुनियादी पाठशाला भी एक है। अप्रैल १९४२ में इस पाठशाला के पहिले दर्जे में बुनियादी तालीम का एक साल का काम पूरा होता है। इस प्रयोग को चलाते हुए हमें कई दिक्कतों का सामना करना पड़ा। शुरूआत में इस तालीम के लिए जरूरी सामग्री हमें नहीं मिली। समय समय पर शिक्षकों का ऐसा रद्दोबदल किया गया कि उससे शिक्षा के काम पर काफी असर पड़ा। फिर भी साल के आखिर में पहिले दर्जे के बच्चों ने पाठचक्रम के भिन्न भिन्न विषयों में जो योग्यता प्राप्त की है उसका एक संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जाता है:—

मूलोद्योग कताई–दोनों हाथों से कातना। तकली का साधारण शास्त्रीय ज्ञान। लख का उपयोग। तकली दफ्ती पर क्यों घुमाई जाती है। तकली से लाभ। अधिक छीजन निकालने से होनेवाली हानियाँ। गति बढ़ाने के लिए भिन्न भिन्न उपाय। सूत की समानता से लाभ, असमानता से हानि। सूत से कपड़ों का बनना व खादी का ज्ञान तथा महत्त्व।

ठीक समय पर पूनी न मिल सकने के कारण हमें हर माह में कुछ दिनों के लिए अपना काम बन्द रखना पड़ता था। जिससे हमारे बालकों का ध्यान टूट जाता था और उन्हें फिर उस गति तक लाने के लिए हमें अधिक समय लगता था। जिस दिन कताई न की जाती थी उस दिन बालक सारे दिन उदास बैठे रहते और बार बार तकली माँगते। हमें ऐसे समय में दूसरे केन्द्रों का सहारा लेना पड़ता था। परन्तु बालकों का ध्यान उतना अच्छा नहीं लगता था जितना कि कताई के दिनों में।

मातृभाषा—साधारण रूप से कताई की क्रियाओं का वर्णन। छोटी मात्राओं का ज्ञान, उनका अक्षरों में उपयोग। अपने देखे हुए पदार्थों, दृश्यों, दैनिक व्यवहार में आनेवाली चीज़ों आदि का वर्णन। किताबों से नकल करना व साधारण पढ़ना।

इस नई योजना के मुताबिक बच्चों के लिए पाठ्य-पुस्तकें अभी न हैं, इसलिए अमली काम के आधार पर ही कुछ पाठ तैयार किए गए। हमने इन पाठों को जबानी पढ़ाया; फिर छोटे छोटे वाक्य बना कर बच्चों से लिखवाया। इन पाठों का अनुभव मेरा यह रहा कि बच्चों ने जो अवलोकन व अमली काम किया है उसके आधार पर जो पाठ तैयार किये जाते हैं उसका ज्ञान बालकों को शीघ्रता से होता है और इनके पढ़ने में वे रत होते हैं। मूलोद्योग के संबंध का एक छोटे-से पाठ का नमूना नीचे है। "रामलाल उठ। तकली ला। दफ्ती रख। सूत निकाल। बस, अब रख।"

इसी प्रकार के छोटे छोटे पाठ तीनों केन्द्रों के सम्बन्ध से तैयार किए और पढ़ाए गए।

गणित–ज्यादा तर बच्चे पढ़ने आने के पहले से ही १५-२० तक जबानी गिनना जानते हैं। प्रारम्भ में जब हमें उनकी इस गिनती का उपयोग करना पड़ा तब हमने पहले बालकों से यह अभ्यास कराया कि "तकली घुमा कर देखो, गिनो, कितनी गिनती गिनते तक तकली घूमती है"। इसके बाद लपेटी पर तार लपेटने के समय गिनती की अभ्यास कराया। इसमें कुछ अड़चन हुई क्योंकि काम करना व उसका हिसाब रखना ये दोनों बातें एक साथ करना बच्चों के लिए मुश्किल पड़ती। अतः हमें दशक प्रणाली का उपयोग करना पड़ा। कुछ समय के बाद यह अड़चन दूर हो गई और अब बालक अपने काते हुए तारों की गिनती खुद कर लेते व पट्टी पर लिख लेते हैं। तख्ते पर हर बच्चे के नाम के सामने रोज उसके काते हुए तार लिखे जाते हैं, फिर हर बच्चा अपने काते हुए तारों की संख्या दर्जे के सामने पढ़ कर सुनाता है। फिर अधिक व कम निकलने परसे छोटी व बड़ी संख्या का ज्ञान बालकों को कराया जाता है। यह जनवरी के अन्त तक बच्चों की योग्यता यहाँ तक हो गई है कि वे अपने दोनों वक्त के काते हुए तारों को जोड़ सकते हैं, यदि इसमें हासिल रहित हो। काती हुई पूनियों पर से साधारण जोड़ व बाकी के जबानी सवाल किए जाते हैं जिनका उत्तर बच्चे पट्टी पर ठीक ठीक देते हैं। प्रत्येक टोली के तार अलग जोड़े जाते हैं। अधिक तार निकालनेवाली टोली को धन्यवाद दिया जाता है। लटी बनाने के लिए १६० तक की गिनती की जानकारी बच्चे कर चुके हैं। घूमने के समय पेड़, घर, खेत आदि को लगातार गिनने का मौका दिया गया है। २-२ में गिनने का भी ज्ञान इनको अच्छा हो गया है। लपेटा, तार, तकली, क्यारी लट्टी, आदि के नाम

तौलने पर से, नापतोल का अमली अभ्यास बच्चों का हुआ है। जैसे, लपेटा एक फुट लम्बा है। चार फुट का एक तार। तोलने में जिधर का पलवा नीचे रहता उधर वजन ज्यादा है। क्यारी के हिस्से फुट व हाथ से नाप कर बनवाने, उनमें सीधी लाइन खींच कर बीज व पौधे लगाने से भी नाप का अमली अभ्यास बच्चों का हो गया। औजारों के उपयोग के लिए हरएक बच्चा उत्साहित रहता है। अपनी लटी खुद बनाता व खुद ही तौलता है। उनको तौलने का ज्ञान अच्छी तरह से हो गया है।

सामाजिक अध्ययन—आदि मानव, उनके जीवन रक्षा के साधन, भोजन, निवास, उनकी अभिव्यक्ति के साधन और धीरे धीरे उनकी तरक्की। प्राचीन मिश्र व भारत। छोटी छोटी कहानियों के रूप में पिरामिड, बद्दू जाति के लोगों का रहन-सहन। अमेरिका के रेड इण्डियन। चीन के पाँच सम्राट। राजा के प्रति उनका ख्याल। न्याय आदि का वर्णन। साधारण लोक-कथाएँ। पौराणिक कथाएँ। दन्त कथाएँ। घरेलू शाला और प्रकृति से सम्बन्ध रखनेवाली छोटी छोटी कहानियाँ बताई गईं। इन कहानियों को बच्चे बड़े प्रेम से सुनते व कभी कभी छोटे छोटे प्रश्न पूछते हैं। गुलामों की कहानी पर से उनके साथ किए जानेवाले व्यवहार पर बालक क्रोध व खेद प्रगट करते हैं। आदि मानव के रहन-सहन का मिलान वे अपने वर्तमान रहन-सहन से करते हैं। यह बात जरूर है कि बच्चे इन कहानियों को ध्यान से सुन लेते हैं पर लगातार वर्णन नहीं कर सकते हैं। इसलिए सिर्फ सवाल जवाब करके ही इनका ज्ञान व अभ्यास कराया जाता है।

बच्चे सफाई रखने के लिए झाडू व रद्दी की टोकरी का इस्तेमाल करते हैं। रोशनी व साफ हवा का साधारण महत्त्व समझ गए हैं। गरम पानी से कपड़ों की सफ़ाई, रीठे के फलों, सोडा व साबुन तथा साफ़ पानी का उपयोग बच्चों को बहुत बार सफाई दिवस के अवसर पर कराया गया। वे अपने सामान, बैठने की जगह, कमरे आदि की सफ़ाई पर ध्यान देने लगे हैं। इसके लिए प्रत्येक टोली एक एक हफ्ते काम करती है।

अतिथि का आदर, बड़ों का सम्मान, साथियों से मिल कर रहना, अच्छी बातचीत करना आदि गुणों को बच्चे कुछ कुछ समझने लगे हैं। वे हमेशा कामों में अपनी बारी की राह देखते रहते हैं। इसका उपयोग वे हर काम करने की कोशिश करते हैं। अपने शिक्षक, कक्षा नायक, टोली नायक आदि आदेश मानना, स्कूल व घर सम्बन्धी कामों को भली भाँति करना, उनके

करने में दिल न चुराना आदि भावनाएँ जागृत हो रही हैं। स्कूल
भाल, संग्रहालय की व्यवस्था; पीने के पानी की व्यवस्था, कुएँ के
सफाई रखना आदि जिम्मेदारियों को भी धीरे धीरे समझने लगे हैं। रोज
व्यवहार में आनेवाली बातों का भी समावेश उनके जीवन में होने लगा है
साफ कपड़े पहनना, ताजा भोजन करना, स्नान करना, दतौन करना,
आना आदि। आज मैं देख रहा हूँ कि ज्यादा तर बच्चे बगैर छुट्टी लिए
हाजिर नहीं रहते। कभी कभी तो वे अपने घरवालों को भी स्कूल भेज
भेजते हैं।

शारीरिक परिश्रम के समय वे बड़े प्रेम से भाग लेते हैं। ईमान
खेलते हैं। वे अपनी टोलियों का चुनाव खुद कर लेते हैं। उनमें निडर
आने लगी है। शाला में वे दूसरे दर्जों के मुकाबले में काफी प्रसन्न
करने में अधिक दिलचस्पी रखते हुए पाये जाते हैं। उनकी तन्दुरुस्ती में
सुधार होते जा रहा है। चञ्चलता, फुर्ती आदि आने लगी है।

सामान्य विज्ञान—आसपास के पेड़-पौधे और उन पर अलग
मौसिमों का असर आदि। इनसे मनुष्यों को होनेवाले लाभ। सूर्य, चन्द्र
उनकी छोटी छोटी कहानियाँ व गाने। सूर्य द्वारा दिशा-ज्ञान। ऋतु परिवर्तन
ऋतु में स्थानीय कार्य। अधिक वर्षा के समय तालाब, नदी, नालों
दशा। जाड़े के दिनों में प्रातःकाल, तालाबों से जो भाप बनती है उसका
लोकन। कुहरा व ओले का अवलोकन। ओस का गिरना। पानी के
तालाबों की दशा। कीड़ों का गायब होना।

हवा—उसके चलने की दिशा, सूत पर उसका असर, पूनी हवा में
रहने से फूल जाती है, हवा के सीधे धक्के से सूत टूट जाता है, कुकड़ी
बनाने से तकली के घुमाने में हवा की रुकावट आदि।

प्रतिदिन चन्द्रमा का अवलोकन। चन्द्र कलाओं का ज्ञान। सूर्य व
ग्रहण। दिन के समय चन्द्रमा का प्रकाशहीन हो जाना। शुक्ल व कृष्ण
साधारण ज्ञान। फसलों की कटनी। उस समय उनका रंग व ऊंचाई
रक्षा के लिए किए गए भिन्न भिन्न साधन। आगे चल कर उनकी उपज
का अवलोकन कराया गया व हवा का उपयोग बताया गया।

बगीचे की फसलों में से आलू, प्याज, कन्द आदि का ज्ञान,
भोजन में इनका उपयोग आदि। बादलों का साधारण ज्ञान। वर्षा होने से
सूत का अच्छा निकलना। हवा में नमी आदि।

इस संबंध में सालभर के पश्चात् यह अनुभव हुआ कि जब पढ़ाये जानेवाले विषयों का ज्ञान बच्चों के घर में देखे हुए साधारण अनुभव से मिलता है, तब बच्चों को जल्दी से ज्ञान होता है और वे प्रसन्न होते हैं। और इस संबंध के साधारण छोटे छोटे अनुभव बताने लगते हैं। जैसे, रोटी बनाने के समय पानी से भाप उड़ना, आग जलाने के लिए हवा की आवश्यकता, मुँह से व पंखों द्वारा हवा कर के आग जलाना, कपड़ों का सुखाना आदि। साथ ही साथ बालकों में अवलोकन की वृत्ति आ जाती है। वे बड़े प्रेम से प्राकृतिक परिवर्तन व मनुष्य जीवन में उससे पड़नेवाले असर का ज्ञान करते हैं, जैसे जाड़े के दिनों में अधिक कपड़ा पहनना, गर्मी में कम आदि।

कृषि—प्रारम्भ में इस विषय के लिए हमें धान के खेत, अंकुर आदि देखने का अच्छा अवसर मिला। इसके बाद कपास की खेती, कपास के लिए ज़मीन, हवा आदि का साधारण ज्ञान। समय समय पर गुड़ाई व उसका असर; वर्षा, गर्मी आदि के दिनों में बगीचों में किए गए कार्य। लोगों द्वारा किए गए कार्यों का ज्ञान। बगीचे में छोटी खुरपियों से गुड़ाई करना। हजारों से पानी सींचना। बीजों को लगाना। उनकी गिनती, तौल आदि। फसलों का अवलोकन, बीज, अंकुर, तना, पत्ते, फूल, फल आदि का ज्ञान। कपास के फूल का रंग, आकार, कपास की बोंडी पकने का समय, तोड़ने के समय आदि का कार्य द्वारा ज्ञान कराया गया।

इस काम को बालक अपनी टोलियों में बट कर काफी दिलचस्पी से करते हैं। वे हजारे में भरकर पानी सींचना, मिट्टी चढ़ाना आदि कार्यों को बड़ी सफ़ाई व प्रेम से करते हैं। वे अपनी क्यारी की देखभाल, सिंचाई का प्रबन्ध समय समय पर मिल कर स्वतः कर लेते हैं। उन्हें अपनी क्यारी से बड़ा प्रेम हो जाता है और उसकी अच्छाई के लिए हमेशा प्रयत्न करते रहते हैं।

संगीत—सामाजिक, तकली के सम्बन्ध के, प्रकृति के संबंध के छोटे छोटे गाने बताये गए।

चित्रकला—इसके लिए हमारा अधिकांश समय अवलोकन में बीता। प्रकृति में पाये गए भिन्न भिन्न रंग, साधारण दृश्य, पेड़, मकान, प्राचीन खुदाई के काम आदि का अवलोकन कराने के बाद जब बालकों को लिखने का साधारण ज्ञान हो गया तब उनसे पट्टियों पर तकली, लपेटा, पूनी, गोली, खेलने की छोटी छोटी चीज़ें, जैसे-भौंरा, गिल्ली, डंडा आदि के चित्र, कपास की बोंड़ी पत्ते आदि चित्रित करना, पिरामिड के चित्र; रंगों का साधारण मिलान और उपयोग आदि का क्रियात्मक ज्ञान कराया गया।

बच्चों की इस काम में बड़ी खुशी है। वे अपनी कल्पना से और चित्र बनाते रहते हैं। वे पेन्सिल से उनमें यथोचित सजावट करते होते हैं। कभी कभी वे मैदानों में, धूल व रेत में बैठकर चित्र बनाते रहते

सारांश यह कि आज इन छोटे छोटे बच्चों में हम काफी उत्साह लगन व हरएक कार्य में व्यवस्था देख रहे हैं। वे प्रसन्न व अपने कार्य में पाये जाते हैं। उनकी भावनाएँ भी अच्छी हो रही हैं। शारीरिक अच्छी है और उनमें स्फूर्ती, साहस आदि सद्गुणों का समावेश हो रहा है

दीपचन्द दुबे,
शिक्षक, कक्षा पहिली
बुनियादी स्कूल बोरी, सिवनी कॉम्पेक्ट

सेवाग्राम स्कूल में होली का त्योहार

देश के जीवन की नींव उस देश के पुराने रस्म रिवाजों तथा पुरानी संस्कृति पर गाड़ी जाती है ; क्योंकि नया समाज पुराने समाज का उत्तरदायी है। हमारे शिक्षण में समाज का अभ्यास रखने का महत्व यही है कि हमारे समाज में चलने वाले पुराने रिवाजों में से ऐसी बातें चुन सकें और उन्हें स्कूल के प्रोग्रॅम में लाएँ; जिससे कार्य में उनका अच्छा उपयोग हो। इसके द्वारा अध्यापक बालकों को समाज अच्छी दे सकें और उन्हें अपने उत्तरदायित्व के लिए जागृत रखें।

देहाती त्योहार शिक्षा के लिए अच्छे साधन हैं। इसका उपयोग समय होना जरूरी है, क्योंकि वे स्कूल और देहाती समाज दोनों को निकट लाते पालक तथा अध्यापक इनमें हेलमेल बढ़ाते हैं।

इन त्योहारों से बालकों की कला, संगीत, संगठन आदि कार्यों में आत्म आत्मप्रकटन के लिए अवसर मिलता है। इसी कारण इन पुराने रस्म रिवाजों जो कि शिक्षा के अच्छे साधन कहे गये हैं और जिनका बालक उत्तरदायी उनसे पाठशाला का परिचित रहना उचित है। कारण उन्हींपर हमारे भावी बुनियादें गड़ी गई है।

देहाती त्योहार का प्रोग्रॅम स्कूल में होना अध्यापन कार्य के लिये आवश्यक हुए भी हमें यह देखना चाहिये कि उनका शिक्षा कार्य में अवश्य महत्व हो तरह के बुरे व्यवहार तथा अंधविश्वास रख कर वे न मनाए जायँ। उनसे

...त्मविकास हो। जैसे त्योहार मनाया है तब जो काम तथा व्यवस्था कार्य हो उसका ब्यौरा ...लक और अध्यापक दोनों सहकार्य से करें। त्योहार के बाद बालक उसके बारे में निबंध, ...पोर्ट या संभाषण के स्वरूप में विवरण लिखें।

इन त्योहारों से समय समय पर छोटे और बड़े दोनों को अच्छे प्रकार के मनबह... का आनंद और बालकों को क्रियाशील आत्मप्रकटन का अवसर मिले। इन सब बातों ... ध्यान रखकर इस साल सेवाग्राम स्कूल में होली का त्योहार मनाया गया।

पूरे हिंदुस्तान में होली का त्योहार मशहूर है। जहाँ शहरों में पढ़े लिखे, अनपढ़ों से भी ...यादा बुरा व्यवहार दिखाते हैं वहाँ देहाती अनपढ़ों की बात ही क्या! ऐसे देहात के ...तावरण से कम से कम स्कूल के बच्चे बचे; परंतु इस वातावरण में जो खेल कूद का ...नंद आता है उसे भी वे ले सकें जिससे वे बालकों के बालकपन को छोड़कर बूढ़े न बनें। ...सलिए होली के पहिले ही आठ दिन प्रोग्रॅम बनाकर लड़के और अध्यापक काम में लग ...ए। इसमें पालकों को बुलाया जाय, यह भी निश्चित था।

देहात में किसी उत्सव में लोगों को बुलाना हो तो निमन्त्रण पत्रिकाओं की जरूरत ...हीं होती है, खाली आते जाते देख कह देने से काम चल जाता है। बच्चों ने सब को ... दिन के उत्सव का इत्तला कर दिया था। होली का दिन आया। सबेरे [illegible] के एक ...के बनाए हुए गाने गाकर बच्चों ने अपने गाँव को जगाया। से सुबह के समय के ...भात फेरी के गीत सुनकर धूल मिट्टी का उत्साह कुछ पहले से ही कम पड़ गया और ...आठ बजे स्कूल के काम्पाउंड में जलसा शुरू हुआ।

पहले खेल शुरू हुए। खेल में चौदा से लेकर चार वर्ष के बच्चे भी शामिल थे, ...गाँव के सभी बच्चों को खेल में शामिल होने का मौका दिया गया था; लड़के ...लड़कियाँ दोनों का मेल था। कबड्डी, लेजिम, लाठी, हाँडी तोड़, इसी के साथ मुँह से बतासे ...उठाना इसी तरह चंमच में नीबू उठाकर ले जाना आदि खेल बच्चों की हैसियत को ...देखकर रखे थे। खेल के साथ पोवाडा गान भी रखा था।

शुरू में खाली स्कूल के बच्चे ही खेल रहे थे। थोड़ी देर बाद देखने वालों का ...मन धीरे धीरे बढ़ता गया। जो बच्चे स्कूल में पढ़ने वाले नहीं थे वे धूलमिट्टी का मजा ...ले रहे थे; परंतु जब स्कूल में जमाव काफी बढ़ गया तब उधर उनके खेल का मजा ...किरकिरासा हो गया और वे भी स्कूल काम्पाऊंड में उपस्थित हुए। यहाँ का नियम ...बताया गया कि किसी तरह का बुरा व्यवहार न होना चाहिए। फिर वे भी ...खेल में शामिल हुए। बहुत से पालक उपस्थित थे। उन्हें भी बच्चों का खेल देखकर ...आनंद आ रहा था।

खेल ग्यारह बजे तक समाप्त हुए। बच्चों ने साथ बैठकर फल वगैरा खाए और बारह ...बजे अपने अपने घर लौट गए।

शांता मारुळकर

एक हफ्तेका काम

दूसरा दर्जा—प्रैक्टिसिङ्ग स्कूल, बेसिक ट्रेनिङ्ग स्कूल, प

ता० १४।७।४२ से १९।७।४२

समय का बंटवारा—

सप्ताह में कुल काम का समय	—	
बुनियादी दस्तकारी कताई	—	
खेल-कसरत	—	
पर्यवेक्षण और बागवानी	—	२ घं
कक्षा का प्रबंध	—	
समवायी विषय	—	१२ घं

दूसरे दर्जे के बच्चों के लिये बुनियादी दस्तकारी कताई में १३ घं
दिया गया। इसमें कताई विज्ञान की तीन बातें बतलाई गईं। (१) स
(२) तकली की कताई, (३) झूल का अभ्यास। सप्ताह भर में ह
के लिये बालकों को १½ घंटा समय दिया गया। झूल के अभ्यास के
घंटा तथा कताई में ६½ घंटे, कताई के सामानों को बाटने में
तथा रेकार्ड इत्यादि लिखने में तथा उनकी जाँच करने में २ घंटा ४
समय लगा। कताई में बालकों की औसत गति ½ घंटे में ४४ तार
खोलाई में बालकों की गति आधे घंटेमें ½ तोला तक पाई गई।
क्रियाओं के इर्द गिर्द में बच्चों को नीचे लिखे हुए समवयी विषयों
कराया गया (१) मातृभाषा (२) गणित (३) सामान्य विज्ञान।

इन विषयों को सिखाने में १२ घंटे १५ मिनिट-समय लगा।

मातृभाषा—मातृभाषा में बालकों को २।। घंटे समय दिया गया। इसमें
आतमभाव प्रकाशन, लिखने और पढ़ने का अभ्यास कराया गया। और
खोलाई, स्कूल का अभ्यास तथा परेतते समय उनके सम्बन्ध में आनेवाले
द्वारा बच्चों का शब्दभण्डार बढ़ाया गया। उन शब्दों का बच्चों
वाक्य में प्रयोग कराया गया। बच्चों में प्रश्नोत्तर करते समय जो
ही तैयार हो जाते हैं वे ब्लैकबोर्ड पर लिखवाये गये और फिर बच्चों
गये। इसीसे बच्चों का लिखने और पढ़ने का अभ्यास कराया गया।
दिनों के अन्त में बच्चोंने नीचे लिखे हुए शब्द सीखे—

वजन, तोल, कचरा, बिनौला, छीजन, उड़न, समान, असमान, पतला, मजबूत, सीधी, पौधा, घास, धुनकी, कांकर, मोढ़िया, तांत, आत्मा, कटाई, डीमठा, धागा, बट, उंजला, मुर्री, गिरफ्तार, कमजोर, ढिली, कस, रेशा, जोर, आहिस्ते, कपड़ा, विदेशी, देशी, खाली, मोल, कतार, नवीन, कागज, लेई, मैदान, कसरत, बदन, पसीना, खून, तन्दुरुस्ती, हवा, गाँव, शहर, बीमार, धुआँ।

इन शब्दों में से कुछ शब्दों का वाक्यों में इस तरह उपयोग किया :–
हमारी रुई का वजन एक तोला है। क्लास की खोली हुई रुई तौल में दस तोला हुई।
रुई से कचरे को निकाल देना जरूरी है।
कतन पतला सूत कमजोर होता है।
राख पसीना को सुखाती है।
तकली सीधी नचनी चाहिए।

गणित:–गणित में कुल समय २॥ घंटे लगा। काते हुए सूत के तारों की पांती के अनुसार बालकों के द्वारा ब्लैकबोर्ड पर लिखवाया जाता था जिससे सब बच्चों को मालूम हो जाय कि आज किसने कितना तार सूत काता है। एक पांती का तार उसी पांती के बालकों से जोड़वाया। पूरी एक लटी से उस पांती के तार कितने कम या अधिक हैं उसकी जाँच बालकों से करवायी गई। सब पांतियों के तार मिला कर कुल कितने तार हुए और उनमें कितनी लटियाँ हो सकती हैं। हरएक पांती की औसत गति क्या है और समूचे क्लास की औसत गति क्या है। इसका भी हिसाब बच्चों से करवाया गया है। रुई तौलते समय उन्हें तोले और छटाक का ज्ञान दिया गया। और इसीके सिलसिले में उन्हें गि... जोड़ और बाकी का अभ्यास कराया गया। इस सप्ताह की औसत गति क्या है। और क्लास की पिछले सप्ताह की औसत गति क्या थी। इसका तुलनात्मक अभ्यास बच्चों से करवाया गया। इसलिए उन्हें अपने पुराने रेकॉर्ड देखने पड़े। इस तरह से उन्हें इस सप्ताह की और पिछले सप्ताह की तारीखों का फिरसे अभ्यास करने का मौका मिले।

गणित के काम के सिलसिले में पुछे हुए सवालों के नमूने
आज सबसे ज्यादा तार किसने काते हैं। सबसे कम तार किस के हुए हैं। दोनों में कितना फर्क है। इस महीने में कितनी लटी सूत कातना है। इसमें कुल कितने तार हुए। आपकी आज की गति कितनी। आज से एक हफ्ता पहले आपकी गति क्या थी। उस गति से आज की गति कम है या ज्यादा है। समूचे क्लास की औसत गति क्या है।

सामान्य विज्ञान—सामान्य विज्ञान में डेढ़ घंटा समय दिया गया। बच्चों को नीचे लिखी हुई बातें बतलाई गईं। बरसात के समय सूत कम क्यों होता है? तकली वाले हाथ को तकली के नंच से एक बीता ऊपर क्यों रहना चाहिए। धुनकी में कांकर, तांत, मोढ़िया, आंत्मा नहीं रहने से क्या होता हैं। उनकी क्या जरूरत है?

सामाजिक—विज्ञान कमरे की सफाई–खिड़कियों को खोल देना। की तरह को साफ कर देना। सामान को तरतीब से अल्मारियों में रखना और उन्हें पारी पारी से बांटना। काम समाप्त होने पर अपनी जगह अच्छी तरह साफ कर देना। और सामान को उचित स्थान पर रख देना। जवाब देते समय पूरा जवाब देना। बैठने के समय तन कर बैठने की आदत डालने की कोशिश की गई। इन में हमें कुल डेढ़ घंटा लगा। धुनाई के समय बालकों को यह बताया गया कि तांत कांकर आदि बनाता है। उसके कौन कौन औज़ार है। और समाज में उसका क्या स्थान है।

बागबानी और पर्यवेक्षण—बागवानी और पर्यवेक्षण के लिये घण्टे समय दिया गया। बागवानी में बच्चों ने सेम के खेत की निकौनी और पर्यवेक्षण में दरिया का धुनकी क्लास का और स्कूल के बगीचे का किया। पर्यवेक्षण का मौका लेकर बच्चों को नीचे लिखे समवायी विषय जा सके--सामान्य विज्ञान (२) सामाजिक विज्ञान (३) मातृभाषा (४) इन समवायी विषयों को सीखाने में ५ घण्टे समय लगा।

सामान्य विज्ञानः– सेम के खेत की निकौनी के अवसर पर रूप तथा आकार की पहचान। सेम का पोधा कैसा होता है। का आकार कैसा होता है? उसकी पत्ती किस तरह की होती है? फल किस काम में आते हैं? पौधे के साथ घास उग जाने से पौधे को क्या होगी? घास किस तरह उखाड़ा जा सकता है? बरसात की पर्यवेक्षण के अवसर पर दरिया-पानी आज कल क्यों बढ़ जाता है? नदी में क्यों चलती है? गन्दे पानी को पीने से क्या हानि होती है? और गन्दे पानी की पहचान क्या है? दरिया का पानी देखने में पीला क्यों मालूम पड़ता है? इन सब बातों को बताने में १॥ घंटा लगा। और इसका ज्ञान बच्चों को जबानी प्रश्नोत्तर द्वारा और लिखवा कर तरीकों से करवाया गया।

कताई का मासिक गोशवारा

कुछ सूचनाएँ

दस्तकारी की लिखतें रखना बुनियादी तालीम के पाठ्यक्रम का एक महत्व का हिस्सा है। उससे बच्चों की बुद्धि व्यवस्थित और पैनी होती है और से हर चीज को शास्त्रीय कसौटी पर कसने की आदत पड़ती है। बुद्धि को शास्त्रीय और व्यवस्थित बनाना शिक्षा का एक मुख्य प्रयोजन है। यह प्रयोजन हमारा तभी सफल हो सकता है जब शिक्षक स्वयं भी क्लास की लिखतें ठीक ढंग से रखें और बच्चों से रखवाएँ। कई शिक्षकों की यह एक शिकायत रहती है कि बुनियादी स्कूल में बच्चों को पढ़ाने में ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है सो तो ठीक ही है लेकिन उसके साथ कताई की लिखतें रखने में उन्हें बहुत समय देना पड़ता है। कुछ हद तक यह बात सही मानी जा सकती है लेकिन शिक्षक अगर लिखतें रखनें में व्यवस्था और फुर्ती से काम लेंगे तो यह काम वे थोड़े समय में कर सकते हैं। महीने के अन्त में कताई का हिसाब और गोशवारा आदि बनाने में जरूर एक दो दिन लग जाते हैं। लेकिन यह शिक्षा का ही एक अंग होने से उतना समय उसके लिए आवश्यक मानना चाहिए।

यहाँ खास कर कताई का मासिक गोशवारा तैयार करने के बारे में कुछ सूचनाएँ शिक्षकों के सामने रखना चाहता हूँ। कताई की रोजाना लिखतें रखीं लेकिन अगर उसका मासिक गोशवारा नहीं तैयार किया जाय तो उन रोजाना लिखतों का मकसद भी पूरा नहीं होता, क्योंकि उससे काम की प्रगति को हम एक ही नजर में नहीं देख सकते। उसके लिए मासिक गोशवारा (abstract) तैयार करना बहुत जरूरी है।

कताई के मासिक गोशवारे की तख्ती तालीमी संघ से प्रकाशित 'काम की तफ्सीलवार लिखत' के अन्त में दी गई है। यह लिखत भरकर भेजने में शिक्षकों की ओर से कुछ बातें समझ में न आने के कारण गलतियाँ होती हैं, उन्हीं के बारे में थोड़ा खुलासा करना जरूरी मालूम पड़ता है। पहले, गोशवारे के खाने नीचे देता हूँ :—

१. दर्ज संख्या और औसत हाजिरी २. काम के दिन (सिर्फ दस्तकारी के) ३. दस्तकारी के कुल घंटे ४, कुल छीजन ५. कुल मजदूरी (कताई, धुनाई, लोटाई व तांत की छीजन के दाम और कस की कटौती काटकर) ६. सूत (तोले और गुंडियाँ (६४० तार–गुंडी)) ७. घंटे–औसत हाजरी ८. प्रतिघंटा प्रतिबालक तार (४ फूट=तार) ९. औसत नंबर १०. औसत कस %११. औसत समानता %१२ प्रतिशत छीजन १३ एक घंटे की गति (तोला, सभी का औसत)

तकली; चरखा; कम से कम; ज्यादा से ज्यादा; औसत। १४ दूसरी घंटे—औसत हाजरी; कुल तोले; प्रतिबालक प्रतिघंटा तोले—

१ मुर्री लगाना २ कपास साफ करना ३ सलाई पटरी ४ हाथ ओटनी से ओटना ५ तुनना ६ धुनना ७ पूनी ८ मरम्मत करना ९ बांस की तकलियाँ बनाना १० आदि

ऊपर के खाने देखने से पता चलेगा कि महीने भर में क्लास में जो जो काम हुए होंगे उनका पूरा लेखा इस गोशवारे में आ जाता है। हरएक क्रिया की गति; सूत का नंबर, कस व समानता; छीजन, सूत और इन कामों से प्राप्त मजदूरी का पूरा पता चलता है और इस तरह दर्जे की माहवार प्रगति का एक साथ समूचा चित्र हमारे सामने आ जाता है।

पहले खाने में क्लास का दर्ज संख्या और महीने की औसत हाजिरी चाहिए। दूसरे में दस्तकारी के काम के दिन लिखने चाहिएं। स्कूल के दिन और दस्तकारी के दिन एक ही नहीं समझने चाहिए। स्कूल २२ दिन लगा है और कताई २० ही दिन हुई है तो दस्तकारी के दिन २० ही चाहिए। कताई के दिन का मतलब तकली या चरखे पर कातना ही न समझा जाय। ओटाई, धुनाई आदि सभी क्रियाएँ उसमें सम्मिलित समझी जायें। कताई, धुनाई, ओटाई आदि दस्तकारी की क्रियाएँ जितने दिन की हों उतने दस्तकारी के दिन होंगे। इसके बाद दस्तकारी के कुल घंटों के खाने में इन सभी क्रियाओं में लगा हुआ समय लिखा जाय। समय-विभाग-चक्र से दस्तकारी के दिनों को गुणा करने से दस्तकारी के कुल घंटे निकल आते हैं। एकाध दिन टाइम-टेबल में दिए समय से ज्यादा या कम समय दस्तकारी दिया गया हो तो उसी के अनुसार कुल घंटों का जोड़ लगाना चाहिए।

छीजन की कुल तादाद चौथे खाने में लिखनी चाहिए। कताई और रूई सफाई में जो छीजन हुई हो उसका कुल जोड़ यहाँ देना चाहिए। ओटाई और कपास सफाई में जो छीजन हुई होगी उसे कपास की छीजन कर अलग लिख देना चाहिए।

कुल मजदूरी में कताई, धुनाई, ओटाई आदि सभी क्रियाओं की मजदूरी समझनी चाहिए। कताई और धुनाई की मजदूरी के दर हिं. ता. सं. प्रकाशित 'तकली' किताब में दिए गए हैं। हाथ ओटनी से एक सेर ओटने की मजदूरी एक पैसा होती है। तुनाई की क्रिया का विकास में होने लगा है। फिलहाल सेवाग्राम में सलाई पटरी से कपास ओट कर

रुई से तुनाई करने और तुनाई की पोल से ही पूनी बनाने की दर एक सेर ... एक रुपया रखी गई है, यानी एक तोले तुनाई और पूनी बनाने के लिए पौन ... मजदूरी दी जाती है। तुनाई की पोल को धुनकर पूनी बनाने के लिए ... रुपया प्रतिसेर यानी एक तोले की एक पैसा मजदूरी दी जाती है।

कुछ शिक्षक कपास सफाई और रुई सफाई की भी मजदूरी लगाते हैं लेकिन यह ठीक नहीं। ओटाई में कपास सफाई की और धुनाई में रुई सफाई की मजदूरी आ जाती है। कताई की मजदूरी लगाते समय क्लास के सूत को नंबर के अनुसार अलग अलग छाँट कर उसके अनुसार मजदूरी आंकनी चाहिए। लेकिन अगर बहुत कम हो और उनके नंबर भी बहुत विभिन्न हों तो उस ... नंबर के अनुसार अलग अलग मजदूरी लगाना मुश्किल हो जाता है इसलिए सारे सूत का औसत नंबर लेकर ... मजदूरी निकालनी चाहिए। सच बात तो यह है कि क्लास में एक महीने में करीब एक ही नंबर का सूत ... जाना चाहिए। अगर ... दर्जे में ... नंबर का सूत माँगा गया है तो शिक्षक को यह कोशिश करनी चाहिए कि बच्चों का सूत १० या उसके आसपास के यानी ९ से ११ नंबर का ही हो। लेकिन अगर ६-७ से लेकर ... १७ नंबर का सूत काता जाता हो तो वह वाञ्छनीय नहीं कहा जा सकता।

इस से आगे के खाने में सूत का वजन और लंबाई यानी तोले और गुंडी, लटी और तार लिखने चाहिएँ। बहुतसे शिक्षक सूत का सिर्फ वजन लिखते हैं लेकिन डुडियाँ लिखना भी उतना ही जरूरी है। पाठ्यक्रम में हरएक दर्जे में प्रति घंटा औसत तार कितने आने चाहिए यह दिया गया है। क्लास में कुल ... तार काते गए यह अगर न मालूम हो तो इस का हमें पता नहीं लग सकता। इसलिए सूत के खाने के बाद घंटे, औसत, हाजरी और प्रतिबालक प्रति घंटा तार के खाने रक्खे गए हैं। ज्यादा तर शिक्षक इन खानों को छोड़ देते हैं या गलत भर देते हैं। मान लीजिए कि कताई के लिए महीने में कुल ३० घंटे दिए गए हैं, औसत हाजरी २० है और कुल सूत १२० गुंडियाँ हुआ है। अर्थात् प्रतिबालक प्रतिघंटा सूत $\frac{१२०\times६४०=७६८००}{३०\times२०=६००}$ =१२८ तार।

इसलिए सूत के खाने में १२० गुंडी, घंटे-औसत हाजरी के खाने में ...×३० और प्रति घंटे के खाने में १२८ तार लिखने चाहिएँ। ... शिक्षक तारों को सिर्फ घंटों से या औसत हाजरी से भाग देते ... हैं। यह ध्यान में रखना चाहिए कि यहाँ जो घंटे हैं वे सिर्फ ... कातने के घंटे लेने चाहिए। कताई की पूरी ... से औसत

... और भी कम होंगे । पाठ्यक्रम में स तरह की औसत नहीं इसलिए कुल घंटों से औसत तार निकलना आवश्यक नहीं है ।

इसके बाद महीने से क्लास के सूत का ... नंबर, औसत और औसत समानता तथा सूत पर में छीजन का प्रतिशत लिखा जाय ।

तेरहवाँ खाता कताई की गति का है । इसमें तकली और ... कम से कम, ज्यादा से ज्यादा और औसत गति लिखनी चाहिए । ... लिखने में शिक्षक अक्सर गलती कर देते हैं । यहाँ क्लास की औसत ... जाती है यह ध्यान में रखना चाहिए । लेकिन बहुतसे ज्यादा से ज्यादा और कम से कम गति को जोड़ कर उसका आधा औसत में लिख ... मान लीजिए कि पाँच बच्चों की चरखे पर एक घंटे की गति क्रमशः २४९, २०९, ८० और १२६ हैं । अर्थात् ज्यादा से ज्यादा २४९ और कम गति ८० होगी । औसत गति निकालने के लिए पाँचों संख्याओं ... कर उसे ५ से भाग देना होगा अर्थात् ... =१५६ तार ... होगी । लेकिन ज्यादा से ज्यादा २४९ कम से कम ८० इन दोनों (३२९) के आधे (१६४) को औसत लिखना ठीक न होगा ।

इसके बाद अन्य क्रियाओं के सामने उन उन क्रियाओं के लिए दिए गए घंटे, काम का परिणाम तोलों में और प्रतिबालक प्रति... लिखना चाहिए । जैसे, धुनाई के लिए ८ घंटे दिए हैं, और धुनाई ... ...० है यानी १० बच्चों ने ८ घंटा धुनाई की है और कुल ... तोले हुई है तो प्रतिघंटा प्रतिबालक धुनाई ३४०÷(१०×७)= ... लिखना चाहिए ।

इस गोशवारे में कताई की करीब करीब सभी बातें आजाती हैं ... रुई, पूनी व सूत का हिसाब इस में नहीं है वह और अन्य जरूरी ... जोड़ी जा सकती हैं ।

शिक्षकों को इस तरफ खास ध्यान देना चाहिए कि मासिक ... नियमित रूप से और सही सही लिखा जाय ।

—प्रभाकर दिवा...

ई

... और ...

प्रकाशित 'तक...
ओटने की मजदूरी ...
में होने लगा है ।

स्कूल के कार्यकर्त्ताओं को जल्द से जल्द और पूरी मात्रा में सदा मिलती ... इसलिये बुनियादी शिक्षा के सभी कार्यकर्त्ताओं से हमारा नम्र निवेदन है ... अपने यहां के कामों और उनसे प्राप्त फलों और अनुभवों का संक्षिप्त विवरण यदि प्रति मास नहीं तो दूसरे तीसरे मास से भी जरूर भेजा करें, जिससे 'नयी तालीम' के लिये उपयोगी सामग्री और लेख यथेष्ट परिमाण में हमें मिला करें और ... द्वारा यह पत्र बुनियादी शिक्षा को आगे बढ़ाने तथा उसको सफल करने में ... मात्रा में सहायक हो सके। 'नयी तालीम' बुनियादी शिक्षा के कार्यकर्त्ताओं ही पत्र है। निःसन्देह इसपर उनकी पूरी ममता है। हमारा निवेदन इतना ... कि वह ममता सदा कार्यरूप में प्रकट होती रहे जिससे ठोस लाभ पहुंच सके।

बुनियादी शिक्षा अब एक नयी मंजिल में पैर बढ़ा रहा है। चार साल हो गये। अब पांचवें साल में इसका प्रयोग पैर रख रहा है। यह दूसरी ... बड़ी ही महत्वपूर्ण है। कामियाबी के साथ इसको तै करने से ही बुनियादी शिक्षा की असली कीमत का पता लग सकता है। पुराने हिसाब से यह मंजिल सेकण्डरी या माध्यमिक शिक्षा की है। इसमें तातव्य विषयों की परिधि भी विस्तृत है ... जो ज्ञान अपेक्षित है उसकी गंभीरता भी ज़्यादा होनी चाहिये। दस्तकारी ... अन्य ... से इस विस्तृत और गंभीर ज्ञान का किस प्रकार ठीक ... सम्बन्ध हो सकेगा—यह प्रश्न प्रबल रूप से बुनियादी शिक्षा ... ओं के सामने आयेगा। उनके काम की जिम्मेदारी बढ़ जायगी, ... ज्ञान और कौशल पर नयी मांगों का बोझ आ गिरेगा और पग-पग पर ... जांच करेगा। ऐसी अवस्था में एक दूसरे की सहायता और सहयोग के बिना ... बढ़ना आसान न होगा। इस कारण भी अपने तजरबों को दूसरों तक पहुंचाना और दूसरों के अपने पास लाना आज बहुत ही जरूरी हो गया है। यह ... ... के पृष्ठों के पूर्ण उपयोग से ही संभव है। हमें उमीद है, हमारे ... बहन इस दृष्टि से भी 'नयी तालीम' को लेखों और रिपोर्टों द्वारा सहायता ... अपने काम की सफलता के लिये ...

सेवाग्राम में इस सम्बन्ध में जो कुछ काम होते रहे हैं सबमें सेठ जी से बराबर और सहायता मिलती रही है। बुनियादी शिक्षा जिस प्रकार के नागरिक और तथा समाज-सेवक पैदा करना चाहती है सेठ जी उनका श्रेष्ठ और ऊंचा उनकी स्मृति इस शिक्षा के उद्देश्य की पूर्ति के सफल कामों से जिस प्रकार और जीवित रह सकती है वैसा और किसी तरह भी नहीं। संघ का उपर्युक्त इसी भाव का द्योतक है।

रिपोर्टों पर इनाम—कुछ दिन हुए बुनियादी स्कूलों में काम की रिपोर्ट पर दो सौ रुपये का इनाम देने की घोषणा हिन्दुस्तानी तालीमी संघ ने की। अपनी पिछली बैठक में उसने तै किया है कि जितनी रिपोर्टें आयी हैं उनमें कोई काफी ऊंचे दर्जे की नहीं है जो उपर्युक्त इनाम के लायक समझी जाय, इनाम की रकम को तोड़कर छोटे-छोटे इनाम बना दिये जायं और आयी हुई में सबसे अच्छी दो को पचास-पचास रुपये का इनाम दिया जाय।

शिक्षकों को ऊंचे दर्जों की ट्रेनिंग—बुनियादी तालीम के प्रयोग का साल शुरू हो जाने के कारण नये-नये मसले उठ खड़े होने की संभावना हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की पिछली बैठक में इस प्रश्न पर भी विचार हुआ। सम्बन्ध में मंत्री ने अपनी रिपोर्ट में शिक्षकों की योग्यता तथा ट्रेनिंग की ओर कर ध्यान दिलाया था। चूंके ५ वें ग्रेड से पुरानी प्रथा के मुताबिक सेकण्डरी कक्षा की शिक्षा का आरंभ हो जाता है और चूंके ५ वें से ७ वें ग्रेड में को ऊंचे मान की शिक्षा देने की जरूरत है, इसलिये इन ग्रेडों में काम करने शिक्षकों की योग्यता नीचे के ग्रेडों में काम करनेवाले शिक्षकों की से अधिक होना जरूरी है और उनकी ट्रेनिंग का मान भी ऊंचा होना चाहिये सब बातों पर विचारकर इस सम्बन्ध में संघने नीचे लिखा प्रस्ताव पास किया।—

"बुनियादी शिक्षा चार साल पूरा कर चुकी, इसलिये शिक्षकों के लिये जरूरी है ऊंचे के दर्जों में शिक्षा देने की योग्यता प्राप्त करने के लिये वे और अधिक ट्रेनिंग पायें, इसलिये बुनियादी शिक्षा से सम्बन्ध रखनेवाले अधिकारियों से यह संघ अनुरोध

करता है कि वे शिक्षकों के लिये ऐसी ट्रेनिंग का जरूरी इन्तजाम करें ताकि इस स्कीम की वाजिब और पूरी-पूरी जांच हो सके। इस मतलब से संघ सिफारिश करता है कि

(१) मौजूदा बेसिक नार्मल स्कूलों में ऊपर दिये तरीके पर ऊंचे दर्जे के खास कोर्स शुरू किये जायं जिनमें ऐसे शिक्षक, जिन्हें नीचे दर्जों के लिये ट्रेनिंग मिल चुकी है और जो ऊंचे दर्जों में शिक्षा देने की जिम्मेदारी उठानेके योग्य हैं, और अधिक ट्रेनिंग पा सकें अथवा नये शिक्षक भर्ती किये जा सकें।

(२) ऊंचे ग्रेडवाले स्कूल खोले जायं जिनमें उपर्युक्त शिक्षकों का उपयोग किया जाय।

साहित्य-निर्माण—संघ ने बुनियादी शिक्षा के लिये आवश्यक साहित्य की दृष्टि पर विचार किया और प्रयोग का पांचवा साल शुरू हो जाने से ऐसे साहित्य जल्द-से-जल्द तैयार करने की जरूरत महसूस की। अन्त में तै हुआ कि श्रीमती आशादेवी को 'नयी तालीम' (हिंदी संस्करण) के सम्पादकत्व के भार से एकदम मुक्त किया जाय और यह भार पूरा-पूरा श्रीयुत बदरीनाथ वर्मा पर देकर श्रीमती आशादेवी को उपर्युक्त साहित्यनिर्माण के काम में लगाया जाय।

कताई के सिलेबस में सुधार—श्री विनोबा जी की रहनुमाई में तुनाई की क्रिया द्वारा ही पूनियां तैयार करने के जो प्रयोग हाल में हुए हैं, उनके आधार पर कताई के सिलेबस में सुधार करने के सम्बन्ध में श्री कृष्णदास गांधी ने संघ की बैठक में एक प्रस्ताव किया था। वह प्रस्ताव बुनियादी दस्तकारी सब-कमीटी के पास विचारार्थ भेजा गया। प्रस्ताव का रूप और उसका अर्थ अन्यत्र प्रकाशित मंत्री के पत्र से मालूम होंगे जो उन्होंने चुने-चुने बुनियादी स्कूलों को भेजा है।

कताई के सिलेबस में सुधार

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के मंत्री ने कताई के सिलेबस में सुधार के
में एक पत्र कुछ चुने हुए स्कूलों के पास भेजा है। चूंकि इसमें दी गयी बातें
महत्व की हैं, जिन पर बुनियादी शिक्षा में लगे सभी लोगों को ध्यान दे
इसलिये यह पत्र यहां ज्यों-का-त्यों दिया जा रहा है। पत्र यह है:—

प्रिय महाशय,

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ ने ता० १ मई, १९४२ की अपनी बैठक
में तुनाई करने के बारे में एक प्रस्ताव पास किया है जिसे हम नीचे दे रहे हैं

आखिरी साल भर में तुनाई करके बिना धुने ही पूनियां बनाकर
कातने के जो प्रयोग हुए हैं उनकी सफलता को नजर में रखते हुए और
से पूनियों का प्रबन्ध करने की जो दिक्कतें दूर होती हैं उसे दे
तालीमी संघ यह सिफारिश करता है कि आयंदा हरएक पाठशाला,
की दस्तकारी की तालीम दी जाती हो, पहली कक्षा से ही बच्चों को तैयार
देने का सिलसिला कतई बन्द करके उसके बदले में कपास देकर
पर ओटना, पट्टी से तुनाई करना और बिना धुने ही उस पोल की पूनी
कर कताई करना सिखलाना जारी करे।

मगर यह सिफारिश करने में संघ का खास हेतु एक दूसरा है।
प्रबन्ध की दिक्कतें दूर होने के साथ-ही-साथ ताजी पूनियां अपने हाथ
कातने का यह नया तरीका तालीम का मकसद पूरा करने में तैयार पूनी
कतवाने के मुकाबिले ज्यादा फायदेमन्द होगा ऐसा संघ को यकीन हो गया
इसीलिये संघ आग्रहपूर्वक यह जाहिर करता है कि अब बिना किसी
देर करते हुए पाठशालाएं कताई की दस्तकारी की तालीम में यह तबदीली

इस तरीके में नीचे लिखे फायदे पाये जाते हैं:—

(१) बच्चों को लगातार एक ही काम करते रहने में उतनी दिलचस्पी नहीं रहती जितनी काम को बदलते रहने में रहती है। ताजी पूनियां अपने आप बना लेने में बच्चों को काम की यह तबदीली मिल जाती है।

(२) तीन तरह के काम से बच्चों की निरीक्षण और परीक्षण करने की शक्ति का विकास ज्यादे होगा। बच्चों के शारीरिक अवयवों का विकास भी ज्यादे होगा।

(३) अनुबन्ध के लिये ज्यादा सामग्री मिलेगी।

(४) सूत जल्दी सुधरेगा।

(५) पाठशाला में पूनियों का संग्रह करने की दिक्कतें और खर्च दूर होंगे।

(६) आज पूनियां के दाम के मुकाबिले मोटे अंक का सूत यदि बच्चे कात लेते हैं, तो पाठशाला को जो नुकसानी उठानी पड़ती है वह दूर होगी।

(७) बच्चे शुरू से ही कपास की पहचान सीखेंगे।

इस बात को संघ नहीं भूल सकता कि आज देश के कुछ हिस्सों में कपास दुश्वारी है। इस हालत में पाठशालाओं को अपनी कपास अपने तों में पैदा करने की कोशिश करनी चाहिये। ऐसा अपना खयाल संघ जाहिर है और साथ-साथ यह सुझाना चाहता है कि जब तक कपास हासिल करना हो तब तक पाठशाला ओटी हुई रूई से काम कर सकती है। तैयार देने के ऐवज में रूई से तुनाई करना ज्यादा अच्छा है। मगर खयाल रहे स से ताजी ओटाई करने में जो कामयाबी मिल सकती है वह तैयार रुई मिलेगी।"

स प्रस्ताव के अनुसार हम आपसे अनुरोध करते हैं कि तुनाई के काम को के तौर पर शुरू कीजिए और उसके ठीक रेकार्ड रखकर अपने नतीजे ह

महीने में भेजने की कृपा कीजिए । बच्चे तुनाई की सब क्रियाएँ यानी सलाई से कपास ओटना, तुनना और पूनी बनाना, कर सकते हैं या नहीं, उम्र के अनुसार उनके काम और गति में क्या फर्क पड़ता है, तुनाई पूनी का सूत कैसा आता है, तुनाई में बच्चे ज्यादा दिलचस्पी लेते हैं या कम, इसके साथ अन्य विषयों के समन्वय की संभावनाएँ ज्यादा हैं या कम आदि बातों का हमें निश्चय करना है। उस दृष्टि से आप अपने यहां यह काम करेंगे । नीचे में हम फार्म दे रहे हैं, भरकर भेजने से हमें विशेष सुविधा होगी।

१. बच्चों का नाम

२. बच्चों की उम्र

३. कितने दिन से कताई कर रहा है।

४. कपास साफ करना— तोले समय

५. सलाई पटरी से ओटना— कपास तोले समय

६. तुनना और पूनी बनाना— पूनी तोले समय

७. तकली से कातना— सूत तोले गुंडी-तार समय

८. चरखे से कातना— ,, ,, ,,

९. सफाई, ओटाई, तुनाई, कताई का कुल समय

१०. प्रति घंटा औसत तार (सब क्रियाओं के कुल समय से कुल तारों को भाग देकर)

११. कुल मीजन— सफाई ओटाई तुनाई कताई

१२. सूत का नंबर, कस, समानता

१३. महीने के अन्त में गति —

(१) सलाई पटरी से ओटने की गति, ५ मिनट की, कपास तोले।

(२) तुनना व पूनी बनाना, ४५ मिनिट की, पूनी तोले और संख्या

(३) तकली की गति, आधे घंटे की, तार, बिना अटेरे।

(४) चरखे की गति, ,, ,, परेतना मिला कर

(५) तकली का सूत अटेरने की गति, प्रति मिनट-तार।

१४. विशेष (समवाय आदि के बारे में)

हमें आशा है तुनाई का काम आप अपने स्कूल में शुरू करेंगे और उसकी पूरी रिपोर्ट हर महीने हमें भेजने की कृपा करेंगे।

सेवाग्राम
ता० ७-५-४२

आपका
मंत्री, तालीमी संघ

काम की जांच और प्लैनिंग

[ले०—श्रीनन्दजी सिंह, बेसिक प्रेक्टिसिंग स्कूल, पटना]

नियमित रूप से अपने किए गए कामों की जांच करना, निर्धारित [illegible] उसका मिलान करना तथा उसके मोताबिक अपने आगे के काम का ढांचा [illegible] करना बच्चों की पढ़ाई में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इसलिये [illegible] कताई में सिलेबस के मोताबिक बच्चे कहां तक प्रगति कर चुके हैं, इसकी जानकारी हो जानी चाहिए। पहली छःमाही समाप्त हो रही है। इस [illegible] की समाप्ति के यदि दो महीने पहले ही अपने कामों की जांचकर बच्चे अपनी [illegible] का अन्दाज कर लें तो रही-सही कमी की पूर्ति आसानी से हो सकती है। हर महीने के अन्त में बच्चे अपने कामों की जांचकर अपनी प्रगति का [illegible] अलग लेखा तैयार करते तथा उसके मोताबिक आगे की प्लैनिंग करते [illegible] अर्द्धवार्षिक प्रगति की रूपरेखा तैयारकर आगे के काम का ढांचा खड़ा [illegible] भी उनके लिए अनिवार्य है।

उपर्युक्त उद्देश्य को सामने रखकर बच्चों ने मई महीने के पहले सप्ताह में [illegible] पिछले महीने के किए गए कामों की जांच की। उनके लिए काम की कसौटी [illegible] का मौलिक पाठ्यक्रम था। इस पाठ्यक्रम के हर पहलू को सामने रखकर बच्चों [illegible] अपनी प्रगति का लेखा तैयार किया, सिलेबस से उसका मिलान किया तथा [illegible] अत्यधिक, न्यूनतम एवं औसत भाव के दृष्टिकोण से अपने साथियों के बीच [illegible] स्थान निर्धारित किया।

कताई के मौलिक पाठ्यक्रम के अनुसार पांचवें ग्रेड की पहली छःमाही में [illegible] पद्धति से ओटाई-धुनाई कर ४० अंक का सूत कातना है। यरवदा चक्र से [illegible] की ४० अंक की एक लट्टी तथा दो घंटे का ओटकर, धुनकर, धुनकर तथा [illegible]

[illegible] ४ लट्टी ग्राम-ित गतियां हैं। इस छःमाही में मगन चरखे से भी [illegible]

अपेक्षित है। काम की जांच के बाद मालूम हुआ कि क्लास की घंटे भर की अत्यधिक, औसत तथा न्यूनतम प्राप्त गतियां क्रमशः ४२ अंक के २०० तार, ३८ अंक के १५० तार तथा ४० अंक के ७५ तार हैं। दो घंटे में फिरकी बनाने से लेकर कताई तक की क्रियाएँ सम्मीत कर लेने पर अत्यधिक, औसत तथा न्यूनतम गतियां क्रमशः २२८, १८८ तथा १३५ तार आती हैं। लेकिन फिरकी बनाने का काम मछली के दांत से नहीं कर बच्चों ने चुटकी के सहारे ही किया। कम उम्र के होने के कारण बच्चे मगन चर्खे से कताई नहीं कर पाये। कताई का यन्त्र केवल यरवदा चक्र ही रहा। कताई-धुनाई की गतियों का तुलनात्मिक अन्दाज प्राप्त कर लेने के बाद बच्चों ने गत चार महीनों के अपने उद्योग के घंटे, गुण्डी की संख्या, सूत के वजन तथा प्राप्त मजदूरी का हिसाब किया। इन चार महीनों में क्लास की अत्यधिक मजदूरी ३≡)॥, औसत मजदूरी १॥।≡) तथा न्यूनतम १॥=) आती, पहली छःमाही के १४४ दिनों की अपेक्षित मजदूरी ६'॥) है यानी हर महीने में १=) की प्राप्ति अपेक्षित है, इस हिसाब से चार महीनों में ४॥) की प्राप्ति होनी चाहिए थी। प्राप्ति की कमी के निम्नोक्त कारण हैं :—

(१) अपेक्षित मजदूरी में मगन चरखे की कताई शामिल है। इस यन्त्र से गति अधिक होती है; पर बच्चे केवल यरवदा चक्र से ही कताई करते रहे।

(२) काम के दिन १४४ मानकर मजदूरी आँकी गई है, लेकिन बच्चों के यहाँ काम के कुल दिन १३३ ही आते हैं।

(३) 'नव-तुनाई' के प्रयोग चलाने से सूत में पर्याप्त सुधार हुआ है पर प्राप्ति में कमी आ गई है।

(४) उद्योग के निर्धारित-घंटों में बच्चे सिलाई का काम भी करते रहे चूँकि वे सिलाई का काम अभी सीख रहे हैं, इसलिए कताई के मिलान में इससे पूरी प्राप्ति नहीं होती।

अपनी अपनी गति तथा प्राप्ति की पूरी जानकारी हो जाने पर बच्चों ने अपनी

तथा क्लास की कमी को पूरा करने की प्लैनिंग की। हिसाब करके देखा मई और जून इन दो महीनों में काम के लिए ५८ दिन मिलते हैं। इसमें उद्योग के घंटे १७३ होंगे। औजारों की फिटिंग करने, कस निकालने, भरने तथा माहवारी हिसाब-किताब के लिए १३ घंटे बाद कर देने पर वास्तविक क्रियाओं के लिए १६० घंटे बच जाते हैं। सिलेबस की गति तक पहुँचने के लिए बच्चों ने 'नव-तुनाई' के प्रयोग के आधार पर ६-५ १४-५-४२ तक कताई करना निश्चय किया। हिसाब से कताई के कुल आए। ४० अंक के १८ लच्छी सूत का वजन ४॥ तोला आया जिसकी मजदूरी प्रति सेर के हिसाब से ।=) हुई। ३० घंटे बाद कर देने पर कताई के लिए घंटे बच गए। इन घंटों में बच्चों ने २४ अंक के सूत कातने का प्रोग्राम बनाया। आखीर तक बच्चे २ तोले प्रतिघंटे के हिसाब से ५० घंटे में १०० तोले यानी ननसारी रूई की धुनाई करेंगे जिसकी मजदूरी ।।=) होगी। बाकी ८० घंटों में सूत के २४० तार प्रति घंटे की गति से कताई कर १६२०० तार यानी सूत तैयार करेंगे जिसका वजन १० छटांक होगा और ८।।=)। प्रति सेर से १।।=)। मजदूरी होगी। इस तरह प्लैनिंग के अनुसार जून के आखीर तक काम में हर बच्चे की मजदूरी २।।=)। होगी, ऐसी आशा की जाती है, कुल की पूर्ति का हिसाब कर लेने पर भी अपेक्षित मजदूरी के परिमाण में कुछ कमी जाती है जिसकी पूर्ति के लिए बच्चे दूसरी छःमाही में कोशिश करेंगे।

इस प्लैनिंग की तैयारी के सिलसिले में बच्चों ने निम्नोक्त विषयों की जानकारी हासिल की :—

(१) मातृभाषा—(क) निर्धारित माप की जानकारी के लिए के मौलिक पाठ्यक्रम का अध्ययन।

(ख) अपने कामों की जाँच करने ... करने का तरीका समझने ... तालीम' से 'जोरदार काम' लेख को पढ़ना।

(ग) अपने कामों की जांच की रिपोर्ट तैयार करना।

(घ) आगे के जोरदार काम के लिये प्रोग्राम बनाना।

(२) उद्योग की जानकारी—

आंध्रपद्धति का मतलब—फिरकी बनाने की अलग-अलग पद्धतियाँ—सर्वोत्तम पद्धति कौन तथा क्यों? अंक निकालने के विभिन्न तरीकों की आवृत्ति।

(३) गणित-उद्योग के घंटों का हिसाब करते समय घंटा, मिनट के जोड़ तथा गुणा का अभ्यास, गुण्डी की संख्या मालूम करते समय तार के लम्बा गुणा तथा भाग कर अभ्यास, मजदूरी आँकते तथा एक दूसरे से मिलान करते समय साधारण एकिक नियम भिन्न के भाग तथा उसके छोटा रूप करने का अभ्यास।

———

चम्पारण के बुनियादी स्कूलों की कमाई का हि

चम्पारण (विहार) के सघन क्षेत्र के बुनियादी स्कूलों ने १९४१-४२ में, बुनियादी दस्तकारी में कितनी सफलता प्राप्त की और इ आर्थिक मूल्य क्या हुआ यह जानने को बहुत लोग उत्सुक होंगे। उपर्युक्त स्कूलों के कामों के आर्थिक पहलू पर प्रकाश डालकर उस करने की कोशिश की जायगी। चम्पारण के सघन क्षेत्र में कुल २७ इनमें पिछले साल तीन में तीसरा ग्रेड नहीं था। बाकी २४ स्कूलों थे। इन २४ स्कूलों में १९४१-४२ साल में तीसरे ग्रेड में छा संख्या ३६७ और औसत ३१९ रही। २६६ से २६८ दिन तक स्कूल रहे और औसत में प्रति छात्र ने ६१२ घंटे बुनियादी दस्तकारी छात्रों की कुल आमदनी सालभर में १९३५|||≡) हुई अर्थात् औसत ६~)१ छः रुपये एक आना एक पाई कमाया। जाकिर हुसैन क सिफारिश के मुताबिक हर स्कूल में २८८ दिन काम होना चाहिये था ३ घंटे २० मिनिट का समय बुनियादी दस्तकारी में लगना था। बीमारी वगैरह कारणों में सैकड़े २५ की गैरहाजिरी घटाकर साल दस्तकारी में ७२० घंटे का समय लगना चाहिये था। इस आधार पर अपेक्षित योग्यता को नजर में रखकर औसत में प्रति छात्र की आमदनी चाहिये थी। यदि इस आमदनी को जांच का मानदंड मान लिया जाय तो के बुनियादी स्कूलों के तीसरे ग्रेड के छात्रों की कमाई फी सदी ७० जैसा ऊपर कहा गया हैं जाकिर हुसैन कमीटी की स्कीम में कमाई लगाया गया है वह ७२० घंटे के काम के आधार पर है पर वास्तव में स्कूलों में साल में औसत में ६ घंटे ही बुनियादी दस्तकारी में लगाये गये। कारण हैं। एक तो यह कि बुनियादी शिक्षा की दूसरी कानफरेन्स में जो

[illegible] में जामिआनगर में हुई थी—[illegible]नियादी दस्तकारी का जो नया सिलेबस मोकर्रर [illegible] उसमें रोजाना ३ घंटे का समय ही बुनियादी दस्तकारी के लिये रखा गया, [illegible] २० मिनिट का नहीं जैसा कि मूल सिलेबस में था। समय कम देने का दूसरा [illegible] यह है कि चम्पारण के स्कूलों का साल में कार्यकाल अधिक-से-अधिक २७० [illegible] का रखा गया है—२८८ दिन का समय देना नामुमकिन समझा गया है। [illegible] ने वास्तव में २६६ से २६८ दिन तक काम किया। इसीलिये ६१२ घंटे का ही [illegible] मिलान का आधार माना जाय तो चम्पारण के स्कूलों की औसत कमाई [illegible] हुसैन कमीटी के हिसाब से पूरी अपेक्षित कमाई का $\frac{\text{७२० × ६-)९ × १००}}{\text{६१२ × ८॥=}}$ या [illegible] प्रतिशत होती है। संशोधित सिलेबस के आधार पर कमाई का हिसाब लगाने [illegible] रे सालभर की कमाई प्रति छात्र ६-।)६ होनी चाहिये। अनिवार्य कारणों से [illegible] जिरी की वजह से इसमें सैकड़े २५ की कमी कर देने से अपेक्षित कमाई करीब [illegible] ने होती है। इसके हिसाब से चम्पारण के स्कूलों की कमाई करीब ८७ प्रति[illegible] इसलिये [illegible] जिस दृष्टि से देखा जाय चम्पारण के बुनियादी स्कूलों के [illegible] के छात्रों की कमाई अपेक्षित कमाई का ८० प्रतिशत के ऊपर हुई है। [illegible] सुधार की गुंजाइश काफी है तो भी यह कमाई स्कीम की नवीनता और इसमें [illegible] शिक्षकों की अनुभवहीनता की दृष्टि से कुछ बुरी नहीं कही जा सकती।

ऊपर का नतीजा सब स्कूलों को एक साथ लेने पर निकलता है। स्कूलों को [illegible] अलग-अलग लिया जाय अथवा छात्रों की व्यक्तिगत कमाई का हिसाब देखा जाय तो [illegible] नतीजा निकलता है वह और भी ज्यादा हिम्मत बढ़ानेवाला है। उपर्युक्त २४ [illegible] में ५ (गिद्धा ६॥।)४, लोहियरिया ६॥≈)२, जादो छपरा ६=)११, चौवटोला [illegible] किया ८।-)११, शेखधुर्वा ७)३ औसत प्रति छात्र कमाई ७ रुपया (नये सिलेबस [illegible] अधिक-से-अधिक कमाई) के बराबर या अधिक है, और तीन की तो जाकिर [illegible] कमीटी के मूल सिलेबस की अपेक्षित कमाई अर्थात् ८॥= से भी ज्यादा है। [illegible] की व्यक्तिगत कमाई और भी उत्साह बढ़ानेवाली है। चौवटोला पड़ुकिया के

कमाई को पहले दर्जे को काम [illegible] की माप मान ली जाय, तो इस कसौटी पर ३४ को पूर्णांक या इससे भी अधिक नम्बर मिले, ४१ को १०० में ७५ से ऊपर और ६५ को ५० के ऊपर नम्बर मिले, अर्थात् ३६७ छात्रों में [illegible] को पूर्णांक के आधे से ऊपर नम्बर मिले। जरूरी गैरहाजिरी के कारण पूरी कमाई में यदि २५ फी सदी कमी की जाय तो इतने छात्रों को पूर्णांक के ६७ प्रतिशत से ऊपर नम्बर मिले।

ऊपर के आंकड़ों से यह सिद्ध होता है कि स्कीम के आर्थिक पहलू के सम्बन्ध में जाकिर हुसैन कमीटी ने [illegible] स्थिर किया था वह एकदम हवाई किला न था। चम्पारण के बुनियादी स्कूलों की एक मुख्य समस्या छात्रों की उपस्थिति में अत्यधिक अनियमितता है। इस कारण उनके छात्रों को पूरे तौर से दस्तकारी का अभ्यास करने का मौका नहीं मिलता जिससे वे उसमें जरूरी योग्यता पा सकें। [illegible] तीसरे ग्रेड में हाजिरी की औसत ७६ फी सदी हो गयी थी जो इन्हीं छात्रों की पहले ग्रेड की औसत हाजिरी (५२ फी सदी) के हिसाब से बहुत ही सन्तोषजनक है। [illegible] कुछ छात्रों की हाजिरी बहुत ही कम रही और इस कारण उन्होंने दस्तकारी में औसत से बहुत कम समय दिया। मिसाल के लिये, महुअवा स्कूल को देखा जाय। यहां औसत में ५०० घंटे बुनियादी दस्तकारी में दिये गये पर एक छात्र ने कुछ १६४ [illegible] इस काम में लगाये। उस छात्र की कमाई भी सालभर में सिर्फ ।||)। आने ही हुई जो सारे इलाके में सबसे कम व्यक्तिगत कमाई है। जहां एक ओर अधिक-से-अधिक समय, जो दस्तकारी में दिया गया, [illegible]१ घंटे (सोखधुर्वा स्कूल) हो और जहां अधिक-से-अधिक व्यक्तिगत कमाई १५||।) (चौबेटोला पड़ुकिया स्कूल) हो वहां कम-से-कम समय सिर्फ १५[illegible] (ओरया स्कूल) और कम-से-कम व्यक्तिगत कमाई ||।)। (महुअवा स्कूल) हो वहां उपस्थिति में अनियमितता का असर सारे क्षेत्र की औसत प्रगति और कताई पर पड़ सकता है यह आसानी से महसूस किया जा सकता है। इसलिये यदि हाजिरी किसी तरह ज्यादा नियमित बनाया जा सके और काम पूरी लगन और उत्साह से हो, जैसा कई स्कूलों में हुआ है, तो जरा भी शक की गुंजाइश नहीं है कि बुनियादी

दस्तकारी में [illegible] कुशलता और उसके जरिये जितनी कमाई का [illegible] गया है वह जरूर हासिल हो सकती है।

अब दूसरे ग्रेड के छात्रों की कताई पर ध्यान दिया जाय। कुल छात्र संख्या ३६१ और औसत संख्या ३५६ रही। स्कूलों का [illegible] २६६ दिन का रहा। औसत में दस्तकारी में करीब ५२२ घंटे का [illegible] गया। ज्यादा-से-ज्यादा समय (६८० घंटे) लखौरा स्कूल में दिया [illegible] कम-से-कम (३७६ घंटे) पांडेटोला में। सब स्कूलों की इस ग्रेड की [illegible] ८०४॥।-)॥ हुई और प्रति छात्र औसत कमाई २।)२ हुई। ज्यादा [illegible] औसत कमाई ४')१ वृन्दावन रामपुरवा स्कूल की हुई और कम-से-कम [illegible] कमाई १।=) भंगहा और विसुनपुरवृत के स्कूलों की हुई। व्यक्तिगत कमाई [illegible] से ज्यादा ६=) मठिया [illegible] के एक छात्र की हुई और सबसे कम, [illegible] स्कूल के एक छात्र की हुई। इलाके भर में जिस छात्र की सबसे [illegible] व्यक्तिगत कमाई, ६=), हुई उसने बुनियादी दस्तकारी में कुल ४४० घंटे [illegible] औसत समय (५२२ घंटे) से करीब १६ फी सदी कम है। जिस छात्र की [illegible] व्यक्तिगत कमाई, ।)८, हुई उसने दस्तकारी में १०२ घंटे दिये [illegible] समय से ८० फी सदी कम है। यह छात्र २६६ दिनों में कुल १४[illegible] दिन [illegible] सबसे कम हाजिरी, ६१ दिन, श्रीनगर स्कूल के एक छात्र की हु[ई।] सिलेबस के हिसाब से इस ग्रेड की प्रति छात्र अपेक्षित कमाई ३०।)॥। होनी [illegible] इस माप से सिर्फ एक स्कूल—वृन्दावन रामपुरवा ४।०)१—ही परीक्षा में उ[त्तीर्ण] बाकी सब स्कूलों के छात्र की औसत कमाई उपर्युक्त माप के नीचे रही। [illegible] कमाई की दृष्टि से २६ छात्रों की कमाई इस अपेक्षित कमाई से ज्यादा रही, [illegible] कमाई ७५ फी सदी के ऊपर और १०० फी सदी के नीचे रही और १०[illegible] [फी] सदी के ऊपर और ७५ फी सदी के नीचे। इस तरह ३६१ में १६[illegible] अर्थात् करीब-करीब आधी संख्या की कमाई पूर्ण अपेक्षित प्रति छात्र [illegible] आधी से अधिक रही। इस ग्रेड का कोई छात्र जाकिर हुसैन कमीटी [illegible]

स की प्रति छात्र अपेक्षित कमाई ७) के नजदीक नहीं पहुंचा। स्कूलों की कमाई तो इससे बहुत नीची रही। स्पष्ट है कि इस ग्रेड का नतीजा उतना नहीं जँचता जितना तीसरे ग्रेड का।

पहले ग्रेड की कुल छात्र संख्या ४१० और औसत संख्या ३६० रही। कार्यकाल दिन का रहा और औसत में ३६० घंटे बुनियादी दस्तकारी में दिये गये। की कुल कमाई २६७॥)७ हुई और औसत फी छात्र कमाई ॥≡) हुई। स्कूलों ज्यादा औसत कमाई, [illegible] स्कूल की हुई और सबसे कम, ।)॥, स्कूल की। व्यक्तिगत कमाई सबसे जादा [illegible] १, वृन्दावन रामपुरवा स्कूल के [illegible] की हुई और सब-से-कम, –)१०, जादो [illegible] के एक छात्र की। नये सिलेबस के से इस ग्रेड़ की अपेक्षित प्रति छात्र कमाई १॥[illegible] होनी चाहिये। [illegible] नाप पर कूल नहीं उतरा। व्यक्तिगत दृष्टि से इलाके भर में सिर्फ [illegible] छात्रों की कमाई क्षित कमाई के बराबर या ऊपर आयी, ११ की कमाई उसके ७५ फी सदी के [illegible] १०० फी सदी से कम हुई और ४७ की ५० फी सदी से ऊपर और ७५ के नीचे हुई, अर्थात् ४१० छात्रों में कुल ६६ की कमाई अपेक्षित की आधी रही। जाकिर हुसैन कमीटी के मूल सिलेबस की अपेक्षित कताई, २॥=) के एक ही छात्र [illegible] स्कूलों की औसत कमाई इससे बहुत दूर रही।

तीनों ग्रेडों के नतीजों पर एक साथ विचार करने से एक बात स्पष्ट मालूम पड़ती है यह है। शिक्षकों के निजी अनुभव और उनके दस्तकारी के अभ्यास और [illegible] का बहुत बड़ा असर छात्रों की दक्षता और इस कारण उनकी कमाई पर पड़ता। [illegible]र के आंकड़ों से स्पष्ट हो गया होगा कि पहले ग्रेड से दूसरे ग्रेड का नतीजा अच्छा और दूसरे से तीसरे का। इसका एक कारण तो हाजिरी में बढ़ती तरक्की ग्रेड में ७० फी सदी, दूसरे ग्रेड में ७६ फी सदी और तीसरे में ७६ फी सदी। लेकिन इसका दूसरा और उतना ही महत्वपूर्ण कारण यह भी है [illegible] अधिकांश शिक्षक सबसे कम तजरबेवाले थे जो तुरन्त ट्रेनिंग स्कूल से निकल

कर गये थे। दूसरे ग्रेड के शिक्षक इनसे अधिक अनुभव वाले थे जो साल भर काम कर रहे थे और तीसरे ग्रेड के शिक्षकों का अनुभव कुछ इनसे भी अधिक। जैसे-जैसे शिक्षकों का अनुभव बढ़ता गया है और जैसे-जैसे दस्तकारी का अभ्यास और इस कारण इसकी क्रियाओं की उनकी जानकारी बढ़ती गयी है वे छात्रों को दस्तकारी में अधिक दक्ष बना सके हैं और कताई में उनकी प्रगति बढ़ा सके हैं। यह छात्रों की कताई की गतियों के लेखा में भी स्पष्ट मालूम पड़ता है। पहले ग्रेड में नये सिलेबस के मोताबिक चर्खे पर अपेक्षित गति घंटे में २४० तार और तकली पर घंटे में १४६ तार होनी चाहिये। चम्पारण के [illegible] स्कूलों में चर्खे पर [illegible] के छात्रों की औसत गति २४० या इसके ऊपर [illegible] तथा १५ और स्कूलों [illegible] तार अर्थात् ७५ फी सदी के ऊपर [illegible] गति रही। सबसे कम औसत गति [illegible] स्कूल की आयी वह १४८ तार अर्थात् अपेक्षित गति की करीब ६१ फी सदी [illegible] ऊपर [illegible] व्यक्तिगत गति बहुत ऊंची थी। सिरसिया अड्डा स्कूल के एक छात्र की हुई घंटा गति ४८० तार हुई जो अपेक्षित गति की दूनी है। [illegible] ज्यादा व्यक्तिगत गति ४०० तार या इससे ऊपर तथा १६ स्कूलों में ३०० [illegible] ऊपर रही। इसी प्रकार तकली पर २ स्कूलों के छात्रों की औसत गति अपेक्षित [illegible] से ज्यादा हुई और १६ की ७५ फी सदी के ऊपर। सबसे कम [illegible] स्कूलों [illegible] ९४ हुई जो अपेक्षित की सैकड़े ६५ है। तकली पर भी व्यक्तिगत गति बहुत [illegible] हुई। [illegible] बंडिटोला स्कूल के एक छात्र की गति घंटे में २८१ तार हुई जो अपेक्षित की दूनी से थोड़ी ही कम है। ११ स्कूलों में अधिक-से-अधिक व्यक्तिगत गति [illegible] ऊपर रही।

दूसरे ग्रेड की गति इस प्रकार हुई। सिलेबस के मोताबिक इस [illegible] [illegible] पर अपेक्षित गति घंटे में १२० तार होनी चाहिये। २७ स्कूलों में [illegible] इससे [illegible] के बराबर या इससे ज्यादा रही तथा १६ और स्कूलों की औसत अपेक्षित [illegible] अर्थात् [illegible] सदी से ज्यादा हुई। सबसे कम औसत गति रायधुर्वा स्कूल की ६५ हुई जो अपेक्षित का ५४ फी सदी है और सबसे ज्यादा औसत गति १३० तार श्रीनगर स्कूल

...गत गति सबसे ज्यादा घंटे में ३४२ तार ...गिद्धा स्कूल के ... छात्र की हुई ... से ज्यादा ... ८ स्कूलों में अधिक-से अधिक ... गत गति १८० ... रही जो अपेक्षित की १५० प्रतिशत या इससे ज्यादा है। नये ... ग्रेड में चर्खे का अभ्यास नहीं रखा गया है। पर चम्पारण के ... स्कूलों में चर्खे पर भी कुछ अभ्यास कराया गया। पुराने सिलेबस के मोताबिक इस ... ड में चर्खे पर अपेक्षित गति घंटे में २०० तार थी। यदि इसीको दक्षता की कसौटी मान लें तो सिर्फ दो स्कूल श्रीनगर (२११ तार) और घोघापटव... २०८ तार)—इस कसौटी ... हैं कि ... बाकी में ५ स्कूलों की औसत गति १५० ... तार अर्थात् अपेक्षित की ७५ ... र रही। सबसे कम औसत गति— ...४ तार-सिरसिया अड्डा स्कूल की हुई जो अपेक्षित की सिर्फ ३२ फी सदी है। अधिक-से-अधिक व्यक्तिगत गति, ३५० तार रायघुर्वा स्कूल के एक ... की हुई। कुल तीन स्कूलों में ज्यादा-से-ज्यादा व्यक्तिगत गति ३०० तार या ... हुई जो अपेक्षित की १५० प्रतिशत है।

पहले ग्रेड में नये सिलेबस के मोताबिक तकलीपर अपेक्षित गति घंटे में ... ० तार है। कुल पांच स्कूलों में ही औसत में यह गति पूरी हुई। बाकी के १५ स्कूलों की औसत गति ६८ तार या इससे ऊपर अर्थात् अपेक्षित की फी सदी ७५ ... उससे ऊपर ... सबसे कम औसत गति, ४२ तार, औरया स्कूल की हुई जो अपेक्षित की सैकड़े ४६ है। ज्यादा-से-ज्यादा व्यक्तिगत गति, १६४ तार, ... के एक छात्र की हुई। यह अपेक्षित की १८२ प्रतिशत है। और पांच स्कूलों में ज्यादा-से-ज्यादा व्यक्तिगत गति १३५ तार अर्थात् अपेक्षित की १५० प्रतिशत के बराबर या उससे ज्यादा हुई।

ऊपर के आंकड़ों पर अच्छी तरह ध्यान देने से मालूम होगा कि ... दस्तकारी में योग्यता तीसरे ग्रेड से दूसरे ग्रेड में कुछ कम और दूसरे से ... और कम प्राप्त हुई। इसमें शक नहीं कि तजरबेकार, कम तजरबे... नातजरबेकार शिक्षकों के कारण ही ऐसा हुआ।

[illegible] अंक और [illegible] आदि पहुंच सकते हैं। इस [illegible] जो नये विद्यार्थी [illegible] अभ्यास होने से नीचे दी गयी योग्यता प्राप्त हुई है :—

समय—१ घंटा

	वजन	अंक	मज़दूरी
तुनाई से पूनी	।-)	२५	चौथाई पैसा
धुनकर पूनी (म[illegible]झोली धुनकी से)	३ तोला	२२	आधा पैसा

इस प्रकार [illegible] इन नये शिक्षक-छात्रों के द्वारा किये गये इस छोटे से प्रयोग से [illegible] लोग इस परिणाम पर पहुंचे [illegible] हैं कि [illegible] की दृष्टि से तुनाई से पूनी बनाने [illegible] धुनाई की अपेक्षा आधे [illegible] घाटा है। कुछ दिनों के अभ्यास से मझोली धुनकी [illegible] पर धुनाई की औसत रफ्तार ५ तोला, पूनी [illegible] बनाना लेकर, तथा तुनाई से छः आने भर [illegible] ५० अंक की पहुंच सकती है। मेरा अपना निज [illegible] अनुभव यह बताता है कि [illegible] लम्बे कोमल रेशों की ही हो जिससे १०० अंक की कताई हो सके। मैं [illegible] करता हूं [illegible] घंटे में ।) चार आने भर और मझोली धुनकी से ५ तोला २० अंक लायक पूनी तैयार कर लेता हूं। मज़दूरी १२ आने सेर के हिसाब से तीन [illegible] इस [illegible] से धुनाई की पूनी की और तुनाई की पूनी की ५) रु० सेर के हिसाब से एक पैसा [illegible] होती है।

बुनियादी [illegible] में इस बात पर भी ध्यान देना ज़रूरी है कि जो विद्यार्थी निकलें वे अपनी रोटी का सवाल आप हल कर सकें। इस दृष्टि से अभी तक [illegible] झोली धुनकी ही काम की रही है। इसका प्रमाण मुझे आंकड़े में मिला है। दूसरे कोर्स के शिक्षक-छात्रों की धुनाई की जांच एक घंटे के लिए हुई। इसमें २५ [illegible] क-छात्र [illegible] थे। औसत धुनाई की रफ्तार घंटेमें छः तोले, और श्रीरामजन्म राम की १३ तोले तथा श्री बलदेव सिंह की १४ तोले तक आयी। जिसकी मजदूरी क्रमशः [illegible] पैसे और [illegible] पैसे हुई। रूई की साधारण तुनाई पहले से की गई थी। [illegible] हमारा प्रयोग नया और अधूरा है। इसलिये तुनाई से पूनी या धुनाई से पूनी [illegible] इसमें किसका स्थान श्रेष्ठ है इसपर अभी और प्रयोग की ज़रूरत है। [illegible]

'नई तालीम' के नियम

१—हिन्दी 'नई तालीम' अंग्रेजी महीने की हर पहली तारीख को पटने [illegible] प्रकाशित होती है। हिन्दी 'नई तालीम' का वार्षिक मूल्य सवा रुपया [illegible]। एक प्रति की क़ीमत दो आना है। वार्षिक मूल्य पेशगी लिया जाता है।

२—उर्दू 'नई तालीम' हर पहली तारीख को जामियानगर, दिल्ली से प्रकाशित होती है। उर्दू 'नई तालीम' सीधे दिल्ली से प्राप्त करनी चाहिए। उर्दू 'नई तालीम' का वार्षिक मूल्य डेढ़ रुपया है। एक प्रति की क़ीमत दो आना है। वार्षिक मूल्य पेशगी लिया जाता है।

३—ग्राहक किसी भी महीने से बन सकते हैं, पर साल-भर से कम के नहीं बनाये जाते।

४—दोनों पत्र प्रकाशित होते ही सावधानी के साथ ग्राहकों को भेज दिये जाते हैं। अगर एक हफ्ते के अन्दर अङ्क न मिले, तो पहले डाकखाने से पूछताछ करके फिर लिखना चाहिए। पत्र न मिलने की पुरानी शिकायतों पर ध्यान न दिया जायगा।

५—तीन महीने से कम के लिए पता बदलवाना हो, तो डाकखाने से इन्तजाम कर लें।

६—ग्राहकों को चाहिए कि रैपर पर पते के साथ दी हुई अपनी ग्राहक-संख्या हमेशा याद रक्खें और पत्र-व्यवहार में ग्राहक-संख्या लिखना न भूलें, नहीं तो कोई कार्रवाई न की जायगी।

[illegible]

व्यवस्थापक, 'नई तालीम'
पटना (बिहार)

Regd.

हिंदुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम,
की
प्रकाशित पुस्तकें

१—शिक्षा में अहिंसक क्रान्ति (हिन्दी)
२—एज्युकेशनल रिकान्स्ट्रक्शन (अंग्रेजी)
३—बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा (हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी)
४—एक कदम आगे (हिन्दी, अंग्रेजी)
५—दी लेटेस्ट फैड (अंग्रेजी)
६—मूल उद्योग कातना (हिन्दी, मराठी)
७—ओटना व धुनना (हिन्दी, उर्दू)
८—तकली (हिन्दी, मराठी, उर्दू)
९—गत्तेका काम (हिन्दी, अंग्रेजी)
,, ,, (हिन्दी-सजिल्द)
१०—खेती-शिक्षा (हिन्दी, मराठी)
११—कताई-गणित, भाग १ (हिन्दी, उर्दू)
१२—कताई-गणित, भाग २
१३—बुनियादी तालीम के काम का तफ़सीलवार लेखा (हिन्दी और अंग्रेजी साथ-साथ)
१४—बुनियादी तालीम के दो साल (दिल्ली कान्फरेन्स की रिपोर्ट)
१५—थर्ड ऐन्युअल रिपोर्ट (अंग्रेजी, हिन्दी)

हिंदुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम, वर्धा की ओर से
मुद्रक और प्रकाशक : बदरीनाथवर्मा, सर्चलाइट प्रेस, पटना

नई तालीम

हिंदुस्तानी तालीमी संघ का मुखपत्र

६. ७. ४२

वार्षिक : सवा रुपया

एक प्रति : दो आने

लेख-सूची

लेख

चन्दे के बारे में सूचना

चन्दा खतम होने का लेबल जिन ग्राहकों के अंकों पर हो, वे वर्ष का चन्दा १।) रु॰ हमारे पास उस महीने की २५ तारीख भेज देने की कृपा करें। २५ तारीख तक चन्दा न आने पर आगा वी. पी. द्वारा भेजा जायगा।

किसी कारणवश 'नई तालीम' बन्द करना हो तो ग्राहकों से है कि वे उसकी सूचना हमें उस महीने की २५ तारीख के भीतर कृपा करेंगे। वी. पी. लौटाकर हमें फ़िज़ूल खर्च में न डालें।

मनीआर्डर भेजते वक्त या पत्र-व्यवहार में अपना ग्राहक नं॰ लिखिए।

नई तालीम

[भाग ४] पटना, १ जुलाई, १९४२ [संख्या ७

किसका चुना हुआ काम ?

ले०—राय साहब रामशरण उपाध्याय, मंत्री, बैसिक एज्युकेशन बोर्ड, बिहार

अभी कुछ दिन हुए भारतवर्ष के ग्रामीण क्षेत्र में काम करने वाले शिक्षकों के प्रमुख शिक्षणकेन्द्र के एक अध्यापक से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। काम के द्वारा शिक्षा देने का प्रयोग उस शिक्षणकेन्द्र में बहुत ही लगन के साथ कई वर्षों से चल रहा है। जिस काम के द्वारा शिक्षा दी जाय वह उत्पादक हो, ऐसा उद्देश्य उस शिक्षण केन्द्र का नहीं है। वहाँ काम का स्थान गौण है। वह शिक्षा देने का साधनमात्र है। श्रीयुत् विनोवा जी के शब्दों में, "कुछ न कुछ प्रत्यक्षरूप से कृति करवाये विना लड़के केवल ज्ञान को बोझ उठाने में असमर्थ रहेंगे, इस लिये भिन्न विषयों के लिये भिन्न-भिन्न छोटे-वड़े संयोजनों (Projects) का उपयोग होना चाहिये और उनके द्वारा ज्ञान दिया जाना चाहिये"—ऐसा इस शिक्षणकेन्द्र की पद्धति का उद्देश्य है। उक्त सम्मानित अध्यापक ने हमारे शिक्षण-केन्द्र का सहानुभूतिपूर्ण निरीक्षण के पश्चात् अपने शिक्षणकेन्द्र की पद्धति का वर्णन करते हुए कहा कि उनके और हमारे काम का क्रम प्रायः एक सा ही है, भेद केवल इतना ही है कि जहाँ उनके यहाँ के बच्चे अपने चुने हुए कामों के द्वारा ही शिक्षा प्राप्त करते हैं, वहाँ विहार की हमारी बुनियादी पाठशालाओं के बच्चों की शिक्षा का साधन सरकार द्वारा चुना हुआ काम होता है। इसी प्रकार की उक्ति की आवृत्ति शिक्षण-क्षेत्र में विशेषज्ञ माने जाने वाले कुछ और सज्जनों ने भी की है। इसलिये इस विषय का स्पष्टीकरण कुछ आवश्यक सा प्रतीत होता है।

सब से पहले हमें इस भ्रम से अपने को बचाना चाहिये कि संयोजन पद्धति (Project method) और समवाय पद्धति (Basic Education or Correlation method) दोनों प्रायः एक नहीं तो एक सी ही हैं। ऊपर से इनमें

समानता भले ही दीख पड़ती हो, दोनों के उद्देश्यों में महान अन्तर है।

पद्धति में काम ज्ञान के बोझ को हलका करने का एक साधन मात्र है, समवाय पद्धति में वह शिक्षण का माध्यम है। संयोजन पद्धति में उद्देश्य पाठ्य क्रम के भिन्न-भिन्न विषयों का ज्ञान कराना है। समवाय पद्धति का उद्देश्य विषयों का ज्ञान कराना नहीं, बल्कि जीवन की शिक्षा देना है। इस पद्धति में हम इस बात का विचार नहीं करते कि हम किन-किन संयोजनों को लें जिनसे कि हमारे बच्चे मातृभाषा, गणित, इतिहास, भूगोल इत्यादि जैसे पाठशाला के विषयों को बिना किताबों के

राजेन्द्र बाबू का निरीक्षण

ता: १८ जून को राजेन्द्र बाबू ने बृन्दावन रामपुरवा वेसिक स्कूल का निरीक्षण किया और निरीक्षण बही में अपना मत इस प्रकार अंकित किया :—

"आज बृन्दावन बेसिक स्कूल देखने का मौका मिला। लड़कों की पढ़ाई, गाना, सूत कातना, इत्यादि देखने का सुअवसर मिला। देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई। छोटी-छोटी कहानियों, और रूई, कपास, सूत के द्वारा दूसरे विषयों की पढ़ाई भी देखी। बच्चों ने प्रश्नों के बहुत समझदारी के साथ उत्तर दिये। देख कर यह धारणा और भी दृढ़ हुई कि इस रीति की पढ़ाई से बच्चों की मानसिक शक्ति का अधिक विकास होता है। स्वास्थ्य भी अच्छा था और बच्चे साफ-सुथरे थे। सूत की कताई चाहे वह तकली से हो, चाहे मधुवनी के चर्खे से, चाहे यरवदा चक्र से अच्छी और ठीक रीति से हो रही थी। हिसाब देखने से आमदनी भी ठीक मालूम हुई। सब देख कर इस प्रयोग के सम्बन्ध में जो धारणा थी अधिक स्थिर हो गई।

राजेन्द्र प्रसाद

१८-६-४३

जीवनोपयोगी विभिन्न ज्ञान देना और (३) उनके जीवननिर्वाह के लिये उन्हें समर्थ साधन देना, ये तीन प्रकार के उद्देश्य दर्शाये गये हैं। उपर्युक्त उद्देश्य के एक छोटे परन्तु महत्त्वपूर्ण प्रमाणस्वरूप बच्चों के द्वारा पाठशाला में किये गये उद्योग में से पाठशाला के खर्च का कुछ हिस्सा निकल आये, ऐसी अपेक्षा की जाती है। सारांश यह कि समवाय पद्धति यहां प्रचलित सभी शिक्षणप्रणालियों से भिन्न है और अभी तक के अनुभवों का—निष्कर्ष रूप में—अन्तिम परिणाम है।" इस प्रकार हम देखेंगे कि जहाँ संयोजन पद्धति भिन्न भिन्न विषयों के ज्ञान दिलाने वाले छोटे मोटे संयोजन एक दूसरे से विभिन्न, अशृंखल तथा मन के मौज के अनुकूल जिस तिस प्रकार से चुने हुए भी हो सकते हैं, वहाँ समवाय पद्धति की माध्यम होने वाली कृतियों को मूलाधार के तौर पर चुने हुए किसी एक व्यापक और अनेकांगीन उद्योग का शृंखलाबद्ध क्रमानुकूल अंग होना पड़ता है। शिक्षा की परिभाषाओं में एक परिभाषा यह भी है कि समाज के अपेक्षाकृत वयस्क व्यक्ति उसके बचों तथा युवकों के जीवन पर जो प्रभाव चैतन्य रूप से डालते हैं उसे शिक्षा कहते हैं। बच्चे जो कुछ भी काम करते हैं, उस पर उनके आसपास के होने वाले वयस्कों की छाप अवश्य होती है चाहे ये छाप देने वाले अपने घर के पिता माता हों, चाहे उनकी सामाजिक परिस्थिति के अड़ोस पड़ोस के वयस्क पुरुष अथवा स्त्री हों, चाहे पाठशाला के शिक्षक हों। अस्तु, कोई भी संयोजन, किसी भी पद्धति में, बचों का बिलकुल अपना ही चुना हुआ होता है, ऐसा स्वीकार नहीं किया जा सकता, विशेषतः संयोजन पद्धति में जहाँ पाठ्यक्रम की पूर्ति के लिये ही छोटे-मोटे अशृंखलाबद्ध संयोजनों का चुनाव किया जाता है। समवाय पद्धति यदि सचमुच में जीवन को लक्ष्य में रखते हुए चलायी जाय तो इसमें, संयोजन पद्धति की अपेक्षा, बच्चे कुछ अधिक सुगमता के साथ कामों को स्वयम् चुन ले सकते हैं। जीवनव्यापी, अनेकांगीन मूलाधार उद्योग की परिधि के अन्तर्गत चुनी हुई कृतियों की इकाईयां नई पद्धति के अनुसार थोड़े ही दिनों के अभ्यास के पश्चात् वास्तव में ही बच्चों की चुनी हुई हो सकती हैं और चतुर तथा कुशल शिक्षक इन कृतियों की इकाइयों के चुनाव में अपने हाथ को क्रमशः खींचता हुआ प्रायः उन्हें सर्वथा पृथक् भी कर ले सकता है। इस कथन के प्रमाण के लिये कुछ स्थूल उदाहरण अनुपयुक्त नहीं होंगे।

संयोजन पद्धति के अनुसार काम करने वाले दो तीन शिक्षणकेन्द्रों के संयोजनों के नाम की सूची यों है:—बागीचा घर, पोस्ट ऑफिस, दूकान, हैजा, साबुन बनाना, साफ गाँव, जानवरों की अच्छी नस्लें कुम्हार, मेरे गाँव के खेतों की उपज, बछड़ों का पालन, पूजा घर की सजावट, जिल्दसाजी, हाथ की दस्तकारी से फायदे

गाँव, जू (चिड़िया और जानवर घर), इत्यादि। सोचने की बात है कि यदि संयोजनों का मूलाधार कोई जीवनव्यापी अनेकांगीन उत्पादक उद्योग नहीं है इनका सृजन बच्चों के द्वारा अपने आप क्यों हो गया और कहाँ से हो गया? के घर तथा उनकी प्राकृतिक और सामाजिक परिस्थितियों के प्रभाव ने इन संयो के चुनाव में हाथ अवश्य बँटाया होगा। किन्तु क्या कोई भी निष्पक्ष इस बात को मानने के लिये तैयार होगा कि इनके चुनाव में शिक्षक की प्रवृत्ति रुचि तथा उसके चातुर्य का प्रमुख स्थान नहीं था? अब इन्हीं तरह के प्रयो चुनाव को समवाय पद्धति के अन्तर्गत ले आइये। गांव के उत्पादक उद्योगों अभ्यास तथा गांव के जीवन से सम्बद्ध की जाने वाली शिक्षा में पाठशाला कार्यक्रम के अन्दर, इन संयोजनों में अधिकांश, अनायास अपने वास्तविक रूप अधिकतर बच्चों के मस्तिष्क से भी उपज सकते हैं। यहाँ मैंने 'वास्तविक रूप' शब्दों का प्रयोग जान बूझकर किया है। बुनियादी पाठशालाओं के काम वास्त जीवन से सम्बन्ध रखते हैं। इन पाठशालाओं के बागीचे सचमुच में जमीन उगने वाले फलफूल के पेड़ों के ही बागीचे होंगे न कि काठ के बक्सों अथवा पर सजाये हुए कुट और कागज के बने नमूनों के बागीचे। इन पाठशालाओं छात्र वास्तविक बछड़ों का पालन पोषण अपने हाथ से गढ़ी हुई घास से करें कि कुट के बने बछड़ों के मौडलों को दियासलाई की लकड़ी में धागे से बाँध पुआल की जगह पीले कागज की कतरनों से। समवाय पद्धति की कृतियों के में प्रोजेक्ट मेथड के संयोजनों की तुलना निवास के घरों के समक्ष बालकों के तथा बिगाड़े हुए घरौंदों से ही की जायगी। संयोजन पद्धति के समर्थक कहते हैं कि बच्चों की कृतियों के चुनाव की सीमा कताई-बुनाई, खेती, गत्ते-लकड़ी चमड़े के काम जैसे घरेलू तथा ग्रामीण उद्योगों से सीमित क्यों हो? चुनाव क्षेत्र विस्तृत तथा व्यापक क्यों न हो? सब से पहले तो हमारा क्षेत्र संकुचित है नहीं। जिस क्षेत्र की सीमा हमारे सम्पूर्ण जीवन को परिवेष्टित करती हो, उसे संकुचित क्यों कर मान सकते है? हाँ, इस तरह की मर्यादा के भीतर के चुनाव बेलगाम घोड़े की दौड़ के लिये स्थान नहीं है। फिर भी यह प्रश्न हो सकता कि हमारा जीवन ग्रामीण जीवन ही क्यों रहे और हम गाँव के इन उद्योगों को अपने व्यक्तित्व के विकास का साधन क्यों बनायें? उत्तर यह है कि चूंकि हमारा जीवन सचमुच में गाँवों का जीवन है और हम अपने नये विधान में छात्रों उससे पृथक कर इन डेढ़सौ वर्षों से प्रचलित शिक्षा-प्रणाली की भूल को दुहराना नहीं चाहते और चूंकि हमारा विश्वास है कि उपर्युक्त, जैसे उद्योगों की भित्ति स्थित पुनस्संगठित समाज में ही न कि केवल भारतवर्ष का, बल्कि सारे विश्व

कर सके। अस्तु, हमारी शिक्षा के माध्यम, अर्थात् किसी भी जीवनव्यापी मूलोद्योग की कृतियों, में छात्रों की रुचि तथा प्रगति के अनुकूल चुनाव का क्षेत्र बहुत ही व्यापक है। हम इस विचार से किसी भी दूसरी पद्धति के कार्यकर्ताओं के सामने अपना मस्तक सीधा तथा ऊँचा रख सकते हैं। अब प्रश्न यह है कि हम इस ओर कहाँ तक सचेष्ट हैं और हमारे शिक्षण में इस तरह की पद्धति का विकास किस रूप में होना चाहिये। विषय विस्तृत है और इसके लिये अनुभवों के संग्रह, अध्ययन, मनन तथा विनिमय अपेक्षित हैं। बृन्दावन (विहार) के सघन-क्षेत्र के हेडमास्टरों के सम्मेलन में इस विषय पर जो तर्क वितर्क तथा निर्णय हुए उसे आगामी अंक में पाठकों के सम्मुख रखने की चेष्टा करूंगा।

कुछ सुझाव

ले०—(द्वारिका सिंह एम० ए०, सी० टी० अध्यापक, पटना ट्रेनिंग स्कूल, विहार)

हमारे नन्हें-नन्हें बच्चे ओटाई, रूई की सफाई, तुनाई, धुनाई, कताई वगैरह के काम वैज्ञानिक रीति से करते हैं जितनी उनकी उपस्थिति रहती है जितना वे समय देते हैं, जितनी वे इस काम में दिलचस्पी लेते हैं, उस हिसाब से कताई के उपयोग के द्वारा उनकी प्राप्ति भी होती है उनका एक छोटा-सा बाग है, उसमें वे काम करते हैं, अपनी समझ बूझ के साथ उस काम में जी भी लगाते हैं; वे अपने नन्हें हाथों से जादू की तरह रंग-विरंगे मारबुल के कागज, फाइलें, तरह-तरह के डिब्बे, स्याही-सोख के पैड, अपनी घोंघा की दावातें, बिना खर्च की खुपीं की बेटें, धनुष तकुआ का स्टैण्ड वगैरह बड़ी खूबी के साथ बना लेते हैं, इसमें तो सन्देह की कोई गुंजाइश ही नहीं है। पर क्या हमारे शिक्षक इतने ही से संतुष्ट रहेंगे? 'नहीं, कदापि नहीं। हम शिक्षकों को उद्योग के सम्बन्ध में दो बातें सोचनी हैं। एक यह कि उद्योग खुद हमारा साध्य होना चाहिए और दूसरी यह कि उद्योग साध्य होता हुआ हमारे सर्वांगीण विकास का एक सुन्दर साधन भी हो।

उद्योग इस अर्थ में हमारा साध्य होना चाहिए कि इस गरीब मुल्क के बच्चे जब अपनी सप्तवर्षीय प्राथमिक शिक्षा समाप्त कर अपने घरों में अपना जीवन व्यतीत करने लगें तो उनकी जीविका या साधन उनका अर्जित वह उद्योग हो जिसके अपनाने में उन्होंने अपने जीवन के सात बहुमूल्य वर्ष लगाए हैं। फिर उद्योग साधन इस अर्थ में होगा कि जब हमारे बच्चे समझबूझ के साथ उस

द्वारा बच्चों के मानस का पूर्ण बिकास होगा जिसके सहारे वे अपना जीवन सच्चे और आदर्श नागरिक की हैसियत से बिताने में समर्थ होंगे। हम शिक्षकों के उद्योग के इन दो पहलुओं को सर्वदा सचेष्ट होकर ध्यान में रखना एक प्राकृत-सा हो जाता है। जहां यह बात ध्यान से हटी कि प्रयोग कृत्रिम हुआ।

हमारे शिक्षक तथा बच्चे हमेशा इस बात की ओर ध्यान रखते हुए कामों में आगे बढ़ें, इसके लिए हम नीचे लिखी बातों पर ध्यान देने का अनुरोध करते हैं। स्कूलों में उद्योग के कामों का खाका तैयार करने, क्रिया का फलप्राप्त करने और पग-पग पर सचेष्ट हो आगे बढ़ने में बच्चे दिलचस्पी लें इसकी चेष्टा शिक्षक अवश्य करें, नहीं तो उद्योग भार जैसा मालूम होगा, तबीयत घबड़ायेगी और इसमें निपुणता प्राप्त नहीं होगी।

उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जायगी। किसान सदियों से हल चलाता, निकौनी करता है, बोता है, काटता है। हर साल, हर मौसिम में उसका यह काम है। पर हमने सुना ही नहीं कि, साहब, एक ही काम—हल चलाना, कुदाल चलाना, बोना, काटना—रोज-रोज क्या करने जायँ, इसमें तो जी लगता ही नहीं। मधुबनी चरखासंघ के आसपास के गाँवों में सयानों को कौन कहे, छोटी उम्र के बच्चे रोज ही कताई-धुनाई का काम करते हैं, पर इस काम के बारे में कोई शिकायत नहीं मिलती, बल्कि वे जरूरत से ज्यादे उस काम में जी लगाते हैं। धोबी हजाम वगैरह तो क्रमशः धोने और बाल काटने का काम नित्य ही करते हैं पर कोई शिकायत नहीं। तो फिर यदि कताई-धुनाई का उद्योग करने वाला कोई ग्रेड या कोई बेसिक स्कूल यह कहे कि कताई-धुनाई से तो जी ऊब जाता है क्योंकि नित्यप्रति तो यही कताई-धुनाई हमलोगों को करनी होती है, यदि ऐसी बात हमारे स्कूलों में पायी जाय तो हमें समझना चाहिए कि इसकी तह में कोई न कोई कारण अवश्य है जिसे ढूंढ़ निकालना हमारा धर्म है। कारण ऐसे समझा जाय। किसान अपनी खेती साध्य और साधन दोनों समझता है। वह खेती के काम में मन लगाता है चूँकि उसी से उसको मरना जीना है—उसका भरण पोषण, आमोद-प्रमोद, शिक्षा, जीवन की सारी फिलासफी उसी साधन के साध्य हैं। धोबी और हजाम की धुलाई तथा हजामत के उद्योगों पर ही उनके सारे अरमान पूरे होते हैं। ठीक इसी तरह यदि हम शिक्षक और हमारे बच्चे अपनी शिक्षा के मूल उद्योग—कताई-धुनाई-तथा सहायक-उद्योग—बागवानी तथा गत्ते के काम—को अपने जीवन की फिलासफी का साध्य तथा साधन मानें, जिस अर्थ में हम ने ऊपर बतलाया है, तो हमारे मूल तथा सहायक उद्योग उसी तरह सजीव, सोद्देश्य तथा दिलचस्प साबित होंगे।

कताई आखिर हम क्यों करें; हमारे लिए कपड़े महँगे होते हैं, तो फिर हमें क्या करना चाहिए; हम यदि कपास पैदा कर अपने लिए कपड़ा तैयार कर लें तो इसके लिए दूसरों का मुहताज क्यों रहें; अपने परिवार के लिये साल में यदि अपने कपड़े पैदा कर १००) बचा लें, तो क्या ही अच्छा हो; चम्पारण के २७ बुनियादी स्कूलों के शिक्षकों तथा छात्रों (संख्या में २१६३) के लिए औसतन साल में १२ नम्बर के सूत का १३५ मन सूत चाहिए—तो इसका प्रबन्ध क्या हो; इसके लिए कच्चा माल सस्ती दर में कहाँ से आये; हमारे यन्त्रों में कौन से सुधार हों जिनमें मेहनत व्यर्थ न लगे और काम भी हो; हमारे उद्योग के चलाने में साल में किन-किन चीजों की हमें जरूरत होगी, हमारे सूत को कौन बुनेगा, कौन धोयेगा, रंगेगा कौन; हमें सालभर में, किन खाद्यपदार्थों की जरूरत है, उनकी पैदावार का हम कौन-सा प्रबंध करें, हमारे बेसिक स्कूलों की आबादी कितनी है, इसके लिए कितना अन्न, कितनी तरकारियाँ, कितना मसाला, कितना तेल चाहिए; हम अपने स्कूलों की ३७ एकड़ जमीन में सुगमता से कौन सी चीजें उपजाकर खा सकते हैं या दूसरों को दे सकते हैं इत्यादि तमाम बातों का सोचना हमें तथा हमारे बच्चों को सजीव बनाएगा तथा उद्योग की ओर यह सोद्देश्य भाव से हम सबों को आकृष्ट करेगा। इन बातों में जीवन है, उद्देश्य है, तथा जीवन की सजीव फिलासफी है। कहने का मतलब यह है कि हम तथा हमारे बच्चे अपने उद्योगों को साधन तथा साध्य के रूप में सचेष्ट तथा सचेत होकर देखें और करें। तब इनके प्रति प्राकृतिक आकर्षण होगा, अन्यथा ये भार स्वरूप दीख पढ़ेंगे।

दूसरी बात यह है कि हमारे बुनियादी स्कूलों में उद्योग के कामों की जो भी शिक्षा दी जाय, उसका प्रयोग बच्चों के तथा हमारे घरों में भी हो। ऐसा होना तब संभव होगा जब हम और हमारे बच्चे उद्योग को अपनी सच्ची शिक्षा का मूल समझेंगे और ऐसा समझना तब होगा जब हम ऊपर बतलाए हुए दृष्टिकोण से उद्योग को देखेंगे। यदि बच्चे अभी से अपने प्रयोग के उद्योगों की प्रयोग-शाला अपने घरों में नहीं खोलेंगे, तो यह कदापि संभव नहीं है कि १४ सालकी उम्र में अपनी प्राथमिक शिक्षा समाप्त कर अपने ऐसे घरों में वे लड़के उद्योगों का प्रारंभ करेंगे जिनमें उनके उद्योगों का आजतक श्रीगणेश ही नहीं हुआ है। जिस प्रकार विद्यार्थी स्कूल की पढ़ाई से ही सन्तुष्ट नहीं रहकर उसका अपने घर में भी अभ्यास करता है, चूंकि उसके प्रति उसकी श्रद्धा है, ठीक उसी प्रकार उद्योग के प्रति किसी बुनियदी स्कूल के बच्चे की चेतनात्मक श्रद्धा है, इसकी जाँच इस बात से होगी कि उसके घर में भी उसके उद्योग का उसके परिवार से अभ्यास होता है। यह एक बड़ी बात है। शिक्षक तथा छात्रों का ध्यान इधर अवश्य रहे।

२. उद्योगों तथा प्रतिवेशों के आधार पर हमारे शिक्षकों
साप्ताहिक कार्यक्रम (प्लैनिंग), दैनिक पाठ टीका, दैनिक प्रगति बही
उसके सम्बन्ध में हमें यही कहना है कि वे अपने सालभर के कामों का
ख्याल रखते हुए एक खाका-चित्र तैयार करें। उनका वह खाका चित्र
नहीं होगा, सार्थक तथा सोद्देश्य होगा जैसा हमने पहले बतलाया है। अ
वार्षिक कार्यक्रम का बँटवारा शिक्षक ६ माही, त्रैमासिक, मासिक तथा, अ
हो तो, साप्ताहिक कार्यक्रम के रूप में करें। यह बँटवारा बच्चों की उम्र, शक्ति,
भौगोलिक परिस्थितियों, बच्चों की उपस्थिति तथा कच्चे मालों की तैयारी की सुवि
बच्चों की राय से होना चाहिए। ऐसा कार्यक्रम आँखमुदी न होकर सचेष्ट

दैनिक पाठ टीका में मोटामोटी इस बात का ख्याल रखना होगा कि जो
उद्योग कराया जाय या जिन प्रतिवेशों का पर्यवेक्षण हो उसी से सम्बन्ध रखने
समवायी विषयों का उनके नोटबुक में उल्लेख हो। कृत्रिम समवाय के सिलसिले
ऐसा करने से खुद अंत हो जायगा। खींचखांच करके समवाय का गला
नयीप्रणाली का गला घोंटना होगा, ऐसा समझना चाहिए। जो कुछ भी
दिया जाय वह उद्योग वा प्रतिवेशों के सम्बन्ध का हो, इसको तो कभी नहीं
चाहिए नहीं तो समवाय समवाय न होकर साहचर्य हो जायगा। समवायी
भरसक जीवनपयोगी हो। इसका भी ध्यान रखना चाहिए।

दैनिक शिक्षणप्रगति के लिखने में कार्य तथा समवायी विषयों में लगे
समय का जिक्र तो अवश्य करना ही चाहिए, क्योंकि इसके बिना फिर यह
कठिन हो जायगा कि बच्चों के पूर्ण मानसिक विकास के साथ-साथ किस
उद्योग के लिए कितना समय आगे चलकर निर्धारित किया जाय तथा समय
वसमें उत्पन्न फल का शिक्षणसम्बन्ध क्या होगा। जिस प्रकार व्यवहार के
साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक तथा वार्षिक प्रस्तावित कार्यक्रम
अपेक्षा है, ठीक उसी प्रकार प्रगति बही में साप्ताहिक, मासिक, त्रैमा
अर्द्धवार्षिक तथा वार्षिक प्रगतियों का उल्लेख शिक्षकों तथा छात्रों के लिये
कामों की उत्तरोत्तर वृद्धि एवं विकास में अत्यन्त ही सहायक होगा, क्योंकि
बिना कोई शिक्षक या कोई लड़का अपने प्रस्तावित कार्य को कार्यान्वित कर
सफलता की जांच समय समय पर कर ही कैसे सकता है।

हमने बहुत स्थूल रूप से उद्योग के प्रति श्रद्धा रखने तथा अध्ययन के
शिक्षकों की तैयारी के सम्बन्ध में कुछ सुझाव पेश किए हैं। आशा है, शि
एवं छात्र इन विचारों से लाभ उठायेंगे।

प्रथम वर्ग के बच्चों के साथ चार महीने

लेखक—श्री सत्यदेव चौधरी

१९४२ की ६ ठी जनवरी; प्रथम वर्ग; छोटे-छोटे छः बच्चे औरएक बच्ची—तीन सात साल के और चार साढ़े पांच-छः साल के; सभी ढीले ढाले, गंदे और भुजकोंकर; बस यहीं से मेरे काम का श्रीगणेश हुआ। मैं ने हर एक से प्यारभरी बातें कीं; उनका नाम, उनके पिता का नाम, घर में कौन-सा रोजगार होता ~~है आदि~~ बातें पूछ कर उनसे परिचय प्राप्त किया। इस तरह हिल-मिल जाने पर मैं ने उनके मुँह, कान, नाक, आदि की तौलिया भिगोकर पोंछा। उनके बाल सँवारे; कुरते, कमीज और कोट के बटन लगाये; पैंटों की डोरियां, जो बाहर लटक रही थीं, भीतर कीं। सारांश यह कि उनके चेहरोंको मैंने फिर चांद-सा चमका दिया जिसे घर की लापरवाही ने मैल से म्लान कर दिया था।

अब मैं उन्हें स्कूल में इधर-उधर टहलाने ले चला। तरह-तरह की नयी-नयी चीजें और नये-नये काम उन्होंने देखे। उनके चेहरों से उत्सुकता तो झलकती थी, लेकिन भीरुता के कारण या शब्दन्यूनता के कारण उन्होंने जिज्ञासा प्रकट न की और मैं भी खामोश रहा। यह पहला दिन था। उन्हें छुट्टी दे दी तो एक ने पूछा कि कैल पढ़ने के लिये कौन-सी चीजें साथ लानी है! मैं ने कहा, कुछ नहीं; सिर्फ सबेरे उठकर दतुवन से दांत और जीभ साफ कर लेना, साफ कपड़ा भिंगो कर मुँह, नाक, कान, आंख हाथ सब पोंछ लेना, कंघी से बालों को सँवार लेना, साफ कपड़े पहन कर और ताजा भोजन खा कर सीधे स्कूल चले आना। पढ़ने पढ़ाने सीखने-सिखाने के सभी सामान अभी स्कूल मुं ही मिल जायँगे।

लड़के चलने लगे। चलते समय 'बेआदर' नाम के एक लड़के ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया; उसकी देखादेखी दूसरों ने भी प्रणाम किया। बेआदर जरा बड़ा है; शायद उसने इस तरह का शिष्टाचार अपने घर पर या पड़ोस के लोगों से पहले से ही सीख लिया था। मैं ने भी उनके अभिवादन का उचित उत्तर दिया और सब अपने-अपने घरों की ओर दौड़ पड़े।

दूसरे दिन बच्चों की सफाई में तरक्की तो पाई गई पर बहुत थोड़ी। पहले दिन की तरह आज भी मैंने उनकी सफाई की जो साफ होकर नहीं आये थे। इस

तरह सजधज कर उन्हें आइने के सामने खड़ा किया और उनके बदले हुए ... की ओर उनको इशारा किया। फिर सब के नाखून काटे और सफाई पर कुछ मोटी बातें कीं तथा साफ चेहरे और गंदे चेहरे के सम्बन्ध में उनके भावों को बीच में सहारा देते हुए, व्यक्त कराया।

आज मैदान में उनको ले जाकर दौड़-धूप के मामूली खेल खेलाये जो बहुत पसन्द आये। क्लास में लौटते समय उन्हें एक कतार में चलने तथा सड़क के बायीं ओर रहने सिखाया और इसकी सहूलियतें भी बताईं।

क्लास में आकर खेले गये खेल के सम्बन्ध में बच्चों से कुछ प्रश्न किये जिनका जवाब उन्होंने टूटे-फूटे शब्दों में दिया। लेकिन उनका मतलब सही था; और तो, कम से कम, खेलों के नाम वे सही-सही ले सकते थे।

इसी पूछताछ में बच्चों को काफी आराम मिल गया और अब मैं उन्हें क्लास के बच्चों के भिन्न-भिन्न काम दिखाने चला। कहीं बच्चों ने तकली की ... देखी, कहीं परवदा चक्र चलते देखा, कहीं फटर-फटर फाँय-फाँय की आवाज ... का ढेर लगा मक्खन जैसा रूई का पोल देखा। वे इन कामों को देखते फिर अपने वर्ग में आने पर उनसे इन पर बातें होतीं; 'क्यों' और 'किस लिए' ... झड़ी लग जाती। धीरे-धीरे उनका मन इन कामों की ओर खिंचता गया। जनवरी के अन्तिम सप्ताह तक उन्होंने भी शौक जाहिर किया कि मास्टर साहब ... भी तकली दीजिये।

मैं ने उन्हें तकलियां दीं जिनमें पहले से ही तीन-तीन चार-चार तार सूत ... रखा था। और कहा, यह लो तुम लोग भी इसे नचाओ। एक-एक लड़के के पास बिठा उनके हाथ को सहारा दे मैं तकलियों को नचा देता और पूनी को ... देता। सूत निकल पड़ते और बच्चों के दिल नाच उठते। फिर क्रमशः बच्चों को सहारा देना छोड़ दिया। उन्होंने अपना काम अपने आप शुरू किया। ... कि किसी का धागा टूट जाता था, कोई तकली में पहले से लगे धागे का कुछ भी उपयोग किये बिना ही तकली घुमाने की ... करता था और तकली को किसीं तरह भी संभाल नहीं पाता था। तब मैंने भी तकली ली और कुट पर टेक कर उसके धागे को खोलने और लपेटने ... स्वभावतः ही लड़कों ने मेरा अनुकरण किया। यह क्रिया बारी-बारी से दोनों ... से की गई। उसी दिन वे बायीं और दायीं चुटकियों का उचित व्यवहार जान ... उचित बट और खिंचाव न होने के कारण पूनियों के रेशे बार-बार उभर ...

। मैंने यह देख पूनियों को सूत से अलग कर दिया। फिर धीरे-धीरे एक हाथ से सूत को पकड़कर दूसरे हाथ से तकली में उचित बट देकर वे उसे नचाने लगे। तकली बिना डोले, बिना इधर-उधर छिटके ही, स्थिर होकर नाचने लगी। इस तकली के सजीव खेल से बच्चों के चेहरे पर एक संतोषजनक प्रसन्नता आई। मैंने उनकी उस दिन की भावना से, जब वे तकली में पहले से लगे सूत का उपयोग नहीं समझ सके थे, आज की प्रसन्नता की तुलना की, तो उस तीन चार तार सूत का असर मुझे जादू के असर-सा प्रतीत हुआ। मुझे यह सब बताना नहीं पड़ा कि तकली का घुमाव घड़ी की सूई की तरह या कुम्हार के चाक की तरह अथवा आटा पीसनेवाली चक्की की तरह होता है। मुझे यह भी न बताना पड़ा कि बायीं चुटकी से बट देते समय तकली के घुमाव की दिशा वही कायम रखनी पड़ती है। यह सब उस तीन चार तार सूत को खोलने और समेटने में उन्होंने अनायास सीख लिया। एक बात जो और इससे उन्होंने आप-से-आप सीखी वह यह कि तकली पर बट देने में उनकी चुटकियां बैठ गईं और अब स्थिर गति से उनकी तकलियां नाचने लगीं।

—

किन्तु इतने से ही काम नहीं चला। पहले से दिये गये सूत अधिक बट खाकर टूटने लगे और बच्चों को यह अच्छा नहीं लगता था कि उनकी तकली नाचती हुई बीच में ही रुक जाय। वे उसे बेरोक घूमने देना चाहते थे। अब मैंने उन्हें फिर पूनियाँ दीं और प्रथम पाँच मिनट के अंदर ही बच्चे सूत निकालने लग गये। टूटन बहुत ही कम आया। शुरू से ही उनके सूत में सुन्दरता आई। यह था उस तीन-चार तार सूत का दूसरा जादू।

लेकिन तब तक जनवरी का महीना खतम हो चुका था और यह पूनी देने का काम शुरू फरवरी से पहले न हो सका। तो क्या उनका जनवरी का महीना बेकार गया, क्योंकि उस महीने में एक तार भी कताई न हो सकी? इसका उत्तर हमारे दयालु पाठक ही देंगे। मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूँ कि तब तक हमारे बच्चे शिक्षकों का अभिवादन करना, अपने क्लास के साथियों के साथ हिल-मिल कर रहना, अपने क्लास की चीजों को साफ सुथरा और सुन्दर ढंग से रखना, अपने जूतों को क्लास के बाहर सजाकर एक कतार में रखना, अपने शरीर और कपड़े की सफाई पर ध्यान देना तथा सड़क पर बायीं ओर और कतार में चलना सीख चुके थे।

फरवरी का महीना शुरू हुआ और उसके साथ ही हमारे क्लास में कतना भी जारी हो गया। बालकों की इसमें काफी अभिरुचि रही। इस में कुल २२ दिन काम हुए। लड़कों का मन इतना लगा कि उनमें से घर पर भी कताई करने लगे। उनका हौंसला बढ़ाने के लिये तथा इस ओर मन लगाने के ख्याल से उनके घर पर के कते सूत को मैं ने स्कूल के जमा किया और उसके बदले में बुनाई बिभाग से मैं कुछ कपड़ा ले इस कपड़े की अपने ही स्कूल के सिलाई बिभाग में टोपियां सिला कर उन को दीं। उन टोपियों को सिरपर रखते ही उनकी खुशी का ठिकाना न र उन्हें मानों ताज मिल गया था।

इस महीने में एक काम और आरंभ हुआ और वह था गिनती का। लड़कों की संख्या कम थी इस लिये मैं उनकी गिनती के सहारे सात तक गिनती बच्चों को सिखा सका था। किन्तु अब कते तारों की गिनती के लिये से ऊपर जाना जरूरी था। सब लड़के एक साथ सूत अटेरते थे। जरा जोर से गिनता जाता था और लड़के भी मेरे गिनते जाते थे। जिसकी तकली खाली हो जाती थी वह वहीं रुक जाता था और उसके तार और नाम अपनी कापी पर नोट कर लेता था। इस तरह फरवरी तक ३५ से ४० तक गिनना उन्हें आ गया।

खुद ही बच्चों ने एक काम और भी इस महीने में आरंभ कर दिया।

मेरा रोज का काम 'ब्लैक बोर्ड' पर तारीख लिख देना था, लड़के क्लास जिस सिलसिले से बैठते थे उसी सिलसिले से १-२-३-४—लिख कर उनके लिख देता था तथा उसके सामने प्रत्येक के कते तारों की संख्या भी दर्ज कर था। लड़कों में अनुकरण करने की शक्ति अद्भुत रहती है। किसी तरह उन अपना नम्बर पहचान लिया और खल्ली से 'ब्लैकबोर्ड' पर उसी तरह लिखने वे कोशिश करने लगे। नम्बर के बाद तारों की बारी आई और फिर नाम तारों के लिखने में दिक्कत होती थी, क्यों कि वह रोज एक नहीं रहता था। उनके प्रयास में मुझे सहायता पहुंचानी पड़ती थी। मैं खुद ही संख्या लिख था और वे फिर उसे देखकर वैसा ही लिखते थे और बोलते थे। यह काम धीरे चलता रहा। आज हमारे बच्चों में दो तीन को छोड़ कर सब 'ब्लैक बोर्ड' अपने काते तारों को लिख सकते हैं, अपना नाम लिख सकते है और प्रति महीने की तारीख बदल कर लिख दे सकते हैं।

इस तरह फरवरी बीता और फरवरी के बाद मार्च बीता। काम की शिथिलता को दूर रखने के ख्याल से और उसमें रुचि की वृद्धि की इच्छा से मैं उन्हें बागवानी और गत्ते के काम देखने और आसपास पर्यवेक्षण कराने के लिये भी ले जाता रहा। इन कामों से बच्चों की मानसिक वृद्धि भी खूब हुई। उनकी भीरुता जाती रही, खेल-कूद में उनका मन लगने लगा और जो लड़के पहले बिना गार्जियन की मदद के स्कूल नहीं आते थे वे आज जनवरी के १७, फरवरी के २२, मार्च के १८ और अप्रेल के १८ दिनों के काम के बाद खुद स्कूल चले आते हैं और घंटी बजने के कुछ देर पहले जब मैं क्लास में आता हूँ तो उन्हें या तो क्लास सँवारने में व्यस्त पाता हूँ या कभी कभी इस काम को समाप्त करके उनमें से किसी को अपने किसी साथी के बाल थकरते (कंघी से सँवारते) पाता हूँ। घंटी बजने पर यथाविधि वे अपने शरीर और पोशाक की सफाई की जाँच करा लेते हैं और नित्य के कामों में ऐसे लीन हो जाते हैं कि चार-चार पाँच-पाँच घंटे तक घर जाने का नाम तक नहीं लेते। उनके चेहरे पर हँसी खेलती रहती है, एक ओज टपकता रहता है और एक आभा चमकती रहती है।

यदि मैं स्पष्ट कहूँ तो मुझे कहना पड़ेगा कि इस थोड़े अर्से में मैं यह महसूस करने लगा हूँ कि बच्चों की शिक्षा केवल बच्चों की ही शिक्षा नहीं रहती, यह शिक्षकों की भी शिक्षा होती है। शिक्षकों को अपनी दिमागी आँखें खुली रखनी पड़ती हैं। उन्हें हमेशा सतर्क रहना पड़ता है कि कहीं उनसे ही कोई काम ऐसा न हो जिसका असर बच्चों पर बुरा पड़े। शिक्षकों का व्यवहार प्रेमपूर्ण होना चाहिये और एक कुशल माली की तरह उन्हें अपने फूलों को पनपने और बढ़ने देने के सब साधन प्रस्तुत कर देना चाहिये। ऐसा होने पर ही बच्चों में उपयुक्त गुणों का समावेश हो सकता है।

एक दिन की बात है। कताई की घंटी समाप्त हो गई थी और 'बेआदर' सूत अटेरने लगा था। ५८ तार लपेटने के बाद उसकी लड़ी पूरी हो गई और तकली पर कुछ सूत और बच रहा। मैं घंटे भर का काम 'ब्लैक बोर्ड' पर लिखना चाहता था। अतः पूछा—क्या लगभग पाँच तार और होंगे? कुल ६३ तार लिख दूँ? बेआदर ने कहाः नहीं, मास्टर साहब, शायद दो तीन तार कम या अधिक हो जाय तो यह ठीक न होगा। थोड़ी देर ठहर जाइये, मैं उन्हें अटेर ही लूँ। मैंने उसे समय दिया। १२ तार और लगे। 'बेआदर' की इस सूझ से मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

वह अपनी जाँच कर लेने पर ही तारों की संख्या लिखना चाहता है चाहे कुछ देर ही क्यों न लगे---यह है इस शिक्षा का आरंभिक असर।

एक घटना और याद आ गई। मैं बच्चों को जनवरी में ही दौड़ के मैदान में ले गया था। उनमें देवशरण नाम का एक लड़का भी था। वह और किसी तरह ठेस खाकर गिर पड़ा, उठा और फिर दौड़ा, लेकिन पीछे गया। उस दिन से दौड़ के लिये वह राजी ही न होता था। आखिर एक दिन मैंने उन बच्चों के साथ दौड़ाया जो मैंने अन्दाज किया था कि देवशरण से कम दौड़ेंगे। मेरा अंदाज ठीक निकला। देवशरण सब से तेज दौड़ा। उसमें फिर उमंग आ गयी। आज वह क्लास भर में सब से तेज दौड़ाक है। सी गलती से हो सकता था कि इसका यह बड़ा गुण सदा के लिये अविकसित ही जाता।

अच्छा, अब मैं अपने पाठकों का ज्यादा समय नहीं लेना चाहता। यह महीना बीत रहा है और अब मैं सिर्फ यह प्रकट कर देना चाहता हूँ कि बच्चे कहां तक पहुँचे हुए हैं।

आध घंटे में बेआदर की कातने की रफ्तार (अटेरना छोड़ कर) ४५ त रामदास की ४३ तार, केदार की ४० तार, जित्तू की ३५ तार, बासुमती की तार ईश्वर और जग्गन की २० तार है।

जो बच्चे पहले केवल टूटे-फूटे शब्दों में ही बोल सकते थे वे आज छोटे वाक्य में जवाब देते हैं; आस-पास की चीजों को देखकर उनके नाम व्यक्त करते किसी काम के करने या देखने के बाद उसे बता देते हैं और अपने भावों को जा करने में समर्थ होते हैं। यह है मातृभाषा के ज्ञान का संक्षिप्त वर्णन।

बागवानी में ये निकौनी करना और पानी पटाना सीख गये हैं तथा पौधे हिस्सों के नाम जान गये हैं। वे यह भी जान गये हैं कि निकौनी से जो घास है वह सड़ कर फिर मिट्टी बन जाती है और पौधों के लिये बड़े लाभ की होती है।

ये बच्चे 'मारबुल' बनाना भी सीख गये हैं तथा लाल, पीला, नीला और रंग को पहचानने लगे हैं।

चाहे यह छोटी ही बात हो लेकिन इतना कहने के लोभ को मैं नहीं सकता कि स्कूल के हाते में पड़े कागज के टुकड़ों को और सूत के टूटन तथा रुई मेरे बच्चे उठा लेते हैं और क्लास में आकर यथास्थान रख देते हैं।

बुनियादी स्कूल के बच्चों में लिखने-पढ़ने का अभ्यास कैसे बढ़ाया जाय ?

लेखक—श्री बलदेव सिंह और मौ० आकिल दरभंगवी

विहार में बुनियादी शिक्षा तीन साल पार कर अब चौथे साल में प्रवेश कर रही है। इस दो तीन सालों के दौरान में दस्तकारी के ज़रिये शिक्षा देने के ढंग में तरह-तरह के अनुभव प्राप्त हुए हैं, समय समय पर कुछ कठिनाइयां भी उपस्थित होती गई हैं जिनके सुलझाने का उपाय भी अनुभवों के बलपर सूझता गया है और अपने उन अनुभवों को शिक्षाशास्त्रियों के सामने "नयी तालीम" "नवीन शिक्षक" आदि पत्रिकाओं के द्वारा रखने की भी कोशिश की गयी है। इस लेख में बच्चों की लिखाई-पढ़ाई के सम्बन्ध में कुछ सुझाव पेश किये जा रहे हैं। बुनियादी स्कूलों की सालाना जाँच प्रति वर्ष होती गयी है। बोर्ड ऑफ इन्स्पेक्टर्स तथा अन्य सरकारी एवं गैर-सरकारी व्यक्तियों ने अपने निरीक्षण की रिपोर्ट में इस ओर संकेत किया है कि बुनियादी स्कूलों के बच्चों में पुराने स्कूल के बच्चों की अपेक्षा लिखने और पढ़ने की शक्ति कुछ कम पाई गयी है। इस वर्ष जनवरी महीने में विहार सरकार के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर साहब ने भी अपने मुआयने के सिलसिले में फिर भी उसी बात को दुहराया है। पर इससे हमलोगों को घबराना नहीं चाहिये। हम सबके सब नई शिक्षा योंजना के शुभचिन्तक हैं और इसमें कैसे कामयाबी हो इस बात की धुन में लगे हुए हैं। अतः उपर्युक्त महानुभावों का संकेत हमलोगों के लिये एक अमूल्य सुझाव है जिसके आधार पर हमें ज्यादा साफ रास्ता ढूढ़ने की कोशिश करना चाहिये।

हमारी शिक्षा का आधार उद्योग है, जिसमें स्कूल के पूरे वक्त का उत्तरोत्तर २ घंटे से ३ घंटा २० मिनट समय उस उद्योग में ही लगाना है, बकिये समय में उद्योग की सारी क्रियाओं और उपक्रियाओं से उत्पन्न नई नई बातों को बच्चों के सामने रखना और इस तरीके से उनको लिखने-पढ़ने का अभ्यास कराना है। हमारी इस योजना में बच्चों के मानसिक विकास के सम्बन्ध में ऐसा ख्याल रखा गया है कि सातवें दर्जे तक उनकी योग्यता अंगरेजी छोड़कर और प्रायः सभी विषयों में

पुरानी पद्धतिके मैट्रिक स्टैन्डर्ड के बराबर अवश्य होनी चाहिये। इस बात को नजर रखते हुए हमें पुराने स्कूल के बच्चों के मानसिक विकास के साथ, इन बच्चों के मानसिक विकास की तुलना करना अनिवार्य हो जाता है। हमारे बुनियादी स्कूल के बच्चों की योग्यता तो उन पुराने स्कूल के बच्चों से कहीं बढ़ चढ़ कर होनी चाहिये। हाँ, भले ही प्रथम वर्ष के बच्चों में यह बात लागू न हो, क्योंकि हमारी बुनियादी शिक्षा में प्रथम दर्जे में छः महीने तक लिखने-पढ़ने को उतना महत्त्व नहीं दिया गया है जितना पुरानी पद्धत्तियों में; आत्मभाव प्रकाशन पर ही विशेष जोर दिया गया है। अतः प्रथम ग्रेड के बच्चे पढ़ने लिखने में तुलना में कम उतरें तो शिकायत की बात नहीं है। लेकिन दूसरे, तीसरे चौथे दर्जे के साथ तो तुलना अनिवार्य है।

अब प्रश्न यह उठता है कि लिखने-पढ़ने की कमी जो इन ग्रेडों के बच्चों में पाई जाती है कैसे पूरी की जाय।

अगर सच कहा जाय तो हमारे बुनियादी स्कूल के बच्चों में लिखने-पढ़ने की यह कमजोरी होनी ही नहीं चाहिए, कारण हमारा बुनियादी स्कूल तो ऐसा स्कूल है जहाँ बच्चों को पग-पग पर लिखने का मौका मिलता है। मिसाल के लिए आप नीचे की दो-तीन बातों को देखें:—

१ प्रति दिन बच्चों को अपना काता हुआ तार, धुनी हुई रूई का वजन, बागा में कोड़े वा पटाए हुए पौधों की संख्या तथा समय आदि का हिसाब-किताब जोड़-जोड़ कर रखना पड़ता है।

२ प्रति दिन उन्हें किए हुए कामों और उनसे सीखी हुई बातों का विवरण लिखना, अपने परिभ्रमण तथा निरीक्षण में देखी हुई चीजों का बयान करना तथा अपने आस-पास की घटनाओं का वर्णन स्वाभाविक ढंग के लिपिबद्ध करना पड़ता है।

जब ऐसा लिखने-पढ़ने का सिलसिला मौजूद है तो फिर क्यों बच्चे लिखने पढ़ने में कमजोर पड़ जाते हैं यह सोचने की बात है। जहाँ तक हमारा खयाल है यदि बच्चों से नियमित रूप से प्रतिदिन उनकी रोजनामचा बही (डायरी) लिखवायी और पढ़वायी जाय तो उनकी यह कमजोरी उनके पास आ ही नहीं सकती है। इन डायरियों के पढ़ने का सिलसिला ऐसा रहे कि दिन के अन्त में बच्चे एक दूसरे की कापी [illegible] कर पढ़ा करें। इस तरह बच्चों में पढ़ने की क्षमता

अवश्य दूर होगी और वे दूसरों की लिखावट मजे में तेजी के साथ पढ़ सकेंगे। बहुत से स्कूलों में ऐसा देखा जाता है कि बच्चे खुद अपना लिखा आप नहीं पढ़ सकते। जब ऐसी बात है तो भला कहाँ तक उन बच्चों में पढ़ने की ताकत पैदा हो सकती है। अतः हमें इस बात पर पूरा ध्यान रखना चाहिए कि बच्चों से प्रतिदिन उनके हाथ की लिखी हुई डायरियाँ पढ़वा ली जायँ।

बच्चों में लिखने-पढ़ने का अभ्यास बढ़ाने का दूसरा तरीका यह हो सकता है कि स्कूल की लायब्रेरी में छोटी छोटी मनोरंजक तथा दिलचस्प कहानियों की छोटी छोटी किताबें, जिनकी भाषा सरल हो, सँग्रह कर रखी जायँ। शिक्षक खुद उन किताबों को बच्चों के हाथ में देने के पहले पढ़ लें और उन कहानियों को भिन्न भिन्न भागों में बाँट कर नोट कर लें—जैसे साधु-संतों की जीवनियाँ एक जगह, पर्व-त्योहार, ग्राम सफाई, कताई दंगल, खेल कूद आदि की क्रमशः दूसरी, तीसरी जगह——। और काम कराने के सिलसिले में जब कभी ऐसा मौका उत्पन्न हो जाय तो बच्चों को कहानियों का हवाला दें और इस प्रकार उनके दिल में रुचि पैदा कर उन किताबों को उनके हाथ में पढ़ने के लिए सौंपें।

इसके अतिरिक्त हर स्कूल में एक 'कामन' रूम का प्रबन्ध रहे जिसमें छोटे-छोटे बच्चों के पढ़ने लायक समाचारपत्र, किताबें तथा पत्रिकाएँ, जिनकी भाषा बिल्कुल सरल हों, रखी जायँ। बच्चों के जिम्मे इस कामन रूम का प्रबन्ध सौंप दिया जाय। बच्चे अवकाश के समय या आवश्यकता पड़ने पर स्कूल के घंटों में भी उसका इस्तेमाल कर सकते हैं। हो सके तो वे अपने पास एक समाचार संग्रह बही बना कर रखें और प्रतिदिन जो कुछ पढ़ें संक्षेप में नोट कर लिया करें। हर्ष की बात है कि कुछ स्कूलों में हस्तलिखित मासिक पत्र तथा पत्रिकाएँ निकाली जा रही हैं। इससे बच्चों में कुछ न कुछ लिखने-पढ़ने की मनोवृत्ति बढ़ रही है। कहीं-कहीं के बच्चे गाँव की रोजाना घटनाओं का संग्रह अपनी अपनी कापियों में करते हैं लेकिन इसके सम्बन्ध में हमारा ख्याल है कि जहाँतक हो सके बच्चों के ऊपर कागज खरीदने का भार कम लादा जाय। दूसरी बात यह ख्याल रखने की है कि बच्चों का लिखना, चाहे वे जो कुछ भी लिखें, नियमित रूप से शुद्ध कर दिया जाय; अन्यथा, उनके लिखने का परिश्रम पूरा कारगर नहीं हो सकेगा। समय का ख्याल हमें सदा रखना है। इसलिए हमारा विचार है कि हर स्कूल के ओसारे में एक काला बोर्ड लटका दिया जाय और बच्चे प्रतिदिन उसी बोर्ड पर अपने गाँव का समाचार लिख दिया करें। शिक्षक का काम उसे शुद्ध कर देना होगा। इससे हर बच्चे को उसे देखने और पढ़ने का मौका मिलेगा।

इसके अलावा स्कूल के ऊपर के दर्जों के कुछ बच्चों की टोलियाँ संवाद- का काम करने के लिए बना दी जायँ। उनके जिम्मे यह काम रहे कि वे प्रति- हर दर्जे में घूम-घूम कर समाचार संग्रह करें; उनका दूसरा काम बोर्ड के लिखे हुए मुख्य-मुख्य समाचारों को अपने स्कूल के पत्र के लिए इकठा करना होगा। यदि बच्चे इस आधार पर काम करते गए तो हमें पूर्ण विश्वास है कि उनकी लिखने-पढ़ने की शक्ति बहुत बढ़ जायगी।

ये सारी बातें पहले दर्जे से ऊपर पढ़ने वाले बच्चों के संबंध में कही गईं। प्रसंगवश हम यहाँ पर प्रथम वर्ग के बच्चों में लिखने-पढ़ने की आदत बढ़ाने की कुछ बातें रखते हैं। प्रथम वर्ग का बच्चा आम तौर से सात वर्ष का होगा। हम जानते हैं कि बच्चों का मन खेल-कूद में ज्यादा लगता है। हमारे यहाँ दस्तकारी के कुछ ऐसे औजार हैं जिन्हें बच्चों ने नहीं देखा है। हमें उन्हें दस्तकारी का काम सिखाना है और उसके साथ-साथ लिखना-पढ़ना भी बतलाना है। हमें छः महीने तक तो उनके साथ घूमना-फिरना और बातें करनी होंगी। पर इस बात चीत के सिलसिले में भी हम बच्चों में लिखने-पढ़ने की ओर रुचि पैदा कर सकते हैं। हमारा ख्याल है कि यदि शिक्षक बच्चों का नाम, उनके काते हुए तार तथा उनकी देखी हुई चीजों के नाम साफ-साफ बोर्ड पर लिख दिया करें तो बच्चों में लिखने-पढ़ने की ख्वाहिश आप से आप पैदा होती जायगी। पटना प्रेक्टिसिंग स्कूल के बच्चे इस आधार पर ४-५ महीनों में ही अपना नाम पहचान लेते हैं। हमें आशा है कि यदि इस तरह और स्कूलों में भी काम किया गया तो बच्चों की अभिरुचि खुद से लिखने- पढ़ने की ओर बढ़ जायगी।

दूसरी चीज जिस पर हमलोगों का ध्यान विशेष जाना चाहिए वह यह है कि जब तक बच्चे खुद से अपनी रोजाना डायरी लिखने लायक न हो जायँ तब तक शिक्षक को स्वयं उस वर्ग के बच्चों की ओर से रोजाना डायरी लिख कर सुनानी चाहिए, पर, हाँ, वह डायरी बहुत बड़ी और भयंकर-भयंकर शब्द वाली न हो। हम तो कहेंगे कि उस डायरी में वही बातें अथवा चीजें लिख कर बच्चों को सुनायी जायँ जो उस दिन बच्चों को सब से ज्यादा पसन्द पड़ी हों या जिनकी ओर उनका ध्यान खासकर गया हो। उदाहरण स्वरूप, हम दो-तीन नमूने यहाँ पर देते हैं :—

"आज बाग में तितली का उछलना बहुत पसन्द आया। उसका पंख खूब चमकता था। आज हाते में साँढ़ घुस गया था। उसका मउर बहुत बड़ा था। आज [illegible] नाचती हुई क्लास के कोने में

भाग गई। इत्यादि इत्यादि"।

इन नमूनों को देखने से ऐसा संदेह हो सकता है कि इनमें कताई-धुनाई की बातें अथवा दिन भर के किए हुए कुल कामों का जिक्र नहीं आया है। पर हमें यह सोचना चाहिए कि बच्चे ज्यादा सुनना नहीं पसन्द करते। साथ ही वे बहुत सी बातों का स्मरण भी नहीं रख सकते। इस लिए हमें उन बच्चों की रुचि के मोताबिक बातें सुनानी चाहिएं। दिलचस्प बातों को सुन कर उनमें खुद से लिखने का चाव पैदा होगा। आशा है उपरोक्त सुझावों पर शिक्षक विचार करेंगे और यदि उन्हें उपयोगी समझें तो उन्हें काममें लायेंगे।

हमारे स्कूल के खास काम

(बुनियादी स्कूल, आंजीं, जिला वर्धा)

ले०—श्री का० रा० घोंगडे

आंजीं स्कूल में बुनियादी तालीम को शुरू हुए तीन साल हो रहे हैं। पहला यानी १९३९ साल छोड़ कर बाकी दो साल मैं ने खुद काम किया है। यहाँ मैं १९४१-४२ साल के अनुभव का संक्षिप्त विवरण पाठकों के सामने रखना चाहता हूँ।

शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्ति करने वाली यह राष्ट्रीय शिक्षा की पद्धति बच्चों के मन के प्रसुप्त ज्ञान को जाग्रत कर रही है। इससे बच्चों के मन पर जो खराब संस्कार हुए हैं वे दूर होकर उनकी जगह पर धीरे धीरे अच्छे संस्कार कायम हो रहे हैं। उनके आत्मप्रकटन से तथा ज्ञान प्राप्त करते वक्त उनके उत्साह से भरे हुए हावभाव से अनुभव होता है कि उनमें सत्य, अहिंसा आदि महान सिद्धान्तों का बीजारोपन हो रहा है। इससे उम्मीद होती है कि बचपन में ये सिद्धान्त अगर उनमें अंकुरित हो जायं तो बच्चे स्वावलंबी बन कर भविष्य के जीवन के सवाल हल करने में कामयाब बन सकेंगे।

सफाई—बच्चों से हररोज स्कूल की सफाई और हफ्ते में एक दिन घरकी सफाई कराई गई। गांधी जयन्ती (ता० २७ सितम्बर से २ अक्तूबर, १९४१) तथा राष्ट्रीय सप्ताह (ता० ६ से १३ अप्रैल, १९४२) के अवसर पर शिक्षकों के साथ

ईंट के टुकड़े उठाये गये और रास्तों में झाड़ू लगाया गया। इन बातों से ... के लोगों को काफी कुतूहल हुआ।

दवा—गांव के लोग अज्ञान और गरीब हैं। इसलिए बच्चों की बीमारी का उनसे कोई इलाज नहीं होता। इस कमी को दूर करने के लिए स्कूल में 'बाल औषधालय' खोला गया है। उसमें ६-७ रुपये तक की आवश्यक दवाइयां रक्खी गई हैं। इसके सिवा देशी वनस्पतियों का भी उपयोग किया जाता है। दवाइयों का हिसाब एक शिक्षक रखते हैं। इस प्रबन्ध से बच्चे, पालक और शिक्षक इन तीनों का परस्पर संबन्ध बढ़ता है और उनमें आत्मीयता बढ़ती है। शिक्षा के कार्य में भी इससे लाभ पहुंचता है और सेवा करने का अभ्यास होता है। प्रइमरी स्कूलों में सामान्य बीमारियों के इलाज का प्रबन्ध होना ज़रूरी है।

नाश्ता—गत वर्ष के अनुसार इस वर्ष भी स्कूल में बच्चों को चने दिए गए। हर बच्चे को ५ से ७ तोले चने तेल से बघार कर दिये जाते हैं।' 'ओ३म् सह नाववतु' इस मंत्र के साथ सब बच्चे जातिभेद तथा उच्चनीच भाव भुला कर साथ नाश्ता करते हैं।

पीने के पानी का प्रबन्ध—हर दर्जे में तिपाई पर ढक्कनदार ... में पीने के लिए पानी रक्खा रहता है। पानी भरने तथा पिलाने का काम बच्चे स्वयं करते हैं।

व्यायाम-खेल—बच्चों की बुद्धि का विकास करने के लिए शारीरिक व्यायाम और खेल की जरूरत होती है। हमारे स्कूल में लाठी, लेजिम, कवायद आदि बातों का प्रबन्ध किया गया है। रोज संध्या में ४॥ से ५ बजे तक छोटे बड़े बच्चे और शिक्षक खेल खेलते हैं। बुनियादी शिक्षा के पहले तीन दर्जों में बुनियादी शिक्षा पद्धति के मुताबिक अनुकरणात्मक, प्राथमिक हलचलों और मामूली कवायद से शारीरिक शिक्षा दी जाती है।

हमारा बगीचा—बच्चे और शिक्षकों ने मिलकर स्कूल के सामने ४० फुट × ५० फुट का छोटासा बाग तैयार किया है। उसमें फूल के पौधे और बैंगन, मिर्च, टमाटर, लौकी, भिंडी आदि तरकारियां लगाई गईं। पाठ्यक्रम के अनुसार इस तरह बागवानी का काम कराया जाता है। बगीचा स्कूल का ही नहीं शिक्षा का भी आभूषण है। इस साल बगीचे से २॥ ‑)॥ रु० की आमदनी हुई। इस पैसे का बच्चों के नाश्ते के लिए उपयोग किया गया।

सैर या पर्यटन—बुनियादी पाठ्यक्रम में सैर के ज़रिये शिक्षा देने ...

काफी जोर दिया गया है, क्योंकि उससे प्रकृति, समाज और दस्तकारी के ज़रिये बच्चों को ज्ञान प्राप्त होता है और उससे बच्चों को आनंद मिलता है। प्रकृति से एकरूप होने से सद्ज्ञान का लाभ होता है। इसलिए हर दर्जे में हर माह ४-५ सैरें रक्खी जाती हैं। ता० २३-११-४१ को तीन मील पर आमगांव के जंगल में पहाड़ी पर बच्चे और शिक्षक सैर के लिए गए और वहां खेल और वनभोजन आदि का कार्यक्रम रहा। ता० १५-३-४२ को भी यह कार्य-क्रम रखा गया।

बच्चों की सभा—स्कूल में हर गुरुवार को ८ बजे से ११ बजे तक बच्चों की सभा होती हैं। आगे की सभा के अध्यक्ष का चुनाव बच्चे मतों के द्वारा करते हैं। शुरू में सभापति को फूलों का हार पहनाया जाता है और ईश्वर-वन्दना के बाद सभा शुरू होती है। बच्चे विषय का सिलसिले से बयान करते हैं और निडरता से सभा के सामने भाषण देते हैं। इस साल कुल १३ सभाएँ हुईं। बहुत से गुरुवार को छुट्टी आ गई। सभा में पहले दर्जे से ७ वें दर्जे तक के सब बच्चे हिस्सा लेते हैं। सभा की रिपोर्ट ऊपरी दर्जे के बच्चे रखते हैं। सभा में शिक्षक भी सामाजिक विषयों का बच्चों को ज्ञान देते हैं। इससे बच्चों का सामान्य ज्ञान बढ़ता है।

बच्चों का वाचनालय—स्कूल में एक छोटा पुस्तकालय है। इसमें से बच्चों के लायक किताबें चुन कर उन्हें पढ़ने के लिए दी जाती हैं। इस तरह प्राप्त ज्ञान का उपयोग वे सभा में करते हैं।

सामाजिक जिम्मेदारियां—बच्चा समाज का एक अंग है। इस दृष्टि से बच्चों को दर्जे के मुताबिक जिम्मेदारी के छोटे बड़े काम सौंप दिये जाते हैं। क्लास की सफाई, गैरहाजिर बच्चों की पूछताछ करना, क्लास में टाटपट्टी बिछाना, पीने के पानी का प्रबन्ध करना, बगीचे की देखभाल, बीमार बच्चों की पूछताछ, पुस्तकालय की व्यवस्था, गांव की खबरें प्राप्त करना, नाश्ते का प्रबन्ध, क्लास के सामान की व्यवस्था आदि काम बच्चे उत्साह से करते हैं।

उत्सव-त्यौहार—स्कूल में इस साल तिलक पुण्यतिथि, गणेश उत्सव, गांधी जयन्ती, स्नेह सम्मेलन, और राष्ट्रीय सप्ताह मनाए गए। गणेश उत्सव में बच्चों ने नाटक खेला। गान्धी जयन्ती के अवसर पर १५ दिन रोज़ आधा घंटा सूत की कताई हुई, पांच दिन गांव की सफाई की गई और जुलूस, सामूहिक कताई, बच्चों के गाने व संवाद व भाषण के कार्यक्रम पूरे किए गए।

स्वावलंबन—बुनियादी शिक्षा का बच्चों पर यह अच्छा असर हुआ है

कि स्कूल में १५ बच्चे पूरे वस्त्रस्वावलंबी हो गए हैं। बाकी सब बच्चे खादी का और टोपी पहनते हैं। इस वर्ष करीब सभी बच्चों ने १५-२० सेर कपास रख है और उम्मीद की जाती है कि बच्चे अब पूरे खादीधारी बन जायेंगे। सभी फुरसत के वक्त सूत कातते हैं।

गीता का पठन—स्कूल शुरू होने के प्रारम्भ में पहले राष्ट्रीय गीत जाता है और उसके बाद श्री बिनोवाजी के गीता के मराठी अनुवाद से रोज एक अध्याय सामूहिक रूप से पढ़े जाते हैं और शिक्षक रोज एक दो श्लोक का बच्चों को बताते हैं। इस तरह बच्चों पर धार्मिक संस्कार डाले जाते हैं।

गुणदोष की रिपोर्ट—स्कूल में दी गई शिक्षा को बच्चे अपने जीवन में किस तरह अमल में लाते हैं इसकी जांच की जाती है और उसकी 'गुणदोष रजिस्टर' में हरएक बच्चे के सामने दर्ज की जाती है। इससे बच्चे, और शिक्षकों का सम्बन्ध बढ़ा है।

शिक्षा से आनन्द—बुनियादी शिक्षा की पद्धति ही ऐसी है कि इससे खुद ही ज्ञान ग्रहण करते हैं, इससे शिक्षा का असर टिकाऊ होता है। विश्वास और प्रेम से शिक्षा प्राप्त करते हैं। प्रकृति और समाज का अधिक अधिक ज्ञान प्राप्त करने की उनकी आकांक्षा बढ़ती जाती है; बच्चों को स्कूल में नहीं रहता और वे अपने विचार आजाद होकर प्रकट करते हैं। इससे उम्मीद होती है कि सात साल की शिक्षा प्राप्त करने पर बच्चे स्वावलंबी, नीतिमान और अच्छे नागरिक बनेंगे और अपने जीवन के प्रश्न हल करने में समर्थ होंगे।

बच्चों का मासिक पत्र—फरवरी १९४२ से बच्चों ने 'बालविचार' नामक मासिकपत्र शुरू किया है। इसमें सभी दर्जों के बच्चे लेख लिखते हैं। मासिक का संपादक मंडल बच्चों ने अपने में से ही चुना लिया है। लेख सुन्दर और शुद्ध भाषा में हों इस तरफ़ विशेष ध्यान दिया जाता है।

गांव पर स्कूल का असर—स्कूल के उत्सवों, बच्चों के अभिनय और नाटक और उद्योग के कामों से और गांव सफाई जैसे सेवा के कामों से, स्कूल के बारे में गांव में आदर प्रेम व विश्वास बढ़ रहा है। गांव के लोग स्कूल के सभी कामों में उत्साह से भाग लेते हैं। उनमें बुनियादी शिक्षा के बारे में दिलचस्पी पैदा हुई है।

यह हमारे स्कूल के खास खास कामों का विवरण है।

बच्चों की कलम से

['नयी तालीम' के एक पिछले अंक में हमने चम्पारण के बुनियादी स्कूलों के छात्रों की लिखी अपने सालभर के काम की रिपोर्ट का कुछ नमूना छापा था। उसके बाद से अनेक बच्चों ने हमारे पास अपनी अपनी रिपोर्ट की कापी भेजी है। इन रिपोर्टों को छापने के लिये न तो स्थान है और न सब के छापने से विशेष लाभ चूंके सभी रिपोर्टें प्रायः एक ही प्रकार की है, और उनमें एक ही तरह की बातों की आवृत्ति हैं। भेद केवल भाषाका है। पर बच्चे-बच्चियों का उत्साह बढ़ाने तथा लिखने पढ़ने में वे कैसी तरक्की कर रहे हैं इसकी जानकारी पाठकों को देने के विचार से हम इन रिपोर्टों से कुछ कुछ-पर भिन्न भिन्न विषय सम्बन्धी-अंश उद्धृत करते हैं। भाषा में हमने कोई सुधार नहीं किया है। यदि संभव हुआ और स्थान की विशेष कमी नहीं हुई तो हम इस स्तंभ को स्थायी बना देंगे ताकि भिन्न भिन्न बुनियादी स्कूलों के बच्चों की प्रगति उनके अपने लेखों द्वारा ही मालूम होती रहें।—सम्पादक]

पेड़ लगाने का सप्ताह—पेड़ लगाने से क्या फायदा है। हमारे स्कूल में ता० ६-८-४१ को पेड़ लगाने का सप्ताह मनाया गया। उसमें मौडेल सेन्टर के सुपरभाइजर साहब सभापति बनाए गए थे। उस सभा में हमलोगों के गार्जियन भी आए हुए थे। उसमें औरगेनाइजर साहब और सुपरभाइजर साहब ने भाषण दिया। पेड़ लगाने से फल मिलता है। जलावन भी मिलता है। हमारे यहां के लोग गोबर से कंडे बनाते हैं। गोबर एक अच्छी खाद है। उसको सुखाकर जलाने से खाद की कमी हो जाती है। हमलोगों को चाहिए कि गोबर को अच्छी तरह हिफाजत से रखें और सड़ा कर खेत में दें। हमलोगों को सीसम की डाल, अरहर की खूंटी, मकई की खूंटी को जलाना चाहिए। उसमें पहला पेड़ जगन्नाथ सिंह के पिता जी ने लगाया। उसके बाद हमलोगों ने पेड़ लगाया। मैंने आठ पेड़ लगाए। (१) अमरूद (२) नींबू (३) सपाट्ट (४) सफतालू (५) औंरा (६) उरहुर का पौधा (७) करौंधा (८) नीम लगाया। इन पौधों को मैंने लगाया। अमरूद के पेड़ से यह फायदा है कि उससे फल मिलता है। उसके पेड़ से लोग कुदाल और टेंगारी की बेंट बनाते हैं। नींबू के फल से दवाइयाँ भी बनती है। उसका फल गोल होता है। औंरा के फल से तरह तरह की दवाइयाँ बनाते हैं। उससे अंचार भी बनती है। और उसके बीज से तेल भी बनाया जाता है। उरहुर के पौधे से सांप की मया नहीं लगती है। नीम के पेड़ से शुद्ध हवा मिलती है। उसके बीज से तेल भी बनता है। आम के पेड़

से फल मिलता है। जलावन मिलती है। शादी बिवाह में लोग काम में लाते मरने पर भी लोग मुरदा फुंकते हैं। सीसम के पेड़ से चौकी बनाते हैं। और डेस्क बनता है। कटहल के फल से तरकारी भी होती है। उसके किवाड़ चौखट बनती है। उसके लकड़ी का रंग पीला होता है।

केदार बैठा
चौथा दर्जा
वृन्दावन-रमपुरवा बेसिक-स्कूल

साधारण विज्ञान—बरसात में सब चीजों में नमी रहती है। हवा का गुण है कि वह जिस चीज से होकर जाती है उसमें का थोड़ा भी अंश अपने ले जाती है। बरसात में धोती वगैरह जल्दी नहीं सुखती है क्यों कि बरसात की में नमी अधिक रहती है। बरसात और शरद ऋतु में हिमालय पहाड़ दिखाई देता क्योंकि उस समय आसमान साफ रहता है। रात को ध्रुव तारा के जरिये का पता लगा सकते है। ध्रुव तारा उत्तर दिशा में रहता है। ध्रुव तारा खटोला के ऊपर वाले दो तारों के ठीक एक सीध में रहता है। शरद ऋतु खरलिच दिखाई देती है। बसंत ऋतु में पपीहा और कोयल बोलती हैं। हमारे देश छः मौसिम होते हैं। बसन्त, गृष्म, बरसात, शरद, हेमन्त और शिशिर। पेड़ तीन हिस्से होते हैं। जड़ धड़ और पत्ती। जड़ जमीन से रस लेकर धड़ को देती धड़ उस रस को पत्ती तक पहुंचाती है। पत्ती पौधों के भोजन को पकाती है। पत्ती के जरिये सांस लेते हैं। ओस के बारे में पढ़ा कि पृथ्वी और पेड़ पौधे में सूर्य की गर्मी लेते हैं और शाम को छोड़ते हैं। शाम को घास पत्ते वगैरह गर्मी फेंक कर ठंढा हो जाते हैं। हवा बहती है। जब वह इन घास पत्तों से मिल है तब वह भी ठंढी हो जाती है। हवा में पानी की भाप रहती है। ठंढा लगने वह जम जाती है और पानी के बुन्द बनकर घासों पर बैठ जाती है। इसी को ओस कहते हैं। कुहासे के बारे में पढ़ा कि हवा में पानी की भाप और धूल है। ठंढ पड़ने से पानी की भाप जमकर धूलपर बैठ जाती है और हवा में अटकी रहती है। इसी को कुहासा कहते हैं। हमलोगों के यहां छ० महिने तक पुरवा और छ० महिने तक पछेया हवा बहती है। जाड़े में पछूआ और गर्मी में पुरवा हवा बहती है। पुरवा हवा से हमलोगों के यहाँ वर्षा होती है। जाड़े में भी जब कभी पुरवा हवा बह जाती है तो वर्षा होती है नहीं तो बदली जरुर ही लगती है।

इन्द्रासन दूबे
चौथा दर्जा
मठिया बेसिक स्कूल

'नई तालीम' के नियम

१—हिन्दी 'नई तालीम' अंग्रेज़ी महीने की हर पहली तारीख़ को पटने से प्रकाशित होती है। हिन्दी 'नई तालीम' का वार्षिक मूल्य सवा रुपया एक प्रति की क़ीमत दो आना है। वार्षिक मूल्य पेशगी लिया जाता है।

२—उर्दू 'नई तालीम' हर पहली तारीख़ को जामियानगर, दिल्ली, से प्रकाशित होती है। उर्दू 'नई तालीम' सीधे दिल्ली से प्राप्त करनी चाहिए। 'नई तालीम' का वार्षिक मूल्य डेढ़ रुपया है। एक प्रति की क़ीमत दो आना है। वार्षिक मूल्य पेशगी लिया जाता है।

३—ग्राहक किसी भी महीने से बन सकते हैं, पर साल-भर से कम के लिए नहीं बनाये जाते।

४—दोनों पत्र प्रकाशित होते ही सावधानी के साथ ग्राहकों को भेज दिये जाते हैं। अगर एक हफ्ते के अन्दर अङ्क न मिले, तो पहले डाकख़ाने से पूछ करके फिर लिखना चाहिए। पत्र न मिलने की पुरानी शिकायतों पर ध्यान न दिया जायगा।

५—तीन महीने से कम के लिए पता बदलवाना हो, तो अपने डाकख़ाने से इन्तज़ाम कर लें।

६—ग्राहकों को चाहिए कि रैपर पर पते के साथ दी हुई अपनी ग्राहक-संख्या हमेशा याद रक्खें और पत्र-व्यवहार में ग्राहक-संख्या लिखना न भूलें, नहीं तो कोई कार्रवाई न की जायगी।

व्यवस्थापक, 'नई तालीम'
पटना (बिहार)

Regd. No

हिंदुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम, वर्धा
की
प्रकाशित पुस्तकें

१—शिक्षा में अहिंसक क्रान्ति (हिन्दी)
२—एज्युकेशनल रिकान्स्ट्रक्शन (अंग्रेजी)
३—बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा (हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी)
४—एक क़दम आगे (हिन्दी, अंग्रेजी)
५—दी लेटेस्ट फैड (अंग्रेजी)
६—मूल उद्योग कातना (हिन्दी, मराठी)
७—ओटना व धुनना (हिन्दी, उर्दू)
८—तकली (हिन्दी, मराठी, उर्दू)
९—गत्तेका काम (हिन्दी, अंग्रेजी)
,, ,, (हिन्दी-सजिल्द)
१०—खेती-शिक्षा (हिन्दी, मराठी)
११—कताई-गणित, भाग १ (हिंदी, उर्दू)
१२—कताई-गणित, भाग २
१३—बुनियादी तालीम के काम का तफ़सीलवार लेखा (हिन्दी और अंग्रेजी साथ-साथ)
१४—बुनियादी तालीम के दो साल (दिल्ली कान्फरेन्स की रिपोर्ट)
१५—थर्ड ऐन्युअल रिपोर्ट (अंग्रेजी, हिन्दी)

हिंदुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम, वर्धा की ओर से
मुद्रक और प्रकाशक : बदरीनाथ वर्मा, सर्चलाइट प्रेस, पटना।

वर्ष ४ संख्या ८

नई तालीम

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ का मुखपत्र

सम्पादक
बदरीनाथ वर्मा

अगस्त, १९४२

वार्षिक : सवा रुपया : : एक प्रति : दो आना

लेख-सूची

लेख

चन्दे के बारे में सूचना

चन्दा खत्म होने का लेबल जिन ग्राहकों के अंकों पर हो, वे आ[illegible] वर्ष का चन्दा १।) रु० हमारे पास उस महीने की २५ तारीख़ त[illegible] भेज देने की कृपा करें। २५ तारीख़ तक चन्दा न आने पर आगामी [illegible] वी. पी. द्वारा भेजा जायगा।

किसी कारणवश 'नई तालीम' बन्द करना हो तो ग्राहकों से अनु[illegible] है कि वे उसकी सूचना हमें उस महीने की २५ तारीख़ के भीतर दे[illegible] कृपा करेंगे। वी. पी. लौटाकर हमें फ़िज़ूल खर्च में न डालें।

मनीआर्डर भेजते वक्त या पत्र-व्यवहार में अपना ग्राहक नंबर [illegible] लिखिए।

नई तालीम

भाग ४]   पटना, १ अगस्त, १९४२   [संख्या ८

बुनियादी तालीम की नयी संस्था

बुनियादी तालीमका प्रयोग अबतक दूसरी दूसरी संस्थाओं तथा प्रान्तीय सरकारों द्वारा ही किया जा रहा है। हिन्दुस्तानी तालीमी संघ इन को सलाह देता रहा है और इनकी सहायता करता रहा है पर अपने सीधे प्रबन्ध या निरीक्षण में यह इस सम्बन्ध में कुछ विशेष काम नहीं कर सका है। इसमें सन्देह नहीं कि अन्य संस्थाओं और सरकारों द्वारा जो काम हुआ है वह बहुमूल्य है और उसके फलस्वरूप जो अनुभव प्राप्त हुए हैं वे बुनियादी तालीमके महत्त्व और उपयोगिता को सिद्ध करनेमें बहुत दूर तक सहायक हुए हैं। पर साथ ही, इस बात की भी जरूरत बराबर महसूस की जाती रही है कि हिन्दुस्तानी तालीमी संघ खास अपने निरीक्षण और प्रबन्ध में भी बुनियादी तालीम का कुछ काम करे जिससे कि इसको अपने विचारों को पूर्ण रूप से काम में लानेका मौका मिले—और बिना काट-छांट या घटाव-बढ़ावके बुनियादी तालीमकी योजना का प्रयोग किया जा सके और इसके गुण-दोषों का ठीक ठीक अन्दाज लगाया जा सके तथा उसके आधार पर आवश्यक परिवर्तनों और परिवर्द्धनोंके प्रश्न पर विचार किया जा सके। इस लिये सेवाग्राममें ही बुनियादी तालीम की एक शिक्षण-संस्था, तथा प्रयोगके लिये एक बुनियादी पाठशाला खोलने का प्रश्न बहुत दिनों से विचाराधीन था। हर्ष की बात है कि १ली अगस्त से इनके खोलने का आयोजन हो गया। यह नीव

संस्था 'नयी तालीम भवन' के नाम से खुली है और सौभाग्य से महात्मा गांधीजी के करकमलों द्वारा इसका उद्घाटन हुआ है। भवन की नियमावली तथा उससे संबंध की अन्य ज्ञातव्य बातें इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित की जा रही हैं। उम्मीद है कि बुनियादी तालीमके प्रेमी इससे पूरा लाभ उठावेंगे और देश के प्रत्येक भाग से शिक्षक-विद्यार्थी शिक्षा लेनेके लिये आयेंगे और शिक्षण समाप्त कर अपने अपने स्थानोंमें लौटकर बुनियादी तालीमका प्रचार करेंगे। —संपादक

काश्मीर में बुनियादी तालीम

काश्मीर रियासत में बुनियादी शिक्षा ने कितनी तरक्की की है और उसके फलाफल क्या हुए हैं इन बातों की जानकारी प्राप्त करने के लिये हिन्दुस्तानी तालीमी संघकी ओर से एक प्रश्नावली उस रियासत में बुनियादी शिक्षा में लगे लोगों के पास भेजी गयी थी। उस प्रश्नावली के जो उत्तर आये हैं उनके आधार पर यह संक्षिप्त विवरण यहां दिया जाता है।

स्कूलों की संख्या—जुलाई १६४१ से मार्च १६४२ तक इस रियासत में ६२ बुनियादी स्कूल थे। अप्रैल १६४२ में इस संख्या में और ३० की वृद्धि हुई। इस तरह इस समय वहाँ कुल ६२ बुनियादी पाठशालाएं चल रहीं हैं। अब तक ये ४ थे वर्गतक पहुंची हैं।

पाठ्यक्रम—इन विद्यालयों में जो पाठ्यक्रम चल रहा है वह वहाँ के शिक्षा विभाग का बनाया पाठ्यक्रम है पर अपनी साधारण रूपरेखा और प्रधान अङ्गों में वह बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा से अभिन्न है।

दस्तकारी—बुनियादी दस्तकारी किसी स्कूल में कताई-बुनाई रही, किसी में कृषि और किसी किसी में गत्ते और लकड़ी के काम। पर हर स्कूल में बुनियादी दस्तकारी के अलावा गौण या सहायक रूप से एक या अधिक अन्य दस्तकारियां भी चलती रहीं जिन्हें छात्र अपनी इच्छा के अनुसार शौकिया करते रहे। इनमें कुछ के नाम ये हैं:—चटाई बनाना, सूची शिल्प (कसीदा काढ़ना), टोकरी बनाना इत्यादि बागवानी तो प्रायः सभी स्कूलों में चलती रही। साधारणतः हर स्कूल में एक बाग है जिसे छात्रों ने ही तैयार किया है।

छात्रसंख्या—कुल छात्र संख्या ५०७५ रही और हाजिरी ३७४९ अर्थात् प्रतिशत प्रायः ७४। इनमें १६६२ पहले वर्ग में थे, ११६४ दूसरे वर्ग में, १०४६ तीसरे वर्ग में और ८७३ चौथे वर्ग में। छात्रों में बालिका एक भी न थी, सभी बालक ही थे।

प्राप्त योग्यता का मान :—साधारण वस्तुओं और विषयों की जानकारी में अ-बुनियादी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों की अपेक्षा बुनियादी स्कूलों के छात्र आगे बढ़े रहे। काम करने की मनोवृत्ति तथा जिम्मेदारी के वर्ताव में भी वे उनसे बढ़े चढ़े रहे। बुनियादी स्कूल के छात्रों के शब्दज्ञान की जांच के लिये पहले वर्ग के छात्र जितने शब्द सीखते हैं उनका लेखा रखा गया था। उस लेखासे पता चला कि संख्या में जितने शब्द अ-बुनियादी स्कूल के छात्र साल भर में सीखते हैं उतने शब्द बुनियादी स्कूल के एक औसत दर्जे के छात्रने पाँच महीने में ही सीख लिये। इसका कारण अवश्य यही था कि बुनियादी स्कूल के छात्रों को दस्तकारी आत्मप्रकाशन के अनेकानेक सुयोग देती है जो अ-बुनियादी स्कूलके छात्रों को नही मिलते।

बुनियादी शिक्षा का फल—(क) छात्रोंपर- बुनियादी शिक्षा का फल यह हुआ है कि इस शिक्षाके पानेवाले छात्र जड़ श्रोता न बनकर—जैसा कि साधारण विद्यालयों के छात्र बन जाते हैं जो चुपचाप बैठे अपने शिक्षकों की बातें सुना करते और अपनी बुद्धि की बहुत कम ही परिचालना करते हैं तथा क्रियाशील तो होते ही नहीं—वे अपने शिक्षकों के क्रियाशील सहयोगी बन जाते हैं। वे किसी चलते हुए काममें दिलचस्पी से भाग लेते हैं और एक साथ दो घंटे से भी ऊपर उसमें लगे रहते हैं। वे अ-बुनियादी स्कूल के अपने भाइयों से अधिक आनन्दयुक्त भी रहा करते हैं, सवालों का फुर्ती से जवाब देते और जो कुछ उन्हें कहा जाता है या जो कुछ वे सुनते हैं उसके मुताबिक आवश्यक काम करने को तैयार हो जाते हैं। उनकी जिम्मेदारी की भावना भी बढ़ती और दृढ़ होती जाती है। छात्रों की औसत हाजिरी में [illegible] निस्सन्देह आगे बढ़े हुए हैं।

(ख) शिक्षकों पर—इस नयी शिक्षणपद्धति के कारण शिक्षकों का ... अधिक कठिन हो गया है। उन्हें साधारण स्कूलों के शिक्षकों से—जिनके ... निर्धारित पाठ्यपुस्तकें पढ़ाने का प्रशस्त राजमार्ग खुला हुआ है—ज्यादा ... करना पड़ता है। पर अन्य शिक्षकों के शिक्षण की तुलना में उनका शिक्षण कहीं ज्यादा जानदार और मानीदार हो गया है।

(ग) अभिभावकोंपर—छात्रों के अभिभावकों की उदासीनता घटती ... रही है और इस शिक्षाके प्रति उनकी सहानुभूति दिन-दिन बढ़ती जा रही है। उनकी निर्मूल आशंकाएं, मालूम पड़ता है, बहुत कुछ दूर हो गयी हैं।

दस्तकारी-केन्द्रित शिक्षा की छात्रों के बौद्धिक तथा सर्वांगीण विकास में कहांतक सहायता दी है—इस विशिष्ट प्रश्न के जो उत्तर मिले हैं उनका सार यह है कि प्राथमिक शिक्षा में साधारणतः जो छीजन (wastage) होता है, जिसकी अत्यधिक मात्रा अफसोस की बात है, वह इस शिक्षाके प्रभाव से ... कम हो गया है तथा अटकन (Stagnation) या छात्रों का एक ही वर्ग में कई सालतक रहना भी कम हो गया है। उदाहरणार्थ, श्रीनगर के ... बेसिक स्कूल में जितने छात्र प्रथम वर्ग में बुनियादी शिक्षा में दाखिल हुए उनमें ७३ प्रतिशत अभी तक स्कूल में मौजूद हैं। इसी प्रकार जितने छात्र पहले पहल (द्वितीय वर्ग में) बुनियादी शिक्षा में दाखिल हुए उनमें ५८ प्रतिशत (१४ में ८) अभीतक चौथे वर्ग में वर्तमान हैं। फिर, रामबाग बुनियादी स्कूल ... जितने छात्र प्रथम वर्गमें बुनियादी शिक्षामें भर्ती हुए थे उनमें ५२ प्रतिशत ... वर्ग में मौजूद है। शहीदगंज (श्रीनगर) बुनियादी स्कूल में २४ छात्र प्रथम ... में दाखिल हुए थे। उनमें १६ तीसरे वर्ग तक पहुंच गये हैं और अभीतक ... में मौजूद है, जो ७८ प्रतिशत होता है। उत्तरदाताओंने दो ऐसे छात्रोंका जिक्र किया है जिन्हें एकदम जड़बुद्धि कहकर लोगोंने छोड़ दिया था पर दस्तकारी-केन्द्रित बुनियादी शिक्षा में भर्ती होते ही उनमें बौद्धिक विकाशके शुभ लक्षण दिखाई पड़ने लगे और साल भर में ही वे अपने सहपाठियों के साथ कदम मिलाकर चलने योग्य हो गये।

एक सवाल खासकर यह भी पूछा गया था कि किसी छात्र पर इस शिक्षासे किसी तरहका स्पष्टतः बुरा असर तो नहीं पड़ा पर सभी उत्तरदाताओंने लिखा है कि ऐसे किसी भी छात्रका उन्हें पता नहीं मिला।

दस्तकारीकी उत्पत्ति—भिन्न भिन्न दस्तकारियोंसे जो चीजें तैयार होती हैं वे प्रायः स्कूलके अपने कामोंमें ही व्यवहृत होती हैं, बहुत कम ही बेची जाती हैं। सूत से प्रायः झाड़न, गमछे वगैरह तैयार किये गये। लकड़ीके कामसे क्लासोंके लिये किंडरगार्टेन के सामान, नकशों के फ्रेम, ब्लैक बोर्ड वगैरह बनाये गये; गत्ते के कामसे स्कूलके इस्तेमालके लिये अलबम, फाइल, तकली और साबुन रखने के बक्स, ब्लाटिंग पैड आदि बनाये गये। सेन्ट्रल बेसिक स्कूल, जम्मू, सरकारी दफ्तरों के लिये फाइल वगैरह बनाया करता है।

ट्रेनिंग स्कूल—शिक्षक तैयार करने के लिये श्रीनगरमें एक ट्रेनिंग स्कूल है। इसमें ९८ शिक्षकछात्र हैं (५८ शिक्षा पायें शिक्षक और ४० नये शिक्षक)। अबतक प्रायः ३०० शिक्षक इसके द्वारा तैयार किये गये हैं—प्रति वर्ष १०० के हिसाब से। शिक्षाका काल एक साल है पर इस अवधि में पूरे सिलेबसकी शिक्षा नहीं दी जा सकती। ट्रेनिंग स्कूलके द्वारा बुनियादी स्कुलोंके छात्रोंके पढ़नेके लिये प्रायः १०० छोटी छोटी हस्तलिखित पुस्तकें तैयार की गयी हैं और समवाय पद्धतिके आधारपर शिक्षक-छात्रों के दिये प्रायः ६००० पाठ संग्रह किये गये हैं जिनको सुशृंखल और सिलसिलेवार बनाना है। ट्रेनिंग स्कूलकी बुनियादी दस्तकारी कताई-बुनाई, कृषि और लकड़ी और गत्ते के काम हैं। बुनियादी दस्तकारीमें हर रोज डेढ़ घंटा समय दिया जाता है। बुनियादी दस्तकारी के अलावा बहुत सी दूसरी दस्तकारियां भी जारी की गयी हैं जिनमें से किसी एकको शिक्षक-छात्र अपनी रुचि के अनुसार शौकिया करते हैं। इनमें कुछ के नाम ये हैः—कागज बनाना, चीक बनाना, बेंतका काम, जिल्दसाजी, लोहारी, साबुन बनाना, स्याही बनाना, पोमेड बनाना, सिरमें लगाने का तेल तैयार करना, जूतोंकी पालिश तैयार करना, मिट्टी और प्लस्टर के माडेल बनाना, मोजे वगैरह बुनना, सूची शिल्प, मुर्गी पालना, रेशम के कोए पालना, पालिश करना, चित्रकारी, आदि। इन दस्तकारियों में नित्य आध घंटा समय दिया जाता है।

नयी तालीम भवन

बुनियादी तालीम की शिक्षणसंस्था

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम, वर्धा, मध्यप्रान्त

१—नयी तालीम भवन बुनियादी शिक्षा के लिये कार्यकर्ता, कार्यकर्त्री तथा अध्यापक और अध्यापिका तैयार करने की संस्था होगा। अन्तर्गत एक अध्यापन केन्द्र और एक आदर्श बुनियादी पाठशाला होगी।

२—शिक्षण काल—यहाँ का शिक्षण-काल साधारणतया दस का होगा—१ ली जुलाई से ३० अप्रील तक। खास मांग होनेपर ज्ञान करने के लिये संक्षिप्त पाठ्यक्रम तथा शिक्षणशिविर का भी समय आयोजन हुआ करेगा।

३—प्रवेश—केन्द्र में भर्ती होने की इच्छा रखनेवाले उम्मीदवा निम्नलिखित मान के साधारण ज्ञान की अपेक्षा की जायगी :—

मातृभाषा—मातृभाषा पर खासा अच्छा अधिकार, अर्थात् इतनी योग्यता कि मातृभाषा में वैज्ञानिक और विशिष्ट विज्ञान या कला (Technical) साहित्य ठीक से व्यवहार में ला सकें तथा १ ले, २ रे और वर्गों के लिये सबक के नोट और पाठ्य-सामग्री मातृभाषा में तैयार कर लें।

हिन्दुस्तानी—हिन्दुस्तानी का इतना व्यावहारिक ज्ञान कि व्या को समझ सकें और बुनियादी शिक्षा सम्बन्धी साहित्य को पढ़ सकें।

सामाजिक अध्ययन :—भारतीय इतिहास और भूगोल के ज्ञानके साथ संसार के इतिहास और भूगोल की रूपरेखा का ज्ञान।

गान्धी जी के रचनात्मक कार्यक्रम की साधारण रूपसे तथा ग्राम-पुन योजना की विशेष रूपसे जानकारी।

वर्तमान काल की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं घटनाओं का साधारण ज्ञान।

गणित :—अंकगणित सम्पूर्ण और रेखागणित का प्रारम्भिक

साधारण विज्ञान और यंत्र-विज्ञान का ज्ञान रखनेवाले उम्मीदवा भर्ती के लिये ज्यादा पसन्द किया जायगा।

आवश्यक होने पर उम्मीदवारों को हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की परीक्षा देनी चाहिये जो किसी स्थानीय संस्था या व्यक्ति-विशेष की देख होगी।

४—प्रवेश पाने के लिए आवेदनपत्र नीचे के तफसील के मोताबिक पूरे व्योरे के साथ मंत्री, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, वर्धा के पास भेजना चाहिये। आवेदन-पत्र पर किसी शिक्षणसंस्था या सभा, स्थानिक स्वायत्त संस्था, राष्ट्रीय कार्य-कर्त्ता या शिक्षा-क्षेत्र में काम करनेवाले सज्जन की सिफारिश होनी चाहिए :—

पूरा नाम ....

पता ....

जन्म-तिथि ....

मातृ-भाषा ....

योग्यता

पढ़ाई लिखाई सम्बन्धी ....

दस्तकारी ....

समाज सेवा ....

हिन्दुस्तानी का ज्ञान ....

पहिले किए काम का विवरण ....

स्वास्थ्य सम्बन्धी विवरण ....

पाठ्य-क्रम

बुनियादी शिक्षा का उद्देश्य है किसी चुनी हुई दस्तकारी तथा बच्चों के प्राकृतिक और सामाजिक प्रतिवेश के माध्यम के द्वारा बच्चों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण और सुसंगत विकास। पर आज जो लोग बुनियादी तालीम के शिक्षक बनने की शिक्षा पाने के उम्मीदवार हैं उनकी शिक्षा तो वर्त्तमान शिक्षापद्धति से ही हुई है। अतः अध्यापन केन्द्र का पहला काम यह होगा कि जहां तक संभव हो इन शिक्षक-छात्रों को बुनियादी तालीम के शिक्षक के लिये अपेक्षित मान तक पहुंचा दे। ऐसी दशा में शिक्षण-काल का काफी बड़ा हिस्सा उन्हें दस्तकारी की शिक्षा देने, उनकी सांस्कृतिक योग्यता का मान बढ़ाने तथा चित्रकारी और संगीत जैसी सृजनकरी कलाओं की शिक्षा देने में लगाना पड़ेगा। साथ ही साथ, छात्रों को अध्यापन कला की आवश्यक शिक्षा भी देनी होगी जिससे कि वे बुनियादी दस्तकारी के द्वारा बच्चों को शिक्षा देने की उचित योग्यता प्राप्त करें सकें।

साधारणतया दो पाठ्यक्रम होंगे जो दस दस महीने में समाप्त होंगे। पहला पाठ्यक्रम पूरा करने पर अध्यापक बुनियादी शिक्षाक्रम के प्रथम तीन वर्गों की शिक्षा देने की योग्यता प्राप्त करेंगे। पहला पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक समाप्त करने का प्रमाणपत्र पाने के बाद जो लोग उपयुक्त निरीक्षण में रहकर कम से कम दो वर्षों

तक किसी बुनियादी पाठशाला में काम कर चुकेंगे वे दूसरे पाठ्यक्रम की शिक्षा के योग्य समझे जायंगे। यह पाठ्यक्रम उम्मिदवारों को बुनियादी शिक्षा के प्रथम पांच वर्गों की शिक्षा देने की योग्यता प्रदान करेगा।

प्रथम पाठ्यक्रम की रूपरेखा

१—निम्नलिखित बुनियादी उद्योगों में से किसी एक के सम्बन्ध के सिद्धान्त और कौशलपूर्ण संचालन की शिक्षा।

(क)—कताई और उससे सम्वद्ध क्रियाएं।

(ख)- लकड़ी और धातु के काम।

२—साधारण विज्ञान के बुनियादी पाठ्यक्रम से अनुबद्ध बागवानी और कृषि की प्रारंभिक शिक्षा—शास्त्रीय और व्यावहारिक।

३—शिक्षा के सिद्धान्तः—

(क) किसी उत्पादक कार्य के द्वारा शिक्षा देने का आधारभूत सिद्धान्त।

(ख) पाठशाला का समाज से सम्बन्ध।

(ग) बाल-मनोविज्ञान (जहां तक हो सके स्थूल उदाहरणों के आधार पर) तथा किसी खास कला या दस्तकारी में कुशलता प्राप्त करने के मनोविज्ञान की सरल रूपरेखा।

(घ) शिक्षण-विधि—अनुबद्ध शिक्षा की योजनाओं के निर्माण और शिक्षण को विशेष रूप से लक्ष्य में रख कर।

(ङ) राष्ट्रीय जीवन की वास्तविक अवस्था को ध्यान में रखकर बुनियादी शिक्षा के उद्देश्यों का अध्ययन।

४—दस्तकारी, प्राकृतिक प्रतिवेश और सामाजिक प्रतिवेश इन तीनों केन्द्रों से सहज लगाव जोड़कर बुनियादी पद्धति के प्रथम तीन वर्गों के पाठ्यक्रम का विस्तृत अध्ययन।

५—अध्यापकों की देखभाल में शिक्षण का अभ्यास करना।

६—शरीर-विज्ञान, स्वास्थ्य-विज्ञान, सफाई और खाद्य-शास्त्र का साधारण ज्ञान—देहाती जीवन की वास्तविक समस्याओं को तथा प्रत्यक्ष व्यावहारिक उपयोग को विशेष रूप से लक्ष्य में रखकर।

७—शिक्षक-छात्रों का सांस्कृतिक मान उठाने तथा भारतवर्ष की आज की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं के प्रति उचित दृष्टिकोण उत्पन्न करने के विचार से पाठ्यक्रम।

(शेष पृष्ठ १६७, १६८ पर)

हमारी समस्याएं

ले०--पं० रामशरण उपाध्याय, मंत्री, बेसिक एज्यूकेशन बोर्ड, बिहार.

बुनियादी तालीम के क्षेत्र में काम करते हुए हमारे तीन वर्ष समाप्त हो चुके और हम ऐसा कह सकते हैं कि हमारे महान प्रयोग की नैया अब मँझधार में आ पहुँची है। हमें इस बात का गर्व है कि, बिना किसी पूर्व- के उदाहरण के, बिना पहले के अपने निजी अनुभव के, बिना किसी चतुर तथा कुशल नाविक के नियंत्रण अथवा सहारे के, अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए, गहरे पानी के भीतर छिपी हुई चट्टानों के ठोकरों से तथा ऊपर के बवंडरों से इसे बचाते हुए, हम इसे यहां तक ले आए हैं। साथ ही हमें सावधान तथा सतर्क भी होना है। हम तो अभी अगमधार के बीचतक ही पहुँचे हैं। किनारे लगना अभी बाकी है पतवार ढीला हुआ, प्रयत्न में तनिक भी शिथिलता आई और हम डूबे, आप डूबे और नैया को भी ले डूबे।

आज का हमारा यह सम्मेलन हमारे इस संकल्प का द्योतक है कि हम सचेत और जाग्रत रहेंगे तथा जो कर चुके केवल उसी पर संतोष न कर जब तक हम अपने ध्येय की प्राप्ति न कर लें, सदा आगे बढ़ते रहेंगे आगे बढ़ते हुए हमें अपने अनुभव से लाभ उठाना है। जिन साधनों से सफलता मिली है उन्हें पुष्ट करना है और जो कुछ भी कठिनाइयां अभी तक रुकावट डाल रही हैं उन्हें अपनी अनुभव-जन्य सम्मिलित शक्ति के प्रयोग से बहिष्कृत करना है

अपनी सफलताओं की विज्ञप्ति करना अपना काम नहीं है। अपने प्रान्त तथा अपने देश के सहृदय, उच्चाशय तथा विज्ञ लोगों की आशा तथा विश्वास हमारी सच्ची लगन तथा चेष्टाओं में है, इसका ज्ञानमात्र ही हमारे उत्साह तथा प्रयत्न की दृढ़ता के लिए पर्याप्त है। इसेलिए हम आपका ध्यान केवल अपनी कुछ कठिनाइयों तथा त्रुटियों की ओर ही आकर्षित करेंगे और आप से आशा करेंगे कि आप उनके सुलझाव तथा पूर्त्ति के निमित्त उनपर अपने इन तीन वर्षों के मनन, चिंतन तथा अनुभव का प्रकाश डालेंगे

* वृन्दावन में ... के सम्मेलन में सभापति के आसन से दिये गये भाषण का संक्षिप्त रूप।

हमारी पहली तथा सब से बड़ी कठिनाई छात्रों की उपस्थिति के
में है। इसमें गत तीन वर्षों में हम बहुत आगे बढ़े हैं। हमारी वहियों में
छात्रों के नाम हैं उनमें गत वर्ष में प्रथम वर्ग में ७० प्रतिशत, दूसरे में
प्रतिशत तथा तृतीय में ७६ प्रतिशत उपस्थित रहे। गत वर्ष की प्रथम
५० प्रतिशत तथा द्वितीय वर्ग की ७० प्रतिशत उपस्थिति की तुलना में यह
अवश्य है, किन्तु जब तक स्कूल में प्रविष्ट छात्रों की उपस्थिति कम से
प्रतिशत न पहुँच जाय, हम अपने को बधाई का पात्र नहीं समझ सकते।
सघन क्षेत्र में स्कूल में आने योग्य जितने बालक हैं, अभी हम उनमें ५०
ही अपने प्रभाव में ला सके हैं तथा अपनी शालाओं की ओर आकृष्ट क
बचे हुए ५० प्रतिशत को भी अपनी शालाओं में प्रविष्ट किए बिना ह
क्योंकर ले सकते हैं? उपस्थिति की समस्या से ही सम्बद्ध, बच्चों के
अटकन की समस्या है। जो बच्चे हमारे स्कूलों में आ जाते हैं वे यदि सा
पूरे पाठ्यक्रम को समाप्त किए बिना ही स्कूलों को छोड़ देते हैं, तो स्कूल
व्यतीत किया हुआ समय उनकी तथा हमारी दोनों की दृष्टियों से ही प्रायः
ही हो जाता है। मैं इतना कहने का साहस अवश्य करूंगा कि हमारी न
की शालाओं में कुछ वर्षों की शिक्षा पाकर भी जो छात्र निकल जायँगे उन
संसर्ग में व्यतीत हुआ समय उस अनुपात में नष्टप्राय नहीं होगा जि
प्रारम्भिक पाठशालाओं में कुछ वर्षों की शिक्षा पाए हुए छात्रों का समय
उनकी शिक्षा केवल किताबी शिक्षा थी तथा उनमें प्राप्त ज्ञान केवल अक्षर
ज्ञान था। थोड़े दिनों के अक्षराभ्यास के बाद शाला छोड़ देने पर
निरक्षर बन जाते थे और पाठशाला में व्यतीत उनके कुछ वर्ष सर्वथा नि
नष्ट हो जाते थे। किन्तु हम तो उन्हें कोरा कागजी ज्ञान नहीं देते। हम
की शिक्षा देते हैं। हमारे पास वे जिस दिन से आते हैं तथा जब तक
पास रहते हैं हमारी शैली उनके जीवन के सभी विभागों को प्रभावित करती
सफाई, सदाचार, रहन-सहन, आचार-व्यवहार—सभी पर हमारी छाप पड़ती
यह असंभव है कि वे जब हमें छोड़ जायं तो अपने जीवन पर नित दिन के
इन प्रभावों को भी वे सर्वथा हमारे पास छोड़ जायं।

'यत् पठितं तत् गुरवे समर्पितं' वाली कहावत हमारी शिक्षापद्धति
नहीं होती। [illegible] पुरानी पाठशाला का गई शिक्षित छात्र पु
भट्टाचार्य भले ही हो जाता हो, पर जीवन ज्ञान की हमारी क्रियात्मक शाला

के लिए भी शिक्षा प्राप्त छात्र पुनः एकबारगी ही असमाजिक, अशिष्ट तथा ज्ञानशून्य क्योंकर हो जायगा ? किन्तु इतना अवश्य है कि शिक्षा पूरी किए ही जितने भी छात्र निकलते जायँगे वे व्यक्तित्व के पूर्ण विकास से वंचित रहेंगे प्रयोग की अपनी इस अवधि में हम उतने संख्यक अपनी शिक्षा के पूर्ण फलों को तथा राष्ट्र के सम्मुख उपस्थित न कर सकेंगे। अस्तु, हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम शक्ति इसकी पूरी चेष्टा करें कि हमारे यहाँ जो छात्र भी आ जाय, वह हमारी ा के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को समाप्त किए बिना हमारा साथ न छोड़े। छीजन की हम जहाँ तक भी कम कर सकें, हमें करना ही चाहिए। साथ साथ, हमारी चेष्टा भी होनी चाहिए कि हमारे छात्र बराबर ही आगे बढ़ते जायँ। वे कहीं रुकें। सात वर्ष का पाठ्यक्रम वे सभी सात वर्षों में ही समाप्त करें, उससे अधिक में नहीं। हमारी पद्धति में एक वर्ष के किए काम को बच्चों से दूसरे वर्ष में उसी में उन्हें रखकर दुहरवाना विधान के विरुद्ध है। उपस्थिति की न्यूनता तथा श्चितता हमें इस आदर्श के अनुसार चलने नहीं देती और हमें कुछ न कुछ य छात्रों को नीचे के वर्गों में रोक रखना पड़ता है।

आप अपने स्कूलों के आँकड़ों को देखेंगे तो आपको पता लगेगा कि हम जब अपने आसपास के गाँव में विशेष रूप से प्रचार करते हैं, बच्चे हमारे पास हैं तथा उनके माँ-बाप उन्हें हमारे यहाँ भेजते हैं। किन्तु कुछ दिनों के बाद उनमें बहुतेरे हमें छोड़ जाते हैं अथवा उनके माँ-बाप उन्हें हम से ले लेते हैं। १९३९ के अप्रैल तथा मई महीनों में हमारे यहाँ जितने छात्र आये, उनमें से हमें पहली अगस्त १९३९ तक छोड़ गए। पुनः १९४०,४१ तथा १९४२ के म में जितने छात्र स्कूलों में भर्ती हुए, उनमें पर्याप्त संख्यक छात्र उन्हीं वर्षों के मार्च तक स्कूल से निकल गए। हमें विचारना चाहिए कि ऐसा क्यों हुआ; अथवा उनके माँ-बाप अथवा दोनों ही हमसे क्यों विमुख हुए ? हम में अथवा कार्यपद्धति में कोई कमी तो नहीं है ? क्या हम उसमें कुछ सुधार नहीं कर ?

अब हम पुनः इन्हीं आँकड़ों को देखें और अपने अपने स्कूलों के संबंध में र करें कि जो छात्र पहले वर्ष में स्कूलों में दाखिल हो कर ता० १-८-३९ तक न रहे उनमें कितने अभी चौथे वर्ग में हैं, कितने तीसरे वर्ग में हैं, कितने में अथवा कितने पहले में। जितने चौथे में हैं, वे हमारी सफलता के परिचायक जितने नीचे के वर्गों में हैं, उनके सम्बन्ध में हम अटकन के दोष के भागी होते हैं

तथा जो एकदम निकल गए हैं, वे हमारें छीजन हैं। उसी प्रकार १६४० १६४१ में जो पहले पहल भर्त्ती हुए, उनका भी हिसाब हमें कर लेना चाहिए अपनी सफलता तथा विफलता को कूत लेना चाहिए। यथासम्भव विफ में प्रत्येक के कारण को ढूंढ़ना चाहिए और तब आगे के लिए मार्ग को करने के उद्देश्य से उपस्थिति के प्रश्न के ऊपर सभी पहलुओं से अपना विचार करना चाहिए।

दूसरा बिचारणीय प्रश्न मूल उद्योग की योग्यता का है। हमारी का माध्यम कोई न कोई उत्पादक क्रिया होनी चाहिए। जो कुछ भी हमारे यहाँ प्राप्त करेंगे उनका सम्बन्ध उक्त उत्पादक क्रिया के अभ्यास से तथा की प्राकृतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों से होगा। इसलिए इस पर हम भी सतर्क तथा सचेष्ट रहें थोड़ा ही होगा किताबी शिक्षा में वर्ष के अंत महीनों के परिश्रम से ही काम-चलाऊ सफलता भले ही मिली हुई जान पड़ती पर उद्योग तथा जीवन की शिक्षा में यह कदाचित् संभव नहीं। जीवन कल के जीवन से परिपुष्ट होता है और शृंखला यों ही बँधती वर्ष के अंत की सफलता वर्ष भर की क्रियाशीलता का निचोड़ ही होगी हमें अपने गत तीन वर्षों के अपने मूल उद्योग कताई के फल पर एक दृष्टि चाहिए और निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार करना चाहिए:—

क्या हमने वर्ष के आरंभ से ही पाठ्यक्रम की अपेक्षित योग्यता को रखा है? क्या हमने उस अपेक्षित योग्यता को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक प्रत्येक महीने के आरंभ में अपने काम का ढांचा निश्चित किया है? क्या छात्रों की प्राप्ति के अपने बनाये तथा जांचे हुए हिसाब की तुलना तैयार विक्रय से प्राप्त द्रव्य के हिसाब से की है? क्या हमने हिसाब लगाया है कि और तैयार माल के बीच में सैकड़े कितने का छीजन हुआ? क्या हमने सोचा हमारे मुख्य कच्चे माल (अर्थात् रूई) तथा साथ के लगने वाली फुटकल के मूल्य में सैकड़े कितने का अनुपात आता है? क्या हमने ऐसा कभी कि मूल उद्योग में केवल आर्थिक नकशे का ही स्थान नहीं है, बल्कि अथवा निपुणता के नकशे का भी स्थान है? क्या हमने अपने उद्योग के पर, चाहे वह मूल उद्योग कताई सम्बन्धी हो अथवा वह सहकारी उद्योग सम्बन्धी हो, व्यावहारिक दृष्टि से पूर्ण रूप से विचार किया है, अर्थात् जितना खर्च है और छात्रों के पारिश्रमिक का जितना मूल्य हो प्राप्ति कम से कम उनके बराबर न हो, तबतक हम अपने को सफल नहीं मान सकते

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपने गत वर्ष के द्वितीय अखिल भारतवर्षीय मौलिक-शिक्षा सम्मेलन के अध्यक्षपद से दिए गए डा० जाकिर हुसैन साहिब के भाषण को अवश्य पढ़ा होगा। उक्त भाषण में उन्होंने काम के द्वारा दी जाने वाली शिक्षा के सम्बन्ध में काम शब्द की व्याख्या बहुत ही सुन्दर रीति से की थी, मैं उनके शब्दों को दुहराकर आपका समय लेना नहीं चाहता। लेकिन मैं निवेदन करूँगा कि हमारे लिए यह समय आगया है कि हम सोचें कि क्या, जब हम किसी काम का आरंभ करते हैं तब उसका ढांचा ठीक से अवश्य तैयार कर लेते हैं, क्या उसके उपकरणों, साधनों और विधियों पर पूर्ण विचार कर, किसी एक का चुनाव करते हैं तथा क्या हम सदा उसकी परीक्षा करते हैं कि जैसा सोचा था वैसा ही उतरा और यदि नहीं, तो क्यों नहीं! फिर भी क्या हम अपनी शिक्षणविधि में काम का जो एक महत्त्वपूर्ण तथा प्रधान उद्देश्य है कि वह बौद्धिक विकास और चरित्र-निर्माण का साधन हो उसका सदा ध्यान रखते हैं?

मैं अनुरोध करूँगा कि इस सम्मेलन के अवसर के विचार-विनिमय के फलस्वरूप हम आगे के लिए अपना मार्ग कुछ अधिक प्रशस्त करलें।

इस संबंध में इस वर्ष के कार्यक्रम में मैं दो और बातों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करूँगा—एक यह कि हिन्दुस्तानी तालीमी संघ द्वारा प्रस्तावित धुनाई के त्याग के साथ केवल तुनाई के द्वारा पूनी बनाने की पद्धति का प्रयोग शैक्षणिक तथा आर्थिक दोनों दृष्टियों से ही हम किस प्रकार करें तथा युद्धजनित इस बहुमुखी अभाव के अवसर पर अपने स्कूल के अहातों की जमीन का उपयोग कर अधिक अन्न उत्पन्न करने के प्रोग्राम में हम किस प्रकार सहायक बनें।

तीसरी समस्या स्वतंत्र समस्या नहीं है। प्रथम दो समस्याओं के अन्तर्गत ही हम उसका समावेश कर सकते हैं। किन्तु अपनी शिक्षणपद्धति की व्यावहारिकता तथा सफलता के बीज इसमें सन्निहित है इसलिए हमें अपने अगले वर्ष के कार्यक्रम को निर्णय करते समय इस पर स्वतन्त्र रूप से विचार कर लेना चाहिए। हम जिन मूल उद्योग तथा सहकारी उद्योगों (कताई-बुनाई तथा बागबानी-कृषि) के द्वारा अपनी शिक्षा दे रहे हैं, वे हमारे सात वर्षों के पूरे पाठ्यक्रम को व्याप्त करते हैं। हमने अनुभव से देखा है कि दिन के बाद दिन, सप्ताह के बाद सप्ताह तथा मास के बाद मास उद्योग के काम का सम्बन्ध तत्काल के कुछ प्रत्यक्ष उद्देश्यों और फलों के साथ न हों, तो वे उतने ही जी उकताने वाले तथा थकाने वाले होते हैं जितने कि पुरानी शालाओं के किताबी काम।

हमने यह भी देखा है कि हम जब-जब कुछ छोटा-मोटा कार्यक्रम बनाते हैं, जैसा कि पेड़ रोपने के हफ्ते, अपने आप निश्चित किए हुए अविराम कार्य, यात्रा की तैयारी, कैम्प की तैयारी इत्यादि, तो बच्चे अत्यधिक उत्साह से काम करते हैं तथा अनायास विभिन्न ज्ञान प्राप्त करते हैं। इसलिए हमें गत वर्ष के इन छिट-फुट तथा असम्बद्ध संयोजनों के अनुभवों के आधार पर, अपने पाठ्यक्रम के अनुसार व्यक्तित्व के विकास पर पूर्ण दृष्टि रखते हुए, प्रत्येक वर्ग के लिए वर्ष भर के हेतु संयोजनों (काम की इकाइयों) का एक शृंखलाबद्ध कार्यक्रम बना लेना चाहिए और उन्हें व्यवहार में लाकर अगले वर्ष के सम्मेलन में इस पर अपना अनुभव प्रकाशित कर आगे का मार्ग निश्चित करना चाहिए। किंतु, स्मरण रहे कि इन शृंखलाबद्ध संयोजनों से भी पूरे लाभ तभी निकलेंगे जब इन्हें व्यवहार में लाने के पूर्व हम अपने बच्चों की जिज्ञासा तथा उत्सुकता को इनके सम्बन्ध में इस रूप से जागृत कर सकेंगे कि उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगेगा कि ये काम उनके अपने चुने हुए हैं तथा उनके किन्हीं आवश्यकीय उद्देश्यों की पूर्त्ति करते हैं। काम करते हुए जिस ज्ञान की आवश्यकता प्रतीत होती है, उसकी प्राप्ति में प्रयत्न सुखदायी होता है और उस प्रकार का प्राप्त ज्ञान चिरस्थायी होता है और जीवन का अंग बन जाता है। जिस प्रकार यह सत्य है, उसी प्रकार यह भी सत्य है कि दूसरे का दिया हुआ काम, चाहे वह दूसरा प्रिय तथा पूज्य ही क्यों न हो, और काम कितना भी उपादेय क्यों न हो, भार होता है और अपना चुना हुआ काम या अपने से सम्बन्ध रखने वाला काम, ऐसा काम जिसका प्लैनिंग स्वयं किया हो, चाहे वह कठिन से कठिन क्यों न हो, प्रिय होता है और आनन्ददायी होता है। यदि हम अपने सम्मिलित अनुभव के आधार पर ऐसे कुछ कामों के नमूने निश्चित कर सकें, तो बड़ा ही लाभ होगा। परिस्थिति तथा रुचि-भेद के अनुसार भिन्न-भिन्न शिक्षक अपने कार्यक्रम का निश्चय अपने छात्रों के सहयोग से हमारे निर्णय के अनुसार कर लेंगे।

———

बिहार के बेसिक स्कूलों के प्रधानाध्यापकों का सम्मेलन

संक्षिप्त रिपोर्ट

बृन्दावन सघन-क्षेत्र के बेसिक स्कूलों के प्रधानाध्यापकों का एक सम्मेलन, जिसमें ऑरगेनाइजर तथा सुपरवाइजरों के अलावा पटना ट्रेनिंग कालेज के अन्यतम अध्यापक श्री नरेशचन्द्र चट्टोपाध्याय, श्री पं० प्रजापति मिश्र तथा श्री द्वारिका सिंह अध्यापक, पटना बेसिक ट्रेनिंग स्कूल, इत्यादि भी सम्मिलित थे, ता० २० और २१ जून, १९४२, को चौबेटोला पडुकिया बेसिक स्कूल में, रायसाहब पं० रामशरण उपाध्याय, सेक्रेटी, बेसिक एज्यूकेशन-बोर्ड, बिहार, के सभापतित्व में हुआ।

प्रथम दिन, सभापति महोदय ने, अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए, अपने भाषण के सिलसिले में (जो अन्यत्र "हमारी समस्याएं" शीर्षक में लेख के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है—सम्पादक) बुनियादी शिक्षा की तीन वर्षों की प्रगति पर दृष्टिनिक्षेप करते हुए अपने अनुभवों को बताया और अन्त में तत्सम्बन्धी उपस्थित निम्नलिखित समस्याओं पर दूसरे दिन के अधिवेशन में अपने अपने सुझाव पेश करने का प्रधानाध्यपकों से अनुरोध किया। समस्याएं ये थीं:— १. छात्रों की हाजिरी की कमी २. दस्तकारी की निपुणता ३. संयोजन-पद्धति (Project-Method) ४. धुनाई के बदले तुनाई।

तत्पश्चात् श्री चट्टोपाध्याय जी ने एक सारगर्भित भाषण दिया जिसमें बालकों की योग्यता की माप के लिये माप-दंड की आवश्यकता बताते हुए पाँच पाँच प्रश्नों की एक एक प्रश्नावली तैयार करने का हर प्रधानाध्यापक से अनुरोध किया, जिनके आधार पर सारी बुनियादी शिक्षा का मापदंड भविष्य में निर्धारित किया जा सके।

इसके बाद पहले दिन की बैठक समाप्त हुई।

दूसरे दिन ता० २१, को उपरोक्त विषयों पर वाद-विवाद करते हुए शिक्षकों ने अपने-अपने सुझाव पेश किये।

(क) "छात्रों की उपस्थिति" में वृद्धि लाने का उपाय बताते हुए श्री गुणराज राय ने कहा कि शिक्षा अनिवार्य कर दी जाय और बच्चों के लिये कागज तथा किताब आदि का प्रबन्ध किया जाय क्योंकि इलाका बहुत ही गरीब है।

मौलवी अजीजुल हसन ने स्थानीय व्यक्तियों की एक कमेटी बनाने की राय दी जो शिक्षकों को इस काम में सहायता दे।

श्री बाबूलाल कुलकिंकर ने कहा कि लड़कों को उनके सूत का कुछ प्रोत्साहन के रूप में दिया जाय।

कुछ इसी तरह के मिलते-जुलते विचार श्री बलदेव सिंह तथा मौ० उंर-रहमान ने भी पेश किये। इस सम्बन्ध में पंडित प्रजापति मिश्रजी के विचार मूल्यवान थे।

(ख) दस्तकारी की निपुणता पर सर्वश्री संत प्रसाद, ज्ञान र जनार्दन सिंह केदारनाथ चौधरी तथा बलदेव लाल कुलकिंकर ने अपने-अ सुझाव प्रकट किये उनका सार यही था कि दस्तकारी की क्रियाओं में विविधता जाय और जहाँ तक हो सके बच्चों के निजी जीवन से उसका सम्बन्ध स्थापित जाय।

(ग) "संयोयन पद्धति" पर बाबू शिवदयाल सिंह ने अपने अनु आधार पर कुछ प्रोजेक्ट रखें और अन्त में अध्यापक श्री द्वारिका सिंह ने भाषण में इशारा किया कि बागवानी तथा खेती अथवा कताई आदि दस्त जो भी उत्पादन हो वह यदि किसी रूप में बच्चों के अपने उपयोग में आ उनके प्रयास में सचाई आयेगी और उधर उनकी रुचि की भी वृद्धि होगी। उनके हाथों में निपुणता आयगी, काम में उन का मन लगेगा और तभी सुन्दर 'संयोजन पद्धति' का प्रादुर्भाव हो सकेगा।

अन्त में सभापति महोदय ने सब के विचारों का निचोड़ सम्मेलन के रखा और शिक्षकों की बुनियादी तालीम सम्बन्धी भिन्न भिन्न गलत धारणा निराकरण किया। उन्होंने 'धुनाई के बदले तुनाई' की क्रिया की सम्भाव्य तथा लाभों को बड़े सुन्दर ढंग से अधिवेशन के सामने उपस्थित किया।

इसके बाद उन्होंने सम्मेलन के निर्णयों को घोषित किया, जो नीचे जाते हैं, और सब के अन्त में उन्होंने बच्चों की सराहना की जिन्होंने स्वागत के निर्माण तथा कार्यसम्पादन में मुख्य भाग लिया था और काम में अच्छी और लगन का परिचय दिया था। उन्होंने सफ़ाई, सजावट, भोजन, पानी, जगह, [illegible] तथा आय-व्यय सम्बन्धी कामों को अलग विभागों में बाँट कर भिन्न-भिन्न कमीटियों के जिम्मे [illegible] लगा दिया था। इन सब में सहारे [illegible] शिक्षकों का हाथ था, पर इन्तजाम [illegible] अधिकांश [illegible] छात्रों का ही था।

सम्मेलन के निर्णय

१ उपस्थिति—

यह सम्मेलन इस बात पर संतोष प्रकट करता है कि जिस इलाके के प्राइमरी स्कूलों तथा मिडल स्कूल में आज से तीन वर्ष पहले केवल ३०० के लगभग छात्र शिक्षा पा रहे थे, वहां आज इन तीन वर्षों के अनवरत परिश्रम के फलस्वरूप २७ बुनियादी स्कूलों में २०५० छात्र शिक्षा पा रहे हैं। किन्तु अभी भी स्कूल में पढ़ने योग्य उम्र के सैंकड़े ५० लड़के स्कूलों में नहीं आते हैं। उन्हें स्कूलों में दाखिल करने और उनकी हाजिरी क़ायम रखने के लिये निम्नलिखित उपायों को काम में लाना चाहिए :—

(क) इलाके के लोगों की परले दरजे की दरिद्रता का विचार करते हुए तथा इस बात को ध्यान में रखते हुए कि थोड़े भी होश संभालने वाले बच्चे घर के कामों में थोड़ी बहुत मदद पहुँचा कर घर में रोटी के लिये आने वाले पैसे में कुछ न कुछ वृद्धि कर देते हैं स्कूल की उपस्थिति पूरी संतोषजनक नहीं हो सकती जब तक कि स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के स्कूल के भीतर कुछ जलपान तथा स्कूल में पहनने लायक कपड़े का कुछ न कुछ प्रबंध, उनके निजी परिश्रम के फलस्वरूप ही क्यों न हो, न कर दिया जाय।

(ख) प्रधानाध्यापक तथा शिक्षक अपने आसपास के गाँवों के निवासियों के साथ सहानुभूति-पूर्ण संपर्क स्थापित करें, उनके सुख-दुःख में सम्मिलित हों तथा जहां तक भी संभव हो उन्हें अपनी सेवाओं से अपनायें।

(ग) स्कूल की बैठक केवल एक समय प्रातः काल में पांच घंटों के लिये हो जिससे अपराह्न में छात्र, आवश्यकतानुसार, अपने घरेलू कामों में अथवा पैसे की प्राप्ति के लिये मजदूरी के कामों में अपना कुछ समय दे सकें। जिन छात्रों के लिये इन कामों में सम्मिलित होने की आवश्यकता न हो, वे अपनी इच्छा से पाठशाला में आ सकें तथा वहां उपादेय कामों के द्वारा अपनी उद्योग की कुशलता तथा पाठ्यक्रम के अन्य विभिन्न अंगों में अपनी योग्यता बढ़ा सकें। इसका प्रबंध शिक्षकों की ओर से प्रत्येक स्कूल में रहे। अपराह्न का यह समय, विशेषतः सूर्यास्त के लगभग का समय, यथासंभव घर के बाहर बिताया जाय, जैसे बागवानी, खेलकूद, प्रकृतिनिरीक्षण में। [illegible] के कामों का उनसे ब्योरा लिया जाय तथा ये काम भी यथासंभव शिक्षण के साधन बनाये जायँ।

(घ) चूँकि हमारी शिक्षापद्धति केवल अक्षर [illegible] वाली अथवा लिखाने वाली नहीं है, बच्चे तथा उनके अभिभावक उनकी जीवनसंबंधी [illegible] को प्रत्यक्ष रूप से किताबों के पन्ने के आधार पर देख नहीं सकते। हमारा [illegible] है कि हम बच्चों में आरंभ से ही नित नित के कामों के द्वारा कुछ न कुछ सीखने [illegible] चैतन्य लायें जिससे वे तथा उनके अभिभावक समझ सकें कि बुनियादी [illegible] में काम करते तथा सीखते हुए वे निजी तथा सामाजिक दोनों दृष्टियों से [illegible] प्रकार क्रमशः किन्तु सतत ही आगे बढ़ते जा रहे हैं। इसके लिये आवश्यक [illegible] कि प्रत्येक शिक्षक अपनी प्रश्न करने की कला का पूर्ण विकास करे जिससे [illegible] दिन-दिन, सप्ताह सप्ताह, मास मास तथा वर्ष वर्ष वह अपने छात्रों को [illegible] करा सके कि वे क्या क्या सीखते जा रहे हैं। बच्चों की दैनिक दिनचर्या [illegible] विकास में शिक्षकों की तथा छात्रों की दक्षता तथा योग्यता शिक्षकों [illegible] [illegible] विकास से ही आयेगी और ये क्रमगत विकसित दिनचर्यायें आगे [illegible] बच्चों के क्रमगत विकास के स्वतः प्रमाण होंगे। प्रथम वर्ग में जबतक [illegible] लिखना नहीं सीखा है, उनकी डायरियां, प्रति दिन के प्रश्नोत्तर के [illegible] उनकी ओर से उनके शिक्षक की लिखी होंगी।

(ङ) पाठशालीय वर्ष के आरंभ से दो तीन महीने पहले अर्थात् [illegible] [illegible] महीने से ही प्रत्येक स्कूल के शिक्षक को अपने अड़ोस पड़ोस के [illegible] दाखिल होने योग्य छात्रों की गणना की आवृत्ति कर लेनी चाहिए तथा उनके उनके अभिभावकों से मिलना जुलना आरंभ कर देना चाहिए। उपस्थिति [illegible] के प्रचार के काम का ढंग अब बदल जाना चाहिए। अपनी सहानुभूति, [illegible] सेवा, अपनी उपादेयता तथा अपनी सतर्कता के बलपर उपस्थिति बढ़ाने की [illegible] करनी चाहिए न कि बच्चों को स्कूल भेजने के लिये प्रत्यक्ष प्रेरणा अथवा [illegible] विनयपर।

(च) जो बच्चे स्कूल में आजायें उन्हें हम सात वर्षों तक अवश्य [illegible] [illegible] सकें इसका भरसक प्रयत्न रहना चाहिए। प्रत्येक बालक जो आकर चला जाय [illegible] पूरी जाँच करनी चाहिए। यदि कोई अनिवार्य घरेलू कारण हो तो उसे [illegible] लेना चाहिए। किन्तु प्रत्येक दशा में ही आत्मनिरीक्षण अवश्य करना [illegible] कि कुछ अपनी [illegible] के कारण तो नहीं छात्र हमें छोड़ गया अथवा हम [illegible] लिया था और अनवरत चेष्टा के द्वारा हम उसे फिर अपने यहाँ ले आ [illegible] [illegible] आत्मविश्वास का त्याग नहीं करना चाहिए।

२ उद्योग में नि[illegible]णता—सम्मेलन का ऐसा [illegible]स है कि शिक्षकों तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं के [illegible]व के साथ साथ अपने [illegible]योग के स्कूलों में उद्योग में निपुणता क्रमशः बढ़ती जा [illegible] है। साथ साथ अपेक्षित योग्यता तक पहुँचने के लिये अभी भी बहुत श्रम तथा सावधानी की आवश्यकता है। इसलिये इस सम्मेलन की सिफारिश है कि प्रत्येक स्कूल तथा प्रत्येक वर्ग के काम के संगठन में नीची लिखी बातों पर ध्यान दिया जाय :—

(क) प्रत्येक टर्म (छमाही) तथा वर्ष के आरंभ में सारे टर्म तथा वर्ष के काम का ढाँचा पाठ्यक्रम की अपेक्षित योग्यता को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों तथा छात्रों के सहयोग से तैयार किया जाय तथा इसका एक नक्शा तैयार कर प्रत्येक वर्ग में लटका दिया जाय कि प्रत्येक महीने की अपेक्षित योग्यता क्या है।

(ख) छात्र प्रत्येक महीने के अंत में इस नक्शे के विचार से अपनी-अपनी तथा वर्ग की प्रगति की जाँच करें तथा यदि कभी कोई कमी दीख पड़े तो दूसरे महीने में ही उसकी पूर्ति का प्रोग्राम बनाकर उसके अनुसार काम क[illegible]।

(ग) जाँच की कसौटी प्रत्येक यंत्र पर तथा प्रत्येक क्रिया की अपेक्षित योग्यता होनी चाहिए। योग्यता ठीक हो तथा उपयुक्त समय सोद्देश्य कामों में रुचि तथा उत्साह पूर्वक दिया जाय तो अपेक्षित प्राप्ति [illegible] ही।

(घ) प्रत्येक वर्ग का उद्योग संबंधी आर्थिक नक्शा (Economic chart) बनाने के पहले योग्यतासूचक नक्शा बनाना चाहिए।

(ङ) प्रत्येक छात्र, प्रत्येक वर्ग तथा प्रत्येक स्कूल को प्रत्येक टर्म अथवा वर्ष के अंत की अपनी निजी योग्यता पीछे के टर्म तथा वर्ष की अपनी निजी योग्यता से तुलना करनी चाहिए, वर्तमान वर्ष की अपने सहयोगियों की योग्यता से तुलना करनी चाहिए तथा पाठ्यक्रम की अपेक्षित योग्यता से तुलना करनी चाहिए। ध्येय को सदा ध्यान में रखना तथा अपनी प्रगति की जांच करते रहना तथा अपने साथियों की प्रगति से तुलना करते रहना उन्नति का मूल मंत्र है।

(च) उद्योग क्रियाओं के संबंध में व्यापारिक बुद्धि को सदा ध्यान में रखना चाहिए। उदाहरणार्थ, कच्चे माल तथा अपने परिश्रम के मूल्यों के योग के, कम से कम, बराबर [illegible] चीज का मूल्य आया अथवा नहीं; कच्चे माल का कितना प्रतिशत पूरे उपयोग में आया तथा कितना प्रतिशत छीजन में गया; छीजन उचित मात्रा से अधिक तो नहीं था; कच्चे माल में जितना खर्च हुआ, उद्योग के अन्य खर्चों के साथ उसका अनुपात कैसा रहा; फुटकर खर्च की मात्रा आवश्यकता से अधिक तो नहीं हुई; [illegible] उद्योग उद्योग

की वास्तविक क्रियाओं में कितना हुआ, तथा उद्योग के लिये वर्ग की स्थिति तथ्य समेटने में और उसके लिखतों के रखने में कितना हुआ इत्यादि इन सभी के अंकों को शिक्षकों तथा छात्रों को रखना चाहिए तथा अध्ययन करना चाहिए। कच्चे माल तथा फुटकर सामानों की किसी टर्म अथवा में कितनी आवश्यकता होगी, इसका हिसाब तथा अंदाज टर्म अथवा वर्ष से महीने पहले लगाना चाहिए और उसकी माँग करनी चाहिए जिससे से अच्छी चीजें कम से कम मूल्य पर खरीदी जा सकें। तैयार की हुई अपनी का जो मूल्य हमने स्वयं लगाया, बाजार में यदि उतना मूल्य नहीं मिले उसके कारणों को ढूंढना चाहिए, उस पर आपस में तथा बाजार वालों से वितर्क करना चाहिए और उनके निर्णय को लिखना चाहिए और प्रबंध, संग्रह तथा खरीद-बिक्री के अपने ढंग में सुधार करना चाहिए। सम्मेलन का ऐसा विश्वास है कि यदि इस तरह की व्यापारबुद्धि उद्योग के में रखी जाय तो इससे समवाय के अनेकानेक विषयों के आवश्यकताएँ अनायास काम के साथ सम्मुख आती जायंगी और अपनी पद्धति के सभी अंगों की पूर्ति करेंगी।

३ सोद्देश्य कामों की इकाइयाँ— सम्मेलन की सम्मति में सर्वांगीन मूलाधार उद्योग के द्वारा शिक्षण की योजना का व्यावहारिक होना चाहिए कि छात्र उस उद्योग के अंतर्गत समय समय की आवश्यकता तथा के अनुसार काम की इकाइयों का चुनाव करें, तथा शिक्षक के नियन्त्रण में करने की विधि का निर्णय करें, उन्हें करें, अपने किये के फल की जाँच करें, कुशलता के कारणों को समझें और लिखें और अपने अनुभव का उपयोग आगे की आवश्यकताओं के अनुकूल कामों के चुनने और सम्पन्न करने में। श्रम सप्ताह, वृक्षारोपण सप्ताह, मेले के अवसर पर सेवा, स्थान की मासिक पत्र का निकालना, कैंप, रैली, अविराम काम इत्यादि गत वर्ष के सिद्ध कर दिया है कि इस तरह कामों की इकाइयों के चुनने से कामों में आती है तथा शिक्षण का भी सुअवसर पूरा पूरा मिलता है। इसलिये सम्मेलन प्रस्ताव करता है कि प्रत्येक शिक्षक टर्म के आरभ में अपने वर्ग के बच्चों के परामर्श से लेकर इस तरह की इकाइयों का एक प्रोग्राम बनावें तथा उस प्रोग्राम के फलित जीवन के सूत्रों की वृद्धि के आधार पर बच्चों के ज्ञानार्जन में सहायक हों।

इकाइयों के कुछ नमूने संकेत के रूप में दिये जाते हैं। ये भिन्न भिन्न

स्थिति तथा रुचि के अनुसार इनमें अनेकानेक परिवर्तन तथा सम्मिश्रण का स्थान है तथा रहेगा—

मूल उद्योग कताई सम्बन्धी—बच्चे की अपनी पोशाक—हाफ पैंट, हाफ कमीज, टोपी इत्यादि। बच्चे के क्लास के लिये कपड़े—डस्टर, हाथ पोंछने के लिए तौलिए, बिछावन की चादर, परदे, जाजिम, दरी आसनी, थैले इत्यादि। बच्चे के स्कूल के लिए—कताई के लिये काली पट्टी, दरियाँ, जाजिम, परदे, तौलिए, झाड़न, चादर, थान (पारितोषिक के लिए), स्कार्फ, बैंडेज (स्काउटों की शिक्षा के लिये, हाजिरी के झंडे इत्यादि। बच्चे के परिवार के लिये—थान—कोटिंग, शरटिंग, टोपी, गमछे, चादर, साफे, साड़ियों, ब्लाउजों, कुरतों, करतों, गंजियों, पाजामों, धोतियों, लुंगियों, शिरवानियों इत्यादि के लिये। इसी प्रकार बच्चों के ..., इलाकों, थानों, सब-डिवीजनों, जिलों, डिवीजनों, सूबे तथा देश की आवश्यकता के अनुसार वस्त्र का हिसाब करना तथा अपनी इकाइयों को उसी अनुसार बृहत् रूप देना।

सहायक उद्योग बागबानी सम्बन्धी—बच्चों का अपने आवश्यकतानुसार अपने बाग में मौसिमी फसलें और तरकारियाँ लगाना—बरसात के शुरू में - मकई, मड़ुआ, करैला, सेम, तरोई, रामतरोई, लौका, कोंहड़ा, ..., धान, अरहर, अरंड, मूंग, कोदो इत्यादि; जाड़े के शुरू में—गेहूं, चना, मटर, राई, कुसुम, साग, बैगन, आलू, टमाटर, गाजर, मूली इत्यादि; गर्मी के शुरू में—... प्याज, ... साग, बरसीम इत्यादि; स्कूल के हाते में फलों के लगाने का सप्ताह—करौंदा, नींबू, केला, अमरूद, आम, लीची, पपीता, सपाटू इत्यादि; फूलों के रोपने का सप्ताह—गेंदा, केवड़ा, चमेली, तगर, रजनीगंधा, हरसिंगार इत्यादि; रासायनिक पौधों के रोपने की तैयारी—तुलसी, पीपरमिंट, इलायची, मौलसिरी, मुठिया सीज, भटकौंआ, ... मखमली वगैरह; बाग की हालबंदी, ..., जमीन की तैयारी, सिंचाई, रखवाली इत्यादि इकाइयाँ।

सहायक उद्योग गत्ता संबंधी—बच्चों के लिए—उनका नोट बुक, पौकेट नोट बुक, किताब की जिल्द, मारबुल इत्यादि की तैयारी; स्कूल के लिए—रजिष्टर, फाइल, गार्डफाइल, लिफाफा, ब्लाटिन पैड, ट्रे, ब्लैकशेड, लाइब्रेरी की किताबों की जिल्दसाजी वगैरह; बाजार के लिए—ब्लैकशेड, लिफाफे, नोट बुक, कुट के ... दवाएं, कलम, पेंसिल भेजने के लिये, फाइलें, बिउटी बौक्स, ट्रे, ... इत्यादि।

परिस्थिति निरी... मेले बाजार में सेवा दल का प्रबंध,

नयी तालीम भवन
(पृष्ठ १८२ ...)

८—नागरी लिपि ... मक कार्यक्रम के ...

९—मातृभाषा का पाठ ... साहित्य और कला के कुछ उत्कृष्ट नमूने ... सके।

१०—उर्दू साहित्य का प्रारम्भिक ज्ञान तथा नागरी और अरबी दोनों लिपियां लिखने पढ़ने की योग्यता।

११—संगीत—भारतीय संगीत के मुख्य मुख्य राग और तालों के प्रारम्भिक ज्ञान के साथ प्रमुख ताललय में सामूहिक गान। इसमें ... गीत, ...गीत, भजन, विभिन्न ऋतुओं और पर्वत्योहारों के गीत तथा दस्तकारी के काम और ...रिक शिक्षा सम्बन्धी, गरोहों में साथ मिलकर गाने योग्य, सरल और द्रुतगति ... गीत सम्मिलित होंगे।

जिन शिक्षक-छात्रों की संगीत के लिये ... होगी उन्हें इसकी विशेष शिक्षा दी जायगी।

१२. कलाएं।

१३ शारीरिक शिक्षा—व्यावहारिक और सैद्धान्तिक।

नागरिक जीवन की व्यावहारिक शिक्षा

विद्यार्थियों का छात्रालय-जीवन उनकी शिक्षा का अभिन्न अंग समझा जायगा अतः उनके सामूहिक जीवन के सभी कार्य, जैसे भोजनशाला के काम, सफाई, बीमारों को दवा ... देना और उनकी सेवा-शुश्रूषा, शौकिया काम, मनोविनोद और मनोरंजन तथा नाट्य और साहित्यिक समितियां इन सभी कामों का प्रबन्ध और संगठन बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्तों और ध्येयों के अनुकूल होगा।

छात्रालय में निम्न लिखित नियमों का पालन करना होगा:—

(१) आटा पीसने, भोजन बनाने, बीमारों की सेवा-शुश्रूषा करने, ... लय की आम सफाई तथा ... की सफाई करने के कामों विद्यार्थियों को ... करना होगा।

(२) ... रूप से ... होगा और श्रमोद्योग द्वारा बनी हुई सामग्रि... काम में लाई जायंगी।

'न

१—हिन्दी 'नई ... तारीख को पहले प्रकाशित होती है। ... मूल्य सवा रुपया। एक प्रति की कीमत ... पेशगी लिया जाता है।

... तालीमी संघ, सेवाग्राम ...

२—उर्दू 'नई तालीम' ... जामियानगर, दिल्ली, से प्रकाशित होती है। ... 'नई तालीम' संघ, दिल्ली से प्राप्त करनी चाहिए। उर्दू 'नई तालीम' का वार्षिक मूल्य डेढ़ रुपया है। एक प्रति की क़ीमत ... जाता है। वार्षिक मूल्य पेशगी लिया जाता है।

३—ग्राहक किसी भी महीने से बन सकते हैं, पर साल-भर से कम के ग्राहक नहीं बनाये जाते।

४—दोनों पत्र प्रकाशित होते ही सावधानी के साथ ग्राहकों को भेज दिये जाते हैं। अगर एक हफ्ते के अन्दर अङ्क न मिले, तो पहले डाकखाने से पूछताछ करके फिर लिखना चाहिए। पत्र न मिलने की ... शिकायतों पर ध्यान न दिया जायगा।

५—तीन महीने से कम के लिए पता बदलवाना हो, तो अपने डाकखाने से इन्तज़ाम कर लें।

६—ग्राहकों को चाहिए कि रैपर पर पते के साथ दी हुई अपनी ग्राहक-संख्या हमेशा ... दबूक्खें और पत्र-व्यवहार' में ग्राहक-संख्या लिखना न भूलें, नहीं तो कोई कार्रवाई न की जायगी।

व्यवस्थापक, 'नई तालीम'
पटना (बिहार)